दिमाग के चैम्पियन

आशीर्वाद पण्डित

का 19वाँ नया उपन्यास

देख मेरे दिमाग का जादू

करोड़ों पाठकों की पसंद

धोखे से बचें! नक्कालों से सावधान!

तुलसी साहित्य पब्लिकेशन्स

आशीर्वाद पण्डित के अब तक प्रकाशित उपन्यास

1. 10 साल का वकील
2. कानून का बाप
3. बेटा हिन्दुस्तान का
4. 6 फुट का नेवला
5. दो पैरों वाला बम
6. दिमाग का चैम्पियन
7. अर्जुन ललकारे कृष्ण को
8. आधा जोकर आधा मदारी
9. चौबीस घण्टे का जादूगर
10. लोमड़ी का दूध
11. तू पण्डित मैं शनिचर
12. बेटे से बड़ा है देश
13. राधा गोरी मैं क्यों काला
14. 15 बम पाकिस्तान खत्म
15. कर लो लंका फतह
16. चक्रव्यूह में फंसा भारत-पुत्र
17. जोकर भिड़ेगा चैम्पियन से
18. सौ के बराबर अकेला
19. देख मेरे दिमाग का जादू (प्रस्तुत नया उपन्यास)
20. अनाड़ी नहीं खिलाड़ी हूं (प्रेस में)

प्रकाशक : तुलसी साहित्य पब्लिकेशन्स
गांधी मार्ग, निकट ओडियन सिनेमा,
मेरठ-250 002
फोन : (0121) 2516598, 3294144
मुद्रक : विशाल प्रिन्टर्स, मेरठ।

देख मेरे दिमाग का जादू : उपन्यास : आशीर्वाद पण्डित

मूल्य : चालीस रुपये केवल

"तेरे सिर के पिंजरे में दिमाग का जो तोता था, तूने उसका अपनी तरफ से खूब इस्तेमाल किया। वो तोता पंखों को फड़फड़ाते हुए चारों दिशाओं में उड़ा। उसके पंखों की हवा तेरी सोच के मुताबिक मुझे तिनके की तरह उड़ाकर ले जानी चाहिये थी और मेरे अस्तित्व का अता-पता भी नहीं मिलना चाहिए था। ये तो हवा का मसला था—अगर आंधी के तेज झोंके भी होते तो मेरे सिर के बाल भी नहीं हिल पाते। मैं वो चट्टान हूं जिसकी चपेट में आने वाली आंधी भी गुब्बारे से निकली हवा की तरह ही फुस्स होकर रह जाती है। दिमाग के चैम्पियन से दिमाग की जंग लड़ने चला था तू, चूहा छलांग लगाकर कुतुबमीनार की चोटी पर बैठकर ताली पीटने के ख्वाब देख रहा था। मेरा दिमाग तलवार की वो पैनी धार है, जिसकी चपेट में आने पर फौलाद भी लौकी की तरह कट-फट जाती है—तेरी हैसियत तो गीले कागज से बढ़कर थी ही नहीं। खैर, तूने जो करना था कर लिया, अब मेरी बारी है। अब देख मेरे दिमाग का जादू..!"

दिमाग का चैम्पियन आशीर्वाद पण्डित एक बार के लिये ऐसे मुकाम पर पहुंच गया कि उसे लगा कि वो फंस चुका है और उसकी इज्जत दांव पर लग चुकी है।

कौन है दिमाग का वो खिलाड़ी, जो दिमाग के चैम्पियन को अपने जाल में फांसने के लिये दिमाग के घोड़ों को चारों दिशाओं में दौड़ा रहा है?

जवाब जानने के लिये पढ़िये—

देख मेरे दिमाग का जादू

परम प्रिय पाठकों,
बुक सेलर्स एवं एजेंट बन्धुवर,
सादर अभिवादन!

सुपर-डुपर हिट 'सौ के बराबर अकेला' के पश्चात् कृष्णपण्डित के बेटे, सोफिया पण्डित के जिगर के टुकड़े और आप सभी के लाड़ले आशीर्वाद पण्डित का नया उपन्यास आपके कर-कमलों में सुशोभित है, जिसका नाम है–

देख मेरे दिमाग का जादू

दिमाग के जादूगर के बेटे व दिमाग के चैम्पियन आशीर्वाद पण्डित के दिमाग की समुद्र की तरह ही कोई थाह नहीं है। उसका दिमाग आसमान से ऊंचा तो पाताल से भी गहरा है। पृथ्वी से भी वजनी है और कल्पना के घोड़े से भी तेज रफ्तार वाला है। सभी ने उसकी सूझ-बूझ का लोहा माना है। लेकिन!

ये भी कहावत है कि घुड़सवार ही मैदान में गिरता है और तैराक ही पानी में डूबता है। आशीर्वाद के साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ। एक शातिर दिमाग वाले ने खेल खेला और दिमाग का चैम्पियन उसके द्वारा रचे गये चक्रव्यूह में फंस गया! उस पर ऐसा घिनौना इल्जाम लगा कि एक बारगी को तो उसके मन में प्रश्न उठा कि वो दुनिया वालों की नजरों का सामना कैसे कर पायेगा?

ये तो तय है कि कथानक का नायक होने के कारण आशीर्वाद पण्डित दुश्मन के बिछाये जाल से निकल भी जायेगा और अन्ततः विजयी भी होगा, लेकिन अनेकों सवाल कथानक की रोचकता को बनाये रखेंगे–

मसलन कि आशीर्वाद के साथ खेल खेलने वाला कौन है? वो क्यों खेल रहा है? वो आशीर्वाद से किस बात की खुन्नस निकाल रहा है? उसका खेल क्या है? आशीर्वाद उसके जाल से कैसे निकलेगा? आशीर्वाद अपने उस दुश्मन का क्या हश्र करेगा?

कथानक में एक नहीं, अनेक ऐसे रहस्यमयी किरदार हैं, जिनके चेहरों पर से नकाब उतरने तक आपकी उत्सुकता और कौतूहलता एवरेस्ट की चोटी पर झण्डे गाड़े रहेगी। ढेरों ऐसी घटनायें हैं, जो गिरगिट की तरह रंग बदलकर आपके मन में उथल-पुथल मचाती रहेंगी।

रहस्यों की लम्बी-चौड़ी दुनिया!
रोमांच की गहरी-गहरी खाइयां।

लम्बा-सा उगलते ऐसे संवाद, जो आपके दिलो-दिमाग को झकझोर कर रख देंगे।

कुल मिलाकर वो सब कुछ...जिसने आशीर्वाद पण्डित को बहुत थोड़े समय के भीतर ही फर्श से अर्श पर पहुंचा दिया और आपके प्यार, आशीर्वाद, स्नेह तथा मार्गदर्शन से अपनी झोली भरे जा रहा है।

अनाड़ी नहीं खिलाड़ी हूं

जी हां, यही नाम है आपके लाड़ले के आगामी उपन्यास का। जिसमें आप पायेंगे रहस्यों की भूल-भुलैया! रोमांच उबड़-खाबड़ जंगल! तेजाबी संवादों से भरी झीलें, पल-पल रंग बदलती घटनाओं की घाटियां। हिरणी-सी कुलाचें भरती तेज रफ्तार स्टोरी! आदि से अन्त तक रोचकता की सदाबहार बगिया! दिल को गुदगुदाने वाले मनोरंजन के झूले और दिमाग को पौष्टिक खुराक देने वाला सस्पैंस! कुल मिलाकर मन को मोह लेने वाला उपन्यास–जिसकी संरचना के लिये आशीर्वाद पण्डित ने कलम में स्याही के स्थान पर अपने दिमाग का खून ही इस्तेमाल किया है।

अभी तो आप प्रस्तुत उपन्यास 'देख मेरे दिमाग का जादू', पढ़िये और कथानक के जादुई संसार में खो जाइये, लेकिन उपन्यास पढ़ने पर एक पत्र लिखने की कृपा अवश्य ही कीजियेगा। क्योंकि आपका प्रोत्साहन लेखक और प्रकाशक का आत्मबल बढ़ा देता है और चेष्टा की जाती है कि आगामी उपन्यास में कोई कमी-बेसी ना रह जाये।

ढेर सारी हार्दिक शुभकामनाओं के साथ !

आपका अपना ही
प्रकाशक
तुलसी साहित्य पब्लिकेशन्स
गांधी मार्ग, निकट ओडियन सिनेमा, मेरठ-2

देख मेरे दिमाग का जादू

आशीर्वाद पण्डित

शब्द को मोती, वाक्य को हीरा, घटना को आभूषण, कथानक को खजाने का वास्तविक रूप देने वाले कुशल कारीगर का ही नाम है—आशीर्वाद पण्डित—जो स्वयं ही एक अनमोल नगीना है—इसमें संदेह की गुंजाईश इसलिए नहीं हो सकती, क्योंकि इस नगीने की पहचान और कद्र करने वाले आप जैसे अनुभवी जौहरी हैं। आपने ही आशीर्वाद पण्डित को सफलता के आसमान तक पहुंचाया है।

दिमाग के चैम्पियन और शब्दों के कामयाब खिलाड़ी

आशीर्वाद पण्डित

का एक 20वां नया जोरदार 'स्ट्रोक'

अनाड़ी नहीं खिलाड़ी हूं

"तेरी रगों में भले ही दिमाग के जादूगर का खून और दिमाग की लोमड़ी का दूध गर्दिश करता हो—लेकिन दिमाग की जंग में तेरी शिकस्त और मेरी फतह हुई है। कल तक तू अवश्य ही दिमाग का चैम्पियन था ओये आशीर्वाद पण्डित—लेकिन अब तू काठ का उल्लू ही है। तेरे आला दर्जे के दिमाग को किडनेप करके मैंने तेरे सिर में वो दिमाग फिट कर दिया है, जिसका रिमोट मेरे पास है। अब मैं उस दिमाग को कठपुतली की तरह ही अपने इशारों पर नचाऊंगा। मैं जो चाहूंगा—तू वैसा ही करेगा। तू मेरा गुलाम है। मेरे हुक्म पर अमल करना तेरा मुकद्दर बन चुका है। अब देख कि मैं अपने फायदे के लिये तेरे दिमाग का कैसे इस्तेमाल करता हूं...!"

"ओये...अक्ल को बेचकर खा जाने वाले शेखचिल्ली के खानदानी ! कमअक्ली का घौंसला छोड़कर गलतफहमी की डाल से नीचे उतर। हकीकत की जमीन पर पैर टिकाकर और सच्चाई के दर्पण में झांककर देख! तुझे अपना वास्तविक रूप दिखलाई पड़ेगा और तेरी अक्ल पर पड़े बेवकूफी के पर्दे हट जायेंगे। ख्वाब में तो कोई बालक भी सूरज को गेंद बनाकर उसके साथ खेल सकता है—लेकिन हकीकत में अंगारे को छूने पर भी मुंह से चीख निकल जायेगी और ऐसा फफोला उभर आयेगा कि जमीन पर पैर भी नहीं रखा जा सकेगा। तूने तो आशीर्वाद पण्डित नाम के ज्वालामुखी से खेलने की महाबेवकूफी कर डाली है। अपने इस अनाड़ीपन का खामियाजा तो तुझे भुगतना ही पड़ेगा। अब देख कि दिमाग का ये खिलाड़ी कैसे तुझे तिगनी का नाच नचाता है...!"

अनाड़ी नहीं खिलाड़ी हूं

धीरज पॉकेट बुक्स में प्रकाशित

आशीर्वाद पण्डित का 20वां **नया** अविस्मरणीय रोचक व तेज रफ्तार उपन्यास, जो रहस्य व रोमांच तथा तेजाबी संवादों के जादुई खेल से आपके दिलो-दिमाग को आनन्दित कर देगा।

नक्कालों से सावधान

आप सभी को आगाह करते हैं कि नकलचियों से सावधान रहिये। दिमाग के चैम्पियन आशीर्वाद पण्डित के नये उपन्यास दो फर्म धीरज पॉकेट बुक्स एवं तुलसी साहित्य पब्लिकेशन्स से प्रकाशित होते हैं। अन्य कहीं से नहीं।
और 121 उपन्यासों के रचयिता, दिमाग के जादूगर केशव पण्डित के पूर्व प्रकाशित 121 उपन्यास तथा सभी नये उपन्यास केवल दो फर्म धीरज पॉकेट बुक्स एवं तुलसी साहित्य पब्लिकेशन्स से प्रकाशित हो रहे हैं—अन्य कहीं से नहीं।

देख मेरे दिमाग का जादू
के कुछ जादुई किरदार

शाकाल—जिस मिट्टी में जन्मा, पला-बढ़ा, उसी में वो आतंकवाद और जुर्म का बारूद बोये चला जा रहा है। उसके चेहरे पर से नकाब उतरेगा तो आप चिहुंक उठेंगे।

यांग यू—चीनी सीक्रेट सर्विस का तेज-तर्रार जासूस, जो कि एक खतरनाक खेल खेलने के इरादे से हिन्दुस्तान में आया हुआ है।

प्राची शर्मा—वो आशीर्वाद पण्डित को प्यार करती थी—लेकिन फिर उसने आशीर्वाद पण्डित पर ऐसा घिनौना इल्जाम लगाया कि दिमाग का चैम्पियन भी हिलकर रह गया।

जिंगारा—इन्सान के रूप में दैत्य ही है वो। बिफरे हुये साण्ड को यूं ही चित कर देता है, जैसे कोई बिल्ली किसी चूहें को। उसका मुकाबला आशीर्वाद पण्डित के साथ हुआ तो...?

कूकी—रहस्यमयी बाप का रहस्यमयी बेटा, जो कि इन्तकाम की आग में जलते हुए आशीर्वाद पण्डित के खिलाफ गहरी साजिश रचने जा रहा है।

शकोरा—एक रहस्यमयी किरदार, जो जानता है कि शाकाल के पीछे किसका चेहरा छिपा हुआ है।

और भी कई खतरनाक किरदार, जिनके मुकाबले में हिमालय पर्वत-सा डटा खड़ा है दिमाग का चैम्पियन यानि आशीर्वाद पण्डित, जो ताल ठोककर बोल रहा है—

देख मेरे दिमाग का जादू

देख मेरे दिमाग का जादू

आशीर्वाद पण्डित

"ला निकाल ओये।" चालीसेक साल का नाटे कद तथा ड्रम जैसे पेट वाला शख्स अपने सामने खड़े पैंतीस वर्षीय शख्स को अपनी अंगारों-सी दहकती प्रतीत होती आंखों से घूरते हुये भूखे भेड़िये की मानिन्द ही गुर्राकर बोला—"कहां है वो सीक्रेट फाइल?"

"फ...फाइल तो मेरे पास ही है।" पैंतीस वर्षीय शख्स आंखें फाड़े अंधेरे में इधर-उधर तलाशपूर्ण अन्दाज में देखते हुये सहमे हुये से लहजे में बोला—"ल...लेकिन मेरी बीवी और बच्चे कहां हैं?"

अंधेरी रात!

आसमान में दौड़ते हुये बादल यूं ही प्रतीत हो रहे थे कि मानो ढेर सारे हाथियों में रेस लगी हो।

मुम्बई शहर का पुराना कब्रिस्तान!

तेज हवा से हिलते वृक्ष यूं ही लग रहे थे कि मानो भूत-प्रेत मदिरा पीकर झूम रहे हों।

नाटे कद तथा ड्रम जैसे पेट वाला परमा अपने एक दर्जन चेलों के साथ सामने खड़े विमल राय नामक पैंतीस वर्षीय शख्स को घेरे खड़ा था।

विमल राय की तलाश करती आंखों में आतंक, आशंका तथा व्याकुलता के बड़े-बड़े मगरमच्छ हलचल मचा रहे थे।

"तेरी बीवी और दोनों बच्चे भी यहीं हैं ओये विमल राय।" नाटे कद वाला बुलाकी पूर्ववत् यानि भेड़िये की मानिन्द ही

गुर्राकर बोला—"पहले वो सीक्रेट फाइल मेरे हवाले कर, फिर मैं तेरी बीवी और बच्चों को बुलवाकर, उन्हें तेरे हवाले करके अपने साथियों के साथ यहां से चला जाऊंगा। ला, जल्दी कर...।"

"ऐसे नहीं।" परमा की बात पूरी होने से पहले ही इन्कार में अपनी गर्दन हिलाते हुये दृढ़ता भरे लहजे में बोला विमल राय—"पहले मेरी बीवी और बच्चों को मेरे सामने लाओ। फोन पर यही तय हुआ था कि तुम संजना, पिंकी और यश को मेरे हवाले करोगे और मैं देश की रक्षा सम्बंधी सीक्रेट फाइल तुम्हारे हवाले करूंगा। एक हाथ दे, दूसरे हाथ ले वाला सौदा होगा। फाइल मेरे पास है—लेकिन उसे मैं तुम्हारे हवाले तभी करूंगा जब अपने बीवी-बच्चों को सामने देख लूंगा।"

"मूर्ख है तू ओये विमल राय जो ये सोच रहा है कि यहां तेरी चलेगी।" इस बार मानो परमा नहीं उसके गले में बैठा कोई किंग-कोबरा इन्सानी लहजे में बोला—"फाइल तेरे पास है और तू पूरी तरह से हमारे रहमो-करम पर है। तुझे मारकर हम तुझसे वो फाइल हासिल कर लेंगे।"

"ऐसे नहीं मिलेगी वो फाइल...।" जमाने भर की कठोरता समाई हुई थी विमल राय के लहजे में। वह अपना हरेक शब्द चबाते हुये-सा बोला—"फाइल है तो यहीं, लेकिन मेरे पास नहीं है। लेकिन...विश्वास जानो मेरे बीवी-बच्चों को देखते ही वह फाइल मेरे हाथ में होगी।"

"हरामजादे...तू खुद को बहुत सुरमा समझ रहा है।" विमल राय का गला दबोचकर क्रोध में भरा परमा किंग-कोबरे की मानिन्द ही फुंफकारा—"हमसे...परमा उस्ताद से उस्तादी खेल रहा है? लेकिन मैं उस्तादों का उस्ताद हूं। तेरे जैसे उल्लू के पट्ठों को अपनी जेब में डाले घूमता हूं। बोल कहां है वो फाइल...?"

"फाइल इधर...मेरे पास है ओये उस्तादों के उस्ताद...।"

"क...कौन?"

उस नई आवाज को सुनकर परमा उस्ताद इतनी जोर से चिहुंका कि लड़खड़ाकर रह गया।

फिर तत्काल ही उसने खुद पर काबू पाया और जिधर से आवाज आई थी उधर देखते हुये अपने आदमियों से चिल्लाकर बोला—"जैकी...रघू...बन्टी...टॉर्च जलाकर देखो, उधर कोई है...।"

□□□
□□□

एक कब्र की ओट में छः फुट से भी निकलते कद वाला अपने चेहरे पर फाइल रखे लेटा हुआ था।

तीन-तीन सेलों वाली एवरेडी की टॉर्चो का प्रकाश उस पर पड़ रहा था, लेकिन उसे इसका कहां पता था? उसके चेहरे पर फाइल पड़ी हुई थी। वह जमीन पर यूं ही मस्ती से लेटा हुआ था मानो कब्रिस्तान में ना होकर अपने घर के बेडरूम में बेड पर पड़ा हो।

"जैकी...रघू...बन्टी...।" जमीन पर लेटे शख्स की तरफ नेत्र सिकोड़े देखते हुये परमा उस्ताद अपने चेलों से बोला—"देखो, इसके अलावा भी कोई और तो नहीं है यहां आस-पास...।"

"डर मत ओये उस्तादों के उस्ताद।" जेब में हाथ डालते हुये वह शख्स तालाब के पानी जैसे ही शान्त एवं ठहरे हुये अन्दाज में बोला—"मेरे अलावा यहां कोई और नहीं है...। विमल अंकल के बच्चे व आंटी उनके हवाले कर और फाइल मेरे से ले ले...।"

"क्यों ओये हरामी...!" बगल में आशंकित से खड़े विमल राय को भष्म कर देने वाली-सी निगाहों से घूरते हुये परमा गुर्राकर बोला—"फोन पर तुझे बोला गया था ना कि तूने फाइल लेकर यहां अकेले ही आना है। तूने बात नहीं मानी, अब तू मारा जायेगा। तेरे साथ...तेरे इस हिमायती को भी मार डालेंगे। हम...। ला ओये...।" जमीन पर लेटे शख्स की ओर बढ़ते हुये बोला वह—"ये फाइल मुझे दे...।"

उस शख्स के निकट पहुंचकर परमा ने उसकी पसलियों पर ठोकर जमानी चाही तो उसने टांग को हवा में ही लपककर एक जोरदार झटका दिया तो वह दूर जा गिरा।

इसी के साथ जमीन पर लेटे नीली जींस, सफेद शर्ट के ऊपर नीली जरकीन पहने छः फुट दो इंच कद वाले शख्स ने अपने चेहरे पर रखी फाइल हटाई और उठ बैठा।

ये क्या?

वो कोई और नहीं गोल्डन कलर के घुंघराले बालों तथा .ोलम-सी नीली आंखों वाला केशवपुत्र ही था।

बैठने पर उसने मुट्ठी में पकड़े चने के दानों की फंकी मारी और उठकर अपनी जींस के पीछे हाथ मारते हुये उस पर लगी

मिट्टी झाड़ते तथा परमा की तरफ देखते हुये शान्त तथा सपाट लहजे में बोला—

"बता ओये गैंडे...अंकल की धर्मपत्नी और इनके बच्चे कहां हैं? उन्हें यहां बुला...वो भी एक मिनट में, वरना मैं दूसरे तरीके से तुझसे पूछना शुरू करूंगा।"

"रुक हरामजादे...मैं अभी तेरी बोलती बन्द करता हूं।" उठने पर नई खोली सोडे की बोतल की मानिन्द ही क्रोध में उफनते...अपनी मुट्ठियां भींचे मुण्डे की तरफ लपकते हुये किंग-कोबरे की मानिन्द ही फुंफकारकर बोला परमा—"तू साला कल का लड़का...परमा उस्ताद पर गुर्रा रहा है जबकि मुझे देखकर मुम्बई में अच्छे-अच्छे खलीफाओं की जुबान को लकवा मार जाता है...।"

"अबे वो खलीफा नहीं खटमल होंगे जो तुझे देखकर डरकर दुबक जाया करते हैं।" केशवपुत्र चने के दानों के साथ मानो अपना हरेक शब्द चबा-चबाकर, चिंगल-चिंगलकर, कुचल-कुचलकर ही बोला—"लेकिन मैं उनमें से नहीं हूं। शेर का बच्चा हूं और शेर के बच्चे डरा नहीं करते। मेरी एक दहाड़ पर तेरी पैन्ट गीली हो जायेगी ओये उस्तादों के उस्ताद। अब तू मेरे सब्र का इम्तिहान मत ले...। मैं शुरू हुआ तो तेरे मुंह से घण्टों आवाज नहीं निकलेगी...।"

"तेरी तो मां...आहऽऽ!"

गाली देनी चाही परमा ने, लेकिन उससे पहले ही लड़के का वज्र-सा घूंसा उसकी थूथन पर पड़ा तो वह चीखता हुआ दूर जा गिरा।

मिनटभर तक तो उसकी सांस नीचे की नीचे और ऊपर की ऊपर ही अटकी रही। फिर नीचे और ऊपर की अटकी सांसों का मिलन हुआ तो उसमें जीवन के लक्षण नजर आये।

"खड़े-खड़े मेरा मुंह क्या देख रहे हो हरामियों?" वह अपने साथियों पर मानसूनी बादलों की मानिन्द ही गरजा—"पकड़ो इस हरामी को...फाइल इससे बाद में लेंगे पहले इसकी मुण्डी काटकर मैं उससे फुटबाल खेलूंगा।"

उसके चेले जो लड़के के एक्शन से हैरानी के पाश में जकड़े हुये पड़े थे अपने उस्ताद की गर्जना सुनकर यूं ही चौंके मानो सोते से जगे हों।

फिर उनकी निगाहें जरकीन में फाइल घुसेड़ते आशीर्वाद पर जा टिकीं।

फिर वे उस पर नजरें चिपकाये हुये भयानक अन्दाज में नपे-तुले हुये से कदमों से उसकी तरफ बढ़े।

कुटुर-कुटुर करते हुये आशीर्वाद पण्डित उनकी तरफ देखकर यूं मुस्कराया मानो कोई शेर अपनी तरफ बढ़ती चूहों की फौज को देखकर मुस्कराया हो।

❑❑❑
❑❑❑

काला-कलूटा तथा छः फुटा जैकी जिसके सिर के बाल इतने छोटे थे कि चुटकी भरने पर भी पकड़ाई में ना आयें। मुण्डे को भष्म कर देने वाली-सी निगाहों से घूरते हुये तथा लड़के की तरफ नपे-तुले से कदमों से बढ़ते हुये गुर्राकर बोला—

"रुकने का ओये पिल्ले...एक तो तू अपुन के उस्ताद कू ठोका और अब हमारा मखौल उड़ा रहेला है। अपुन जैकी दादा है...। खोपड़ी पर एक घूंसा मारेगा तो जमीन में धंस जायेगा।"

"अबे जा ओये कालिया...।" उसे किलसाने के लिये मुण्डा हाथ से उसे परे रहने का इशारा करते हुये अपनी आंखें नचाते तथा भौंहें मटकाते हुये बोला—"मुझसे परे रहेगा तो बत्तीसी सलामत रहेगी। नजदीक आया तो जबड़े सहित तेरी बत्तीसी तेरे पेट में होगी...।"

"ठहर साले...तेरी तो...।" इसके आगे मुंह से एक भी शब्द नहीं निकला उस कालिये के। मुंह पर केशव नन्दन का घूंसा पड़ा तो उसका एक-एक दांत जबाड़ों को टाटा...टाटा, बाय-बाय कहते हुये गले से नीचे उतर पेट में पहुंच गया और साथ ही वह चकराकर एक कब्र के ऊपर जा गिरा।

तभी उसके बाकी के साथी मुण्डे को गन्दी-गन्दी गालियां निकालते हुये उसकी तरफ लपके और—

मुण्डा अपना दायां पैर उठाकर बायें पैर के पंजे पर एक राउंड घूमा।

'तड़ाक...खटाक...सटाक...भड़ाक...।'

उसका पैर किसी गुण्डे की कनपटी पर तो किसी के सिर से तो किसी की गर्दन से टकराया और वह सब उछल-उछलकर दूर जा गिरे और छिपकली की कटी दुम की मानिन्द ही छटपटाने, तड़फने तथा कराहने लगे।

ये देख अब तक शंका में पड़े खड़े विमल राय के चेहरे से शंका के भाव यूं ही मिटते चले गये जैसे सूर्य के निकलने पर सर्दियों के मौसम में कोहरा छंटता चला जाता है।

लेकिन सिर्फ एक पल के लिये ही उसके चेहरे से शंका के बादल छंटे थे। दूसरे ही पल उसके चेहरे पर शंका के बादलों की जगह आतंक के बादलों ने डेरा जमा लिया।

कारण...वजह?

परमा के दोनों हाथों में रिवॉल्वर देखकर उसकी ये हालत हुई थी।

आंखों में आतंक के भाव लिये विमल राय ने नीलम-सी नीली आंखों वाले लड़के की तरफ देखा और जब उसे लापरवाही भरे अन्दाज में जेब में हाथ डालते पाया तो अपने आपको तथा अपने साले को कोसने लगा।

"मेरा दिमाग फिर गया था जो मैंने अपने साले अमित की बात मानी और उसके साथ मदद के लिये केशव पण्डित के घर जाकर आशीर्वाद से मिला। अमित सगा साला है—उसे बताया कि शाकाल के आदमियों ने उसकी बहन संजना तथा भांजी पिंकी और भांजे यश का अपहरण कर लिया और बदले में वो चाहते हैं कि उनके लिये मैं अपने ऑफिस से देश की रक्षा से सम्बंधित सीक्रेट फाइल लाकर उन्हें दूं। धमकी भी दी थी कि यदि मैंने उनका कहना नहीं माना तो वो तीनों को जान से मार डालेंगे। सारी बात सुनकर अमित मुझे केशव पण्डित के यहां ले गया। कह रहा था पण्डित जी उसकी मदद करेंगे और सारा मामला संभाल लेंगे। पण्डित जी की तबियत खराब थी और उन्होंने मेरा मामला अपने इस बेटे को सौंपा तो मैं तो सोच में पड़ गया था। लेकिन अमित यूं ही खुश हुआ था मानो पण्डित ने उसके मसले को इस कल के लड़के को सौंपकर बहुत अच्छा काम कर दिया था। मुझे दुविधा में देख उसने मुझे समझाया कि आशीर्वाद को में लड़का ना समझूं...ये बहुत ही खतरनाक है। साले के समझाने पर मैं मान तो गया, लेकिन ये लड़का तो बिल्कुल लापरवाह है। परमा उस्ताद के हाथ में दो-दो गने हैं और य...ये लड़का जेब में हाथ डाले यूं लापरवाह नजर आ रहा है जैसे परमा के हाथों में रिवॉल्वरें नहीं बच्चों के खेलने वाले खिलौने हैं। ये तो मरेगा और इसके साथ मैं और मेरे बीवी-बच्चे भी मारे जायेंगे। काश...काश कि मैंने अपनी मुसीबत का जिक्र अपने साले से ना किया होता। सीधा ऑफिस से फाइल चुराकर शाकाल के आदमियों के हवाले कर देता, तो ये पंगा ना खड़ा होता...।"

जी हां, यही कहानी थी वो।

विमल राय गृहमंत्रालय में क्लर्क था और एक शाम उसकी बीवी संजना अपने दोनों बच्चों के साथ कपड़े वगैरह खरीदने बाजार गई थी कि परमा और उसके चेलों ने उनका अपहरण कर लिया। विमल राय तब अपने ऑफिस में ही था। उसे फोन आया। फोन करने वाले ने अपना नाम शाकाल बताया और कहा कि उसके बीवी-बच्चे उसके कब्जे में हैं। अगर वो उनकी सलामती चाहता है तो उसे अपने ऑफिस से फाइल नम्बर एक सौ आठ निकालकर उस तक पहुंचानी होगी। उसे सोचने के लिये समय भी दिया गया था। समय मिलने पर उसने अपने साले को अपनी प्रॉब्लम बताई तो उसका साला अमित जो कि प्राईवेट जासूस था, उसने उससे कहा कि उस मसले पर उसे केशव पण्डित से मदद लेनी चाहिये—वरना तो हो सकता है कि देश के दुश्मनों को सीक्रेट फाइल सौंपने पर भी वो लोग संजना, पिंकी और यश को ना छोड़ें, उन्हें मार ही डालें। क्योंकि ऐसा कई बार सुना गया है कि फिरौती की रकम पाने पर भी बदमाश लोग अपरहण किये गये शख्स को मार डालते हैं। अमित के समझाने पर वो केशव पण्डित की मदद लेने को राजी हो गया।

अमित जासूस था ही। उसने सावधानी के नाते विमल राय के घर के बाहर का जायजा लिया तो पाया कि दो लोग उसके घर की निगरानी कर रहे हैं। अपने बहनोई विमल राय को समझाकर उस समय तो वो उसके यहां से चला गया। लेकिन रात में वह घर के पीछे वाले दरवाजे से फिर विमल राय के पास आया और फिर दोनों गुपचुप तरीके से पीछे वाले रास्ते से ही निकल केशव पण्डित के घर पहुंचे। केशव पण्डित को बुखार था। राजन चांदनी के साथ बाबा विश्वनाथ के दर्शनों के लिये बनारस गया हुआ था और करतार सिंह को एक केस के सिलसिले में केशव ने शोलापुर भेजा हुआ था। विमल राय की समस्या अमित ने केशव को बताई तो आशीर्वाद को, जो कि उस समय उनके पास ही था, उनकी मदद करने को कहा। एक कम उम्र के लड़के को इतनी गम्भीर समस्या में जोड़े जाने पर विमल राय दुविधा में पड़ गया था। जबकि अमित राय के चेहरे पर ठीक ऐसे भाव नजर आये थे मानों उस मामले को लड़के के सुपुर्द करके केशव

पण्डित ने उसके मन की मुराद पूरी कर दी हो। फिर उसने अपने बहनोई को दुविधा में पड़े देखा तो उसे समझाया कि आशीर्वाद को वह साधारण लड़का ना समझे। वो दिमाग का चैम्पियन है ही—साथ ही खतरनाक इतना कि उसे दो पैरों वाला बम भी कहा जाता है। मुण्डा सौ के बराबर अकेला है।

कुल मिलाकर साले ने बहनोई को आश्वस्त कर लिया। फिर मुण्डे ने विमल राय को समझाया कि शाकाल का फोन आने पर उसे उससे कैसे बात करनी है तथा उनके बीच में जो भी तय होगा उसकी खबर मुण्डे को कैसे करनी है? सब कुछ सेट हो जाने पर अमित उसे उसी तरह पीछे वाले दरवाजे से घर में छोड़कर वहां से चला आया था।

फिर दूसरे दिन शाकाल का फोन आने पर विमल राय ने उससे कह दिया कि उसे अपनी बीवी और बच्चे प्यारे हैं। उनकी खातिर वह कुछ भी कर सकता है। तब शाकाल ने उससे कहा कि वो रात को ठीक बारह बजे सीक्रेट फाइल लेकर पुराने कब्रिस्तान में पहुंचे, वो भी अकेला। वो वहां अकेला पहुंचेगा तो उसके बीवी-बच्चे भी उसे वहां मिल जायेंगे। उसके आदमी उससे फाइल लेकर उसके बच्चे और बीवी को उसके हवाले करके चले आयेंगे।

फोन पर शाकाल से वो मामला सेट हो जाने पर उनमें जो बातें हुई थीं उसे फोन पर एस० एम० एस० करके आशीर्वाद तक पहुंचा दी विमल राय ने।

फिर तो आशीर्वाद परमा और उसके चेलों से पहले ही कब्रिस्तान पहुंच गया था।

आगे का दृश्य कुछ इस प्रकार था—

विमल राय उस समय को कोस रहा था जबकि वो अपने साले के कहने पर केशव पण्डित के घर उससे मदद लेने के लिये पहुंचा था। उसे लग रहा था कि लापरवाह-सा लड़का परमा उस्ताद के हाथों मारा जायेगा और उसके साथ वो लोग उससे भी इस बात की खार निकालेंगे कि उनकी हिदायत के बावजूद वो वहां अकेला नहीं आया था। अपने साथ एक हिमायती लाया था।

"हे प्रभु!" वो मुंह आसमान की ओर करके बड़बड़ाया—"मेरे से जो चूक हुई उसकी सजा मुझे मिली तो मुझे दुख नहीं होगा। लेकिन मेरी बीवी-बच्चों का अब तू ही रखवाला है।"

इधर परमा अपने दोनों हाथों में रिवॉल्वरें लिये लड़के को भष्म कर देने वाली-सी निगाहों से देखते हुये मानो अपने हरेक शब्द को चबा-चबाकर, चिंगल-चिंगलकर, कुचल-कुचलकर ही बोला—"अब तू नहीं बचेगा ओये लड़के। तूने परमा उस्ताद पर हाथ उठाया। तेरे जिस्म में मैं इतना बारूद ठूंस दूंगा कि हड्डियां तक गलकर जिस्म से बाहर बह निकलेंगी।"

"अबे जा ओये गैंडे।" चने के दानों की फंकी मारने पर उन्हें चबाते हुये तथा परमा के हाथों में पकड़ी रिवॉल्वरों पर ब्लेड की धार-सी पैनी नजरें जमाये हुये केशवपुत्र गुर्राकर बोला—"जिन खिलौनों को हाथ में लेकर तू मुझे डराने की कोशिश कर रहा है ऐसे खिलौने से तो मैं बचपन में खेला करता था। तू या तेरे खिलौनों में भरा बारूद मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकेगा—उल्टा मैं तुझे पीट-पीटकर गैंडे से पिलपिलाया हुआ चूहा जरूर बना दूंगा।"

"कुत्तेऽऽऽ...हरामजादेऽऽऽ!" पागल हाथी की मानिन्द ही चिंघाड़ उठा परमा—"मैं अभी तेरा इलाज बांधता हूं।" कहने पर उसने मुण्डे पर गोलियां बरसानी शुरू कीं।

"धांय...धांय...धांय...!"

विमल राय अपनी आंखें बन्द करके बड़बड़ाया—"इस बेचारे की मौत का जिम्मेदार मेरा साला है। कितना सुदर्शन लड़का था...।"

विमल राय ने अपनी आंखें बन्द की हुई थीं तो परमा की फटी-फटी आंखों में आश्चर्य का समन्दर ठाठें मारता नजर आ रहा था।

इधर-उधर बिखरी पड़ी एवरेडी की तीन जलती टॉर्चों की वजह से जगमग नहीं तो इतना प्रकाश जरूर था कि वहां मौजूद हरेक इन्सान और उसके चेहरे के हाव-भावों को देखा, समझा जा सकता था।

मुण्डे पर एक के बाद एक करके तीन फायर लगातार करने के बाद जब परमा को वह ना तो अपने स्थान पर नजर आया और ना ही उसकी चीख सुनाई दी! ना ही वह उसे जमीन पर परकटे कबूतर की मानिन्द तड़फता दिखा तो उसका हैरान हो उठना स्वाभाविक ही था।

हैरानी के सागर में गोते लगाते हुये वह मुण्डे को तलाश ही कर रहा था कि उसके ऊपर मानो कोई पहाड़ आ गिरा हो।

"धड़ाम...!" और वह चकराकर जमीन पर ढेर हो गया।

लेकिन वह पहाड़ नहीं बल्कि आप सबका चहेता आशीर्वाद पण्डित ही था जो परमा द्वारा गोलियां चलाते ही दबाकर छोड़े गये स्प्रिंग की मानिन्द ही पहले तो दस फुट तक हवा में उछला। फिर हवा में दो कलाबाजियां खाने पर परमा के सिर के ऊपर पहुंचने पर पैर नीचे करके नीचे उतरा और फिर उसके पैर परमा के सिर पर ठीक ऐसे ही टकराये मानो कोई आकाशीय बला उस पर टूटी हो।

परिणाम स्वरूप—परमा तो एक कब्र के ऊपर गिरा जबकि जैसे ही मुण्डे के पैर परमा के सिर से टकराये, मुण्डा उछलकर दूर पैरों के बल जमीन पर जा खड़ा हुआ।

परमा के हाथों से उसके रिवॉल्वर छूटकर इधर-उधर जा गिरे थे।

□□□
□□□

जलती टॉर्च का प्रकाश कब्र पर गिरे परमा के चेहरे पर पड़ रहा था।

उसकी तरफ देखते हुये मुण्डा कुछ ऐसे अन्दाज में मुस्कराया मानो उससे पूछ रहा हो कि बता बे गैंडे अब तेरे साथ क्या सलूक किया जाये? मार दिया जाये या छोड़ दिया जाये?

तब परमा की आंखों में पहली बार खौफ के नन्हें-नन्हें मेंढक 'छप्पक-छप्पक' करते नजर आये।

आशीर्वाद ने उस पर निगाहें टिकाये हुये ही जेब से चने के दो दाने निकाले और उन्हें मुंह में सरकाते हुये उसकी तरफ नपे-तुले अन्दाज में कदम रखते हुये बढ़ा।

परमा के गले की घण्टी जोर से उछली तथा उसके चेहरे पर पसीने की बुन्दकियां चमकने लगीं।

साथ ही उसने आस-पास जमीन पर ताश के पत्तों की तरह बिखरे पड़े दर्द से छटपटाते अपने चेलों की तरफ इस उम्मीद से देखा कि शायद वो लोग उसकी मदद के लिये उठ खड़े हों।

लेकिन!

उसके चेलों में कोई इस काबिल नहीं बचा था कि वह स्वयं से उठकर खड़ा भी हो सके।

"क्यों ओये उस्तादों के उस्ताद!" कब्र पर आतंक से सराबोर पड़े परमा की तरफ उसका मखौल उड़ाने वाली-सी निगाहों से देखते उसके निकट पहुंचने पर रेगमाल से खुरदुरे लहजे

में बोला आशीर्वाद पण्डित—"क्या हुआ? एक ही वार में तेरी उस्तादी की हवा निकल गई। उठा भी नहीं जा रहा है तुझसे? उठ...ढूंढ वो खिलौने जिनसे मेरे जिस्म में बारूद भरने की बात कर रहा था...।"

"द...देख लड़के...त...तू...जो भी है, अपनी भलाई च...चाहता है त...तो भाग ले यहां से।" आंखों तथा चेहरे पर आतंक के भाव लिये एक-एक इंच पीछे सरकते हुये तथा अपने कंपकंपाते लहजे पर भरपूर नियंत्रण रखने की असफल-सी चेष्टा करते हुये बोला परमा—"हम लोग ब...बहुत खतरनाक लोग हैं। हमारा बॉस शाकाल बहुत ही खतरनाक है। अ...अगर सीक्रेट फाइल उसे नहीं मिली तो त...तू उसके कहर से न...नहीं बच सकेगा। वो तुझे...आह!"

बाकी के शब्द की जगह उसके मुंह से निकली पीड़ा भरी कराह।

मुण्डे की ठोकर उसकी पसलियों पर पड़ी तो वह फुटबाल की मानिन्द उछलकर दूर जा गिरा और पीड़ा से कराहने लगा।

और मुण्डे की आवाज सुनकर काफी देर से आंखें बन्द किये विमल राय ने 'पट्ट' करके अपनी आंखें ऐसे खोलीं मानो बिजली का बटन दबाने पर बल्ब रोशन हुआ हो।

लड़के को सलामत तथा परमा को एक ओर जमीन पर छिपकली की कटी दुम की तरह फड़फड़ाते देखा तो आसमान की तरफ मुंह उठाकर बड़बड़ाया—"हे प्रभु! तेरी माया तू ही जाने।"

तेज-तेज कदमों से चलते हुये आशीर्वाद परमा के पास पहुंचा और उसकी गर्दन पर दायां पैर रखकर उस पर तनिक दबाव बनाते हुये किंग कोबरे की मानिन्द ही फुंफकार भरे लहजे में बोला—"बोल ओये हरामी...संजना आंटी, पिंकी तथा यश कहां हैं?"

"व...वो...गूं...गूं...गों...गों...प...पहले गले से प...पै...पैर...हम्फ...हम्फ...।"

चेहरा पके टमाटर-सा लाल हो गया था परमा का—तथा उसकी आंखें ऐसे लग रही थीं मानो अभी कटोरियों से बाहर आ जायेंगी। बोला नहीं जा रहा था उससे। दर्द से छटपटाते हुये उसने जो बोला उस पर ही वो ऐसे हांफने लगा मानो हजार मीटर की दौड़ में हिस्सा लेकर लौटा हो।

उसकी हालत देखकर मुण्डे ने उसके गले से पैर का दबाव थोड़ा कम किया ताकि वो बोल सके।

"हां ओये पिलपिली छुछून्दर...।" चने के दो दाने मुंह में सरकाने पर वो नजरों से परमा पर भाले-बरछियां-सी बरसाते हुये ग्लास पेपर से खुरदुरे लहजे में बोला—"बता क्या बता रहा था? और इतना याद रखना जो अगर तूने पिंकी, यश या संजना आंटी को पिन चुभने जैसा भी कष्ट दिया होगा तो मैं तेरे जिस्म को गन्ने की तरह निचोड़कर रख दूंगा।"

"मैं...मैंने उन्हें कुछ नहीं कहा।" तीन-चार गहरी-गहरी सांसें लेने पर बोला परमा—"व...वो सही सलामत हैं...।"

"लेकिन हैं कहां वो?" उसकी बात पूरी होने से पहले ही उसकी गर्दन पर पैर से चोट करते हुये गुर्राकर बोला छः फुट का नेवला—"जबकि विमल अंकल को फोन पर कहा गया था कि इनके फाइल देने पर आंटी और दोनों बच्चों को इनके हवाले कर दिया जायेगा।"

"व...वो...!" मारे दर्द के जमीन पर हाथ-पैर पटकते गिड़गिड़ाकर बोला परमा—"उनको मैं यहां नहीं लाया...। फाइल...लेने पर...।"

"धांय...!"

तभी एक गोली आकर परमा के सीने में धंसी और उसके नेत्रों में आतंक के भाव पलभर के लिये गहराये।

तड़फ वो पहले से ही रहा था—एक बार उसे हिचकी सी आई और फिर उसका शरीर हमेशा-हमेशा के लिये स्थिर होकर रह गया।

लड़के ने गर्दन घुमाकर उधर देखा जिधर से गोली चलाई गई थी।

दूर भागते हुये साया-सा नजर आया तो मुण्डा उसकी तरफ दौड़ा।

लेकिन वो साया तब तक उससे बहुत दूर जा चुका था। जब तक वह उसके निकट पहुंचे वो कब्रिस्तान की चार फुट ऊंची चाहरदीवारी को फांदकर पहले से स्टार्ट खड़ी बाइक पर बैठकर ये जा-वो जा हो गया।

उस साये का एक साथी पहले से ही बाइक को स्टार्ट रखे तैयार खड़ा था।

आया तो आशीर्वाद भी वहां बाइक से था, लेकिन उसकी

बाइक दूसरी ओर खड़ी थी। वो जानता था कि जब तक वो अपनी बाइक तक पहुंचेगा तब तक उसे उस बाइक की हवा तक का पता नहीं लगना था।

वो वापस लौट पड़ा।

❑❑❑

❑❑❑

"आह...मर गया मैं।"

वापस उस जगह जहां परमा मरा पड़ा था तथा उसके साथी अब तक उठकर बैठ चुके थे और अपने उस्ताद की लाश की तरफ फटी-फटी-सी आंखों से देख रहे थे, पहुंचने पर मुण्डे ने काले-कलूटे जैकी दादा के सीने पर ठोकर मारी तो वह उछलकर पीछे गिरा और दर्द के मारे तड़फने तथा चीखने-चिल्लाने लगा।

आगे बढ़कर आशीर्वाद ने उसकी कमीज का कॉलर पकड़कर उसे एक झटके से उठाया। फिर उसकी आंखों में झांकते हुये गुर्राकर बोला—"बोल ओये कालिये...अंकल की बीवी-बच्चे कहां हैं? तेरा उस्ताद उन्हें यहां क्यों नहीं लाया?"

"व...वो...!"

"हरामजादे अटक मत...।" उसे हिचकिचाता देख उसके चेहरे पर थप्पड़ मारते हुये भभके हुये से लहजे में बोला आशीर्वाद पण्डित—"जो पूछा उसका सीधे और साफ शब्दों में जवाब दे वरना तेरी जुबान खींचकर लम्बी कर दूंगा।"

"व...वो।" खौफवश थर-थर कांपते हुये बोला जैकी दादा—"बाई और उसके दोनों बच्चे उस्ताद के अड्डे पर हीच हैं। बाई और उसकी लड़की दोनों ही बहुत खूबसूरत हैं। उस्ताद की नीयत उन पर खराब हो गयेली थी। उसका इरादा इस बीड़ू से फाइल लेकर इसकू इधरीच और इसके लड़के कू बाद में अड्डे पहुंचने पर खल्लास कर देने का था और इसकी बीवी और बारह साल की बेटी कू डरा-धमकाकर हमेशा-हमेशा के लिये अपने साथ रखने का था...।"

"आंटी और बच्चे इस समय कहां हैं?" उसकी बात खत्म होने से पहले ही व्याकुल-सा होकर बोला मुण्डा।

और जैकी की बात सुनकर विमल राय तो मानो सन्न-सा रह गया।

उसके तो मानो काटो तो खून ही नहीं।

अभी कुछ देर पहले वह अपने जिस साले को कोस रहा

था जेकी की बात सुनकर वह मन-ही-मन उस साले का शुक्रगुजार हो रहा था। वह सोच रहा था कि अगर अमित उसे केशव पण्डित के यहां ना ले जाता और वो उसके कहने पर पण्डित जी से मदद की गुहार ना लगाता तो परमा ने अब तक उसका काम तमाम कर देना था। और इसके साथ ही अब तक वह जिस लड़के को लापरवाह-सा लड़का समझ रहा था उसमें उसे अब अपने इष्ट देव के दर्शन हो रहे थे।

जबकि जैकी दादा लड़के को बता रहा था कि परमा का वो अड्डा कहां था जिसमें उसने विमल राय की बीवी और दोनों बच्चों को बन्दी बनाकर रखा हुआ था।

उसकी बात सुनकर मुण्डे ने उसकी कनपटी पर घूंसा मारकर उसे बेहोशी की नींद सुलाया। फिर जेब से मोबाइल निकालकर उसमें इंस्पेक्टर अनिल यादव का नम्बर लगाकर उसे फोर्स सहित तुरन्त ही पुराने कब्रिस्तान पहुंचने को और वहां का सारा मामला संभालने को कहकर परमा के बाकी चेलों को बेहोशी की नींद सुलाकर विमल राय के साथ वहां से चल दिया।

❑❑❑
❑❑❑

"भूल चुका था मैं उस हरामी पण्डित को...।" राज सिंहासन जैसी कुर्सी के हत्थे पर घूंसा मारकर किंग-कोबरे की मानिन्द ही फुंफकारा वह माइका जैसी चिकनी टांट वाला शख्स—"उसके दिये जख्म को जो कि अभी भरा नहीं, और ना ही कभी भरेगा क्योंकि उस तरफ वर्षों से ध्यान तक नहीं दिया था। लेकिन आज...अभी जब तुमने उसका नाम लिया तो मेरा ध्यान वर्षों पुराने उस जख्म की तरफ चला गया है। उस पुराने जख्म में टीसें भी उठने लगी हैं जोरावर। भूल चुका था मैं पण्डित को...आज फिर ध्यान हो गया उस हरामी की तरफ। तुमने बताया कि उसके लड़के ने मेरा काम बिगाड़ा। उसी हरामी के लड़के की वजह से तुम्हें मेरे वफादार परमा को मारना पड़ा। नहीं छोडूंगा उस संपोलिये को। उसके मारने से केशव से मेरा वर्षों पुराना हिसाब भी चुकता हो जायेगा। लेकिन जोरावर...ये बात मेरी समझ में नहीं आई कि जब तुम्हारे पास मौका था और तुमने छुपकर परमा को गोली मारी तो तुम उस हराम के पिल्ले को भी तो खत्म कर सकते थे। उसे मारने पर परमा बच जाता और वो सीक्रेट फाइल भी हमारे हाथ लग जाती।"

"शाकाल साहब...।" छः फुट लम्बा, लेकिन छरहरे बदन वाला जिसकी नाक नीचे से तोते जैसी नुकीली थी राज सिंहासन जैसी कुर्सी पर बैठे शाकाल के सामने सिर झुकाये खड़ा था, सम्मान भरे लहजे में बोला—"आशीर्वाद को यूं मार गिराना इतना ही आसान होता तो अब तक वो हजार बार मर चुका होता। पता नहीं उसकी किस्मत कितनी बुलन्द है कि पिछले तीन वर्षों से उसको खत्म करने के लिये आई० एस० आई०, सी० आई० ए० जैसी खतरनाक जासूसी संस्थाओं के अलावा मुम्बई और दुबई के खतरनाक माफिया के लोग कई बार प्रयास कर चुके हैं। एक से बढ़कर एक बढ़िया प्लान तैयार किये गये, उस पर घात लगाकर वार किये गये लेकिन सफलता किसी को नहीं मिली। ऊपर से उसे खत्म करने की कोशिश करने वाले उसके हाथों मारे गये। आप केशव पण्डित के बारे में तो जानते ही हैं कि वो कितना खतरनाक है—अब मैं आपको ये कहूंगा कि उसका लड़का उससे भी ज्यादा खतरनाक है तो आप मुझ पर बिगड़ जायेंगे। लेकिन हकीकत फिर भी यही है कि वो छः फुट का नेवला अपने बाप से भी ज्यादा खतरनाक है। उस पर गोली ना चलाकर परमा को इसीलिये खत्म किया कि मेरे मन में इस बात का डर-सा था कि अगर चलाई गोली से वो लड़का बचा तो फिर वो परमा के जरिये यहां, आपके इस ठिकाने तक पहुंच जायेगा। और...।"

"और क्या बेवकूफ...?" क्रोधित नाग की मानिन्द ही फुंफकारा शाकाल—"वो लड़का यहां तो मारा भी जाता। उसके मरने से मेरे कलेजे में ठण्ड-सी पड़ जाती। अब तुमने बताया कि वो केशव पण्डित का लड़का है तो मेरा दिमाग खराब होकर रह गया है। काश...! काश कि वो यहां आता और मुझे पता होता कि वो मेरे दुश्मन केशव का बेटा है तो मैं उसे चीर फाड़कर रख देता।"

"शाकाल साहब...अगर आप उसे खत्म ही करना चाहते हैं तो उसे यहां बुलाया जा सकता है।" शाकाल के सम्मान में सिर झुकाये खड़ा जोरावर सिंह तनिक दबे हुये से लहजे में बोला—"प्लान बनाकर हम उसे यहां बुलायेंगे और फिर घेरकर मार डालेंगे। वैसे...।"

तभी शाकाल की कलाई में बंधी घड़ी से एक अति सूक्ष्म-सी सुई निकलकर उसकी कलाई में चुभन-सी पैदा करने लगी तो

उसने जोरावर को चुप रहने का इशारा किया तो उसने अपने होंठ भींच लिये।

❑❑❑
❑❑❑

पुरानी मुम्बई की एक तंग गली में आशीर्वाद ने एक ऐसे मकान के सामने बाइक रोकी जिसकी दीवारों पर नीले रंग का पेन्ट हुआ था और लकड़ी के दो दरवाजों पर महरून पेंट हुआ था।

जैसे ही केशवपुत्र ने बाइक को रोका, गली के कुछ आवारा कुत्ते जोर-जोर से भौंकने लगे थे।

"अंकल...आप बाहर ही रहेंगे।" बाइक को स्टैंड पर खड़ी करते हुये वह बोला—"अन्दर अकेला मैं ही जाऊंगा। आप किसी तरह की चिन्ता नहीं करना।"

विमल राय ने मुंह से कुछ न कहकर उसकी बात का समर्थन सिर हिलाकर किया।

मुण्डे ने जेब से चने के दो दाने निकालकर मुंह में सरकाये और आगे बढ़कर दरवाजा भड़भड़ाना शुरू किया।

दो मिनट तक लगातार दरवाजा भड़भड़ाने पर भी जब दरवाजा नहीं खुला तो मुण्डा एक कदम पीछे हटा और फिर अपने दायें कंधे की चोट दरवाजे पर की तो दरवाजा चौखट से अलग होकर अन्दर जा गिरा।

नीलम-सी नीली आंखों वाला कुटुर-कुटुर करते हुये जमीन पर गिरे दरवाजे के ऊपर से होते हुये अन्दर पहुंचा।

काफी बड़ा मकान था—कई कमरे थे उसमें। एक-एक कमरे में झांकते हुये वह अन्त में एक बड़े से कमरे में पहुंचा जिसमें दो पहलवान टाइप के गुण्डे नशे में धुत्त होकर एक कुर्सी में बंधी हुई संजना के साथ अश्लील किस्म की हरकतें कर रहे थे और उसके तड़फने...फड़फड़ाने पर उसकी बेबसी पर ठहाके लगा रहे थे।

चार खाने का तहमद पहने एक गुण्डा संजना के वक्षों पर हाथ फेरते हुये नशे में लहराती आवाज में कह रहा था—"त...तू बोत खूबसूरत है बाई...तेरे कू देखकर अपुन का भेजा खराब हो रहेला है। अपुन को अपुन के उस्ताद का डर नेई होता या वो अपुन लोगों को वार्निंग देकर नहीं गया होता कि पीछू बाई

को और उसकी छोकरी को टच भी नेई करना तो अपुन तेरे को छोड़ता नेई...।"

"येहीच तो गड़बड़ हो गयेली है नत्थू भाई...।" दूसरा गुण्डा तो जो कि सिर्फ चड्ढी-बनियान में था, दूसरी कुर्सी पर बंधी सुबक रही बारह वर्षीय पिंकी के गालों पर अपनी केले जैसी मोटी तथा रेगमाल जैसी खुरदुरी उंगली फिराते हुये वासना भरे लहजे में बोला—"उस्ताद अपुन लोगों कू इन लोगों को हाथ भीच नेई लगाने का हुक्म देकर गया। पन साला अपुन का भेजा इस छोकरी कू देखकर घूम रहेला है। इसका रेप नेई कर सकता अपुन पन इसका एक-एक कपड़ा इसके जिस्म से अलग करके इसकू चूम-चाट तो करेगा हीच। अपुन खोल रहेला है इसे। बाद में अगर ये उस्ताद कू शिकायत भी करेगी तो वो अपुन लोगों कू कुछ नेई कहने का। छोटी-सी बात के लिये वो अपुन लोगों कू कुछ नेई बोलेगा। खास जो है अपुन लोग उसका...।"

"तुम्हारा उस्ताद तो तुम्हें कुछ नहीं कहेगा ओये हरामियों। वो कुछ कहने-सुनने लायक रहा ही नहीं। कुत्ते की मौत मारा गया है। अब तुम लोग भी अपने उस्ताद की तरह ही कुत्ते की मौत मरने वाले हो।"

दोनों पहलवान चिहुंकने के बाद पलटे।

"कौन है बे तू...?" सामने एक कम उम्र के लड़के को देखकर नेत्र सिकोड़कर माथे पर बल डालकर बोला चड्ढी-बनियान वाला कासिम—"अन्दर कैसे आयेला है? दरवाजा तो अपुन हीच अन्दर से बन्द कियेला था।"

"बड़ा ही कमजोर-सा था वो दरवाजा। हल्की-सी ठोकर में ही चारों खाने चित्त हो गया। अब तुम दोनों की बारी है वासना के मारे जानवरों।" कुटुर-कुटुर करते हुये गुर्राकर बोला केशवपुत्र—"एक छोटी-सी बच्ची के लिये कुत्तों की तरह लार टपकाने वाले जानवर...आज तुझे तो ऐसा सबक सिखाऊंगा कि आज के बाद कभी किसी औरत की तरफ देखते हुये भी तुझे शर्म आयेगी।"

एक कम उम्र के लड़के द्वारा अपमानित किये जाने पर कासिम का सांवला-सा चेहरा मारे क्रोध के हीटर के एलीमेंट की मानिन्द ही सुर्ख नजर आने लगा।

उसकी मुट्ठियां यूं ही भिंच चलीं मानो उस समय उनमें

बच्चों के खेलने वाले कंचे होते तो पिसकर उनका पाउडर बन जाना था।

नत्थू पहलवान भी मुण्डे के दुस्साहस पर हैरान हो रहा था।

जबकि संजना भी मुण्डे को लेकर दुविधा में पड़ी सोच रही थी कि लड़का कहीं कुछ क्रेक तो नहीं था जो बदमाशों के अड्डे में अकेला आने पर अपने से दुगने-तिगुने भारी-भरकम पहलवानों से उलझ रहा था। हालांकि उसके मन में यह भी था कि वह सुन्दर-सलोना लड़का उनके फेवर में गुण्डे-बदमाशों से पंगा ले रहा था।

इसके अलावा नीलम-सी नीली आंखों वाला मुण्डा बारह वर्षीय खूबसूरत गोल-मटोल गुड़िया सी पिंकी तथा छः वर्षीय खूबसूरत गोरे, दूध से चिट्टे यश को कार्टून फिल्मों का हीरो सुपरमैन जैसा ही लग रहा था।

मुण्डे को देखकर उनके मन में यही था कि वो सुपरमैन की तरह ही उन गुण्डे-बदमाशों को मार-मारकर उनका तीया-पांचा एक कर देगा।

फिर हुआ भी पिंकी और यश के मन का।

क्रोध में बिफरे सांड की मानिन्द ही जब नथुनों से फुंफकारे छोड़ते हुये कासिम मुण्डे की तरफ बढ़ा तो मुण्डे ने हवा में उछलकर उसके सीने में जो फ्लाइंग किक जमाई तो वह गैस भरे गुब्बारे की तरह उड़ते हुये पीछे दीवार से टकराने के बाद ऐसा गिरा कि उठने की कोशिश करने पर भी उससे उठा नहीं गया।

ये देख तीस वर्षीय संजना की आंखों में उम्मीद की किरण-सी लहराई।

अब तक एक प्रकार से निराश-सी हो चली संजना के मन में विश्वास-सा जगा कि सामने खड़ा छः फुटा और खूबसूरत-सा लड़का उसके तथा उसके दोनों बच्चों के लिये कोई ईश्वरीय अवतार ही था।

"हे प्रभु।" वो आंखें बन्द करके बुदबुदाई—"आज मुझे इस लड़के के रूप में तेरे दर्शन हो रहे हैं। सुना और पढ़ा है कि जिसको तू जीवित रखना चाहे उसका कोई बाल भी बांका नहीं कर सकता है। आज तेरी लीला देख रही हूं। तू महान है। तेरी लीला अपरम्पार है। तू धन्य है।"

जबकि अपने साथी को एक लड़के से पिटता देख नत्थू पहलवान क्रोध में आकर दांत पीसते हुये लड़के की तरफ बढ़ते

हुये गुर्राकर बोला—"हरामजादे...कुत्ते...कल लौंडे...तूने अपुन के भाई कासिम कू ठोंका। अपुन तेरे कू छोड़ेगा नेई। तेरी चटनी बनाकर रख...आह!"

उसकी बात पूरी होने से पहले ही मुण्डे ने उसका हाथ पकड़कर उमेठा तो वह मुंह के बल जमीन पर गिरा और उसकी नाक फूट गई।

"वाओ सुपरमैन।" छः वर्षीय यश उत्साह में भरकर चिल्लाया—"इस बदमाश के सिर पर ऐसी ठोकर मारो कि इसकी नाक चेहरे के अन्दर घुस जाये।"

"ऐसा प्यारे।" मुण्डा भी मस्ती में आकर यश की तरफ देखते हुये बोला—"तो लो, इस पहलवान की नाक का अब पता भी नहीं चलने वाला।" कहने पर उसने अपने पैर की भरपूर ठोकर नत्थू के सिर पर मारी तो वह दर्द से बिलबिलाते हुये अपने हाथ-पैर जमीन पर पटकने लगा।

मुण्डे ने झुककर उसके बाल पकड़कर उसका चेहरा ऊपर किया और यश की तरफ देखते हुये बोला—"देख प्यारे यश! इसके चेहरे से नाक गायब हुई या नहीं?"

"गायरब है सुपरमैन।" खुश होकर बोला यश—"मजा आ गया, तुम तो सच के हीरो हो। वो दूसरा...चड्ढी पहलवान उठ रहा है। इसको नचाकर दिखाओ तो मजा आ जाये। ये हरामजादा मम्मी को बहुत तंग कर रहा था।"

"ऐसा है तो यश...।" चने के दो दाने मुंह में सरकाने पर कासिम की ओर बढ़ते हुये बोला छः फुट का नेवला—"अभी मैं इस हरामी को रॉक-एन-रोल करवाता हूं।"

संजना, पिंकी और यश की निगाहें उसी पर टिकी हुई थीं।

कासिम उठ चुका था और मुण्डे को भस्म कर देने वाली-सी निगाहों से देखते हुये क्रोधित नाग की तरह ही फुंफकार मार रहा था।

"रुक चड्ढी पहलवान...अभी मैं तेरी तबियत दुरुस्त करता हूं।"

जैसे ही लड़का उसके नजदीक पहुंचा उसने लड़के की कोहली भरने के लिये अपनी बांहें फैलाईं—

तभी मुण्डे ने अपनी हथेलियों को तलवार का सा इस्तेमाल करते हुये उसके कंधों पर जोरदार प्रहार किया।

'कड़ाक' की आवाज हुई और कासिम के समूचे जिस्म में

पीड़ा की एक तेज लहर दौड़ती चली गई। उसने हाथ नीचे करने चाहे, तो उससे हाथ नीचे ना किये गये।

हाथ को हिलाते ही उसके बदन में दर्द की इतनी तेज तरंगे उठीं कि उसकी आंखों में आंसू आ गये।

बेबस तथा लाचार-सा होकर रह गया वो।

फिर मुण्डे ने उसका एक हाथ पकड़ा और उसको धीरे-धीरे झटके देने शुरू किये तो वह दर्द से बिलबिलाते...चीखते-चिल्लाते हुये डांस-सा करने लगा।

"वाह! वाह सुपरमैन! मजा आ गया।" यश चिल्लाया तो संजना और पिंकी के मुरझाये पड़े चेहरे कंवल से खिल उठे।

फिर मुण्डे ने तीनों के बंधन खोले। एक बार फिर से इंस्पेक्टर अनिल यादव को फोन करके वहां का पता बताया। दोनों पहलवानों की गर्दनों पर कैरट चाप का प्रहार करके उन्हें बेहोशी की नींद सुलाने पर उन तीनों के साथ बाहर आया।

अपनी बीवी बच्चों को सलामत देख विमल राय ने मुण्डे के पैर पकड़ लिये।

"यूं उम्र में मेरे से छोटे हो आशीर्वाद जी...।" वह भीगे हुये से लहजे में बोला—"लेकिन मेरे लिये तुम ईश्वर का एक रूप हो। अगर तुम मदद ना करते तो आज...आज संजना...पिंकी...यश...जाने इनका क्या होता?"

"कुछ नहीं होता इनका अंकल जी...।" कुटुर-कुटुर करते हुये केशवपुत्र ने झुककर विमल राय की बांहों को पकड़कर उसे उठाया—"ईश्वर की मर्जी के बिना कभी कहीं कुछ भी नहीं होता। आप मुझे नहीं ईश्वर को धन्यवाद कहें। आइये मैं आप लोगों के साथ पैदल ही टैक्सी स्टैंड तक चलता हूं। आप लोगों को टैक्सी में बैठाकर घर रवाना करने पर ही मैं अपने घर के लिये चलूंगा।"

❑❑❑
❑❑❑

वह राजा-महराजाओं के राजदरबार जैसा सजा एवं बड़ा-सा हॉल था जिसमें एक तीन स्टेप वाली सीढ़ियों के ऊपर बने चबूतरे के ऊपर पड़ी राजसिंहासन जैसी कुर्सी पर माइका जैसी चिकनी टांट वाला शाकाल बैठा हुआ था।

उसके सामने उसका खास एवं वफादार सेवक जोरावर था तो उस हॉल में जगह-जगह नीली वर्दी वाले अत्याधुनिक शस्त्रों से लैस गार्ड सतर्क मुद्रा में खड़े थे।

कलाई घड़ी से निकली सुई की कलाई में चुभन को महसूस करने पर शाकाल ने जोरावर को शान्त रहने का इशारा किया था। फिर घड़ी से उसकी चाबी भरने वाली या समय मिलाने वाली सुई को बाहर खींचते हुये जोरावर से कहा कि फिलहाल वो उसके पास से हट जाये तो जोरावर उससे दूर चला गया।

सुई खींचने पर शाकाल कलाई को अपने कान तथा मुंह के बीच में रखते हुये फुसफुसाकर बोला—"कमांडर साहब...शाकाल बोल रहा हूं।"

"हां शाकाल...।" दूसरी तरफ से डायमण्ड जैसे कठोर लहजे में कहा गया—"बोलो, तुम्हें जो काम सौंपा गया था उसका क्या हुआ? वो सीक्रेट फाइल तुम्हारे हाथ लगी या नहीं?"

"अ...अभी मेरे हाथ नहीं आई वो फाइल।" तनिक हड़बड़ाकर बोला शाकाल—"लेकिन कमांडर साहब...जल्दी ही वो फाइल मेरे पास होगी और उसे मैं आपके पास भेज दूंगा। वो फाइल...आज अभी तक आ जानी थी मेरे पास लेकिन केशव पण्डित के छोरे की वजह से वो...।"

"क...क्या बोला तुमने शाकाल?" चौंकता हुआ स्वर शाकाल के कानों से उसकी अपनी बात पूरी होने से पहले ही टकराया—"केशव पण्डित के छोरे...यानि आशीर्वाद पण्डित की वजह से वो फाइल तुम्हारे हाथ नहीं आई? लेकिन उस हरामी को इस मामले की भनक कैसे लगी? वो कुत्ते का पिल्ला तो बहुत ही खतरनाक है। उसे मामले की भनक लग गई है तो निश्चित जानो कि वह मामले की जड़ खोदे बिना नहीं रहेगा। इस मामले में उसका जिक्र करके तुमने मुझे फिक्र में डाल दिया है।"

"आप उसकी तरफ से फिक्रमन्द ना हों कमांडर। मैं उस कुत्ते...।"

"तुम उसे ठीक से नहीं जानते हो शायद तभी ऐसा कह रहे हो शाकाल।" रेगमाल से भी ज्यादा खुरदुरा लहजा था वह—"वो तुम्हारी सोचों से भी ज्यादा खतरनाक है। उसे दिमाग का चैम्पियन कहा जाता है। उससे उलझने की कोशिश भी नहीं करना वरना वो तुम्हारा बैण्ड बजाकर रख देगा। उससे दूर रहने में ही तुम्हारी भलाई है। वैसे, इस मामले में उसका दखल कैसे बना?"

"मालूम नहीं कमांडर। लेकिन कल तक मैं पता लगा लूंगा कि वो मेरे खास आदमी परमा तक कैसे पहुंचा था। वैसे

कमांडर...आपसे मैं कहना ये चाह रहा था कि वो मुझ तक नहीं पहुंच सकता है। परमा तक वो पहुंचा था। परमा अपने दर्जनभर चेलों के साथ गृह मंत्रालय के बाबू से फाइल लेने गया था। परमा ही मेरे अड्डे के बारे में जानता था। उसी की पहुंच मुझ तक थी। उसके चेलों में कोई कभी यहां मेरे पास नहीं आया था। और परमा आशीर्वाद पण्डित को या पुलिस को मुझ तक पहुंचने का रास्ता बताने के लिये जीवित नहीं रहा। जैसे ही वो पण्डित के हत्थे चढ़ा, वहां मौजूद मेरे राइट हैण्ड ने उसे गोली मार दी।"

"तुम्हारे राइट हैण्ड ने ये समझदारी भरा काम किया। खैर, फिलहाल तुम्हें उस पण्डित की औलाद से उलझने की ज़रूरत नहीं है। और फिलहाल उस सीक्रेट फाइल को भी कुछ दिनों के लिये भूल जाओ। एक नया मिशन लेकर ब्रिगेडियर लू चिन तुम्हारे पास पहुंच रहा है। उसके पास तुम्हारा कॉन्टेक्ट नम्बर है। मुम्बई पहुंचने पर वो तुमसे सम्पर्क करेगा। आगे जो करना है वो ही तुम्हें बतायेगा। ओवर एण्ड ऑल।"

कहने पर दूसरी तरफ से सम्पर्क काटा गया तो शाकाल अपने घड़ी-रूपी ट्रांसमीटर की बाहर निकाली सुई को यथा स्थान पहुंचाने पर उठ खड़ा हुआ।

❑❑❑
❑❑❑

रविवार! छुट्टी का दिन!

आशीर्वाद पण्डित सुबह नौ बजे पालीहिल पुलिस स्टेशन के इन्टेरोगेशन रूम में था। उसके साथ बिल्लौरी आंखों वाला इंस्पेक्टर अनिल यादव और इलेक्ट्रॉनिक चेयर पर जैकी दादा था।

"अब भी वक्त है कालिये...।" जैकी दादा की आंखों में झांकते हुये गुर्राकर बोला केशवपुत्र—"बता दे शाकाल मुझे कहां मिलेगा? उसका पता बताने पर तुझे कुछ नहीं कहूंगा। अगर तूने टाल-मटोल की तो उसका पता तो मैं तेरे से कबूलवा ही लूंगा, लेकिन तब तेरा जो हाल होगा वो तेरी कल्पना से परे होगा...।"

"अ...अपुन सच में हीच शाकाल का पता नेई जानता बाप।" मुण्डे की रात वाली पिटाई से खौफ खाया हुआ जैकी आतंकित से लहजे में बोला—"अपुन का उस्ताद शाकाल के लिये काम करता था ये तो अपुन को मालूम था। पन शाकाल

कौन...किधर कू पाया जाता है अपुन कू, अपुन कू क्या अपुन के और भी किसी बीडू कू नेईच पता। अपुन स...सच बोल रहेला है बाप। अपुन की बात पर विश्वास करने का। मारने का नेई...अपुन को रात कोहीच तू बहुत ठोकेला है। अब अपुन और मार बर्दाश्त नेई कर पायेगा। मर जायेगा। अपुन छोटा-मोटा मवाली लोग है। परमा उस्ताद के कहने पर उसका छोटा-मोटा काम करके अपना काम चला रहेला था। बाकी वो क्या कर रहेला है अपुन बगैर पढ़ा-लिखा टपोरी बिल्कुल हीच नेई जानता।"

मुण्डा तो शुरू से ही उसकी आंखों में झांक रहा था। उसे जैकी सच बोलता लगा लेकिन फिर भी उसके सच-झूठ को परखने के लिये उसने अपने दायें हाथ की तर्जनी उंगली को उसकी ठोड़ी के नीचे विशेष जगह टिकाकर उस पर कम्पन देना शुरू किया तो—

"ईऽऽऽ ई ऽऽऽऽऽ!" जैकी दादा बेतहाशा चीखने लगा तथा उसका जिस्म यूं ही झटके खाने लगा मानो उसे चार सौ चालीस वोल्ट का करेन्ट लगाया जा रहा हो।

तीस सैकेंड बाद ही मुण्डे ने उसकी ठोड़ी से अपनी उंगली हटा ली।

जैकी दादा की चीखों पर तो ब्रेक लग गये—लेकिन उसका जिस्म कुछ देर तक तो तेज-तेज झटके खाता रहा।

फिर धीरे-धीरे झटके कम होते चले गये।

फिर जब उसका जिस्म शान्त हुआ तो उसके चेहरे पर तथा आंखों में खौफ के असंख्य चील-कौव्वे उड़ते नजर आ रहे थे।

"अब बोल, कहां है शाकाल का अड्डा?" चने के दो दाने मुंह में डालने पर चने के दानों के साथ ही मानो अपना हरेक शब्द चबाते हुये-सा बोला आशीर्वाद—"अब अगर तूने कहा कि तू उसके अड्डे के बारे में नहीं जानता तो इस बार आधे घण्टे तक अपनी उंगली तेरी ठोडी से नहीं हटाऊंगा।"

"रहम कर बाप। ईश्वर के वास्ते अपुन पर रहम कर।" गिड़गिड़ाकर बोला जैकी दादा—"अपुन सच में हीच शाकाल का अड्डा नेई जानता। अब अपुन को ऐसे टार्चर नेई करने का। तेरे कू विश्वास ना हो कि अपुन सच बोल रहेला है तो तू अपुन को गोली मार दे। पन ऐसे नहीं करने का...।"

फिर आशीर्वाद कुछ देर तक तो जैकी की आंखों में आंखें डाले वहीं खड़ा चने चबाता रहा। तत्पश्चात् अनिल यादव से

मुखातिब हो बोला—"चलिये इंस्पेक्टर अंकल...अब इससे मगजमारी करने से कोई फायदा नहीं।"

उसके बाद वह दोनों लॉकअप में पहुंचे जहां परमा के और भी चेले थे। मुण्डे ने अपने तरीके से बारी-बारी करके उन चेलों से शाकाल के बारे में पूछा, लेकिन जब किसी को शाकाल के बारे में या उसके अड्डे के बारे में कुछ पता ही नहीं था तो कोई उसे बताता क्या?

निराश होकर आप सबका चहेता ट्रिपल सी के महाराष्ट्र एरिये के हैडक्वार्टर की ओर चल पड़ा।

गुप्त रास्ते से आशीर्वाद महाराष्ट्र एरिये के ट्रिपल सी के चीफ वाले ऑफिस पहुंचा और चीफ वाली कुर्सी पर बैठकर शाकाल के विषय में सोचने लगा।

जिस गुप्त रास्ते से वह उस ऑफिस पहुंचा था उस रास्ते का ज्ञान उसके अलावा धन्नो को था। क्योंकि उससे पहले ट्रिपल सी के महाराष्ट्र एरिये की चीफ वही थी और जोकर के वेष में वह उस ऑफिस में बैठा करती थी। आशीर्वाद पण्डित के रेगुलर पाठक जानते हैं कि 'जोकर भिड़ेगा चैम्पियन से' नामक उपन्यास में धन्नो का भेद आशीर्वाद के सामने खुलने पर धन्नो ने चीफ पद से इस्तीफा दे दिया था और ट्रिपल सी के चीफ भारत-पुत्र के आदेश पर आशीर्वाद पण्डित ने शर्त के साथ चीफ अर्थात् जोकर बनना स्वीकार किया था।

जोकर बनने के लिये उसने यह शर्त रखी थी कि वह कभी-कभार ही जोकर बनकर उस कुर्सी पर बैठेगा अन्यथा तो धन्नो ही जोकर के वेष में उस कुर्सी पर बैठा करेगी और ट्रिपल सी के अन्य मेम्बरों के सामने उसे पहले की तरह आदेश दिया करेगी। दरअसल मुण्डा कुर्सी से नहीं बंधना चाहता था। उसे फील्ड में रहकर काम करना अच्छा लगता था। और चूंकि फील्ड में उसकी जरूरत भी थी इसलिये भारतपुत्र ने उसकी शर्त को सहर्ष ही स्वीकार भी कर लिया था।

खैर ये बीती बातें थीं। आगे की कहानी ये कि ऑफिस में कुर्सी पर बैठते ही आशीर्वाद शाकाल के विषय में सोचने लगा। उसके दिमाग में रह-रहकर ये प्रश्न चकरा रहे थे कि शाकाल कौन है? उसका सम्बंध किसी देश की किसी जासूसी संस्था से है अथवा वो कोई मुजरिम है जो देश के सीक्रेट्स विदेशी एजेन्टों को बेच रहा है?

रात विमल राय वाली घटना ने उसे चौकन्ना कर दिया था।

अभी वह शाकाल के विषय में सोच ही रहा था कि सामने मेज पर पड़े ट्रांसमीटर पर 'पिक-पिक' की ध्वनि के साथ उसमें लगा लाल रंग का छोटा-सा बल्ब स्पार्क करने लगा।

आशीर्वाद ने हाथ बढ़ाकर ट्रांसमीटर चालू किया और उसका हैडसेट कानों पर न चढ़ाकर एक्स्ट्रा स्पीकर ऑन करके सम्मानपूर्ण लहजे में बोला—"नमस्कार भारत-पुत्र जी...।"

"हरिओम...!" भारी-भरकम आवाज में 'हरिओम' शब्द का उच्चारण करने के बाद कहा गया—"नमस्ते जोकर! तुम्हारे लिये एक महत्वपूर्ण काम है। चीन से हमारे एक एजेन्ट ने मुझे रिपोर्ट किया है कि चीनी सीक्रेट सर्विस सी० एस० एस० का खतरनाक एजेन्ट लू चिन कल दिन दो बजे वाली फ्लाइट से मुम्बई पहुंच रहा है। वहां वो सी० एस० एस० के स्थानीय एजेन्ट शाकाल से मिलेगा। उसके पास कोई खतरनाक प्लान है। वो प्लान क्या है इसकी जानकारी हमारे एजेन्ट को नहीं लग सकी—उस प्लान का तुम्हीं ने पता लगाना है और उसे नाकाम भी करना है। इसके अलावा शाकाल की खबर भी तुम्हें लेनी है। उसके बारे में हमारे एजेन्ट की रिपोर्ट बताती है कि इन दिनों वो भारत के रक्षा सम्बंधी सीक्रेट्स इकट्ठा करके चीन भेज रहा है।"

"मुझे इस बात की खबर कल ही हुई है भारतपुत्र जी...।" अपनी आदत के अनुसार मुण्डे ने जेब से दो दाने चने के निकाले, और उन्हें मुंह में डालने से पहले ही कुछ सोचकर रुका और सम्मान भरे लहजे में बोला—"अभी मैं शाकाल के विषय में ही सोच रहा था। अब आपने बताया कि कल उससे लू चिन मिलने वाला है तो मैं लू चिन के जरिये शाकाल तक पहुंचकर उसका और लू चिन दोनों का काम तमाम कर दूंगा।"

"लेकिन जोकर...तुम्हें शाकाल के विषय में कैसे पता लगा?" भारी-भरकम आवाज में पूछा गया।

जवाब में मुण्डे ने विमल राय वाला किस्सा भारतपुत्र को कह सुनाया।

उससे सारा किस्सा सुनने के बाद भारतपुत्र ने ये कहकर कि अब उस मामले को उसने ही देखना है, सम्बंध विच्छेद कर दिया।

उसके बाद आशीर्वाद सोचने लगा कि उसने आगे क्या और कैसे करना है?

❑❑❑
❑❑❑

दूसरे दिन अर्थात् सोमवार को सुबह आशीर्वाद कॉलेज के लिये तैयार हो रहा था कि उसके पास धन्नो का मैसेज आया कि उसकी तबियत खराब होने पर वो ऑफिस नहीं पहुंचने वाली थी अतः ऑफिस का काम उसे ही देखना-समझना होगा।

धन्नो के फोन आने पर मुण्डे ने टीटू और विशाखा को फोन करके बता दिया कि उस दिन कॉलेज नहीं आ रहा था। फिर वो ऑफिस पहुंचा।

कुछ देर तक तो वह बैठा सोचता रहा कि उसे क्या करना चाहिये। फिर उसने मेज की निचली बड़ी वाली दराज से जोकर के बहरूप वाला सामान निकाला।

अपने कपड़े उतारकर उसी दराज में डाले और सबसे पहले पांच सौ से भी ज्यादा नये-पुराने कपड़ों को जोड़कर बनाया गया कोट पहना। चेहरे पर जोकर वाला मास्क लगाया। उस मास्क पर लाल व सफेद रंग से विचित्र-सा डिजाइन बना हुआ था तथा होंठों पर गाढ़ी-गाढ़ी लिपिस्टक पोती हुई थी।

नाक की नोक पर भी लाल रंग की आधी गेंद फिट थी। तत्पश्चात् उसने सिर पर सर्कस के जोकरों जैसी ही बहुत लम्बी व ईस्टमैन कलर की टोपी फिट की। टोपी के ऊपरी हिस्से से एक धागा बाहर निकला हुआ था और धागे के छोर पर ऊन की बनी लाल, नीली, पीली, हरी गोलियां सी बंधी हुई थीं।

अन्त में उसने जो चश्मा आंखों पर चढ़ाया उसका एक शीशा काला तथा दूसरा लाल रंग का था।

ये सब तैयारी करने पर उसने हाथ बढ़ाकर वाकी-टॉकी का बटन दबाया और फटे बांस जैसी आवाज में बोला—"मुमताज...छोटे नवाब, मत करो समय खराब। जल्दी से पहुंचो मेरे ऑफिस...वरना लेकर आ रहा हूं मैं माचिस।"

बस इतना ही कहकर उसने वाकी-टॉकी का बटन ऑफ कर दिया और मेज पर पड़ी लाल रंग की टाई पहनने लगा।

❑❑❑
❑❑❑

"यार वंश...वो देख, आज तो तुम्हारे दिल की धड़कन अकेले आ रही है। बढ़िया मौका है। कर ले इससे अपने दिल की बात। पकड़कर हाथ बोल दे कि तू इससे प्यार करता है।"

"नहीं बे...म...मुझे नहीं छेड़ना उस बर्र को।" बीस वर्षीय, गोरा-चिट्टा तथा छः फुटा वंश हड़बड़ाकर एक कदम पीछे हटता हुआ बोला—"बड़ी तेज डंक मारती है। अभी तीन दिन पहले सुरेश ने उसे रोका था तो उसने गाल पर थप्पड़ जड़ दिया था। क्यों ओये सुरेश, गलत तो नहीं कह रहा मैं?"

"ठीक कह रहा है तू वंश...साली बहुत खतरनाक है। आशीर्वाद पण्डित की चहेती है ना।" बुरा-सा मुंह बनाकर बोला सुरेश—"साथ में जूडो-कराटे भी सीखे हुये हैं। रोका भी नहीं था इसे...बस, बगल से निकली तो मुंह से सीटी बज गई। साली है भी झक्कास आइटम। मुंह से सीटी निकलते ही गिरेहबान थामकर मुंह पर थप्पड़ जड़ दिया। ये तो कहो उस समय गैलरी में मेरे साथ राजन ही था, बाकी गैलरी सुनसान पड़ी थी। कोई और देख लेता इज्जत का कचरा बन जाना था। लेकिन एक बात कहता हूं...।" इतना कहने पर वह चुप हो गया।

उसी समय उन चारों दोस्तों के बगल से होकर विशाखा उर्फ गुड्डी गुजरी। उसी की वजह से अपनी वाणी को फुल स्टॉप लगाया था सुरेश ने।

विशाखा उर्फ गुड्डी।

पन्द्रह वर्षीय! गोरी-चिट्टी। कद पांच फुट दस इंच के करीब। खूबसूरत इतनी कि परी देश की राजकुमारी ही लगती है। उसी को देखकर कॉलेज की गैलरी में मौजूद चार सीनियर स्टूडेंट आपस में बातें कर रहे थे।

"हां तो सुरेश, तू क्या कह रहा था?" विशाखा जब उनके बगल से होकर तनिक आगे निकल गई तो गौरव नामक लड़का सुरेश से मुखातिब हो बोला—"विशाखा के बारे में कुछ कहने जा रहा था ना...?"

"हां, मैं कह रहा था कि इस घमंडी लड़की ने मेरे मुंह पर चांटा मारकर मुझे बेइज्जत किया है। इससे मैं उस चांटे का बदला जरूर लूंगा।" कहते हुए यकायक ही उसका चेहरा डायमण्ड-सा सख्त हो चला और उसके मुंह से मानो शब्द नहीं आग की लपटें ही निकल रही थीं—"हरामजादी की इज्जत का ऐसा कचरा करूंगा कि अपने आप से नफरत करने लगेगी।"

"यार ऐसा कोई मौका हाथ लगे तो मुझे भी बुला लेना सुरेश।" हाथ मलते हुये वंश बोला—"मुझे भी यह बहुत अच्छी लगती है। मेरा वश चले तो सबके सामने ही रेप कर डालूं उसका।"

□□□
□□□

दूसरे दिन अर्थात् सोमवार को सुबह आशीर्वाद कॉलेज के लिये तैयार हो रहा था कि उसके पास धन्नो का मैसेज आया कि उसकी तबियत खराब होने पर वो ऑफिस नहीं पहुंचने वाली थी अतः ऑफिस का काम उसे ही देखना-समझना होगा।

धन्नो के फोन आने पर मुण्डे ने टीटू और विशाखा को फोन करके बता दिया कि उस दिन कॉलेज नहीं आ रहा था। फिर वो ऑफिस पहुंचा।

कुछ देर तक तो वह बैठा सोचता रहा कि उसे क्या करना चाहिये। फिर उसने मेज की निचली बड़ी वाली दराज से जोकर के बहरूप वाला सामान निकाला।

अपने कपड़े उतारकर उसी दराज में डाले और सबसे पहले पांच सौ से भी ज्यादा नये-पुराने कपड़ों को जोड़कर बनाया गया कोट पहना। चेहरे पर जोकर वाला मास्क लगाया। उस मास्क पर लाल व सफेद रंग से विचित्र-सा डिजाइन बना हुआ था तथा होंठों पर गाढ़ी-गाढ़ी लिपिस्टक पोती हुई थी।

नाक की नोक पर भी लाल रंग की आधी गेंद फिट थी। तत्पश्चात् उसने सिर पर सर्कस के जोकरों जैसी ही बहुत लम्बी व ईस्टमैन कलर की टोपी फिट की। टोपी के ऊपरी हिस्से से एक धागा बाहर निकला हुआ था और धागे के छोर पर ऊन की बनी लाल, नीली, पीली, हरी गोलियां सी बंधी हुई थीं।

अन्त में उसने जो चश्मा आंखों पर चढ़ाया उसका एक शीशा काला तथा दूसरा लाल रंग का था।

ये सब तैयारी करने पर उसने हाथ बढ़ाकर वाकी-टॉकी का बटन दबाया और फटे बांस जैसी आवाज में बोला—"मुमताज...छोटे नवाब, मत करो समय ख़राब। जल्दी से पहुंचो मेरे ऑफिस...वरना लेकर आ रहा हूं मैं माचिस।"

बस इतना ही कहकर उसने वाकी-टॉकी का बटन ऑफ कर दिया और मेज पर पड़ी लाल रंग की टाई पहनने लगा।

□□□
□□□

"यार वंश...वो देख, आज तो तुम्हारे दिल की धड़कन अकेले आ रही है। बढ़िया मौका है। कर ले इससे अपने दिल की बात। पकड़कर हाथ बोल दे कि तू इससे प्यार करता है।"

"नहीं बे...म...मुझे नहीं छेड़ना उस बर्र को।" बीस वर्षीय, गोरा-चिट्टा तथा छः फुटा वंश हड़बड़ाकर एक कदम पीछे हटता हुआ बोला—"बड़ी तेज डंक मारती है। अभी तीन दिन पहले सुरेश ने उसे रोका था तो उसने गाल पर थप्पड़ जड़ दिया था। क्यों ओये सुरेश, गलत तो नहीं कह रहा मैं?"

"ठीक कह रहा है तू वंश...साली बहुत खतरनाक है। आशीर्वाद पण्डित की चहेती है ना।" बुरा-सा मुंह बनाकर बोला सुरेश—"साथ में जूडो-कराटे भी सीखे हुये हैं। रोका भी नहीं था इसे...बस, बगल से निकली तो मुंह से सीटी बज गई। साली है भी झक्कास आइटम। मुंह से सीटी निकलते ही गिरेहबान थामकर मुंह पर थप्पड़ जड़ दिया। ये तो कहो उस समय गैलरी में मेरे साथ राजन ही था, बाकी गैलरी सुनसान पड़ी थी। कोई और देख लेता इज्जत का कचरा बन जाना था। लेकिन एक बात कहता हूं...।" इतना कहने पर वह चुप हो गया।

उसी समय उन चारों दोस्तों के बगल से होकर विशाखा उर्फ गुड्डी गुजरी। उसी की वजह से अपनी वाणी को फुल स्टॉप लगाया था सुरेश ने।

विशाखा उर्फ गुड्डी।

पन्द्रह वर्षीय! गोरी-चिट्टी। कद पांच फुट दस इंच के करीब। खूबसूरत इतनी कि परी देश की राजकुमारी ही लगती है। उसी को देखकर कॉलेज की गैलरी में मौजूद चार सीनियर स्टूडेंट आपस में बातें कर रहे थे।

"हां तो सुरेश, तू क्या कह रहा था?" विशाखा जब उनके बगल से होकर तनिक आगे निकल गई तो गौरव नामक लड़का सुरेश से मुखातिब हो बोला—"विशाखा के बारे में कुछ कहने जा रहा था ना...?"

"हां, मैं कह रहा था कि इस घमंडी लड़की ने मेरे मुंह पर चांटा मारकर मुझे बेइज्जत किया है। इससे मैं उस चांटे का बदला जरूर लूंगा।" कहते हुए यकायक ही उसका चेहरा डायमण्ड-सा सख्त हो चला और उसके मुंह से मानो शब्द नहीं आग की लपटें ही निकल रही थीं—"हरामजादी की इज्जत का ऐसा कचरा करूंगा कि अपने आप से नफरत करने लगेगी।"

"यार ऐसा कोई मौका हाथ लगे तो मुझे भी बुला लेना सुरेश।" हाथ मलते हुये वंश बोला—"मुझे भी यह बहुत अच्छी लगती है। मेरा वश चले तो सबके सामने ही रेप कर डालूं उसका।"

"तुझे ही क्यों वंश...हम सबको ही वह अच्छी लगती है।" ठण्डी आह-सी भरते हुये राजन बोला–"अच्छी लगती क्या है, अच्छी ही है। और सुरेश तेरा मौका लगे तो एक वंश को ही क्यों मुझे और गौरव को भी बुला लेना। हम भी बहती गंगा में हाथ धो लेंगे...।"

"बिल्कुल यार...हम चारों ही मिलकर इसकी जवानी का मजा लेंगे। मैं जल्दी ही कोई ऐसा चक्कर चलाऊंगा कि ये बिना डोर के मेरे पास खिंची चली आयेगी। फिलहाल अब क्लासरूम चलो। पहला पीरियड साइको का है और साइको वाले सर बहुत स्टिक्ट हैं। उनका लेक्चर शुरू हो जाने पर वह किसी स्टूडेंट को अन्दर आने की इजाजत नहीं देते।"

"हां ये तो है।" सुरेश की बात का समर्थन करते हुये गौरव बोला–"चलो भाई! एक मिनट रह गया है और गिरीश सर जी टाइम के पक्के हैं। ठीक समय पर क्लास में आते हैं और कभी छुट्टी भी नहीं करते हैं।"

❑❑❑
❑❑❑

"आदाब...जोकर जी...।"

"अस्सलाम वालेकुम...जोकर जी...।"

मुमताज तथा छोटे नवाब ने सिर झुकाकर मेज के पार रिवॉल्विंग चेयर पर मौजूद जोकर के वेष में आप सबके चहेते अर्थात् आशीर्वाद पण्डित का अभिवादन किया।

"वालेकुम सलाम...मेरा भारत महान।" फटे बांस जैसी आवाज में बोला जोकर–"बैठो और खोल लो तुम अपने-अपने दिमागों के कपाट...फिर ध्यान से सुनो मेरी बात...।"

मुमताज तथा छोटे नवाब जोकर को धन्यवाद कहकर कुर्सियों पर बैठ गये।

"तुम दोनों के लिये है एक मामूली-सा काम...।" उनके बैठने पर बोला जोकर–"सही से करना काम ये नहीं है कोई इनाम। खबर मिली है कि चीनी सीक्रेट सर्विस का लू चिन नाम का एजेन्ट दो बजे वाली फ्लाइट से मुम्बई पहुंच रहा है...हमारी आंखों में वो खटक रहा है। लेकर आ रहा है वो कोई खतरनाक सा प्लान। जिसके सफल होने पर आ सकता है कोई भयंकर तूफान। यहां आकर वो जिससे मिलेगा उसका नाम है शाकाल। वो पहले से ही बना बैठा है हमारे जी का जंजाल। जाने कब से

भारत के खुफिया राज भेज रहा है चीन...रात को ही उसके बारे में पता लगा और तब से नहीं आई है नींद। तुम दोनों ने एयरपोर्ट से ही करना है उसका पीछा...वो जब मिले शाकाल से तब ब्लैक मास्टर को पकड़ाना है इस मामले का पलीता। वही लगायेगा पलीते में आग...तभी चीनियों के दिमाग में घुसेगा कि कैसे पकता है सरसों का साग।"

"लेकिन जोकर जी...हम उस चीनी एजेन्ट लू चिन को पहचानेंगे कैसे?" पूछा नदीम ने।

"बेवजह की तुमने इस बात की फिक्र...तुम्हारे जाने से पहले देता तुम्हें उसका चित्र...लेकिन रुको।" बोलते हुये एकाएक जोकर ठिठका, फिर बोला–"गड़बड़ है मित्र...मेरे पास नहीं है लू चिन का चित्र। मुमताज तुम्हें ही एयरपोर्ट पर कैसे भी चलाकर चक्कर...तलाशना होगा वो घनचक्कर। मुझे पता है तुम दोनों ही हो काफी होशियार...हर मिशन में तुम लोगों ने लगाई है नैय्या पार। अब जाओ तुम, करने को मेरे पास और भी हैं ढेरों काम...तुम यहां रुके तो फंस सकता है उनमें साम।"

"जी...जोकर जी...।" बोली लम्बे कद वाली गोरी-चिट्टी तथा खूबसूरत मुमताज। फिर वह तथा छोटे नवाब उठे और जोकर का अभिवादन करके वहां से रुख्सत हुये।

❑❑❑
❑❑❑

दो बजे का समय था बीजिंग से आने वाली फ्लाइट का और मुमताज तथा छोटे नवाब एक बजे ही एयरपोर्ट पहुंच गये।

ग्रे कलर की बोलेरो को पार्किंग में खड़ी करने पर दोनों इन्क्वारी में पहुंचे और बीजिंग से आने वाली फ्लाइट का पता किया तो पता लगा वह निर्धारित समय पर मुम्बई पहुंच रही थी।

तत्पश्चात्–

"नदीम...मैं कस्टम ऑफिस जा रही हूं। अभी एक घण्टा उस फ्लाइट के आने में बाकी है। तब तक तुम कैन्टीन में चाय-पानी पीयो...।"

"तुम्हारे बिना...अकेले चाय-पानी पीने में क्या मजा मुमताज डार्लिंग...म...मेरा मतलब...सॉरी... सॉरी यार।" मुमताज को डार्लिंग बोलने पर जब मुमताज ने उसे आग्नेय नेत्रों से घूरते हुये दांत किटकिटाकर गुस्से का प्रदर्शन किया तो नकली हड़बड़ाहट का प्रदर्शन करते हुये बोला नदीम–"ये चमड़े की

जुबान है ना साली...रोकते,...रोकते भी फिसल जाती है। अगेन सॉरी।"

"फिलहाल तो मैं जा रही हूं टिंगू।" दांत पीसते हुये-सी बोली मुमताज–"लेकिन फुर्सत मिलते ही तुझे देखूंगी।" कहने पर वो पलटकर कस्टम ऑफिस की तरफ चल दी।

धड़धड़ाते हुये वह कस्टम ऑफिस में दाखिल हुई तो शीशे की टॉप वाली मेज के पीछे रिवॉल्विंग चेयर पर मौजूद कस्टम अफसर मनमोहन सूद नेत्र सिकोड़कर उसकी तरफ देखने लगा।

"हैल्लो ऑफिसर।" वो मेज के निकट पहुंचने पर जेब से सी० बी० आई० अफसर का आई कार्ड निकालकर उसके सामने मेज पर डालते हुये रौब भरे लहजे में बोली–"आई एम आयशा फ्रॉम सी० बी० आई०।"

मनमोहन सूद ने लापरवाही भरे अन्दाज में आई कार्ड उठाकर देखा। फिर उसका विवरण देखते ही वह हड़बड़ाकर कुर्सी से उठा, और मुमताज को जोरदार सैल्यूट ठोंकते हुये बोला–"बैठिये मैडम! कहिये, मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूं?"

"अभी दो बजे बीजिंग से जो फ्लाइट आने वाली है।" कुर्सी पर बड़ी ही शाइस्तगी से बैठते हुये ऑफिसरी रौब वाले लहजे में बोली मुमताज–"उसके हर पैसेंजर को कस्टम काउंटर पर रोककर, बहुत ही बारीकी से तलाशी लेने के साथ-साथ उसके टिकट और पासपोर्ट वगैरह की भी बारीकी से जांच करनी है आपने। उस समय काउंटर पर आपके साथ मैं भी मौजूद रहूंगी।"

"ओके मैडम...।" बड़ी ही तत्परता से बोला पचास वर्षीय मनमोहन सूद–"लेकिन मैडम...मामला क्या है?"

"ये अभी आपको नहीं बताया जा सकता।" बेहद शुष्क लहजा था मुमताज का।

"ओके मैडम! मैं हर तरह से आपका सहयोग करूंगा।"

❑❑❑

❑❑❑

खाली पीरियड में विशाखा, टीटू, काजल, अविनीत तथा काजल का मौसेरा भाई कमल कॉलेज की कैन्टीन में बैठे समोसे और कॉफी की दावत उड़ा रहे थे। कमल का जन्मदिन था और वही सबको ट्रीट दे रहा था।

आपस में हंसी-मजाक करते हुये टमाटो सॉस के साथ गर्मागर्म समोसे और कॉफी का आनन्द लिया जा रहा था।

तभी कैन्टीन में बखेड़ा हो गया। कॉलेज के तीन सीनियर स्टूडेंट्स पर कैन्टीन का काफी उधार चढ़ा था। फिर जब वो तीनों कैन्टीन में पहुंचे और सर्विस ब्वॉय को उन्होंने पेटीज और पेप्सी का ऑर्डर दिया तो कैन्टीन के मालिक ने सर्विस ब्वॉय के हाथ कहलवा दिया कि पहले वो पिछली उधारी चुकायें उसके बाद ही उन्हें आगे सामान दिया जायेगा।

बस फिर क्या था?

तीनों लड़के उठे और कुर्सियां उठाकर उन्हें मेज पर पटकते हुये कैन्टीन मालिक को गन्दी-गन्दी गालियां देने लगे।

वहां मौजूद हरेक का ध्यान उनकी तरफ हो गया।

एक मेज पर अपनी तीन दोस्तों के साथ प्राची शर्मा बैठी उन लड़कों की तरफ देखते हुये बुरा-सा मुंह बनाकर नीम के तेल जैसे ही कड़वे लहजे में धीमे स्वर में बोली–"ये तीनों हरामी हमारी ही क्लास के तो हैं नेहा। साले पक्के बदमाश हैं। चार दिन हुये मुझे इस कॉलेज में आये। क्लास में होती हूं तो इनकी आंखें मेरी ही तरफ होती हैं। घूरते ही रहते हैं मुझे।"

"तुम्हें ही क्या यार।" नीले सूट वाली प्रियंका वर्मा अपनी नाक-भौं सिकोड़ते हुये बोली–"ये लफंगे तो कॉलेज की हर सुन्दर लड़की को घूरते रहते हैं। कभी-कभार तो किसी के साथ छेड़खानी भी कर बैठते हैं।"

"प्रिंसीपल से शिकायत नहीं की किसी ने?" उन लड़कों की तरफ नफरत तथा हिकारत भरी नजरों से देखते हुये छः फुट लम्बी, गोरी-चिट्टी तथा ऐश्वर्या राय सरीखी सुन्दर प्राची शर्मा बोली।

"क्या कोई शिकायत करे इनकी यार।" ठण्डी आह-सी भरते हुये गुलाबी सूट वाली नेहा बोली–"इनमें जो कत्थई पैंट और सफेद लाइनिंग वाली शर्ट वाला लड़का है उसका नाम विनोद कश्यप है और वो कॉलेज के प्रिंसीपल का लड़का है।"

"वो भी इकलौता लड़का।" मुंह बिचकाकर बोली प्रियंका।

"प्रिंसीपल का लड़का है कोई लाट साहब का नहीं।" मानो किलसकर ही बोली प्राची शर्मा–"कॉलेज में वह किसी लड़की को छेड़े...बदमाशी करे तो बाकी स्टूडेंट्स को चाहिये कि पहले तो मार-मारकर साले का कचूमर निकाल दें, बाद में उसके बाप से शिकायत करें। शिकायत पर बाप कोई एक्शन ना ले तो कॉलेज की कमेटी से शिकायत करें। मेरे साथ पंगा ले ना तो

मैं इनकी सारी गुण्डागर्दी हवा करके रख दूं।"

"तू इनकी तबियत दुरुस्त कर सकती है प्राची।" नेहा बोली—"तू इनसे पंगा ले सकती है। तेरे दादा इस शहर की ही नहीं देश की एक बड़ी हस्ती है। स्टील किंग राजेश्वर शर्मा को आज कौन नहीं जानता। खैर, वो देख...है कोई जो उन लफंगों से पंगा ले। एक तो उधार खाते हैं। पैसा मांगने पर बेचारे शम्भू अंकल को गालियां भी दे रहे हैं।"

❑❑❑

❑❑❑

बीजिंग से आने वाली फ्लाइट के आने पर कस्टम अधिकारी सूद के साथ मुमताज भी काउंटर पर आ डटी।

वैसे तो उस काउंटर पर उसी यात्री का सामान चेक किया जाता था जिस पर सन्देह हो, वरना तो मामूली पूछताछ के बाद यात्री को जाने दिया जाता था।

लेकिन मुमताज के कहने पर उस फ्लाइट के हरेक यात्री के सामान और उनके यात्रा सम्बंधी कागज की बारीकी से जांच की जा रही थी। सामान की जांच मनमोहन सूद के मातहत कर रहे थे तो कागज वगैरा खुद मनमोहन सूद चेक कर रहा था। ये बात अलग थी कि सूद के पास खड़ी मुमताज भी उन कागजों पर तब ही सरसरी निगाह डाल लेती जबकि सूद उन्हें चेक कर रहा होता था।

छब्बीसवां यात्री चीनी था।

कद चार फुट नौ इंच के करीब, चपटी नाक तथा काले घुंघराले बाल।

मनमोहन ने उससे एयरलाइंस का टिकट तथा उस यात्रा सम्बंधी कागज मांगे तो उसने सहज भाव से जेब से कागज निकालकर उसकी तरफ बढ़ा दिये।

सूद ने टिकट पर नजर डाली तो मुमताज भी टिकट पर छपे यात्री का नाम देखने लगी।

यात्री के नाम में लू चिन ही लिखा हुआ था।

"तो ये है सी० एस० एस० का एजेन्ट।" सहज भाव से खड़े लू चिन की ओर देखते हुये मुमताज मन-ही-मन बड़बड़ाई।

टिकट चेक करने के बाद मनमोहन सूद ने उसके अन्य कागज चेक किये। मुमताज की नजरें भी उन कागजों पर ही जमी रहीं।

सबकुछ ठीक होने पर मनमोहन सूद ने उसके कागज वापस लौटा दिये। तब तक सामान की चेकिंग भी हो चुकी थी। सब ही कुछ ठीक था। लू-चिन लगेज ट्राली खींचते हुये आगे बढ़ा तो मुमताज ने मनमोहन सूद से कहा कि वो टायलेट होकर आती है तब तक वो चेकिंग का सिलसिला जारी रखे। फिर वह एक ओर बने लेडीज टायलेट की ओर बढ़ गई।

टायलेट में पहुंचने पर उसने जेब से मोबाइल निकाला और नदीम का नम्बर लगाकर फुसफुसाकर बोली—"तुम्हारा शिकार आ रहा है। उसने ब्राउन सूट और ब्राउन जूते पहने हैं। उसके पास काले रंग का एक सूटकेस तथा महरून और सफेद रंग का एयरबैग है। तुम उसके पीछे निकलो। दस मिनट बाद मैं टैक्सी पकड़कर यहां से निकलूंगी और तुम्हारे बताने पर कि तुम कहां हो, तुम्हारे पीछे लग लूंगी। लेकिन ध्यान रहे नदीम...शिकार हाथ से निकलना नहीं चाहिये।"

"तुम निश्चिंत रहो डा...अ...अ...आई मीन मेडम, वो जहां कहीं भी जायेगा मेरा साया साथ होगा।"

❑❑❑

❑❑❑

फिर तो प्राची शर्मा मारे गुस्से के मेज पर घूंसा मारकर नफरत से सुलगते हुये से लहजे में बोली—"यहां जितने भी लड़के हैं सबके सब हीजड़े हैं। वो तीन लफंगे हैं और कैसे आतंकित कर रखा है उन्होंने सबको। कैन्टीन वाला उनके बाप की उम्र का है और प्रिंसीपल की औलाद उसे मार रहा है। मुझसे तो यह अन्याय देखा नहीं जाता। मैं हरामियों को सबक सिखाने जा रही हूं।"

गुस्से में उबलते हुये वह कुर्सी से उठी ही थी कि नेहा ने उसका हाथ पकड़कर उसे फिर से कुर्सी पर बैठा दिया।

"रहने दे प्राची...। वे लफंगे हैं...। उनके मुंह लगने का मतलब अपनी बेइज्जती कराना है। जब सब ही यहां तमाशबीन बने बैठे हैं तो तू भी बैठी रह।" नेहा ने उसे समझाया तो वह बैठ तो गई, लेकिन उसके चेहरे पर तथा आंखों में उन गुण्डों के प्रति नफरत के भाव बने ही रहे।

उधर टीटू भी उन लफंगों का विरोध करने के लिये उठा तो विशाखा ने उसका हाथ पकड़कर उसे वापस कुर्सी पर बैठा दिया और समझाया कि फालतू में उनसे उलझना सही नहीं होगा। उन तीनों की दादागिरी कॉलेज में चलती है। विनोद कश्यप

कॉलेज की स्टूडेंट यूनियन का प्रेसीडेंट भी है। उसके कहने पर उसके साथ सैकड़ों छात्र उसके लिये लड़ने-मरने को उतारू हो जायेंगे।

और उधर विनोद कश्यप गुस्से में उबलते हुये कैन्टीन के अधेड़ उम्र के मालिक शम्भू को गिराकर उसे लात-घूंसे मारने के साथ गन्दी-गन्दी गालियां भी दे रहा था।

"मैं तो जा रही हूं यहां से।" गुस्से में लाल हुई पड़ी प्राची शर्मा कुर्सी से उठते हुये भुनभुनाई—"मुझसे तो देखा नहीं जा रहा है ये सब। किसी कॉलेज में ये रावणराज मैंने आज ही देखा है।"

"रुक प्राची...!" उसका हाथ पकड़ते हुये नेहा फुसफुसाकर बोली—"अब तो असली खेल शुरू होने जा रहा है। अब तू किधर जाती है?"

"छोड़ मेरा हाथ नेहा...।" चिल्लाकर बोली प्राची शर्मा—"वो बेचारा बुजुर्ग पिट रहा है और तू बोल रही है कि अब असली खेल शुरू होने जा रहा है। तू...और तेरे जैसे कायर लोग ही ऐसा तमाशा देख सकते हैं। मैं तो कल से इस कॉलेज में ही नहीं आऊंगी।"

"तू बैठ तो सही यार।" प्रियंका उसका दूसरा हाथ पकड़कर कुर्सी पर बैठाते हुये बोली—"अब शम्भू अंकल नहीं वे तीनों लफंगे पिटेंगे। कॉलेज के असली हीरो की एन्ट्री हो चुकी है। नेहा सही कह रही है कि अब असली खेल शुरू होने वाला है।"

"कौन है कॉलेज का असली हीरो?" इधर-उधर तलाश करती हुई-सी निगाहों से देखते हुये प्राची शर्मा बड़बड़ाई।

"वो रहा...!" चने चबाते हुये आंखें सिकोड़कर विनोद कश्यप की गुण्डागर्दी देखते कैन्टीन के दरवाजे पर खड़े आशीर्वाद की ओर इशारा करते हुये बोली नेहा—"गोल्डन कलर के घुंघराले बालों तथा नीलम-सी नीली आंखों वाला...।"

"वो चिकना...?" केशवपुत्र की ओर उपेक्षा भरी नजरों से देखते हुये मुंह बिचकाकर बोली प्राची—"वो अकेला क्या करेगा? सूरत से ऐसा मासूम लग रहा है कि अभी उसके दूध के दांत भी नहीं टूटे होंगे।"

❑❑❑

❑❑❑

लू चिन ने एयरपोर्ट से प्रीपेड टैक्सी पकड़ी थी। ड्राइवर से ही पूछा था कि कौन-सा होटल बढ़िया रहेगा उसके लिये।

ड्राइवर ने तीन ऐसे होटलों के नाम बताये जिनमें पैसेंजर ले जाने पर उसको बढ़िया कमीशन मिलता था। अन्त में लूचिन ने उसे उसके बताये तीन होटलों में से होटल सम्राट चलने को कहा।

रास्ते में ही लू चिन को एहसास हो गया कि उसका पीछा किया जा रहा है। वो सी० एस० एस० अर्थात् चीनी सीक्रेट सर्विस का काफी तेज-तर्रार जासूस था। जासूस का जासूसी दिमाग हर समय सक्रिय रहता है। टैक्सी के एयरपोर्ट से रवाना होते ही उसने गर्दन घुमाकर पीछे देखा तो उसे ग्रे कलर की बोलेरो नजर आई थी। उसके बाद रास्ते में थोड़ी-थोड़ी देर बाद उसने दो-तीन बार पीछे देखा तो उस बोलेरो को अपनी टैक्सी के पीछे लगा पाया तो उसे एहसास हो चला कि उसका पीछा किया जा रहा है।

फिर वो शान्त होकर बैठ गया। उसके दिमाग में अपना पीछा किये जाने को लेकर कोई टेंशन नहीं थी।

होटल पहुंचने पर टैक्सी ड्राइवर उसे लेकर रिसेप्शन पर पहुंचा। उसे कमरा दिलाकर तथा वहां से अपना तयशुदा कमीशन लेकर वह वापस लौट गया।

लू चिन को कमरा नम्बर एक सौ बीस मिला था। कमरे में होटल का कर्मचारी उसका सामान उसके साथ छोड़ने आया था।

"कोई ऑर्डर वगैरह सर?" उसका सामान एक ओर रखने पर सर्विस मैन बोला।

"अभी कुछ नहीं चाहिये। जरूरत होने पर फोन करके मंगा लूंगा। अब तुम जाओ यहां से...।" सपाट से लहजे में बोला लू चिन।

"ओके सर...!" उसका अभिवादन करने पर सर्विस मैन कमरे से बाहर निकला तो उसने अन्दर से दरवाजा बन्द किया और लपककर उस दरवाजे तक पहुंचा जो बाहर बॉल्कनी के लिये खुलता था।

दरवाजे का हल्का-सा पल्ला खोलने पर उसने नीचे बाहर सड़क पर झांका तो सड़क पर उसे ग्रे कलर की बोलेरो तथा उसके पास खड़ा नदीम नजर आया तो वह बड़बड़ा उठा—

"इसका मतलब मेरा अन्दाजा सही था। एयरपोर्ट से ही मेरा पीछा किया जा रहा था। गाड़ी के पास खड़ा नाटे कद वाला शख्स किसी खुफिया विभाग से ही होना चाहिये।"

उसी समय एक टैक्सी आकर बोलेरो के पीछे रुकी।

आंखों में कौतूहलता के भाव लिये लू चिन उस टैक्सी की ओर देखने लगा।

अगले ही पल जब उसने टैक्सी से मुमताज को उतरते तथा टैक्सी का भाड़ा अदा करने पर नाटे कद वाले छोटे नवाब उर्फ नदीम के पास पहुंच उससे बतियाते देखा तो उसके माथे पर बल पड़ते चले गये।

"इस औरत को मैंने कहीं देखा...ओह याद आया।" एकाएक याद आने पर वह बुरी तरह चौंकते हुये बड़बड़ाया—"य...ये अभी एयरपोर्ट पर कस्टम अफसर के साथ थी। इसका मतलब मामला मेरी सोच से भी ज्यादा गम्भीर है। हिन्दुस्तानी खुफिया एजेन्सी को कैसे भी करके मेरे बारे में खबर लग चुकी है। मुझे कैसे भी करके इनसे पीछा छुड़ाना होगा।"

बड़बड़ाते हुये वह दरवाजे से हटा और जेब से सिगरेट का पैकेट तथा माचिस निकालने पर सोफे पर बैठ गया।

❑❑❑

❑❑❑

"देखने में ही मासूम लगता है वो प्राची।" मुण्डे की तरफ अनुराग भरी निगाहों से देखते हुये प्रियंका वर्मा बोली—"लेकिन वास्तव में है बहुत ही खतरनाक। तू इस कॉलेज में, शहर में नई-नई आई है। शिमला में रहती थी ना तू, इसीलिये नहीं जानती हिन्दुस्तान के बेटे के बारे में। ये अपने कॉलेज का ही नहीं देश का भी हीरो है। इसके कारनामें सुनेगी ना तो दांतों तले उंगलियां दबा लेगी...।"

"ठीक है...ठीक है, बहुत तारीफ करने की जरूरत नहीं है इसकी।" यूं प्राची बोली उपेक्षा भरे लहजे में ही, लेकिन हकीकत ये थी कि मुण्डे को देखते ही उसका दिल फ्रन्टियर मेल की रफ्तार से धड़कने लगा था। तथा लड़के पर से नजरें हटाये हट नहीं रही थी उसकी—"अभी पता लग जायेगा कि कितना बड़ा तीस मार खां है। अगर इसने इन तीनों लफंगों के दिमाग दुरुस्त कर दिये तो पूरे हफ्ते कैन्टीन में तुम सबका बिल मैं 'पे' करूंगी।"

"फिर तो समझ तू लुट गई प्राची।" बोली नेहा।

जबकि मिनट भर तक दरवाजे पर खड़ा रहते हुये आप सबके चहेते ने उस लफड़े को समझा। फिर कुटुर-कुटुर करते हुये वह विनोद कश्यप के पास पहुंचा।

"क्यों पहलवान!" उसके कंधे को पकड़कर उसका चेहरा अपनी तरफ करते हुये रेगमाल से खुरदुरे लहजे में बोला—"नई-नई जवानी आई है शायद तुममें। तभी एक बुजुर्ग आदमी पर अपना जोर दिखा रहे हो। मर्द के बच्चे हो तो आ जाओ, हम लोग पंजा लड़ाते हैं। तुम जीते तो तुम्हारा यहां का पिछला उधार भी चुकता करूंगा और अगले एक साल तक तू और तेरे जितने भी साथी इस कैन्टीन में जितना भी खाया करेंगे उसका बिल भी मैं डेली-डेली भर दिया करूंगा। है मंजूर तो आजा मैदान में।"

पहले से ही क्रोध में भरे विनोद को जब केशवपुत्र ने ललकारा तो उसके क्रोध का पारा एकदम से सातवें आसमान पर जा पहुंचा।

"तुझे पहचानता हूं मैं ओये आशीर्वाद, लेकिन तू शायद मुझे नहीं जानता।" क्रोधातिरेक थर-थर कांपते हुये किंग कोबरे की मानिन्द ही फुंफकारा वह—"मैं इस कॉलेज की स्टूडेंट यूनियन का प्रेसीडेन्ट हूं। तेरे जैसे सौ आशीर्वाद मेरे आगे-पीछे दुम हिलाते घूमते हैं। मुझे पंजा लड़ाने के लिये चैलेंज कर रहा है, लेकिन मैं तेरे जैसे मच्छरों से भिड़ने या उन पर ताकत आजमाने की जगह फूंक मारकर उड़ा दिया करता हूं। ये मेरा और इस कैन्टीन के मालिक का आपसी मामला है। खैरियत चाहता है तो सॉरी बोल और जाकर एक तरफ बैठ जा, नहीं तो वो हाल करूंगा कि रोयेगा तो लेकिन आंखों से आंसू एक भी नहीं गिरेगा।"

"अब मेरी भी सुन ओये तीस मार खां।" आशीर्वाद के मुंह से निकलती आवाज फर्निश फैक्ट्री की भट्टी में पिघलते लोहे की मानिन्द ही दहकती हुई सी थी—"ये कॉलेज का मामला है इसलिये यहां इतना जुल्म और अन्याय देखने पर भी अभी तक मैं शान्त हूं—वरना तो अब तक तुझे उड़ाकर रख देता। तू मेरी खैरियत की दुहाई दे रहा है और मैं तुझसे कहता हूं कि अपनी खैरियत चाहता है तो शम्भू काका को उठाकर उनके पैरों पर गिरकर उनसे माफी मांग। उनका पुराना हिसाब चुकता कर। अगर आज पॉकेट में पैसे नहीं हैं तो पैसे भरने के लिये टाइम ले ले। और नीयत ना हो तो यहां कुर्सी पर खड़ा होकर अपने भाई-बहनों से हाथ जोड़कर भीख मांग। मुझे विश्वास है कि यहां सब लोग तुझे भीख देंगे, और तेरे पास इतना पैसा जमा हो जायेगा कि तू पिछला हिसाब चुकता कर सकेगा। जल्दी कर वरना मुझे गुस्सा आ गया तो मैं शुरू हो जाऊंगा।"

विनोद कश्यप छात्र नेता ही नहीं, प्रिंसीपल का लड़का और सीनियर छात्र था, और उसके मुकाबले में आशीर्वाद नया छात्र था। मुण्डे द्वारा भीख मांगकर कैन्टीन का हिसाब चुकता करने की बात करने पर उसका चेहरा ऑन हुये हीटर के एलीमेंट की मानिन्द ही सुर्ख हो चला।

लड़के द्वारा किये अपमान ने उसके क्रोध को और भड़का दिया और फिर वह लड़के के बारे में सबकुछ जानते हुये भी उस पर छलांग लगाने की भूल कर बैठा।

❑❑❑
❑❑❑

हवा में ही था विनोद कश्यप का जिस्म कि लड़के की ठोकर उसकी छाती पर पड़ी और वह फुटबाल की तरह उड़ते हुये एक खाली पड़ी मेज पर गिरा।

'तड़ाक!'

मेज के परखच्चे उड़ गये और उसका जिस्म नीचे आ गिरा।

"वाह! वाकई मर्द का बच्चा है ये चिकना तो।" प्राची शर्मा खुश होते हुये बड़बड़ाई।

"अभी देखा ही क्या है तूने प्राची!" मुण्डे पर नजरें जमाये प्रियंका वर्मा भी बड़बड़ाने वाले अन्दाज में बोली—"अपना आशीर्वाद असली हीरो है। देखना ये कैसे धोता है छात्र नेता को...।"

तभी विनोद के दोनों दोस्तों ने कोल्डड्रिंक की पेटी से कोक की दो बोतलें निकालीं और दीवार पर मारकर उनके पीछे से सिर तोड़े और बोतलों को अपने सामने रखते हुये आशीर्वाद की तरफ भयानक अन्दाज में बढ़े।

"ठहर हरामजादे...।" उनमें से एक जो कि उल्टे तवे जैसा काला था और चेहरे पर चेचक के दाग थे, मुण्डे की तरफ खूनी निगाहों से देखते हुये गुर्राकर बोला—"तूने विनोद भाई पर हाथ उठाया है—मैं तुझे जिन्दा नहीं छोडूंगा। तेरे पेट की सारी अंतड़ियां फाड़कर रख दूंगा।"

"जा ओये नेता के चमचे।" चने के दो दाने मुंह में सरकाने पर केशवपुत्र मुकुल नाम के उस लड़के का मखौल उड़ाते हुये-सा बोला—"क्यों बेवजह पिटना चाहता है? अपने नेता को उठा और यहां से दफा हो जा। और तू भी ओये...।" दूसरे लड़के की तरफ देखते हुये उसने चुटकी बजाई।

"तेरी ऐसी की तैसी पण्डित की औलाद...।" दूसरा हरीश नामक युवक गुर्राते हुये लड़के पर झपटा।

लड़के ने हवा में ही उसका बोतल वाला हाथ लपका और उसे उमेठा तो उसके हाथ से बोतल छूट गई।

तभी मुकुल ने उस पर बोतल से प्रहार करना चाहा तो लड़के ने उसकी छाती पर लात मारी तो वह गैस वाले गुब्बारे की तरह उड़ते हुये कैन्टीन के शीशे वाले काउंटर का शीशा तोड़ते हुये उसके अन्दर घुस गया।

"मजा आ गया भाई।" खुश होते हुये बोली प्राची—"ऐसी फाइट तो हालीवुड की फिल्मों में ही देखने को मिलती है। इस चिकने के सामने तो जैकीचेन भी फेल है।"

फिर मुण्डे ने हरीश का हाथ और कसकर उमेठा तो वो हाय-हाय करके उछलने लगा। उस समय तक विनोद उठकर खड़ा हो चुका था।

उसने मेज का एक टूटा पाया उठाया और उसे लेकर लड़के की तरफ दौड़ा तो लड़के ने हरीश के नितम्बों में ठोकर मारी तो वह स्टार्ट होकर विनोद से टकराया और दोनों भरभराकर गिर पड़े।

फिर विनोद के कई चेले-चपाटे हॉकी और सरिये लेकर वहां पहुंच गये।

"अपना हीरो तो घिर गया।" चिन्ता में पड़कर प्राची शर्मा बड़बड़ा उठी—"वो अकेला है और विनोद के साथ पन्द्रह लोग हो गये हैं। और वो भी हॉकी और लोहे की छड़ों के साथ। मैं तो पुलिस को फोन करने जा रही हूं।"

❑❑❑
❑❑❑

जींस की जेब से फोन निकाला ही था प्राची ने कि प्रियंका ने उसका फोन झपट लिया।

"परेशान मत हो यार। अपने हीरो के सामने ये पन्द्रह टुच्चे-मुच्चे तो क्या, इन जैसे सौ-डेढ़ सौ और भी आ जायें तो उसे फर्क नहीं पड़ने वाला।" वह स्वप्निल-सी आंखों से मुण्डे की तरफ देखते हुये बड़बड़ाई—"पुलिस को फोन करने की कोई जरूरत नहीं है। तू इत्मीनान से बैठकर बिना टिकट वाला शो देख।"

तभी एक लम्बा तथा मजबूत जिस्म वाला लड़का हाथ में

लोहे की मोटी-सी सरिया लिये मानसूनी बादलों की तरह गर्जकर बोला—"ओये, चलो सब लोग, कुर्सियां छोड़कर उधर दीवार के पास खड़े हो जाओ। और ध्यान रखना...कोई कैन्टीन से बाहर नहीं जायेगा। यहां बढ़िया वाला तमाशा होने वाला है। ये कल का लड़का...अपने विनोद भाई से पंगा लिया है। हम मार-मारकर इसका भूत बनायेंगे। जब तक ये यहां बन्दरिया के बच्चे की तरह नाचा-नाचा नहीं घूमेगा, हम इसे ठोंकते रहेंगे।"

"चलो, जल्दी खाली करो...।" डेनिम की जींस के साथ गुलाबी शर्ट पहने कंधों तक झूलते बालों वाला लकी भी चिल्लाकर बोला।

टीटू और विशाखा वाली टेबल को छोड़कर बाकी टेबल्स पर बैठे स्टूडेंट्स ने तुरन्त ही अपनी-अपनी सीटें छोड़ीं और एक ओर वाली दीवार के पास जाकर ऐसे खड़े हो गये मानो किसी लफंगे ने नहीं ये आदेश उन्हें कॉलेज के प्रिंसीपल ने दिया हो और वे आज्ञाकारी बच्चे हों।

प्राची शर्मा को भी उसकी दोस्त हाथ पकड़कर घसीट लाई थीं।

"भड़ाक!"

"क्यों बे ओये, तुम लोग कान में तेल डालकर यहां बैठे हो?" टीटू वाली टेबल पर हॉकी पटकते हुये एक छात्र किंग कोबरे की मानिन्द ही फुंफकारा—"सब लोगों ने अपनी टेबल्स खाली कर दीं और तुम लोग यहां से हिले भी नहीं। जल्दी हटो यहां से वरना एक-आध का सिर फट-फटा गया तो उसके जिम्मेदार हम नहीं होंगे।"

"सिर हमारा क्यों बच्चे...तुम्हारा फटेगा।" टीटू ने उठते ही उसकी थूथन पर घूंसा जमाया और उसकी हॉकी छीनकर उसके साथियों पर पिल पड़ा।

विशाखा भी उसका साथ देने के लिये उठ खड़ी हुई।

मुण्डे पर चार लड़कों ने हॉकी और सरियों से प्रहार करना चाहा तो, उसने एक का सरिया छीनकर पहले तो बाकी के प्रहारों को उस सरिये पर रोका फिर एक के पेट में लात जमाकर उसे दूर फेंका तो बाकी दो की कमर पर सरिये से अपने हाथ को तनिक हल्का रखते हुये प्रहार किया तो वो अपनी हॉकी, सरिये को छोड़कर 'हाय-हाय' करते हुये बन्दरों की तरह नाचने-उछलने लगे।

उसके बाद वहां संग्राम-सा छिड़ गया।

विशाखा ने भी एक छात्र से उसकी हॉकी छीन ली और वो भी झांसी वाली रानी बनकर लफंगों पर टूट पड़ी।

दो मिनट भी नहीं लगे और उस संग्राम का रिजल्ट भी सामने आ गया।

विनोद कश्यप और उसके तमाम चेले इधर-उधर बिखरे पड़े हाय-हाय कर रहे थे।

कैन्टीन के फर्नीचर का कबाड़ा हो चुका था।

तभी वहां पुलिस पहुंच गई।

पुलिस दल के साथ वहां पहुंचने वाला इंस्पेक्टर दिलीप भालकर आशीर्वाद को पहचानता ही नहीं था वरन उसका प्रशंसक भी था।

लड़के से सारा मामला जानने पर उसने कैन्टीन मालिक और वहां काम करने वाले लड़कों तथा कारीगरों के अलावा वहां मौजूद स्टूडेंट्स के बयान लिये। स्टूडेंट्स में प्राची शर्मा ने विनोद कश्यप और उसके चेलों पर पुलिस इंस्पेक्टर के सामने जहर-ही-जहर उगला।

उसके बाद जब विनोद कश्यप और उसके चेलों को हथकड़ियां पहनाई जा रही थीं तो वहां प्रिंसीपल और कॉलेज के दो प्रोफेसर पहुंच गये।

आशीर्वाद से प्रिंसीपल ने माफी मांगी और फिर दोनों पक्षों में सुलह-सफाई कराकर अपने लड़के और उसके चेलों की गिरफ्तारी टाल दी।

कॉलेज की कैन्टीन का मामला कॉलेज की कैन्टीन में ही निबट गया।

लेकिन उस घटना से नीलम-सी नीली आंखों वाला मुण्डा प्राची शर्मा की तो मानो दिल की धड़कन बनकर रह गया।

'हां हीरो...आज तो तुमने प्राची का दिल लूट लिया है।' वह मन-ही-मन बोली—'अब संभलकर रहना, तुम्हारे दिल पर भी डाका पड़ने वाला है।"

❑❑❑

❑❑❑

कैन्टीन में हुये झगड़े की वजह से उस दिन कॉलेज की छुट्टी कर दी गई।

आशीर्वाद पण्डित अपने दोस्तों, विशाखा, टीटू, काजल, अविनीत तथा कमल के साथ कॉलेज से बाहर आया।

टीटू को छोड़कर सभी के पास अपने-अपने साधन थे। मुण्डे के तथा कमल के पास बाइक थी तो गुड्डी के पास टी० वी० एस० स्कूटी और काजल तथा अविनीत के पास बैट्री से चलने वाली हीरो कम्पनी की स्कूटियां थीं।

वे सब लोग पैदल ही अपनी-अपनी गाड़ियों के साथ कॉलेज के बाहर आये तो पीछे से टाटा स्टीम पर प्राची शर्मा भी आई और उनके बगल में अपनी कार रोककर उनकी तरफ हाथ हिलाती हुई उत्साह से भरी हुई बोली—"हैलो गाइज।"

सबने उसकी तरफ देखा और प्रत्युत्तर में हाथ हिलाकर उसकी हैलो का जवाब दिया।

प्राची कार से उतरकर उनके निकट पहुंचते हुये बोली—"मेरा नाम प्राची शर्मा है। चार दिन पहले ही कॉलेज में एडमिशन लिया है। इससे पहले शिमला में हॉस्टल में रहकर पढ़ती थी। आप लोग बहुत अच्छे हो—मैं आप लोगों से दोस्ती करना चाहती हूं।"

"हां...हां क्यों नहीं?" टीटू तपाक से बोला—"हमें भी आपको अपना दोस्त बनाकर खुशी होगी। मिलाइये हाथ।"

फिर बारी-बारी सबने प्राची से हाथ मिलाया।

तत्पश्चात् कमल बोला—"कैन्टीन में मैं अपने जन्मदिन की पार्टी दे रहा था, अपने दोस्तों को कि पंगा शुरू हो गया था। अब आप सब लोग बगल में वाधवा बेकर्स है—वहां चलें। वहां जो जिसकी इच्छा हो खायेगा और फिर कोल्ड ड्रिंक पी जायेगी। बिल मैं पे करूंगा।"

"ये तो आज मेरी लॉटरी निकल आई।" हंसते हुये बोली प्राची शर्मा—"तुम लोगों से दोस्ती करना फायदे में रहा। मुझे भूख भी लग रही है। मैं भी अपनी दोस्तों के साथ थोड़ा पेट पूजा करने कैन्टीन पहुंची थी। अभी ऑर्डर ही दिया था कि पंगा शुरू हो गया। वहां तो पैसे मुझे खर्च करने पड़ते यहां मुफ्त की दावत उड़ाने को मिलेगी। वैसे, हैप्पी बर्थ डे...प्लीज योर नेम...?"

"कमल...कमल कान्त गुप्ता।"

"हैप्पी बर्थ डे कमल।"

"थैंक्यू।"

फिर सब लोग वाधवा बेकर्स के यहां पहुंचे। सबसे पहले

कमल ने सबके लिये एक-एक पेस्ट्री ली। उसके बाद किसी ने चीज पेटीज, तो किसी ने हॉट डॉग लिया और सब आपस में हंसी-मजाक करते हुये खाने लगे।

❑❑❑
❑❑❑

सिगरेट फूंकते हुये लू चिन सोच रहा था वह क्या करे, कैसा चक्कर चलाये जो उसके पीछे लगे टिंगू और उस खूबसूरत-सी दिखने वाली लड़की से पीछा छूट सके।

कुछ सोचने पर उसने अपना मोबाइल निकाला और शाकाल का नम्बर लगाया।

नम्बर लगने पर आवाज आई, "कौन?"

"शाकाल...मैं लू चिन बोल रहा हूं। कमांडर ने मेरे बारे में तुम्हें खबर कर ही दी होगी...?" नथुनों से सिगरेट का धुआं बाहर करते हुये लू चिन बोला।

"हां लू चिन साहब।" शाकाल की आवाज सुनाई दी—"कमांडर साहब ने बता रखा है कि आप आज मुम्बई पहुंचने वाले हैं। ये बता रखा है कि आपके पास मेरा फोन नम्बर है—और आप ही मुझे सम्पर्क करेंगे। आप आदेश कीजिये, कहां हैं आप? मैं अपने आदमी को आपको लेने के लिये भेज देता हूं।"

"इस समय मैं होटल सम्राट पैलेस में हूं। शाकाल, यहां पहुंचने पर एयरपोर्ट से मेरा पीछा किया गया। मुझे लगता है भारतीय खुफिया एजेन्सी को मेरी खबर लग चुकी है। हालांकि पासपोर्ट और वीजा में मेरा भारत आने का उद्देश्य घूमना-फिरना लिखा है, लेकिन कैसे भी करके खुफिया एजेन्सी को पता लग चुका है कि मेरा सम्बंध सी० एस० एस० से है। अब मेरे सामने दिक्कत ये है कि मैं तुमसे मिलना चाहकर भी मिलूं तो कैसे मिलूं? बाहर सड़क पर सीक्रेट सर्विस के एजेन्ट मौजूद हैं। मेरे होटल से बाहर निकलने पर वे मेरे पीछे लग जायेंगे।"

"लू चिन साहब...आप फिक्र मत करिये। मैं कोई रास्ता निकालूंगा हमारी मुलाकत का। आप ये बताइये...आप होटल सम्राट पैलेस में किस नम्बर के रूम में हैं?"

"रूम नम्बर एक सौ बीस।" कहने पर लू चिन ने सिगरेट का कश मारा।

"और वो जांसूस कहां हैं?"

"होटल के बाहर सड़क पार ग्रे कलर की बोलेरो खड़ी है।

नम्बर मैं नहीं देख सका हूं। हां, अभी सिगरेट लेने के बहाने नीचे उतरूंगा तो नम्बर भी देख लूंगा। वैसे गाड़ी के पास एक नाटे कद का आदमी और उसके साथ सुन्दर औरत है।"

"ठीक है लू चिन साहब...अब आप उनकी तरफ बेफिक्र हो जाये। लम्बे सफर से आये हैं, थोड़ा आराम कीजिये। मैं उनका कोई इन्तजाम करता हूं।"

फिर लू चिन ने फोन काटा। सिगरेट का आखिरी कश मारकर टोंटे को ऐश-ट्रे में डाला और उठकर दरवाजे पर पहुंच बाहर नीचे सड़क पर नजर डाली तो पाया कि ग्रे कलर की बोलेरो अभी भी सड़क पार खड़ी थी और नाटा आदमी और वो लम्बी खूबसूरत युवती उसके पास खड़े आपस में बतिया रहे थे।

एक मिनट तक दरवाजे पर खड़े रहने पर वह वापस पलटा और बेड पर लेटकर अपनी आंखें बन्द कर लीं।

❑❑❑

❑❑❑

वह बहुत ही शानदार ढंग से सजा बड़ा-सा कमरा था—लेकिन उसमें प्रकाश के नाम पर लाल रंग का जीरो वॉट का बल्ब मात्र ही उस समय जल रहा था।

पूरा कमरा लाल रंग के प्रकाश से भरा हुआ था।

कमरे में सिंगल सोफे पर लेटा एक शख्स ट्रिपल फाइव ब्राण्ड की सिगरेट के कश-पर-कश लगाये जा रहा था।

उसका चेहरा नजर नहीं आ रहा था। वजह थी उसने क्रिकेट के खिलाड़ियों वाली टोपी को अपने माथे पर कुछ इस तरह से रखा हुआ था कि टोपी ने उसकी आंखें और नाक का आधा हिस्सा ढक रखा था।

हां, सिगरेट पीने के लिये उसके होंठों पर उस टोपी से कोई रुकावट नहीं थी।...

एक अजीब बात और...सिगरेट पीते हुये वह कदाचित बेहद दुखी था। उसकी ढकी आंखों से आंसू निकल-निकलकर उसके गालों से होते हुये उसकी कमीज के कॉलर को दोनों साइड से गीले कर रहे थे।

उस रहस्यमयी शख्स ने सिगरेट का एक और कश लगाकर सिगरेट के अगले भाग में जमा हो चुकी राख को बगल में पड़ी मेज पर रखी ऐश-ट्रे में झाड़ा और फिर से कश लेने के लिये सिगरेट को होंठों में फंसाया, कि तभी—

मेज पर रखे फोन पर 'अरे दीवानों...मुझे पहचानो कहां से आया, मैं हूँ कौन' वाला गाना बजने लगा।

उस शख्स ने सिगरेट को दायें से बायें हाथ में ट्रांसफर किया और खाली किये दायें हाथ को बढ़ाकर मेज पर बजते मोबाइल को उठाकर, बगैर स्क्रीन पर नजर डाले उसका हरा बटन दबाकर कान के पास ले जाते हुये लुटे-पिटे से लहजे में बोला—

"कौन...?"

"डैड...मैं आपका कूकी बोल रहा हूं...।" आवाज आई।

"ओह कूकी...! माई सन...कैसे हो तुम? पढ़ाई कैसे चल रही है तुम्हारी?"

"मैं फर्स्ट क्लास...और पढ़ाई भी फर्स्ट क्लास चल रही है मेरी। लेकिन...आप इस समय रो रहे होंगे डैड। आज मम्मी की बरसी जो है। मुझे भी मम्मी की याद आ रही है और याद आ रहा है वो दुश्मन जिसने आपको और मुझे आंसू दिये हैं।"

"य...ये त...तू कैसी बात कर रहा है कूकी हड़बड़ाकर...घबराकर बोला वह रहस्यमयी शख्स—"हमारा कोई दुश्मन नहीं है। व...वो तो तू दो साल का था तो आज के ही दिन तेरी मम्मी बीमार होने की वजह से चल बसी थी। फिर तू...।"

"डैडी अब आपका कूकी बच्चा नहीं रहा।" दूसरी तरफ से बोलने वाले का लहजा फ्रीज में जमी बर्फ से भी ज्यादा ठण्डा था—"मुझे बहलाने की कोशिश मत कीजिये। पिछली बार जब मैं आपसे मिलने आया था तो मैंने आपके बेड पर तकिये के नीचे रखी आपकी डायरी देखी और पढ़ी है। उस डायरी में आप अपनी रोज की बीती लिखते हैं। उस डायरी को पढ़ने पर मुझे मालूम चला कि मेरी मां बीमारी से नहीं मरी थी। वो कैसे मरी इस बात का आपके सामने जिक्र भी नहीं कर सकता। जिसकी वजह से उन्होंने दम तोड़ा उस दुश्मन का नाम भी पढ़ा। ये जाना कि आपके मन में उससे बदला लेने की इच्छा तो है, लेकिन वो ताकतवर इन्सान है और आप उससे डरते हैं। वो डायरी पढ़ने के बाद से ही मैं आपके दुश्मन से बदला लेने का प्लान बना रहा...।"

"नहीं कूकी...! मेरे बच्चे नहीं।" फोन पर आती आवाज पर ब्रेक लगाते हुये मानो तड़फकर...फड़फड़ाकर ही बोला वो शख्स—"बेशक तू बड़ा हो गया है, लेकिन तू अपनी मां की मौत

का बदला लेने के बारे में सोचेगा भी नहीं। जो हुआ उसे भूल जाओ। उसे भूल जाने में ही तेरी...हमारी भलाई है। सबकुछ भूल जा मेरे बच्चे और अपनी पढ़ाई की तरफ ध्यान दे। मैं बदले की जिस आग में जल रहा हूं तुझे उस आग में नहीं झोंकना चाहता हूं...।"

"डैडी जी...।" बोलने वाला अपने एक-एक शब्द पर जोर देते हुये-सा रेगिस्तान के खुश्क मौसम से भी ज्यादा शुष्क लहजे में बोला—"आप मेरी तरफ से निश्चिंत रहें। मैं मूर्ख नहीं हूं कि बिना सोचे-समझे किसी आग में कूद जाऊंगा। मैं आपको बदले की आग से बाहर करना चाहता हूं और करके रहूंगा। डैडी जी...यहां मेरा भी एक दुश्मन है...।"

"क...क्या कहा तूने? फिर से बोल कूकी।" कूकी की बात खत्म होते ही व्याकुलता में भरकर बोला वह शख्स—"तेरा कोई दुश्मन भी है? तूने किसी से पंगा ले लिया है मूर्ख? तू पढ़ रहा है या...त...तू कूकी बेटे, तू समझता क्यों नहीं? तू मेरी जान है। तुझे कुछ हो गया तो मैं जी नहीं सकूंगा। त...तू बता तेरा किससे पंगा हुआ है? उसे मैं देख लूंगा। कल सुबह के अखबारों में उसकी मौत की खबर ना छपे तो कहना। बस तू एक बार उसका नाम बोल...।"

"डैडी जी...मैं आमने-सामने की लड़ाई में नहीं दिमाग की लड़ाई में विश्वास रखता हूं। आपसे कह चुका हूं कि आप मेरी तरफ से निश्चिंत रहें। मैं अपने और आपके...यानि हम दोनों के दुश्मन को दिमाग से मारूंगा। हां डैडी जी, मेरी बात पर आप यकीन कीजिये। आपने महाभारत सीरियल तो देखा ही होगा। उसमें भगवान श्री कृष्ण दुर्योधन को वचन देते हैं कि वो पांडवों के साथ रहने पर भी पांडवों की तरफ से युद्ध के मैदान में हथियार नहीं उठायेंगे। मैं भी आपको वचन देता हूं कि अपने शत्रुओं के अन्त के लिये मैं ना तो मैदान में आऊंगा और ना ही हथियार के नाम पर कभी एक सुई भी उठाऊंगा। मेरा दुश्मन आपके या हमारे दुश्मन से भी ज्यादा खतरनाक है। मेरा दुश्मन से पहले मैं हमारे दुश्मन का अन्त कराऊंगा और फिर अपने दुश्मन को कानून नाम के गिद्ध के आगे डाल दूंगा। वो गिद्ध मेरे दुश्मन के जिस्म की बोटी-बोटी नोच खायेगा।"

"बेटे कूकी।" दुविधा में पड़कर रहस्यमयी शख्स बोला—"तू दिमाग का तेज है ये तो मुझे मालूम है। ल...लेकिन

ऐसी लड़ाईयों का तुझे अनुभव नहीं है। म...मैं तो कहता हूं कि तू ऐसे खेलों से दूर ही रहे तो अच्छा है...।"

"मैंने कहा ना डैडी जी...कि मैं इस खेल से कोसों दूर रहते हुये ही ये खेल खेलूंगा। कल शाम को मैं आपके पास आकर आपको अपनी योजना बताऊंगा। मेरी योजना आपको पसन्द आये और मुझे खेल को खेलने के लिये रेफरी बनकर हरी झण्डी दिखाकर सीटी बजायेंगे तो ही मैं खेल की शुरूआत करूंगा अन्यथा नहीं। फिलहाल नमस्ते।" इसी के साथ दूसरी तरफ से फोन काट दिया गया।

उस रहस्यमयी शख्स ने भी फोन ऑफ करके मेज पर डाला और उंगली में फंसी सिगरेट को मुंह में फंसाया तो उसे बुझी पाकर ऐश ट्रे में डालकर नई सिगरेट सुलगाने लगा।

❑❑❑
❑❑❑

कमल कान्त के बर्थडे की ट्रीट खाकर मुण्डा अपने घर की ओर निकला तो उसकी कलाई में चुभन-सी होने लगी।

उस समय वो एक पार्क के सामने ही था।

एक ओर बाइक रोककर उसने आस-पास नजरें दौड़ाई तो दूर-दूर तक उसे मैदान साफ ही दिखाई दिया।

उसने झट से कलाई घड़ी की सुई को बाहर खींचा और कलाई को कान तथा मुंह के मध्य रखते हुये फुसफुसाई आवाज में बोला—"नमस्ते आंटी जी...।"

"सदा सुखी रहो बच्चा।" मुमताज की आवाज आई—"जोकर जी ने तुम्हें लू चिन के बारे में बताया ही होगा...?"

"जी आंटी जी...।" मुण्डा पूर्ववत् फुसफुसाकर बोला—"कहां है वो इस समय?"

"होटल सम्राट पैलेस में ठहरा है वो...।"

"मैं पांच मिनट में आ रहा हूं। आप मुझे होटल के बाहर मिलना।"

"मैं और नदीम होटल के बाहर ही हैं।"

सुनकर मुण्डे ने घड़ी रूपी ट्रांसमीटर की सुई को यथा स्थान सरकाया और फिर बाइक को स्टार्ट करके आगे बढ़ाया।

ठीक पांचवे मिनट पर उसने बाइक को होटल सम्राट पैलेस के ठीक सामने सड़क पार खड़ी ग्रे कलर की बोलेरो के पीछे रोका।

उसे स्टैण्ड पर लगाकर बोलेरो के पास पहुंचा तो बोलेरो का पिछला दरवाजा खोलते हुये पीछे की सीट पर विराजमान मुमताज बोली—"अन्दर आ जाओ आशीर्वाद...।"

आशीर्वाद अन्दर सीट पर बैठते हुये बोला—"उसे अपना पीछा किये जाने का शक तो नहीं हुआ?"

"इस बारे में कुछ भी कहना मुश्किल ही है आशीर्वाद।" मुमताज विचारपूर्ण लहजे में बोली—"मुश्किल इसलिये कि अभी कुछ देर पहले मैंने उस दरवाजे की ओर से उसे अपनी तरफ ही झांकते देखा है। एक मिनट तक वह वहां खड़ा रहा और उसकी नजरें हम पर ही रहीं। हालांकि हम उधर नहीं देख रहे थे—आपस में बात ही कर रहे थे, लेकिन मैंने गाड़ी के साइड ग्लास को कुछ ऐसे एंगल पर कर रखा था कि मुझे होटल पूरा-का-पूरा दिखाई दे। इसी साइड ग्लास पर मैंने उसे देखा था।"

"हूं...!" एकाएक मुण्डा गम्भीर हो चला।

जेब से चने के कुछ दाने निकालकर मुंह में डालने पर उन्हें चबाते हुये कुछ देर तक तो कुछ सोचता रहा, फिर बोला—"आंटी जी...अब दुविधा वाली बात हो ही गई है तो हमें उस पर नजर रखने के लिये गामा अंकल को बुलाना होगा। उसके जरिये हमने शाकाल तक पहुंचना है। शाकाल हमारे देश के सीक्रेट्स चीन भेज रहा है। अगर लू चिन को इस बात का एहसास हो गया कि कोई उसके पीछे है तो वो शाकाल से बिना मिले भी वापस जा सकता है।"

"ये ठीक रहेगा...।" जेब से मोबाइल निकालते हुये बोली मुमताज—"मैं गामा को फोन करती हूं।"

मुमताज ने गामा को फोन करके होटल सम्राट के सामने पहुंचने को कहा तो फिर आशीर्वाद ने मुमताज और नदीम को वहां से यह कहकर रवाना किया कि गामा अंकल के वहां पहुंचने तक वो लू चिन की निगरानी पर रहेगा।

यूं तो मुण्डे ने अपनी तरफ से बड़ी सावधानी बरती थी, लेकिन इसका क्या किया जाये कि शाकाल का खासम-खास जोरावर सिंह कुछ देर पहले वहां पहुंच चुका था। आशीर्वाद को पहचानता भी था वह। और उसे शाकाल ने लू चिन का फोन आने के बाद उसके पीछे लगी ग्रे कलर की बोलेरो वालों से पीछा छुड़ाने के लिये भेजा था।

जोरावर सिंह के साथ दो शर्प शूटर भी थे। लेकिन लड़के

को बोलेरो वालों के साथ देख उसकी हिम्मत उनसे पंगा लेने की नहीं हुई थी।

फिर उसके देखते-देखते बोलेरो वाले वहां से चले गये और आशीर्वाद को उसने बाइक को होटल के सामने से हटाकर कुछ दूरी पर खड़े होते देखा तो उसे समझते देर नहीं लगी कि बोलेरो वालों के वहां से जाने पर वह लड़का लू चिन की निगरानी पर लग गया था।

❑❑❑
❑❑❑

जोरावर सिंह वहां काले रंग की स्कॉर्पियो से पहुंचा था। होटल से काफी परे ही उसने गाड़ी रोक रखी थी।

पिछली सीट पर ए० के० छप्पन से लैस अनीस कालिया और सुमेश पहाड़ी नाम के दो खतरनाक किस्म के शूटर्स बैठे हुये थे।

"बाप...तू गाड़ी इधरीच क्यों रोके बैठेला है?" मानो उकताकर...ऊबकर बोला काला-कलूटा, दुबला-पतला अनीस कालिया—"बोलने का, किसकू शूट करना मांगता?"

"सब्र कर...कालिया।" गैंडे की खाल से सख्त एवं मगरमच्छ की खाल जैसे खुरदुरे लहजे में बोला जोरावर सिंह—"मुझको थोड़ा सोचने-समझने दे।"

जोरावर सिंह की फटकार पर अनीस कालिया सकपकाकर रह गया।

ड्राइविंग सीट पर बैठा जोरावर सामने अपनी बाइक के पास खड़े आशीर्वाद की ओर देखता रहा।

पन्द्रह मिनट बाद लड़के के पास गन्ने जैसा दुबला-पतला गामा पहलवान पहुंचा।

जोरावर सिंह की नजरें उन पर टिकी रहीं।

कुछ देर तक उसने आशीर्वाद पण्डित को उस दुबले-पतले शख्स से बतियाते देखा। फिर लड़के ने मोबाइल पर मुमताज से लू चिन का हुलिया पूछा।

तत्पश्चात् लू चिन का हुलिया गामा पहलवान को बताकर, ये कहकर कि जैसे ही वह होटल से बाहर निकले उसे खबर करे—और खुद लू चिन का पीछा करे, मुण्डा वहां से रुख्सत हुआ।

"इसका मतलब आशीर्वाद पण्डित...।" ट्रिपल फाइव मार्का सिगरेट सुलगाते हुये जोरावर मानो अपने आप से

बोला—"तू चिन की निगरानी पर उस सींकड़ी पहलवान को लगाकर गया है। मैं अभी इसका इन्तजाम करता हूं।"

फिर उसने जेब से मोबाइल निकाला और किसी दलेली पहाड़ी नामक आदमी का फोन लगाकर बोला—"दलेली...तू चार आदमियों के साथ होटल सम्राट पैलेस के सामने पहुंच। इधर रोड किनारे ब्लैक कलर की सी० डी० डॉन के पास एक गन्ने जैसा आदमी खड़ा है। तुम लोगों ने उसका अपहरण करके अड्डा नम्बर दो पहुंचना है। लेकिन खबरदार! वो गन्ने जैसा आदमी का सम्बंध खुफिया पुलिस से है। वो खतरनाक भी होगा। तुमने पूरी तैयारी से वहां पहुंचना है और बड़ी सावधानी से अपना काम करना है।"

"ठीक है बड़े शाब जी...।" उधर से सम्मान भरे लहजे में कहा गया—"अब.शब शंभाल लेगा।"

फोन काटकर जोरावर सिंह सिगरेट के कश लगाने लगा।

तकरीबन बीस मिनट बाद काले रंग की मारुति वेन गामा पहलवान की बाइक के बराबर में एक झटके से रुकी।

पिछली खिड़की के पास एक विशेष प्रकार की गन लिये दलेली पहाड़ी मौजूद था। वैन के रुकते ही उसने बाइक पर बैठे गामा पहलवान का निशाना लेकर गन की लिबलिबी दबाई तो गन से बेआवाज एक पिन निकलकर गामा पहलवान के गले में जा धंसी।

गामा पहलवान जो वैन के एकाएक सामने रुकने से थोड़ा सतर्क तो जरूर हुआ था—लेकिन दलेली पहाड़ी ने जो तेजी दिखाई वो उसकी सोच से परे थी इसलिये वो मात खा गया। पिन में बेहोशी की बड़ी ही तीव्र दवा थी। गले में घुसते ही उसने बड़ी तेजी से अपना काम किया।

बाइक से उठने की कोशिश कर रहा गामा पहलवान चकराकर अपनी बाइक पर ही गिर पड़ा।

वैन का दरवाजा पीछे को सरका। चालीस वर्षीय, साढ़े चार फुट का ठिगना दलेली और उसके साथ औसत कद-काठी का एक शक्ल से ही मवाली लगने वाला व्यक्ति वेन से नीचे उतरा।

दोनों ने मिलकर बहुत ही तेजी में बाइक पर बेहोश हो लटके-से पड़े गामा पहलवान को उठाकर वैन के अन्दर पायदान पर डाला और फिर दोनों वैन में बैठ गये।

उनके बैठते ही वैन आगे बढ़ गई।

□□□
□□□

वो शाकाल का ही एक ठिकाना था जहां रईस लोगों के मनोरंजन के लिये डब्लू० डब्लू० एफ० की फाइट की मानिन्द ही मौत की फाइट होती थी।

वह गुप्त ठिकाना था और सांड तथा इंसान की फाइट को देखने के लिये फी आदमी का दो हजार से लेकर पांच हजार तक टिकट था और उस फाइट क्लब का इन्चार्ज टोनी डिसूजा करके नवी मुम्बई के उत्तर के इलाके का टॉप का दादा था।

यूं क्लब ने मनोरंजन के लिये लाइसेंस लिया हुआ था। लेकिन लाइसेंस छोटे-मोटे खैलों का, जिसमें बैडमिंटन, लॉन टेनिस, बॉस्केट बॉल, टेबल टेनिस, क्रिकेट, केरम बोर्ड या रमी के लिये ही था। और जो वहां हर हफ्ते फाइट होती थी वो सरासर गैरकानूनी, लेकिन पुलिस प्रोटेक्शन में होती थी।

मौत की उस फाइट का शाकाल बेहद शौकीन था और उसी ने फाइट के लिये सारा इन्तजाम किया था। और फाइट को देखने के लिये वह खुद भी क्लब में मौजूद होता था।

लायन क्लब की इमारत के एक हिस्से में मौत की फाइट होती थी।

पांच सौ गज के मैदान के चारों तरफ दर्शक दीर्घायें थीं और उस समय मौत की फाइट देखने के लिये सारी दीर्घायें दर्शकों से खचाखच भरी हुई थीं।

पूरा मैदान रोशनी से जगमगा रहा था।

निश्चित समय पर बेल बजी और मैदान के पूर्व और पश्चिम की तरफ नीचे के हिस्से में लगे दरवाजे खुले और एक दरवाजे से सात फुट लम्बा, काला-कलूटा तथा पहाड़ जैसे जिस्म का मालिक बाहर निकला तो दूसरे दरवाजे से बहुत ही मोटा-ताजा काले रंग का सांड भयंकर किस्म की फुंफकारें छोड़ते हुये, दौड़ते हुये मैदान में पहुंचा।

देव सरीखे काले-भुजंग शख्स ने भी सांड को देखकर हुंकारी भरी।

मौत की उस फाइट में सांड को गैलन भर शराब पिलाकर नशे में पागल करके मैदान में उतारा जाता था। फाइट का मरो या मारो वाला नियम था। सांड अपनी तरफ से अपने प्रतिद्वन्द्वी को छोड़ता नहीं था। और प्रतिद्वन्द्वी के लिये भी ये था कि सांड

को मारकर ही विजय हासिल होती थी।

फाइट में सांड और उसका प्रतिद्वन्द्वी दोनों ही इस बार दक्षिणी अफ्रीका से मंगाये गये थे।

लाखों के खर्च से वह फाइट अरेंज होती थी और करोड़ों की आमदनी का ज़रिया था।

फाइट में मोटे-मोटे दांव लगते थे।

मैदान में पहुंचते ही नशे में पगलाया सांड नथुनों से भयंकर किस्म की फुंफकारें छोड़ते हुये जिंगारा नाम के देव की ओर लपका।

मैदान में दर्शकों में शोर-शराबा शुरू हो गया।

एक ओर बुलेट प्रूफ शीशे के केबिन में टोनी डिसूजा के साथ शाकाल बैठा शैम्पेन के घूंट भरते हुये बड़ी ही दिलचस्पी के साथ मैदान की ओर देख रहा था।

दौड़ते हुये सांड ने जिंगारा के सीने पर टक्कर मारी तो उसके पैर जमीन से उखड़ गये और वह हवा में तैरता हुआ पीछे कई फुट दूर जा गिरा।

हालांकि उसने सांड से बचने की कोशिश की थी। उसे रोकने के लिए हाथ भी आगे कर रखे थे, लेकिन फिर भी वह अपना बचाव नहीं कर सका था।

सांड फिर से उसकी तरफ दौड़ा।

उसके दौड़ने पर मैदान में धूल उड़ रही थी।

जिन लोगों ने जिंगारा पर दांव लगाया था वो चिल्लाने लगे—

"उठो जिंगारा...उठो।"

जिन्होंने सांड की तरफ से रकम लगाई थी वो खुश होकर चिल्ला रहे थे—"रौंद डालो जिंगारा को...।"

और सांड रौंद ही डालता जिंगारा को यदि वो ऐन वक्त पर करवट बदलकर अपना स्थान ना छोड़ देता।

अपनी ही झोंक में सांड का सिर जमीन से टकराया और वहां जमीन पर धूल का गुब्बार सा उड़ा और वहां छः इंच गहरा गड्ढा हो गया।

अपनी असफलता पर सांड और भी ज्यादा क्रोधित हो उठा।

फुंफकारों के साथ नथुनों से धुआं-सा छोड़ते हुये वह पलटा।

तब तक जिंगारा खड़ा हो चुका था।

सांड उसकी तरफ लपका तो इस बार एक ओर तनिक हटने पर जैसे ही सांड उसकी बगल से गुजरा, उसने उछलकर अपनी दायीं बांह उसकी गर्दन में पिरोई और उससे अजगर की मानिन्द ही लिपट गया।

सांड उसे कुछ दूर तक तो अपने साथ दौड़ाता ले गया, लेकिन फिर जैसे-जैसे जिंगारा उसकी गर्दन पर दबाव बढ़ाता रहा उसकी चाल धीमी पड़ती चली गई।

फिर रुक भी गया वो और तकलीफ में पड़कर अपनी गर्दन झटकने लगा।

"फौं...फौं...फौं...।" उसके मुंह से भयानक किस्म की आवाजें निकलने लगीं।

गर्दन को जोर-जोर से झटकते हुये वह जिंगारा को गिराने की कोशिश करने लगा। लेकिन जिंगारा की पकड़ फौलादी शिकंजे की तरह थी। उसने अपना दूसरा हाथ सांड की गर्दन के नीचे से ले जाकर पहले हाथ से मिलाया और फिर पूरी ताकत लगाकर उसकी गर्दन भींचने लगा।

कष्ट में पकड़कर सांड फड़फड़ाया तो एक बारगी उसकी गर्दन से लिपटे जिंगारा के पैर जमीन से उखड़ गये।

फिर सांड गिरा तो उसके साथ जिंगारा भी जमीन पर गिर गया। सांड पर से उसकी पकड़ छूट गई।

दर्शकों में शोर होने लगा।

सांड और जिंगारा दोनों एक साथ उठे।

जिंगारा ने देर ना करके सांड के सींग पकड़कर जोर का झटका दिया तो सांड फिर से गिर गया। और उसके गिरते ही जिंगारा घुटनों के बल उसकी गर्दन पर कूदा।

"तड़ाक...!"

सांड की गर्दन टूट गई और वो गौं...गौं की आवाज करता जमीन पर अपने पैर पटकते हुये तड़फने...झटपटाने लगा।

"जिंगारा...जिंगारा।" का शोर गूंजने लगा।

जिंगारा उठा और अपने दोनों हाथ हवा में उठाकर चारों तरफ घूमते हुये दर्शकों का अभिवादन स्वीकार करने लगा।

तत्पश्चात् वह फिर से जमीन पर तड़फते, जल बिन मछली की मानिन्द फड़फड़ाते सांड की तरफ पलटा और फिर से घुटनों के बल उसकी गर्दन पर कूद गया।

सांड के मुंह से डकराने की आवाज के साथ खून की मोटी धार फोर्स के साथ निकली।

फिर एक मिनट तक वो और छटपटाया...फड़फड़ाया और फिर उसका बदन शान्त होकर रह गया।

मुंह से विजय रूपी हुंकारी भरते हुये जिंगारा उठा और फिर से अपने दोनों हाथ हवा में उठाकर घूम-घूमकर दर्शकों का अभिवादन स्वीकार करने लगा।

बुलेट प्रूफ कांच के केबिन में शाकाल के साथ मौजूद टोनी डिसूजा शाकाल की ओर देखकर प्रसन्नता भरे लहजे में बोला—"आज हमें मोटी कमाई हुई है। करीब ग्यारह...साढ़े ग्यारह करोड़ की बचत आयेगी शाकाल साहब...।"

उसी समय उसे अपना मुंह बन्द कर लेना पड़ा—क्योंकि शाकाल की जेब में पड़ा उसका मोबाइल बजने लगा थ।

❑❑❑

❑❑❑

तकिये को सीने से लगाये हुये प्राची ने करवट बदली। उसकी आंखों में उस समय रंगीन सपने थे। सपने में था उसका राजकुमार...अर्थात् नीलम-सी नीली आंखों वाला आशीर्वाद पण्डित।

बेहद शानदार तथा डीलक्स साइज के अपने बेडरूम में प्राची उस इलेक्ट्रॉनिक बेड पर थी जो कि जरूरत पड़ने पर स्विच ऑन कर देने से मन्थर गति से गोल-गोल घूमने लगता था।

लेकिन उस समय बेड घूम नहीं रहा था। अपनी जगह पर स्थिर था।

बेडरूम में चार सी० एफ० एल० का ठण्डा-ठण्डा प्रकाश था तथा म्यूजिक सिस्टम पर इश्क फिल्म का मद्धिम स्वर में गाना 'इश्क हुआ...कैसे हुआ...ना तू जाने ना मैं जानूं...' बज रहा था और प्राची शर्मा की कल्पना में वो और आशीर्वाद पण्डित उस गाने को हरी-हरी घास से आच्छादित छोटी-छोटी पहाड़ियों में दौड़ते तो कभी लेटकर करवटें बदलते हुये गा रहे थे।

तभी बेड पर एक ओर पड़ा प्राची का मोबाइल बजने लगा और वो कल्पना लोक से बाहर निकल यथार्थ की दुनिया में लौटी।

करवट बदलकर वह मुस्कराई। थोड़ा शरमाई भी।

फिर उसने हाथ बढ़ाकर लगातार बजे जा रहे मोबाइल को उठाया और स्क्रीन पर नम्बर देखने पर उसे ऑन करके कान

के पास ले जाते हुये स्वप्निल से लहजे में बोली—"हां बोल प्रियंका, कैसे फोन किया?"

"बस ऐसे ही यार...।" प्रियंका की आवाज सुनाई दी—"वो कॉलेज से निकलते हुये मैंने तुझे आशीर्वाद और उसके दोस्तों के साथ खड़े देखा था—तभी से मन में कौतूहलता थी कि तुझसे जानू कि तू उनके साथ क्या कर रही थी? मोबाइल चार्ज नहीं था इसलिये चार्ज करने पर अब बात कर रही हूं। बोल मेरी बन्नो, क्या खिचड़ी पका रही थी तू उनके साथ...?"

"दोस्ती कर रही थी यार...।" फिर से करवट बदलकर नशीले से लहजे में बोली प्राची शर्मा—"वो क्या है कि मुण्डा दिल को भा गया और पहली बार कोई इस दिल को भाया है। उसे अपना बनाना है इसलिये...।"

"तो फिर क्या हुआ?" प्राची की बात पूरी होने से पहले ही दूसरी तरफ से फोन कर रही प्रियंका वर्मा कुछ ऐसे अन्दाज में बोली मानो जिज्ञासा में मरी जा रही हो वह—"इसलिए क्या? बात हुई तुम्हारी उससे? तुमने उससे क्या कहा, और उसने तुमसे क्या कहा...?"

"रिलेक्स माई डियर...रिलेक्स!" फिर से करवट बदल हंसते हुये बोली प्राची—"अभी मेरी उससे हैल्लो हाय ही हुई है। उसकी फ्रेंडसर्किल में कमल नाम के लड़के का जन्मदिन था। हम सब लोग वाधवा बेकर्स गये थे। उसने ट्रीट दी थी। उसके बाद सब अपने-अपने घर चल दिये थे। बहरहाल अब उनकी मित्र मंडली में मैं शामिल हो ही गई हूं—देखना कुछ ही दिनों में आशीर्वाद और मेरी दोस्ती के कॉलेज में चर्चे होंगे। उसे अपना बनाना मेरा एकमात्र मकसद है और उसे अपना बनाकर ही रहूंगी।"

"मेरी शुभ कामनायें तेरे साथ हैं...। बट...।"

"बट क्या?" प्राची की हिरणी सी आंखें सिकुड़ चलीं।

"तेरी चाहत...तेरे प्यार में एक बड़ी रुकावट है...।"

"कैसी रुकावट...?" व्याकुल-सी होकर बोली प्राची—"तू कहना क्या चाहती है प्रियंका?"

"शाम उन लोगों के साथ विशाखा नाम की लड़की भी थी ना?"

"हां, थी!" दुविधा में नजर आने लगी प्राची—"बड़ी हंसमुख और सुन्दर है। बेकरी में सबसे ज्यादा वो ही मेरे से बातें

कर रही थी। उसके बारे में तू क्या कहना चाहती है?"

"विशाखा और आशीर्वाद बचपन के दोस्त हैं। कॉलेज में इस बात की भी चर्चा है कि दोनों एक-दूसरे को चाहते हैं।"

"न...नहीं...!" खुले में जल रही मोमबत्ती की लौ की मानिन्द ही प्राची का लहजा कंपकंपाया—"ल...लोगों को तो बकवास करने की आदत है। शाम को तकरीबन चालीस मिनट तक मैं उन लोगों के साथ थी, लेकिन मुझे एक पल भी ऐसा नहीं लगा कि उ...उन दोनों के बीच में कुछ है। तूने जो सुना गलत है। और सुन, पहले अगर उनमें कुछ था भी तो अब उसे खत्म समझ। पहली नजर में वो मुझे...मेरे दिल को भाया है, और अब मैं उसे अपना बनाकर ही रहूंगी। मानती हूं विशाखा सुन्दर है—लेकिन मुझसे ज्यादा सुन्दर नहीं है। बहुत जल्द आशीर्वाद मेरा होगा। ओके बाय।" कहने पर प्राची ने मोबाइल ऑफ करके एक ओर उछाल दिया।

❑❑❑
❑❑❑

"शाकाल साहब।" स्कॉर्पियो की ड्राइविंग सीट पर फोन को कान से लगाये हुये जोरावर सिंह बोला—"लू चिन पर जो नजर रखे था उसका बन्दोबस्त कर दिया है मैंने। अब आप उसे फोन करके मेरी गाड़ी के बारे में बता दीजिये। मैं गाड़ी को होटल के गेट के पास खड़ी करता हूं। वो अपना सामान लेकर मेरी गाड़ी में आकर बैठ जायेगा तो मैं उसे अड्डा नम्बर दो पर ले आऊंगा।"

"ठीक है जोरावर...।" शाकाल की आवाज फोन पर सुनाई दी—"मैं उसे फोन करता हूं। तुम उसे लेकर अड्डा नम्बर दो पर पहुंचो—मैं भी वहां पहुंच रहा हूं। लेकिन, रास्ते में तुम सावधान रहना। देखना कोई तुम्हारा पीछा तो नहीं कर रहा है।"

"मैं ध्यान रखूंगा शाकाल साहब।"

फिर दूसरी तरफ से फोन कटने पर जोरावर सिंह ने लाल बटन दबाकर मोबाइल डैश-बोर्ड पर रख दिया और डैश बोर्ड पर रखे ट्रिपल फाइव सिगरेट के पैकेट से सिगरेट निकालकर उसे सुलगाने लगा।

सिगरेट खत्म होने से पहले ही लू चिन होटल से बाहर आया। उसके साथ उसका सामान उठाये होटल का वर्दीधारी कर्मचारी भी था।

जोरावर सिंह उसके बगल में गाड़ी लाते हुये बोला—"लू

चिन साहब...मेरा नाम जोरावर सिंह है। आप गाड़ी में बैठ जाइये।"

"ठीक है!" लू चिन बोला।

फिर जोरावर सिंह के कहने पर पीछे की सीट पर बैठे दो शूटर्स में से एक ने पीछे का दरवाजा खोला और गाड़ी से नीचे उतरकर उसने पहले लू चिन का सामान गाड़ी में रखा। फिर लू चिन के बैठने पर खुद भी गाड़ी में बैठा तो जोरावर सिंह ने गाड़ी आगे बढ़ा दी।

❑❑❑
❑❑❑

"आइये लू चिन साहब...।" उनसे पहले ही वहां पहुंच चुके शाकाल ने उत्साह भरे अन्दाज में लू चिन का स्वागत किया—"वेलकम! तशरीफ रखिये।"

बहुत ही शानदार ढंग से सजा हुआ था वह हॉल-नुमा कमरा। फर्श पर कीमती ईरानी कालीन था तो दीवारों पर जो पत्थर लगाये हुये थे वो शीशे की मानिन्द ही चमक रहे थे।

डबलडोर फ्रिज, बड़ी स्क्रीन वाला टी० वी० तथा डी० वी० डी० प्लेयर एक कीमती केबिनेट में रखे हुये थे।

चार कुर्सियों वाला कीमती सोफा और उसके बीच में शीशे के टॉप वाली सेन्टर टेबल।

वहां लू चिन का स्वागत करने वालों में शाकाल के अलावा दो विदेशी जवान, सुन्दर तथा अर्धनग्न सुन्दरियां भी थीं।

"लू चिन साहब...अब आप सबसे पहले तो ये बताइये कि आप क्या लेना पसन्द करेंगे?" लू चिन के बैठने पर उसके सामने वाले सोफे पर बैठते हुये शाकाल बोला—"ठण्डा...गर्म...?"

"कोई मर्दों के पीने वाली चीज मंगवाओ शाकाल साहब...।" बगल में खड़ी एक युवती का हाथ पकड़कर उसे अपनी गोद में घसीटते हुये अपनी बाईं आंख दबाकर बोला लू चिन—"ठण्डा या गर्म फिर कभी सही। अभी तो अपना मूड सही करना है। मुम्बई में कदम पड़ते ही जासूसों के पीछे लग जाने से दिमाग टेंशन में आ गया था। लेकिन अब थोड़ा ठीक महसूस कर रहा हूं मैं।"

"जोरावर सिंह काफी समझदार है लू चिन साहब। ये हर काम बहुत होशियारी से करता है। इसी ने उन जासूसों से आपका पीछा छुड़ाया है। ऐ...तुम जाकर ड्रिंक का सामान लाओ।"

चुटकी बजाकर दूसरी विदेशी युवती का ध्यान अपनी तरफ आकर्षित करने पर शाकाल बोला तो वह तेजी से एक ओर चल दी।

"शाकाल साहब...।" तभी शाकाल के सामने हाथ बांधे खड़ा जोरावर सिंह सम्मान भरे लहजे में बोला—"आपको ये जानकर हैरानी होगी कि जो लोग लू चिन साहब के पीछे लगे हुये थे वे आशीर्वाद पण्डित के साथी थे।"

"क्या...?" शाकाल बुरी तरह चिहुंका।

"व्हाट...?" लू चिन के भी चेहरे पर हैरानी के भाव नजर आने लगे।

"ये सच है शाकाल साहब।" जोरावर सिंह मानो अपने हरेक शब्द पर जोर देते हुये-सा बोला—"शुरू में यानि एयरपोर्ट से जो लोग बोलेरो पर लू चिन साहब के पीछे लगकर होटल सम्राट तक पहुँचे थे, उनमें एक ठिगने कद का युवक तथा एक लम्बे कद वाली खूबसूरत युवती थी। जब मैं होटल के सामने पहुंचा और उनका इन्तजाम सोच ही रहा था कि वहां उनके पास आशीर्वाद पहुंचा तो मुझे रुकना पड़ा। मेरे सामने ही पण्डित की औलाद ने बोलेरो वाली को डिसमिस किया। उनके जाने पर वो खुद लू चिन साहब की निगरानी पर लगा रहा। तकरीबन आधे घण्टे बाद वहां बाइक से एक दुबला-पतला व्यक्ति उसके पास पहुंचा तो उसने उसे लू चिन साहब की निगरानी पर लगाया और खुद वहां से चला गया...।"

"उसके बाद क्या हुआ?" जोरावर सिंह वाणी को विश्राम देने के लिये रुका तो व्याकुल-सा होकर शाकाल बोला—"उस दुबले-पतले आदमी का तुमने क्या किया? उससे कैसे पीछा छूटा जो तुम लू चिन साहब को यहां लेकर आये?"

"हां! मैं भी ये जानना चाहता हूं।" लू चिन के चेहरे पर चिन्ता के बादल मंडराते साफ परिलक्षित हो रहे थे।

यहां ये स्पष्ट करना भी जरूरी है कि लू चिन हिन्दी भाषा का अच्छा खासा ज्ञान रखता था।

"उस शख्स को बेहोश करके दलेली पहाड़ी और उसके वो आदमी अपने साथ दूसरे ठिकाने पर ले गये हैं।"

"इसका मतलब वो जासूस हमारे आदमियों के कब्जे में है?" गोद में बैठा रखी युवती के उभारों पर हाथ चलाते हुये बोला लू चिन।

"जी हां लू चिन साहब...।" सम्मान भरे लहजे में बोला जोरावर सिंह।

"फिर तो शाकाल साहब...मैं अभी आपके साथ सिर्फ चियर्स ही करूंगा। एक-एक पैग पीने के बाद हम उस जासूस के पास चलेंगे। उससे जानना जरूरी है कि उसे अथवा उसके विभाग वालों को मेरे बारे में क्या, कैसे तथा कितनी जानकारी है?"

"ठीक है लू चिन साहब। हम यहां एक-एक पैग ही पीयेंगे। बाकी जहां उस जासूस को रखा गया है वहां भी सब इन्तजाम है।"

"ये वाला भी...?" युवती के उभार को दबाते हुये कुत्सित ढंग से मुस्कराते हुये बोला लू चिन।

"वहां ये इन्तजाम तो नहीं है। हम इनको अपने साथ ले चलेंगे ना।"

तभी दूसरी वाली युवती एक ट्रॉली घसीटते हुये वहां पहुंची।

ट्रॉली में उम्दा किस्म की कई ब्राण्ड की स्कॉच की बोतलें, खाने में ड्राईफ्रूट, तली हुई मछली तथा बटर चिकन था।

लेकिन शाकाल और लू चिन ने वहां एक-एक पैग स्कॉच के और थोड़े तले हुये नमकीन काजू ही लिये और फिर उठ खड़े हुये।

□□□
□□□

पचास वर्षीय विज्ञान पाण्डे।

एक ऐसा साइंटिस्ट जो अपने घर में बना रखी प्रयोगशाला में हमेशा ही कोई-ना-कोई प्रयोग करता रहता है।

प्रोफेसर विज्ञान पाण्डे आशीर्वाद पण्डित की खास दोस्त विशाखा का बाप है। उसे एक अजीबो-गरीब बीमारी भी है। सिर पर हल्की-सी चोट पड़ते ही उसकी याददाश्त गुम हो जाती है और फिर उसकी याददाश्त तभी वापस आती है जबकि उसके सिर पर फिर से चोट पड़ती है।

अपनी लैब में विज्ञान पाण्डे उस समय एक नये प्रयोग में जुटा हुआ था। इस बार वो कमजोर दिमाग वालों के लिये ऐसा इन्जेक्शन तैयार कर रहा था जिसे लगाने पर उनका दिमाग तेज हो जाता था।

मेज पर उसके सामने जार में खून भरा पड़ा था और जार के बाहर एक कागज चिपका हुआ था जिस पर 'लोमड़ी का खून' लिखा हुआ था। लेकिन वास्तव में उसमें लोमड़ी का नहीं कुत्ते का खून था। दरअसल लोमड़ी का खून काफी दिनों पहले एक अन्य प्रयोग में खर्च हो चुका था और खाली पड़े उस जार में विज्ञान पाण्डे ने कुत्ते का खून भर दिया था—लेकिन जार पर लगी लोमड़ी के खून वाली चिट उतारना भूल गया था। अब उस जार में कुत्ते के खून को ही वह लोमड़ी का खून समझकर ही वो इन्जेक्शन तैयार कर रहा था जो कि उसके अनुसार कमजोर दिमाग वाले इन्सान के लिए फायदेमन्द साबित हो सकता था।

उस जार से उसने एक ड्रॉपर से दसेक बूंद खून निकालकर टेस्ट ट्यूब में डाला। उसके बाद उस टेस्ट ट्यूब में उसने दो-तीन अलग-अलग किस्म के द्रव डाले और फिर टेस्ट ट्यूब को चिमटी से पकड़कर बर्नर पर रखकर गर्म करने लगा।

टेस्ट ट्यूब में जब खून और द्रव उबलने लगा तो उसने बर्नर बन्द कर दिया और फिर उसमें भरे द्रव को ठण्डा करने के लिये एक कांच की कटोरी में डाल दिया। फिर आधे घण्टे बाद जब कटोरी में भरा द्रव ठण्डा हो गया तो विज्ञान पाण्डे ने उसे सीरेंज में भरकर अपने लगा लिया।

"अब कुछ ही देर में मेरा दिमाग लोमड़ी के दिमाग जैसा तेज हो जायेगा। इस प्रयोग के सफल होने पर दुनिया भर में मेरा नाम बहुत ही इज्जत से लिया जाया करेगा। विज्ञान पाण्डे की जगह वो सर विज्ञान पाण्डे कहा करेंगे।" बड़बड़ाते हुये उसकी जुबान बाहर निकलने लगी।

अगले ही पल वह घुटनों के बल जमीन पर बैठकर कूं...कूं करने लगा।

❑❑❑

❑❑❑

गामा पहलवान को लू चिन की निगरानी पर लगाकर मुण्डा जब घर पहुंचा तो घर में अंताक्षरी चल रही थी। किसी वकील की हत्या हो जाने पर कचहरी बन्द हो गई थी और केशव, राजन शुक्ला तथा करतार सिंह जल्दी वापस घर आ गये थे। दोपहर के खाने के बाद चाय पीते हुये चांदनी ने अंताक्षरी खेलने को कहा तो सभी लोग तैयार हो गये थे। मुण्डा भी चांदनी वाली टीम में शामिल हो गया।

चांदनी के साथ केशव पण्डित ही था पहले—जबकि सोफिया वाली टीम में राजन शुक्ला तथा करतार सिंह थे।

बराबर की टक्कर थी। नये तथा पुराने गाने गाये जा रहे थे कि तभी आशीर्वाद को लू चिन का ख्याल आया और उसने जेब से मोबाइल निकालकर गामा पहलवान का नम्बर लगाया।

"हां गामा अंकल...!" सम्पर्क होने पर वह बोला—"क्या रहा? वो चीनी अपने कमरे में ही है या फिर बाहर निकला?"

"लू चिन साहब हमारे पास पहुंच चुके हैं ओये पण्डित की औलाद...।"

दूसरी तरफ से गैंडे की खाल-सी सख्त तथा मगरमच्छ की खाल जैसी खुरदुरी आवाज सुनकर मुण्डा एक बारगी तो यूं ही चिहुंका कि उसके हाथ से मोबाइल तक छूट गया था, लेकिन शुक्र इस बात का कि जमीन पर गिरने से पहले ही मुण्डे ने उसे लपक लिया।

"कौन...?" इस बार वह स्पीकर चालू करने पर शान्त एवं सख्त लहजे में बोला।

आशीर्वाद को चौंकते...हड़बड़ाते...उसके हाथ से मोबाइल छूटते तथा उसे फिर से मोबाइल को लपकते केशव, सोफिया, चांदनी, राजन शुक्ला तथा करतार सिंह ने भी देखा था। और वे सभी जानते थे कि मुण्डा यूं हड़बड़ाने वाला नहीं है—जरूर कोई बड़ी वजह है जिसने उसे बुरी तरह चौंकाया है। ये समझने पर सभी कौतूहलता में भरकर उसकी तरफ देखने लगे।

जबकि मोबाइल के स्पीकर पर वही, गैंडे की खाल सी सख्त तथा मगरमच्छ की खाल जैसी खुरदुरी आवाज सुनाई दी—

"मैं कालों का काल, महाकाल, शाकाल बोल रहा हूं ओये पण्डित की औलाद। तेरे चमचे ने अपने मोबाइल पर तेरा नाम फीड कर रखा है। उसका मोबाइल मेरे पास है। बजने पर स्क्रीन पर तेरा नाम नम्बर के साथ चमका तो तभी पता चला तू बोल रहा है। सुन ओये...तेरा ये गन्ने जैसा सूखा, सड़ा आदमी जिसे तूने होटल सम्राट के बाहर लू चिन की निगरानी पर लगाया था वो इस समय हमारे कब्जे में है। बहुत ठोका हरामी को, पैरों और हाथों की उंगलियों के नाखून तक खींच डाले। जांघों में चीरा लगाकर उनमें नमक तथा मिर्च का पाउडर भरा, लेकिन साला जाने किस मिट्टी का बना है—बताकर नहीं दे रहा है कि उसका

तथा तुम्हारा सम्बंध हिन्दुस्तान की किस सीक्रेट सर्विस से है। नहीं बोला, लेकिन अब बोलेगा। गन्ना पेरने वाला कोल्हू मंगवाया है इस गन्ने के लिये। साले को पैरों की तरफ से कोल्हू के बेलनों में फंसाकर कोल्हू चलवाऊंगा तो मुंह पर लगा ताला खुलेगा साले का...।"

"ओये खबरदार!" मानो मानसूनी बादल गरजे हों, वैसे ही गरजकर बोला आशीर्वाद पण्डित—"अब तक तू गामा अंकल के साथ जैसे भी पेश आया है उसकी छोड़, अब अगर तूने उन्हें सुई की चुभन जैसा भी दर्द दिया तो मैं तुझे ऐसी मौत मारूंगा चाण्डाल कि देखकर मौत भी रो पड़ेगी। तेरी रूह को लेने आने वाले यमदूत घबराकर उल्टे पांव वापस हो लेंगे। तेरी मौत लिखने वाले विधाता को भी विश्वास नहीं होगा कि उन्होंने क्या तथा कैसे वाली मौत लिखी तेरी और तू कैसी मौत मारा गया। मैं सच कह रहा हूं ओये शाकाल या चाण्डाल, तेरी मौत को मैं इतनी भयावह बना दूंगा कि देखकर जमीन कांप उठेगी और आसमान रो देगा...।"

"अबे चुप कर ओये कुत्ते के पिल्ले...।" मानो कोई पागल हाथी चिंघाड़कर बोल रहा हो ऐसी ही आवाज आई—"वो कोई और होंगे जिन्हें तेरा खौफ होगा। मेरा नाम शाकाल है। मैं खुद एक खौफ हूं। मेरे सामने तेरी औकात एक भुनगे से ज्यादा नहीं है। मैं जब चाहूं तुझे अपनी चुटकी में मसलकर रख दूं...।"

"खोते दे...।" क्रोध में आकर करतार सिंह ने चिल्लाते हुये फोन के लिये लड़के की तरफ हाथ बढ़ाया ही था कि केशव ने उसका बाजू पकड़कर दबाते हुए उसे शान्त रहने का इशारा किया तो गुस्सा उतारने के लिये उसने अपनी हथेली पर घूंसा मारा और अपने निचले होंठ को दांतों में दबाकर काटने लगा।

□□□

□□□

जबकि फोन पर एक बार फिर से मानसूनी बादल से गरजे—

"ये बीच में कौन बोला ओये पण्डित...? तेरे में हिम्मत नहीं रही बोलने की जो भोंपू बुला लिया। एक बार फोन पर बरसकर ही थक-टूटकर चूर हो गया। सुन ओये पण्डित की औलाद...तेरे बाप से एक बहुत पुराना हिसाब चुकाना था। किसी वजह से वो सब भूला बैठा था। लेकिन इधर दो बार मेरे रास्ते में आकर तूने मेरे अन्दर दबी पड़ी बदले की चिंगारी को

हवा देकर शोला बना दिया है। अब तू मरेगा। शर्तिया मरेगा...।"

"अबे जा ओये चाण्डाल...।" चने के दो दाने मुंह में सरकाने पर नीलम-सी नीली आंखों वाला शाकाल का मखौल उड़ाने वाले लहजे में बोला—"तू क्या खाकर मुझे मारेगा! मुझे खत्म करने के चक्कर में अब तक तेरे जैसे हजार चाण्डाल काल के गाल में जा चुके हैं। लेकिन तेरे पास अभी मौका है। तुझे क्षमा किया जा सकता है अगर तू गामा अंकल को कुछ ना कहे और खुद को कानून के हवाले करके अपने पिछले गुनाहों का प्रायश्चित करने की सोच ले तो...।"

"भाड़ में गया तू और तेरा कानून। शाकाल जुर्म की दुनिया का बेताज बादशाह है। मेरी दुनिया में मेरा बनाया कानून चलता है और मेरे पास हमेशा वो पॉवर रही है कि मैं यहां जब चाहे, जैसा चाहे कानून लागू कर दूं। तू मुझे अपनी दुनिया के कानून के सामने घुटने टेकने को कह रहा है—लेकिन तू खुद मेरी दुनिया में आकर मेरे सामने घुटने टेकेगा।"

"तू भाड़ की बात करता है ओये नादान! कानून अपने आपमें दहकता हुआ ज्वालामुखी है और मैं उस ज्वालामुखी का लावा हूं। तुझसे भी पहले कई मुजरिमों ने कल्पना के पिंजरे में गलतफहमी का तोता पाला हुआ था। वो स्वयं को फौलाद का बना पुतला समझते थे। लेकिन जब मैं गरजकर उन पर बरसा तो वो मोम के पुतलों की तरह ही पिघले और नाली में बह गये। उनका वजूद ही मिट गया। तेरा भी ऐसा ही अन्जाम होने वाला है। बकरे की मां आखिर कब तक खैर मनायेगी? एक ना एक दिन तो बकरे को कई के छुरे तले आना ही होगा। तू भी बच नहीं सकेगा। क्योंकि मैं अपने दिमाग की छड़ी से तेरी दुनिया को समेटकर कुएं में तब्दील कर दूंगा। तू मेंढक की तरह छप्पक-छप्पक तो करेगा, लेकिन उस कुएं से बाहर नहीं निकल सकेगा। कानून का जाल डालकर तुझे पकड़कर बाहर निकालूंगा और फूंक मार-मारकर ही तेरे वजूद के चीथड़े उड़ाकर रख दूंगा...।"

"तेरे डायलॉग सुनने के मूड में नहीं हूं मैं ओये केशव के लौंडे! अगर अपने उस सींकची पहलवान को बचाना चाहता है तो बोल...या फिर मैं गामा को कूट-पीसकर उसका कीमा बना दूं...?"

"नहीं।" चिल्लाकर बोला आशीर्वाद पण्डित—"तू गामा

अंकल को हाथ भी नहीं लगायेगा। तू उन्हें छोड़ भी देगा तो भी जहां बुलायेगा मैं अकेला और निहत्था ही वहां पहुंचूंगा। बोल, मुझे कहां और कब आना है?"

"इस बारे में मैं तुझे दुबारा से फोन करूंगा पण्डित।" कहने पर उधर से फोन काट दिया गया।

मुण्डे ने भी लाल बटन दबाकर फोन को जेब में रख लिया।

"ये शाकाल वाला क्या मामला है आशीर्वाद?" चारमीनार मार्का सिगरेट सुलगाते हुये केशव ने पूछा।

"विमल राय वाला मामला तो आपकी नॉलेज में है ही डैडी जी...।" कुटुर-कुटुर करते हुये बोला आशीर्वाद—"शाकाल चीन को हमारे देश के सीक्रेट पहुंचाने वाला चीनी एजेन्ट है। विमल राय वाला मामला सही से हैन्डल कर लेनें पर मेरे सामने शाकाल का नाम आया था। परमा शाकाल के लिये काम करता था। उससे मैं शाकाल के बारे में उगलवा ही रहा था कि उसे गोली मार दी गई। मैं गोली मारने वाले के पीछे भागा तो सही, लेकिन वो मेरे हत्थे नहीं चढ़ा। परमा के और जो चेले-चपाटे मेरे हत्थे चढ़े उन्हें पुलिस में दे दिया था। दूसरे दिन उन बदमाशों को हर तरह से टार्चर किया, लेकिन कोई भी शाकाल के बारे में काम की जानकारी नहीं दे सका। मैं शाकाल के बारे में सोच ही रहा था कि जोकर जी का फोन आ गया।" यहां आपके चहेते ने थोड़ा झूठ का सहारा लिया। उस राज को कि ट्रिपल सी के चीफ ने उसे महाराष्ट्र एरिये का ट्रिपल सी का चीफ अर्थात् जोकर बना दिया है, राज रखते हुये वह बोला—"उन्होंने फोन पर मुझे बताया कि चीन से सी० एस० एस० अर्थात् चाइना सीक्रेट सर्विस का खतरनाक एजेन्ट लू चिन दिन की फ्लाइट से मुम्बई पहुंच चुका है और वो होटल सम्राट में ठहरा है। जोकर जी ने मुझे ये भी बताया कि वो कोई खतरनाक योजना लेकर शाकाल से मिलने वाला है। उनका कहना था कि लू चिन के पीछे लगकर शाकाल तक पहुंचा जा सकता है। उन्होंने लू चिन के पीछे मुमताज तथा नदीम को लगा रखा था। कॉलेज से लौटते हुये मैं मुमताज आंटी और नदीम अंकल से मिला तो मुमताज आंटी ने मुझे बताया कि शायद लू चिन को एहसास हो चुका है कि वो लोग उसकी निगरानी पर हैं। तब मैंने उन्हें वहां से हटाकर गामा नाम के एक जूनियर को लू चिन की निगरानी पर लगा दिया था। लेकिन ना जाने कैसे उन्हें गामा

अंकल की खबर हो गई और उन्होंने उसे वहां से उठवा लिया। अभी अंताक्षरी खेलते हुये मैंने गामा अंकल से लू चिन के बारे में जानकारी लेने को फोन लगाया तो शाकाल से बात हुई—और हममें जो बातें हुई आप सबने सुनी ही हैं।"

"हूं!" हुंकारी भरने पर केशव पण्डित ने सिगरेट का कश मारा और फिर नथुनों के रास्ते उसका धुआं बाहर करते हुये संजीदा से लहजे में बोला—"इसका मतलब मामला बेहद गम्भीर है। गामा की जान को खतरा तो है ही साथ में चीन के नापाक इरादों के बारे में जानना भी जरूरी है। शाकाल तुम्हें अपने किसी ठिकाने पर बुलाकर तुम्हें जान से मारना चाहता है...।"

"उसके चाहने से क्या होता है डैडी जी...।" जेब में हाथ डालते हुये सपाट से लहजे में बोला लोमड़ी का दूध—"आखिर होता तो वही है जो मंजूरे खुदा होता है। शाकाल मुझे नहीं अपनी मौत को अपने पास बुला रहा है। एक बार उससे सामना होने पर उसे ऐसा धोऊंगा...निचोडूंगा कि दुबारा इन्सानी जन्म लेने से इंकार करता नजर आयेगा।"

"लेकिन तुस्सी कल्ले (अकेले) उसदे बुलावे पर नी जाओगे निक्के पुत्तर जी।" मुण्डे की बात खत्म होते ही व्याकुलता भरे लहजे में बोला करतार सिंह—"उसदा फोन आने ते तुसी सानूं (हम लोगों को) जरूर बताओगे। हम...हम ना तो मैं तां तुसा दे नाल जरूर शाकाल दे अड्डे तक चलांगा। फिर दोनों मिलकर उस खोते दे पुत्तर की ऐसी दी तैसी करांगे।"

"पहले उसका फोन आने दीजिये पटियाला वाले अंकल जी...।" चने के दो दाने मुंह में सरकाने पर बोला केशवपुत्र—"फिर सोचा जायेगा कि हमें क्या और कैसे करना है। अभी तो मैं चला...।"

कहने पर मुण्डा उठ खड़ा हुआ।

सोफिया ने कुछ कहना चाहा उससे तो केशव ने इशारे से मना कर दिया। चने चबाते हुये मुण्डा लम्बे-लम्बे डग भरते हुये दरवाजे की ओर बढ़ चला।

❑❑❑

❑❑❑

बाइक चलाते हुये आशीर्वाद ने मोबाइल पर एक नम्बर लगाया और सम्पर्क होने पर चहका—"पांय लागूं अंकल जी...।"

"सदा सुखी रहो केशव नन्दन।" फोन पर इन्टर नेशनल क्रिमिनल अलफांसे की आवाज सुनाई दी—"कहो, कैसे याद आई अंकल की?"

"बस अंकल जी...।" कुटुर-कुटुर करते हुये बोला केशवपुत्र—"आशीर्वाद को आपके आशीर्वाद की जरूरत थी इसलिये...।"

"फिर ठीक है...अभी तो मैं दिल्ली में हूं। एक चक्कर चला रखा है। आज रात तक बकरे को हलाल करके सुबह मुम्बई में होऊंगा। घर आ जाना और थोक के भाव में आशीर्वाद ले जाना।"

"फिलहाल अंकल जी...।" इससे पहले अलफांसे फोन काटे जल्दी से तथा विनोदपूर्ण लहजे में बोला केशवपुत्र—"एक छोटा-मोटा आशीर्वाद तो आप फोन पर ही देने की कृपा करें...मुझे सख्त जरूरत है। मेरा काम नहीं चला है...।"

"बोल वीर बालक...।" आवाज में गम्भीरता थी—"कैसा आशीर्वाद चाहिये तुझे? किसी दुश्मन से पंगा है और उसमें विजय चाहता है तो विजयी भव। किसी से पीछा छुड़ाना चाहता है तो उसमें सफल भव। यदि...।"

"अंकल जी...।" अलफांसे की बात पर बीच में ही मेरठ की कैंची चलाते हुये आशीर्वाद बोला—"शाकाल के विषय में कुछ जानते हो तो, बस...उसका पता बता दें। इस समय तो आपका ये ही आशीर्वाद चाहिये मुझे...।"

"अब आया ना लाइन पर। सीधे नहीं कह सकता कि शाकाल के बारे में जानने के लिये फोन किया है? खैर, शाकाल नाम मैं अभी तुम्हारे मुंह से ही सुन रहा हूं। इसके बारे में कुछ और बताओ तो दिमाग के घोड़े दौड़ाऊं...तब शायद तुम्हारी मदद करती कोई बात ध्यान में आ जाये।"

"कोई मुजरिम ही है शाकाल। कुछ ऐसी बातें मेरे सामने आई हैं जिससे साबित होता है कि उसका सम्बंध चाइना सीक्रेट सर्विस से है।" फिर लड़के ने ये भी बताया कि शाकाल के कब्जे में उसका एक जानने वाला है और उसकी जान को खतरा है इसलिये उसे उसकी तलाश है।

उसकी पूरी बात सुनने पर अलफांसे ने कहा कि फिलहाल तो उसे शाकाल के बारे में कोई जानकारी नहीं है—लेकिन वह अपने चेलों से सम्पर्क करके उनसे पूछेगा। शायद उनमें से कोई

शाकाल के बारे में कोई जानकारी रखता हो। उसने ये भी कहा कि जैसे ही उसके मतलब की कोई जानकारी उसके हाथ लगेगी वो फोन करेगा। अलफांसे की बात सुनने पर उससे धन्यवाद कहकर मुण्डे ने फोन ऑफ करके जेब में रखा और बाइक की स्पीड बढ़ा दी।

❑❑❑
❑❑❑

"मालिक...मालिक...कहां हो मालिक?" चाय का कप ट्रे में रखे प्रोफेसर विज्ञान पाण्डे का घरेलू नौकर उसकी लैब में दाखिल होने पर उसकी तलाश में नजरें इधर-उधर दौड़ाते हुये उसे पुकारने लगा—"रहे नाम भगवान का, आपके लिये फर्स्ट क्लास गर्मा-गर्म चाय लाया हूं...आप हो कहां...अर्र...रे...उफ! हे भगवान...य...ये मैं क्या देख रहा हूं?" पुकारते हुये बुधुवा की नजर जैसे ही प्रोफेसर विज्ञान पाण्डे पर पड़ी उसने अपनी नजरें एक ओर घुमा लीं।

लेकिन उसकी नजरों में आश्चर्य के कम अविश्वास के ढेर सारे मेढ़क फुदक रहे थे।

कारण...वजह...?

विज्ञान पाण्डे कुत्तों की तरह अपनी एक टांग उठाये अपनी लैब की दीवार को गीली करने में लगा हुआ था।

"रहे नाम भगवान का...।" चाय वाली ट्रे को मेज पर रख अपनी नाक-भौं सिकोड़ते हुये बड़बड़ाया बुधुवा—"पढ़े-लिखे लोगों का ये हाल है तो हम जैसे अनपढ़ लोगों का तो भगवान ही मालिक है। लैब में एक तरफ पेशाब करने का स्थान बना हुआ है और मालिक...उफ्! मालिक है...नमक खाया है इसका, वरना तो पीछे ऐसी लात मारता कि अक्ल ठिकाने आ जाती।"

"कूं...कूं...कूं...!"

"अर्र...रे...हट...ये कुत्ता कहां से...अर्र...रे मालिक...य...ये आप क्या कर रहे हैं?" फिर उस समय तो बुड्ढा नौकर बुरी तरह बौखला उठा जबकि विज्ञान पाण्डे उसके नजदीक आकर उसके पांवों में लोटने लगा। वह हड़बड़ाकर दो कदम पीछे हटते हुये बोला—"र...रहे नाम भगवान का।...अ...आप उठिये और चाय पीजिये, ठण्डी हो जायेगी नहीं तो...।"

"कूं...कूं...कूं...।" विज्ञान पाण्डे उसके पास पहुंचकर

पालतू कुत्तों की तरह ही उसके ऊपर चढ़ने-लिपटने लगा।

"ही...ही...ही...। क्यों इस गरीब बूढ़े नौकर से मजाक करते हो बाबू जी?" वह बत्तीसी निकालते हुये पीछे हटते हुये बोला—"रहे नाम भगवान का। बहुत हो लिया मजाक। अब आप चाय पीयो। मैं जा रहा हूं। मुझे अभी रात का खाना तैयार करना है। मालकिन के सिर में दर्द है इसलिये आज वो रसोई में मेरी मदद भी नहीं करेगी। सब कुछ अकेले मुझे ही करना-धरना है। अर...रे...अब...आप हट भी जाओ मालिक...।"

उसके लाख गिड़गिड़ाने पर भी विज्ञान पाण्डे के व्यवहार में तनिक भी फर्क नहीं आया तो उसके नेत्र सोचने वाले अन्दाज में सिकुड़ चले।

"कहीं मालिक ने कोई उल्टी-सीधी दवाई तो नहीं खा ली है जो ये इस तरह का व्यवहार कर रहे हैं? रहे नाम भगवान का...मुझे ये बात मालकिन को बतानी चाहिये...।"

फिर वो किसी तरह करके विज्ञान पाण्डे से अपना पीछा छुड़ाकर वहां से भाग लिया।

❑❑❑
❑❑❑

"बोल हरामी तेरा सम्बंध देश की किस सीक्रेट सर्विस से है?" गिलास भरके शराब गामा पहलवान के चेहरे पर डालने पर किंग कोबरे की मानिन्द ही फुंफकारकर बोला शाकाल—"रॉ से? सी० बी० आई० या सी० आई० डी० का आदमी है तू और क्या तेरी तरह केशव पण्डित का लड़का भी उसी सीक्रेट सर्विस में काम करता है?"

जवाब में शाकाल का मखौल उड़ाने वाले अन्दाज में मुस्कराया गामा पहलवान।

उसके चेहरे पर कई जगह घाव थे और लगभग पूरे ही चेहरे पर खून की पपड़ियां जमीं हुई थीं।

चेहरे जैसा हाल पूरे जिस्म का था। शरीर पर मात्र अण्डर वियर था और उसे नायलॉन की रस्सी से गोल खम्बे से बांधा हुआ था।

किसी इमारत के तहखाने का वह बहुत बड़ा हॉल था जिसमें शाकाल के साथ लू चिन, जोरावर सिंह, दोनों विदेशी तथा अर्धनग्न युवतियों के अलावा नीली वर्दी वाले दर्जनभर गार्ड थे वहां।

गार्ड उस हॉल में अलग-अलग सतर्कता की प्रतिमूर्ति बने खड़े थे।

गामा पहलवान की खस्ता हुई पड़ी हालत इस बात की चुगली कर रही थी कि उसे बुरी तरह से टॉर्चर किया गया था।

गामा पहलवान की मुस्कराहट ने पहले से ही जले-भुने बैठे शाकाल को बिल्कुल जलाकर सींक-कबाब बना दिया।

"हरामजादे...सूअर के बच्चे...।" वह क्रोध में पागल-सा होकर पहले से टूटे-फूटे पड़े गामा पहलवान पर घूंसे बरसाते हुये कहर भरे लहजे में बोला—"तू मेरा...शाकाल का मखौल उड़ा रहा है? कुत्ते की औलाद तू शायद जानता नहीं कि शाकाल मौत का दूसरा नाम है। तू इस बात पर इतरा रहा है कि दो घण्टे हो जाने पर भी अभी तक हम तेरी जुबान नहीं खुलवा सके हैं। गलतफहमी है ये तेरी कि तू हमारे सामने जुबान नहीं खोलेगा। हम वो हैं कि अपनी पर आ जायें तो पत्थर भी बोलने लगते हैं—फिर तू तो हाड़-मांस का बना इंसान है। तू भी बोलेगा। जरूर बोलेगा।"

"कोशिश कर शाकाल...।" गैंडे की खाल जैसे सख्त एवं मगरमच्छ की खाल जैसे खुरदुरे लहजे में बोला गामा पहलवान—"और कोशिश कर। कर-करके थक ले। मेरा चैलेंज है कि तू मेरी इच्छा के विरुद्ध मेरी जुबान से एक भी शब्द नहीं निकलवा सकेगा।"

"तेरी मां की आंख...।" उस पर ताबड़-तोड़ घूंसे-लात बरसाते हुये गुर्राया शाकाल—"तू मुझे चैलेंज करता है? मैं तेरी जान ले लूंगा।"

फिर वह उसे तब तक पीटता रहा जब तक कि वह बेहोश ना हो गया।

❑❑❑
❑❑❑

कुर्ला के टैक्सी स्टैंड में यूनियन के ऑफिस पहुंचा आशीर्वाद।

ऑफिस में ड्राइवरों के साथ पंचायत जोड़े बैठे टैक्सी यूनियन का पदाधिकारी उसकी तरफ देखते हुये बोला—"आज इदर से कोई टैक्सी नेई मिलने का। हड़ताल पर है इदर सब लोग। कल अक्खा मुम्बई में टैक्सी की हड़ताल होयेंगा। साला इधर पुलिस स्टेशन इंचार्ज खाली-पीली ड्राइवर लोग को हूल देता और

पैसा वसूलता है। अब इदर से निकलने का, अपुन लोग में मीटिंग चल रहेला है।"

"मुझे टैक्सी की जरूरत नहीं है अंकल जी...।" चने के दो दाने मुंह में सरकाते हुये बोला केशवपुत्र—"शाम को इधर हसनू करके एक लड़का होता है। वो दिख नहीं रहा। उसी की तलाश में आया था मैं। अगर...।" बाकी का सेंटेंस पूरा किये बगैर वह उस शख्स की ओर के साथ-साथ वहां जमा टैक्सी ड्राइवरों की तरफ जवाब के लिये उम्मीद भरी नजरों से देखने लगा।

"वो घर चला गया।" एक ड्राइवर बोला—"इधर हड़ताल होने पर धंधा तो होना नहीं था उसका, इसलिये जल्दी चला गया।"

"उसका घर धरावी में है, ये तो मुझे पता है...लेकिन धरावी में कहां है ये नहीं मालूम। आप लोगों में से किसी को पता हो तो बताने की मेहरबानी करें।"

"धरावी में झोंपड़-पट्टी के इलाके में साईदा खान की चाल में रहता है वह।" नाक से बीड़ी का धुआं बाहर करते एक अन्य ड्राइवर बोला।

"ठीक है अंकल। धन्यवाद। अब मैं हसनू तक पहुंच जाऊंगा।"

पच्चीस मिनट बाद उसने अपनी बाइक को धारावी में झोंपड़-पट्टी के इलाके में साईदा खान की चाल के सामने रोका।

उस चाल में कई कमरे थे और सभी में किरायेदार रहते थे।

बाइक को स्टैंड पर खड़ी करने पर वह इमारत के बरामदे में खड़े एक अधेड़ के पास पहुंचा और उससे हसनू के बारे में पूछा तो उसने बताया कि दूसरी मंजिल पर सीढ़ियों से चौथे कमरे में रहता है।

हसनू के कमरे का दरवाजा खुला हुआ था और हसनू सामने ही बेड पर लेटा माउथ ऑर्गन बजा रहा था।

"वाह यार हसनू...।" मुंडा उसके कमरे में दाखिल होते हुये बोला—"तुम तो छुपे रुस्तम निकले। बहुत बढ़िया माउथ ऑर्गन बजाते हो। कहां से सीखा?"

"ओह बिग ब्रदर तुम...?" मुण्डे को देखकर हसनू बुरी तरह चौंका और माउथ ऑर्गन एक ओर फेंकते हुये उठा

बैठा—"अपुन को विश्वास नेई हो रहेला कि तुम इधर अपुन के पास आयेला है। ऐसा लग रहेला है कि अपुन तुम्हेरे कू लेकर कोईच सपना देख रहेला है।"

"हसनू ये सपना नहीं हकीकत है।" उसकी चारपाई पर बैठते हुये बोला केशवपुत्र—"तुमसे काम था और पूछते हुये तुम तक पहुंच गया।"

"काम के बारे में अपुन तुम्हेरे से बाद में पूछेगा बिग ब्रदर।" वह चारपाई नीचे उतरते हुये बोला—"पन पहले तेरे वास्ते ठण्डा-वण्डा लाता है...।"

"नहीं हसनू...।" उसका हाथ पकड़कर उसे फिर से चारपाई पर बैठाते हुये बोला मुण्डा—"मैं कुछ नहीं पियूंगा। थोड़ा जल्दी में हूं—लेकिन वादा रहा कि जल्दी ही फिर से तेरे यहां आकर तू ठण्डा-सण्डा जो भी पिलायेगा, जरूर पीयूंगा...।"

"तू वादा करता है तो ठीक। बोल, बिग ब्रदर...अपुन से क्या काम था तेरे कू जो इस टेम...अपुन के पास आयेला है?"

"किसी शाकाल नाम के अपराधी के बारे में कोई खबर है तुम्हारे पास हसनू?" चने चबाते तथा हसनू की तरफ देखते हुये बोला आशीर्वाद पण्डित।

"क्या...क्या नाम बोला तू बिग ब्रदर...?" चौंकते हुये-सा बोला हसनू।

"शाकाल!" बहुत ही गौर से हसनू की तरफ देखते हुये बोला नीलम-सी नीली आंखों वाला—"लेकिन तुम शाकाल के नाम पर चौंके क्यों?"

"बिग ब्रदर।" कुछ देर शान्त रहने पर ठण्डी आह-सी भरते हुये बोला हसनू नाम का वह गोरा-चिट्टा तेरह वर्षीय लड़का—"ये नाम अपुन के अतीत से जुड़ेला है। हो सकता है तेरे कू किसी दूसरे शाकाल की तलाश हो, पन शाकाल नाम का एक और दरिन्दा हुआ करता था। वो शाकाल अब कहां है? है भीच इस दुनिया में या मर चुका है ये भी अपुन नेई जानता। पन अपुन को यतीम बनाकर दर-दर की ठोकरें खाने पर मजबूर शाकाल नाम के दरिन्दे ने हीच कियेला है...।"

हसनू की बात सुनकर आशीर्वाद हैरान होकर उसकी तरफ देखने लगा।

□□□
□□□

"मालकिन...मालकिन...गजब हो गया मालकिन...आह!"

उत्तेजित हुआ घर का बूढ़ा नौकर बुधुवा। चिल्लाते तथा दौड़ते हुये जैसे ही प्रोफेसर विज्ञान पाण्डे के शयनकक्ष में दाखिल हुआ, उसका पैर फिसला और वह पलंग पर लेटी विज्ञान पाण्डे की सुन्दर तथा जवान-सी दिखने वाली बीवी सारिका पर जाकर ढेर हो गया।

"ये क्या नमकहराम...गद्दार...जानी दुश्मन...।" उसे अपने ऊपर से धकेलते हुये सारिका मानो कलपकर बोली—"मेरी गोद को क्या तुमने मदर टेरेसा की गोद समझा हुआ है जो लोरी सुनने आ गिरा। या फिर बुढ़ापे में तेरी अक्ल सठिया गई है जो ये सोच रहा है कि इस तरह हसीना मान जायेगी। अरे बूढ़े आशिक आवारा...मैं मनचली नहीं...। स्वामी के चरणों की सौगन्ध...सिर्फ अपने पति परमेश्वर की हूं मैं।"

"म...मालकिन मैं जानबूझकर आ...आप पर नहीं गिरा।" हड़बड़ाकर दो कदम पीछे हटते हुये बोला बुधुवा—"रहे नाम भगवान का—वो तो मेरा पैर फिसल गया था इसलिये मैं...मैं...। अंग्रेजी में माफ कर दीजिये मुझे...।"

"चल किया माफ...। तू भी क्या याद करेगा कि किसी दिलवाली मालकिन के...यहां काम करता है।" उठकर बैठने पर बोली सारिका—"अब बता बिना ब्रेक की गाड़ी बना, चीखते-चिल्लाते हुये तू यहां क्यों आया? क्या तुम्हें पता नहीं कि मेरी तबियत खराब है?"

"व...वो मालकिन...रहे नाम भगवान का...कहते हुये शर्म आती है, लेकिन बताना भी जरूरी है। ब...बात दरअसल ये है कि मालिक कुत्ता बन गये हैं।"

"क्या बकते हो तुम बुधुवा काका?" उसी समय कमरे में पहुंची विशाखा बुधुवा की बात सुनकर भड़ककर बोली—"शर्म नहीं आती मेरे पापा के बारे में उल्टा-सीधा बोलते हुये? वो आप बुजुर्ग हैं इसलिये लिहाज कर रही हूं—नहीं तो दो-चार बजा देती अब तक...।"

"लेकिन छोटी मालकिन मैंने झूठ तो नहीं कहा है ना।" परस्पर हाथ मलते हुये मानो कसमसाकर...बोला बुधवा—"रहे नाम भगवान का। आप लोग चलकर खुद अपनी आंखों से देख

लें। अगर मेरी बात झूठ निकले तो फिर आप मुझे जो चाहें सजा देना। मैं उफ् तक नहीं करूंगा।"

जरूरत नहीं पड़ी विशाखा या सारिका को सच्चाई जानने के लिये प्रोफेसर की लैब में जाने की। वह खुद ही 'कूं...कूं...कूं...' करते हुये वहां आ पहुंचा।

"प...पापा...पापा...आप ये क्या कर रहे हैं?" वह जब विशाखा के कदमों पर लोटने लगा तो वह बौखला उठी—"प्लीज पापा...आप उठकर खड़े हो जाइये नहीं तो मैं आपसे नाराज हो जाऊंगी।"

"कूं...कूं...कूं...।"

प्रोफेसर कुत्तों की मानिन्द ही जीभ को मुंह से बाहर निकालकर विशाखा के आगे-पीछे नाचने, उछलने-कूदने लगा।

ये देखकर अपनी छाती पीट-पीटकर, दहाड़े मार-मारकर रोने लगी सारिका—

"हाय मैं तो लुट गई...बर्बाद हो गई। जरूर मेरे हुजूर ने कोई उल्टी-सीधी दवा खा ली है तभी इसका ये हाल हुआ है। ऐ मेरे बलमा अनाड़ी तुमने अपनी मितवा को मुंह दिखाने लायक नहीं छोड़ा। लोगों को पता लगेगा कि मेरा सरताज कुत्ता है तो मुझ पर हंसेंगे। तूने कैसा गजब किया मेरे पत्थर के सनम...।"

"चुप हो जा मम्मी।" मम्मी की कोहली भरकर दुखी मन से बोली विशाखा—"पापा ने गलत दवा ही खाई होगी। दवा का प्रभाव खत्म होते ही ठीक हो जायेंगे। जब तक ये ठीक नहीं होते हम इन्हें घर से बाहर नहीं निकलने देंगे। और बुधुवा काका...आप भी इस बारे में किसी से कुछ नहीं कहेंगे। ठीक?"

"बिल्कुल ठीक छोटी मालकिन। रहे नाम भगवान का। मैंने इस घर का नमक खाया है...इस घर की इज्जत मेरे लिये मेरी जान से भी ज्यादा प्यारी है।"

❑❑❑
❑❑❑

एकाएक हसनू का चेहरा पत्थर जैसा सख्त नजर आने लगा।

"तुम्हेरे को शायद अपुन की बात पर विश्वास नेई हो रहेला है तभीच तुम अपुन को इस तरह देख रहेला है बिग ब्रदर।" कमरे की दीवार की तरफ देखते हुये सपाट से लहजे में बोला वह—"पन अपुन सच बोल रहेला है। अपुन को यतीम बनाने वाले का नाम

भी शाकाल हीच है। तुमको जानकर और भी ज्यादा आश्चर्य होयेंगा बिग ब्रदर कि अपुन का बाप पुलिस में इंस्पेक्टर होता था। बहुत ही ईमानदार और जांबाज किस्म के थे अपुन के अब्बू। अकबर अली नाम था उनका।"

"वाकई मुझे हैरानी हो रही है ये जानकर कि तुम एक पुलिस इंस्पेक्टर के बेटे हो।" जेब में हाथ डालते हुये तथा चेहरे पर हैरानी के भाव लिये बोला आशीर्वाद पण्डित—"उससे भी ज्यादा हैरान करने वाली बात ये है कि एक इंस्पेक्टर का बेटा होने के बावजूद तुम टैक्सियों की साफ-सफाई करके उनके ड्राइवरों से दो-दो रुपये मांगकर अपना गुजारा कर रहे हो। माना तुम्हारे अब्बू नहीं रहे—लेकिन...उन्होंने इतना छोड़ा ही होगा कि तुम अपनी पढ़ाई-लिखाई पूरी कर सकते...।"

"ये एक लम्बी तथा दर्दभरी कहानी है ब्रदर। अपुन सुनायेगा तेरे कू...अगरचे मेरी कहानी सुनने का टाइम है तुम्हेरे पास तो...।"

"है हसनू...मेरे पास वक्त-ही-वक्त है।" चने के दो दाने मुंह में सरकाने पर उन्हें दांतों से घायल करने पर बोला केशवपुत्र—"अभी तक अपने बारे में तुमने जो बताया उसे सुनकर तुम्हारे बारे में सबकुछ जानने की कौतूहलता मेरे मन में जाग उठी है। तुम मुझे आपबीती बताओ।"

इससे पहले कि हसनू अपने बारे में, अपने अतीत के बारे में बताना शुरू करे यहां नये पाठकों की जानकारी के लिये हसनू के बारे में कि आप सबका चहेता अर्थात् आशीर्वाद पण्डित उसे कैसे करके जानता है तथा उसकी उससे पहली मुलाकात कब तथा कहां हुई बताना जरूरी है।

दरअसल तेरह वर्षीय हसनू का बायां हाथ कोहनी से कटा हुआ है तथा वो चैम्बूर, वर्ली, कुर्ला के टैक्सी स्टैण्डों में टैक्सियों पर कपड़ा मारकर टैक्सी के ड्राइवरों से एक-दो रुपये मांगकर अपना गुजारा करता है।

इसके अलावा हसनू को खबरी लाल भी कहा जाता है क्योंकि वह टैक्सी स्टैण्डों पर रहते हुये अपराध जगत की बातों में विशेषकर दिलचस्पी लेता है और कभी उसे कोई काम की जानकारी मिलती है तो वह उसे पुलिस में बेच देता है। यानि एक तरह से वह पुलिस का मुखबिर भी है। आशीर्वाद पण्डित द्वारा लिखे तथा तुलसी साहित्य पब्लिकेशन्स में प्रकाशित

उपन्यास 'राधा गोरी मैं क्यों काला' में आशीर्वाद को एक अपराधी की तलाश होने पर वह अलफांसे से सम्पर्क करता है—लेकिन अलफांसे को उस अपराधी के बारे में कोई जानकारी नहीं होती तो अलफांसे ही आशीर्वाद को हसनू के बारे में बताकर कहता है कि उसके पास जाने से उस अपराधी का पता लग सकता था। और वाकई में हसनू उस अपराधी के बारे में जानता था। तब मुण्डे ने उसकी जानकारी के बदले उसे पांच सौ का नोट दिया था। इसके अलावा मुण्डे की दूसरी मुलाकत उससे 'जोकर भिड़ेगा चैम्पियन से' नामक उपन्यास के कथानक में हुई। कहने का तात्पर्य कि अपराध जगत तथा अपराधियों में दिलचस्पी रखने तथा उनकी खबरें सूंघने वाले हसनू तक आपका चहेता शाकाल की खोज-खबर निकालने की उम्मीद में ही पहुंचा था।

तो ये थी हसनू के बारे में संक्षिप्त-सी जानकारी, अब आगे पढ़ें—

आशीर्वाद ने उसे अपने अतीत के बारे में बताने को कहा तो पलभर तक तो वह सोचता रहा था कि कहानी को कहां से तथा कैसे शुरू करे।

मुण्डा जिज्ञासा भरी नजरों से उसकी तरफ देखते हुये कुदुर-कुदुर करता रहा।

"उस समय मेरी उम्र छः वर्ष की ही थी लेकिन मुझे उस समय जो हुआ, जैसे हुआ, सबकुछ ऐसे ही याद है जैसे वह सात वर्ष पुरानी घटना ना होकर कल की घटना हो।" हसनू बोला तो उसकी आवाज गहरे कुयें से आती प्रतीत हो रही थी—"मेरे अब्बू ने शाकाल की करोड़ों की हेरोईन पकड़ी थी और वो उस समय घर पर थे। मम्मी-पापा चाय पी रहे थे और मैं उसी कमरे में उनसे थोड़ी दूरी पर छोटी तथा बच्चों वाली कुर्सी-मेज पर बैठा अंग्रेजी की बुक पढ़ रहा था...।" कहते हुये हसनू की नजरें शून्य में टंग गईं—"ऐसा लग रहा था मानो वह शून्य में कुछ तलाश कर रहा है। क्षणोपरांत उसकी आंखों के सामने उसका अतीत यूं ही थिरकने लगा जैसे सिनेमा-घर के परदे पर कोई फिल्म चल रही हो।"

□□□
□□□

"ये हिन्दुस्तानी भी जाने किस मिट्टी के बने होते हैं।" गिलास में बची शराब को कण्ठ के नीचे उतारने पर नीम के कड़वे

तेल जैसे ही कड़ये लहजे में बोला लू चिन—"हरामी के हाथ-पैर गन्ने जैसे हैं और सहन शक्ति देखो तो इतनी कि हाथी को भी इतनी मार पड़े तो वह दो पैरों पर खड़ा होकर नाचने गाने लगे। जासूस की दुम। दोनों हाथों, दोनों पैरों की उंगलियों के नाखून खींच लिये गये। जिस्म में कई जगह ब्लेड से कट लगाकर उनमें नमक-मिर्च घुसेड़ा गया, लेकिन क्या मजाल कि हरामी के मुंह से उफ् भी निकली हो। मैं तो कहता हूं कि इसको जीवित रखने से कुछ हासिल नहीं होने वाला है। ये कभी मुंह नहीं खोलेगा। इसे मार ही डालो शाकाल साहब। मुझे तो इसकी सूरत से ही नफरत होने लगी है।"

"लू चिन साहब...फिलहाल इसकी तरफ से अपना ध्यान हटा लीजिये आप।" लू चिन के कंधे पर हाथ रखते हुये बोला शाकाल—"आइये हम लोग अन्दर चलकर बैठते हैं।"

फिर वो लोग एक शानदार ढंग से सजे कमरे में पहुंचे।

अन्दर दोनों विदेशी युवतियां पहले से ही उस कमरे में मौजूद थीं।

ड्रिंक का सारा सामान टेबल पर लगा हुआ था। शाकाल के इशारा करने पर एक युवती ने तीन गिलासों में स्कॉच डाली। एक गिलास लू चिन, एक गिलास शाकाल तथा एक गिलास जोरावर सिंह को पकड़ाया।

"हां तो लू चिन साहब।" स्कॉच का एक घूंट भरने पर दो दाने तले तथा मसालेदार काजुओं के मुंह में डालने पर उन्हें चबाते हुये तथा लू चिन की ओर देखते हुये बोला शाकाल—"कमांडर से बात हुई थी तो उन्होंने बताया था कि आप कोई योजना लेकर मेरे पास पहुंच रहे हैं। मैं जानना चाहता हूं कि वो कौन सी योजना है?"

"शाकाल साहब...।" स्कॉच का एक तगड़ा घूंट भरने पर संजीदा-सा होकर बोला लू चिन—"आप...आप क्या सारी दुनिया ही जानती है कि तिब्बत चीन का हिस्सा है। इस बात को अभी हालिया दिनों में ही अमेरिका के राष्ट्रपति बराक ओबामा ने भी बीजिंग के ग्रेट हॉल ऑफ पीपुल में आयोजित संयुक्त संवाददाता सम्मेलन को सम्बोधित करते हुये स्वीकारा है। लेकिन तिब्बत के निर्वासित धर्मगुरु इस बात का शुरू से ही विरोध करते चले आ रहे हैं। चीन और दलाई लामा के प्रतिनिधियों के बीच इस विषय में कई बार वार्ता हो चुकी है।

कई बार उनके धर्मगुरु को समझाया जा चुका है लेकिन वो मानने को तैयार नहीं। अब इस विषय में हमने एक निर्णय लिया है...।"

"कैसा निर्णय लू चिन साहब...?" लू चिन सांस लेने और घूंट मारने के लिये रुका तो कौतूहलता में पड़ा शाकाल बोला।

"तिब्बत के निर्वासित धर्मगुरु को उसके तमाम प्रतिनिधियों सहित खत्म कर देने से हमारा काम बन सकता है...।"

"ले...लेकिन लू चिन साहब, इस तरह तो तिब्बत में विद्रोह फैल जायेगा। तिब्बत के साथ चीन में आग-ही-आग दिखाई देगी।"

"सरासर ऐसा ही होगा अगर हम अपने दुश्मनों का सफाया खुद करेंगे तो।" काजू के चार दाने मुंह में डालकर उन्हें चबाते हुये गम्भीर से लहजे में बोला लू चिन—"नहीं शाकाल साहब...हम ऐसी भूल हर्गिज नहीं कर सकते हैं। अगर ये ही करना होता तो वर्षों पहले ही कर चुके होते। अपना काम बनाने के लिये हमने एक योजना बनाई है...।"

"मैं वो योजना जानना चाहता हूं लू चिन साहब...।" सस्पैंस में पड़ा हुआ-सा बोला शाकाल।

"तिब्बत का धर्मगुरु अपने तमाम प्रतिनिधियों के साथ भारत आया हुआ है। फिलहाल तो अभी वो दिल्ली में है। लेकिन दो दिन बाद वो मुम्बई में होगा। मुम्बई में उस पर आस्था रखने वाले तिब्बतियों ने शिवजी राव पार्क में दो दिन तक उनका तथा उनके प्रतिनिधियों के लिये स्वागत समारोह का आयोजन कर रखा है। यहां वो दो दिन सुबह-शाम एक-एक घण्टे धर्मोपदेश देंगे। यहां मुम्बई में मराठावाद पहले से रहा है। मराठी लोग बिहारी तथा यू० पी० के लोगों को पकड़-पकड़कर मार रहे हैं। हमारे काम का यहां अनुकूल माहौल है। तुमने यहां मराठा और तिब्बती चक्कर चलाकर तिब्बत से आने वाले सारे तिब्बतियों को खत्म करवाना है। इससे सांप भी मर जायेगा और लाठी भी नहीं टूटेगी।"

"मैं आपकी योजना समझ गया लू चिन साहब।" शराब का गिलास खाली करने पर शाकाल बोला—"आप चाहते हैं कि तिब्बतियों के धर्मगुरु को यहां कुछ इस तरह से खत्म किया जाये कि तिब्बत के लोगों को सपने में भी ना सूझे कि उसकी मौत के पीछे चीन का हाथ है...।"

"जी हां शाकाल साहब।" युवती को नया पैग तैयार करने का इशारा करने पर बोला लू चिन—"बिल्कुल ठीक समझे आप। ये ही हमारी योजना है और हमारी इस योजना के सफल होने पर हमें दूसरा जो फायदा होगा वो ये कि तिब्बत और हिन्दुस्तान के रिश्ते में एक कभी ना पटने वाली दरार बन जायेगी। जिससे तिब्बत के रास्ते इस देश में आतंकवादियों की घुसपैठ, हथियारों तथा ड्रग्स की स्मगलिंग के रास्ते खुल जायेंगे। दरअसल आजादी के बाद लगभग बासठ-तिरेसठ वर्ष में हिन्दुस्तान ने जिस तेजी से तरक्की की है वो हम समेत दुनिया के किसी भी मुल्क को फूटी आंख नहीं भा रही है। हर देश कैसे भी करके हिन्दुस्तान की दिन दूनी, रात चौगुनी हो रही तरक्की पर फुल स्टॉप लगाना चाहता है। खासकर पाकिस्तान तो हाथ धोकर इस मुल्क के पीछे पड़ा है और उसकी पूरी-पूरी मदद भीतरखाने अमेरिका कर रहा है। कभी-कभार हमारा मुल्क भी पाकिस्तान को गोला-बारूद की मदद करता रहता है। लेकिन फिर भी बात बनती नजर नहीं आ रही है। हमारा ये मिशन सफल होता है तो हिन्दुस्तान पर एक तगड़ी चोट पड़ेगी...।"

"हमारा ये मिशन जरूर सफल होगा लू चिन साहब...।" अपने माइका जैसे चिकने सिर पर बायां हाथ फिराते तथा स्कॉच का घूंट भरने पर आत्मविश्वास से भरे लहजे में बोला शाकाल—"तिब्बत के आध्यात्मिक धर्मगुरु तथा उसके प्रतिनिधियों की कब्रें अब शिवाजी राव स्टेडियम में बननी तय है। और आपकी योजनानुसार ही सारा काम होगा। कल मैं मराठियों के एक सड़कछाप नेता को बुलवाकर उसे उसके मुंहमांगे दाम देकर अपनी योजना को सफल बनाने के लिये तैयार कर लूंगा।"

"फिर तो बहुत बढ़िया होगा शाकाल साहब।" एक युवती को अपनी गोद में घसीटने पर उससे अश्लील किस्म की हरकत करते हुये बोला लू चिन—"लेकिन वो नेता आपके भरोसे का तो है ना? कहीं ऐसा तो नहीं कि वो आपसे गद्दारी कर बैठे और हमारी योजना की टांग पहले ही टूट जाये?"

"इस ओर से आप बिल्कुल निश्चिंत रहें लू चिन साहब...।" स्कॉच का एक घूंट भरने पर आत्मविश्वास से भरे लहजे में बोला शाकाल—"सोम ठाकरे...मेरा पुराना तथा भरोसे का चेला है। अपनी सुरक्षा को ध्यान में रखते हुये मैंने उसे राजनीति के अखाड़े में उतारा है वरना तो वो एक मामूली गुण्डा

हुआ करता था। पिछले दस वर्षों में मैं उसे अपने खर्चे पर दो बार लोक सभा का प्रत्याशी बनाकर इलेक्शन लड़ा चुका हूं। हालांकि जीता वो एक बार भी नहीं है लेकिन मुम्बई में उसका रुतबा अच्छा-खासा हो गया है। काफी तेज दिमाग भी है वो। पैसा तो उसे दूंगा ही, लेकिन एक बारगी पैसा ना भी दूं तो मेरे काम से इन्कार नहीं कर सकता है वो...।"

"फिर तो बहुत बढ़िया शाकाल साहब। अब मैं आराम करना चाहूंगा। रात में ये दोनों सुन्दरियां मेरे पास रहें तो...!"

"हां...हां क्यों नहीं लू चिन साहब? मोना और लुईस को मैंने आप जैसे मेहमानों का दिल बहलाने के लिये ही यहां रखा हुआ है। अब मैं चलता हूं...यहां आपको किसी प्रकार की तकलीफ नहीं होगी।"

❑❑❑

❑❑❑

डोर बेल बजने पर चालीस वर्षीय इंस्पेक्टर अकबर अली तथा उसकी छत्तीस-सैंतीस वर्षीय बीवी फातिमा की नजरें दरवाजे की तरफ उठीं।

"मैं देखती हूं जी...।" चाय का प्याला मेज पर रखी ट्रे में रखने पर फातिमा उठते हुये बोली।

"हूं।" कहने पर अकबर अली ने चाय का घूंट भरा।

एक ओर छोटी कुर्सी पर बैठे हसनू की निगाहों में कौतूहलता थी तथा वो दरवाजे की ओर देख रहा था।

फातिमा ने दरवाजा खोला तो सामने सब इंस्पेक्टर मधुप करकरे था।

"नमस्ते भाभीजी...। मुझे साहब से मिलना है।"

"नमस्ते भाई साहब...।" दरवाजे हटते हुये फातिमा बोली—"आइये...आपके साहब सामने ही हैं।"

करकरे अपने साहब के पास पहुंचा और उसका अभिवादन करने पर बोला—"सर...शाकाल और उसके दो चमचे थाने आये थे। नोटों का बैग लेकर आये थे। माल छोड़ने के लिये कह रहे थे। मैंने कहा साहब नहीं मानेंगे तो धमकी देकर चले गये कि वह हम दोनों को देख लेंगे। सर मुझे डर लग रहा है। शाकाल एक खतरनाक अपराधी है। मुझे तो लगता है कि हमें उसका कहना मान लेना चाहिये।"

"बकवास नहीं करकरे।" चाय का अन्तिम घूंट भरने पर कप को ट्रे में रखकर नीम के तेल जैसे ही कड़वे लहजे में बोला इंस्पेक्टर अकबर अली—"तुम अच्छी तरह जानते हो कि मैं रिश्वतखोर नहीं हूं और ना ही डरपोक हूं। यूं अपराधियों की धमकियों से डरने लगा तो कर ली मैंने पुलिस की नौकरी। तुम्हारे लिये मेरे पास एक सलाह है...।"

"क्या सर...?" नेत्र सिकोड़कर अकबर अली की तरफ देखते हुये बोला करकरे।

"या तो डरना छोड़ दो।" सिगरेट सुलगाते हुये बोला अकबर अली—"या फिर किसी दूसरे थाने में अपना ट्रांसफर करवा लो। क्योंकि मुझे डरपोक और भ्रष्ट किस्म के लोगों से सख्त नफरत है।"

"सर...आप तो नाहक ही मुझ पर खफा हो रहे हैं।" सोफे पर बैठते हुये शान्त भाव से बोला सब-इंस्पेक्टर मधुप करकरे—"मैंने एक बात ही तो की है आपसे—कोई रिश्वत ले तो नहीं ली ना। आपके पीछे थाने में जो हुआ उसे बताना तो था ही ना। आपको बताया अब चलता...।"

"ऐसे कैसे चले जायेंगे आप भाई साहब?" करकरे उठने लगा तो फातिमा बोली—"चाय के समय आये हैं। चाय पीकर जाइये।"

कहने पर केतली से कप में चाय डालने लगी वह।

बहुत ही इत्मीनान से चाय की चुसकियां लेने लगा मधुप करकरे।

तभी बाहर तेज का शोर होने लगा और शोर की वजह जानने के इंस्पेक्टर अकबर अली और फातिमा कुछ देर के लिये बाहर चले गये। लेकिन करकरे ने अपने स्थान से हिलने की कोशिश भी नहीं की।

"क्या हुआ सर...?" अकबर अली और फातिमा के लौटने पर वह चाय समाप्त करके खाली कप मेज पर रखते हुये बोला—"कैसा शोर था बाहर?"

"किसी शराबी को पीट रहे थे कुछ लोग।" वापस सोफे पर बैठते हुये बोला अकबर अली—"लोगों ने छुड़ा दिया।"

"ओके सर...।" करकरे उठते हुये बोला—"मैं चलता हूं। चाय के लिये शुक्रिया भाभीजी।" कहते हुये करकरे के होंठों पर रहस्यमयी किस्म की मुस्कराहट थिरक रही थी।

□□□
□□□

करकरे के जाने के बाद अकबर अली और फातिमा आपस में बातें करने लगे। दरअसल दो दिन बाद फातिमा की बहन की शादी थी और शादी की खरीददारी के बजट को लेकर मियां-बीवी में हल्की-फुल्की बहस चल रही थी।

जबकि हसनू अपनी पढ़ाई में तल्लीन था।

तभी एक बार फिर से डोरबेल बजी।

इस बार अकबर अली ने दरवाजा खोला और दरवाजा खोलते ही वह हड़बड़ाकर दो कदम पीछे हट गया।

पुलिस तथा सादा पुलिस फोर्स के साथ एण्टी करप्शन विभाग का एस० एस० पी० अन्दर दाखिल हुआ और अपने साथ आये दो इंस्पेक्टर्स से मुखातिब हो. बोला—"इंस्पेक्टर अजब सिंह...इंस्पेक्टर शर्मा, दोनों पूरे घर की तलाशी लो।"

"लेकिन सर क्यों?" हैरान होते हुये बोला अकबर अली—"मैंने किया ही क्या है जो मेरे घर की तलाशी हो रही है?"

"आपके मातहत सब-इंस्पेक्टर मधुप करकरे का कहना है कि रात आपने जो शाकाल के अड्डे से करोड़ों की कीमत की ड्रग्स पकड़ी थी उसे रिश्वत लेकर छोड़ दिया है आपने, और ड्रग्स की जगह थाने में नमक की थैलियां रखवा दी हैं...।"

"ये झूठ सर...।" अकबर अली चिल्लाकर बोला—"मुझ पर सरासर झूठा इल्जाम है ये। सारा महकमा जानता है कि अकबर अली रिश्वत नहीं लेता है। अभी कुछ देर पहले करकरे यहां आया था। उसने मुझे रिश्वत लेकर शाकाल का माल छोड़ने की बात की जरूर थी लेकिन मैंने उसे फटकार दिया था। वो झूठा है। बदनाम करने के लिये उसने आपसे झूठ बोला है।"

"कौन झूठा है और कौन सच्चा है, इस बात का अभी पता चल जायेगा इंस्पेक्टर अली।"

"लेकिन सर...मेरे घर की तलाशी एक सच्चे और ईमानदार आदमी की तौहीन है। ये अन्याय भी है और ज्यादती भी...।"

"इंस्पेक्टर अली...हम आपके मातहत की शिकायत पर अपनी ड्यूटी कर रहे हैं।" गैंडे की खाल से सख्त एवं मगरमच्छ की खाल जैसे ही खुरदुरे लहजे में बोला एस० एस० पी० देशमुख

पाटिल– "आप खुद पुलिस में हैं और ये अच्छी तरह जानते हैं कि तलाशी की कार्यवाही को पूरा किये बिना हम यहां से नहीं जा सकते हैं। हां, अगर आपके यहां से रिश्वत की रकम नहीं मिलती तो साथ में न्यूज चैनल वाले भी हैं। जो आपकी ईमानदारी का डंका पूरी दुनिया में पीटेंगे। तब आप अपनी मान-हानि का दावा हमारे विभाग पर भी कर सकते हैं।"

एण्टी करप्शन विभाग वालों के साथ वहां स्टार न्यूज की पूरी टीम भी पहुंची थी।

तलाशी शुरू हुई तो अकबर अपने माथे पर हाथ रखकर सोफे पर बैठ गया और फातिमा उसके पास खड़ी होकर उसके कंधे को हल्के-हल्के थपथपाते हुये उसे तसल्ली देने की कोशिश करने लगी।

हसनू भी अपनी पढ़ाई छोड़कर अपनी अम्मी के पास आ खड़ा हुआ था। कुछ ना समझते हुये भी वो इतना जरूर समझ रहा था कि उसके यहां कुछ गड़बड़ हो रही थी।

फिर तो अकबर उस समय सोफे से दबाकर छोड़े गये स्प्रिंग की मानिन्द ही उछलकर खड़ा हो गया जबकि उसने इंस्पेक्टर प्रेम प्रकाश शर्मा को कहते सुना–

"सर...ये इस सेफ में पांच-पांच सौ के नोटों के दस बण्डल हैं।"

"ये नहीं हो सकता है...।" चीखते हुये वह सेफ की ओर दौड़ा।

वो ही क्या कैमरामैन, एस० एस० पी० और बाकी के लोग भी लपककर उसी कमरे में रखी गोदरेज की आलमारी के पास पहुंचे।

आलमारी में कपड़ों के बीच पांच-पांच सौ के नोटों की दस गड्डियां थीं।

"हे मेरे मौला! ये क्या हो रहा है?" सेफ में नोटों के बण्डल देखकर फातिमा ने अपना सिर थाम लिया–"ये तू एक सच्चे इन्सान को किस बात की सजा देने जा रहा है?"

"ये मेरे खिलाफ एक साजिश है सर...।" क्रोधातिरेक थर-थर कांपते हुये बोला अकबर अली–"मुझे फंसाने वालों में सब-इंस्पेक्टर मधुप भी शामिल है। वही आया था अभी यहां। उसी ने मेरे सेफ में नोटों की गड्डियां रखी होंगी। मैं उस नीच इन्सान को छोड़ूंगा नहीं।"

"ये कैसे मुमकिन है इंस्पेक्टर अकबर अली साहब?" स्टार न्यूज चैनल का संवाददाता हाथ में माइक लिये उसके सामने आकर बोला–"कि आपके घर में आकर कोई आपकी सेफ में नोटों की गड्डियां रख गया और आपको पता ही नहीं चला?"

"ये सब उन लोगों ने योजना बनाकर किया। करकरे चाय पी रहा था तभी बाहर सड़क पर शोर होने लगा तो उत्सुकतावश मैं और फातिमा बरामदे में चले गये थे। उसी समय करकरे ने नोटों की गड्डियां सेफ में रखी होंगी।"

"तुम अपने आपको बचाने के लिये करकरे पर इल्जाम लगा रहे हो ऑफिसर।" बेहद शुष्क से लहजे में बोला एण्टी करप्शन डिपार्टमेंट का एस० एस० पी० देशमुख पाटिल–"नोटों की गड्डियां तुम्हारे घर में सेफ से बरामद हुई हैं। करकरे ने हमें सूचना दी थी कि तुमने रिश्वत लेकर शाकाल का माल छोड़ा है। रिश्वत लेने तथा फर्ज से गद्दारी करने के जुर्म में तुम्हें गिरफ्तार करता हूं। शर्मा...इसे हथकड़ी लगा दो।"

"नहीं साहब...मेरे पति बेईमान नहीं हैं। करकरे ने ही बदमाशी की है। मैं पाक परवर दिगार की कसम खाकर कहती हूं कि...।"

"रहने दीजिये मैडम। यहां कसम खाने से बात बनने वाली नहीं है। अब आपको या आपके पतिदेव को जो कहना-सुनना है अदालत में कहना-सुनना है। अदालत ही अब इस बात का फैसला करेगी कि आपके पति दोषी हैं अथवा निर्दोष। चलो सब।"

अकबर अली को हथकड़ी लगाकर एण्टी करप्शन डिपार्टमेंट के लोग बाहर निकले ही थे कि फातिमा बेहोश होकर गिर पड़ी।

❑❑❑

❑❑❑

"अम्मी उठो...अम्मी।" हसनू मां से लिपटकर रोने लगा।

हसनू के गर्म-गर्म आंसू फातिमा के चेहरे पर गिरे तो उसकी चेतना लौटी। फिर सबकुछ याद आने पर उसका चेहरा चट्टान जैसा कठोर हो चला।

आंखों से शोले से निकलने लगे।

"नीच...बेईमान करकरे।" वह मुट्ठियां भींचकर दांत पीसते हुये बुदबुदाई–"मैं तुझे जिन्दा नहीं छोड़ूंगी।"

"अम्मी...अम्मी...क्या हमारे अब्बू चोर हैं जो उनको हथकड़ी लगाकर ले गये हैं...?" हसनू रोते हुये बोला—"वो लोग उन्हें कहां ले गये हैं? अब्बू तो खुद पुलिस हैं...चोर-पुलिस का खेल हो रहा है क्या अम्मी...?"

"नहीं बेटे...।" उठकर खड़े होते हुये चोट खाई नागिन की मानिन्द ही फुंफकारी फातिमा—"चोर-पुलिस का खेल नहीं था वो। एक बेईमान ने तेरे अब्बू को फंसाया है। मैं उस नीच को छोड़ूंगी नहीं...।"

तेज-तेज कदमों से चलते हुये फातिमा दूसरे कमरे में गई और वहां से अकबर अली का सर्विस रिवॉल्वर लेकर उसे अपनी कमर में खोंसा। फिर काला बुर्का पहनकर हसनू को साथ लेकर एक टैक्सी पर सवार होकर वर्ली नाके थाने में पहुंची।

वहां पता लगा कि सब-इंस्पेकटर मधुप करकरे अपने घर गया हुआ है। फातिमा करकरे के घर का पता जानती थी। गोखले मार्ग पर अप्सरा अपार्टमेंट के एक फ्लैट में वो अकेला रहता था। कुछ दिनों पहले उसकी रिचा नाम की लड़की से मंगनी हुई थी। तब उसके माता-पिता जो कि नागपुर में रहते थे वहां आये थे और करकरे ने रिंग सेरेमनी के अवसर पर अपने स्टॉफ के लोगों को भी पार्टी में बुलाया था। तब फातिमा भी हसनू और अपने पति के साथ उस पार्टी में गई थी।

फातिमा जब करकरे के फ्लैट में पहुंची तो उस समय उसके यहां शाकाल और उसका दायां हाथ जोरावर सिंह भी मौजूद था और उनमें शराब-कबाब की पार्टी चल रही थी।

"भाभीजी आप...और इस समय यहां?" फातिमा को अपने यहां आया देखकर सब-इंस्पेक्टर मधुप करकरे की आंखों में आश्चर्य तथा अविश्वास के बड़े-बड़े मगरमच्छ 'छप्पक-छप्पक' करते नजर आने लगे।

"ओये नीच इन्सान...!" उसकी तरफ नफरत तथा हिकारत भरी नजरों से देखते हुये नागिन की मानिन्द ही फुंफकार भरे लहजे में बोली फातिमा—"मत कह मुझे भाभी अपनी गन्दी जुबान से। ना मैं तेरी भाभी हूं...और ना ही तेरे जैसे कमीने इन्सान की कोई भाभी हो सकती है। तू तो दौलत का भूखा वो इन्सान है जो वक्त पड़ने पर अपनी सगी भाभी को ही नहीं अपनी मां को भी बेच खाये...।"

"बस...बस ओये औरत...बहुत कर चुकी तू बकवास।"

क्रोधातिरेक थर-थर कांपते हुये चिल्लाकर बोला मधुप करकरे—"अब अपनी जुबान को लगाम लगा और दफा हो जा यहां से। इसी में तेरी भलाई है...।"

"मैं यहां यूं ही दफा होने के लिये नहीं आई ओये नीच इन्सान।" क्रोध में पागल सी हो रही फातिमा मानो अपना हरेक शब्द चबा-चबाकर, चिंगल-चिंगलकर दांतों की चक्की में पीसते हुये-सी बोली—"तूने मेरे खाविन्द पर झूठा इल्जाम लगवाकर उन्हें गिरफ्तार करवाया है। तेरी कमीनी हरकत की वजह से एक सच्चे और ईमानदार इन्सान के मुंह पर कालिख लगी है। अपने पति के चेहरे पर लगी कालिख को मैं तेरे खून से धोऊंगी। मैं तुझे जिन्दा नहीं छोड़ूंगी ओये जलील इन्सान।" कहने पर फातिमा ने रिवॉल्वर निकालकर करकरे पर तान दी।

❑❑❑
❑❑❑

करकरे यूं ही मुस्कराया मानो कोई नासमझ बच्चा खिलौना पिस्तौल उस पर तानकर उसे डराने की कोशिश कर रहा हो।

"मुस्करा मत ओये जलील इन्सान।" आंखों में क्रोध, नफरत तथा हिकारत का ज्वालामुखी समेटे मानो कोई चोट खाई नागिन अपना फन जमीन पर पटक-पटककर बोल रही हो, ठीक वैसे ही बोली फातिमा—"तू मेरे हाथों बचेगा नहीं। अपने आखिरी वक्त पर अपने रब को याद कर ले—जहन्नुम की आग में झुलसने से बच जायेगा...।"

"बस कर ओये मूर्ख औरत। बहुत भौंक चुकी तू।" छलांग लगाकर एक ही झटके में फातिमा के हाथ से रिवॉल्वर झटकने पर भेड़िये की मानिन्द ही गुर्राकर बोला मधुप करकरे—"अब मुंह से एक भी शब्द फालतू का निकाला तो हलक से जुबान खींचकर हाथ में दे दूंगा। रिवॉल्वर से गोलियां निकालकर दे रहा हूं तुझे, जैसे आई वैसे ही लौट जा वरना तुझे और तेरे पिल्ले को काटकर रख दूंगा।"

"नहीं करकरे...नहीं।" हाथ में पकड़े गिलास की शराब को उदरस्थ करने पर खाली गिलास को एक ओर उछालकर फातिमा के इर्द-गिर्द चक्कर लगाते तथा उसकी तरफ कुत्सित-सी निगाहों से देखते हुये व्यंगभरे लहजे में बोला शाकाल—"हमने इस हसीना को ऐसे जाने दिया तो ये हमारी मर्दानगी पर शक करेगी। जब शेरनी बनकर ये तीन शेरों के बीच आ ही गई तो

इसकी हेकड़ी निकालनी ही होगी। इसका पति तो अब वर्षों तक जेल से छूटने वाला नहीं है। आज इसकी जवानी से खेलकर हम इसे इसकी ही निगाहों में इतना गिरा देंगे कि दुबारा ये हमारी तरफ नजर उठाकर भी नहीं देखेगी।"

"ठीक है शाकाल साहब...। आपको ये पसन्द आ ही गई है तो कर लो आप अपनी मनमर्जी। वैसे, पसन्द मुझे भी है ये। एक-आध बार इसके घर गया हूं। नीयत इस पर डोली भी थी, लेकिन अफसर की बीवी होने के नाते अपनी नीयत पर कंट्रोल ही रखना पड़ा था। एक बच्चे की मां होने पर भी कुंवारी कन्या जैसी लगती है। ऐसा लगता है अली भाई रोज रात को इसके जिस्म की जपानी तेल से मालिश करके इसे फिट रखता है।"

"इसमें कोई शक नहीं करकरे कि एक बच्चे की मां होने पर भी ये अट्ठारह वर्ष की कुंवारी कन्या की तरह नजर आ रही है।" बोतल को मुंह से लगाकर शराब गटकते हुये बोला माइका जैसी चिकनी टांट वाला शाकाल—"इसका गदराया हुआ जिस्म देखकर ही मेरा ईमान खराब हुआ है। लेकिन तुम फिक्र मत करो। शाकाल को मिल-बांटकर खाने की आदत है और मिल बांटकर खाने से हाजमा भी दुरुस्त रहता है। मेरे बाद तुम दोनों भी इसकी जवानी से खेल सकोगे।" कहने पर उसने फातिमा की कोहली भरनी चाही। लेकिन क्रोध में बिफरी पड़ी फातिमा ने उसके पेट पर लात मारी तो वह लड़खड़ाकर मेज पर जा गिरा।

'छन...छन...छनाक...।'

मेज उलटी तो उस पर पड़ा खाने-पीने का सामान नीचे गिर गया।

"ठहर साली...अभी तेरे सारे कस-बल ढीले करता हूं।" गुर्राते हुये जोरावर सिंह ने उस पर छलांग लगा दी।

फातिमा ने एक तरफ हटकर उसे तो धोखा दे दिया और वह मुंह के बल गिरा भी—लेकिन वह करकरे से ना बच सकी। उसने उसे पीछे से कोहली भरकर पहले तो उठाया और फिर छोड़ दिया।

परिणाम स्वरूप—

वह लड़खड़ाकर पीछे को जा गिरी।

फिर शाकाल ने उस पर जम्प लगा दी।

"अब नहीं बच सकेगी तू साली...।" उसके हाथ अपनी हथेलियों में दबोचकर अपने होंठ उसके होंठों के पास ले जाते

हुये किंग-कोबरे की मानिन्द ही फुंफकारकर बोला शाकाल—"तूने शाकाल के पेट पर लात मारी है कुतिया...अब देखना हम तीनों मिलकर तेरा क्या हाल करते हैं।"

"छोड़ मुझे हरामी...।" फातिमा तड़फड़ाते...फड़फड़ाते हुये अपनी तरफ से उसकी पकड़ से छूटने का पूरा जोर लगाते हुये बोली—"मैं...मैं कहती हूं छोड़, वरना मैं तेरी बेटी-बोटी चबा जाऊंगी।" कहते हुये शाकाल के कंधे पर दांत गड़ा दिये उसने।

"आऽऽह!" दर्द से बिलबिलाते हुये चीखा शाकाल—"छोड़ दे मुझे कुतिया। आह...बचाओऽऽऽ!"

लेकिन फातिमा ने उसे नहीं छोड़ा। जोंक की मानिन्द ही उससे लिपटी रही।

जोरावर सिंह ने उसके बाल पकड़कर खींचना शुरू किया—तब भी उसके दांत शाकाल के कंधे में गड़े रहे। उल्टा जोरावर द्वारा बाल खींचे जाने पर वह पीछे घिसटी तो शाकाल की पीड़ा और बढ़ गई और वह अपने हाथ-पैर जमीन पर पटकते हुये 'बचाओ-बचाओ' चींखने लगा।

तभी मधुप करकरे ने रिवॉल्वर के दस्ते से उसके सिर पर प्रहार किया तो वह चीखी और उसके दांतों से शाकाल का कंधा आजाद हो गया।

फातिमा के सिर से खून बहने लगा तथा उसकी आंखों के सामने अंधेरा छाने लगा।

अपनी अम्मी के सिर से बहते खून को देखकर छः वर्षीय हसनू मानो पागल सा हो उठा।

"कुत्ते...कमीने...तूने मेरी अम्मी को मारा। मैं तुझे जान से मार डालूंगा।"

करकरे की दाईं टांग से लिपटकर उसने उस पर अपने दांत गड़ा दिये।

"छोड़ हरामजादे...कुत्ते के पिल्ले नहीं तो मैं तुझे जान से मार दूंगा।" दर्द से बिलबिलाते हुये मधुप करकरे चिल्लाया।

लेकिन उस समय तो मासूम हसनू के सिर पर मानो कोई शैतान सवार था। उसने पूरी ताकत लगाकर करकरे की जांघ से दो ग्राम तक मांस नोच लिया। तभी गुस्से में पागल हुये करकरे ने रिवॉल्वर की लिबलिबी दबा दी।

"धांय...!"

"अ...म्मीऽऽ।"

गोली चली और हसनू के बायें बाजू की कोहनी के परखच्चे उड़ाती चली गई।

फातिमा पहले ही बेहोश हो चुकी थी। कोहनी पर गोली लगने से निकलने वाले खून को देखकर दहशत में हसनू भी बेहोश होकर गिर पड़ा।

❑❑❑

❑❑❑

"फिर क्या हुआ हसनू?" हसनू सांस लेने के लिये रुका तो व्याकुलता में भरकर बोला आशीर्वाद पण्डित—"तुम्हारी अम्मी...?"

"मेरी आंख दो दिन बाद अस्पताल में खुली थी।" ठण्डी आह-सी भरकर बोला हसनू—"तब मेरे पास मेरा राशिद मामू था। मेरा कुहनी से नीचे का हाथ बेकार हो चुका था। मामू ने बताया अम्मी के सिर की दो नसें फट चुकी थीं और उनका दूसरे दिन ऑपरेशन होना था। ऑपरेशन में पन्द्रह लाख का खर्च था और खर्चे के लिये प्रापर्टी डीलर को घर बेचा जा चुका था। इसके अलावा एक और बुरी खबर सुनाई मामू ने। थाने में लॉकअप में ही अब्बू को हम पर जो बीती उसका पता लग गया था। दूसरे दिन जब उन्हें अदालत में पेश करने के लिये लेकर जाया जा रहा था तो उन्होंने पुलिस जीप से कूदकर भागने की कोशिश की तो सब-इंस्पेक्टर मधुप करकरे की गोली से मारे गये थे। तब मैं छोटा था ही...मुझे अब्बू की मौत का दुख क्या होना था? अम्मी के ऑपरेशन का भी मुझे टेंशन नहीं था। दूसरे दिन अम्मी का ऑपरेशन हो गया तो मामू ने बताया कि ऑपरेशन ठीक-ठाक हो गया था। लेकिन ठीक क्या हुआ था, ऑपरेशन के चार दिन बाद अम्मी का इन्तकाल हो गया। तब मामू ने ही मुझे संभाला। मुझे दो महीने बाद हॉस्पिटल से छुट्टी मिली तो मामू यहां इसी चाल में ले आया। मामू टैक्सी ड्राइवर था। शराब पीने की आदत की वजह से हमेशा तंग रहता था, इसी वजह से उसने मुझे पढ़ाया-लिखाया नहीं। फिर तीन साल बाद मामू का भी इन्तकाल हो गया। ज्यादा शराब पीने से उसका लीवर खराब हो गया था। तब इसी चाल में रहने वाले जयकिशन मामू ने मुझे टैक्सी स्टैण्ड पर लगा दिया। स्टैण्ड पर टैक्सियों पर कपड़ा मारकर मुझे चालीस-पचास रुपये की कमाई शुरू में ही होने लगी थी। पन्द्रह रुपये रोज का इस कमरे का किराया है और बाकी पच्चीस रुपये

में जैसे-तैसे करके मैं अपना गुजारा कर लेता था। फिर धीरे-धीरे कमाई बढ़ती भी रही। मैंने दो-तीन टैक्सी स्टैण्ड पकड़ लिये। इसके अलावा अण्डरवर्ल्ड पर भी नजर रखने लगा। दरअसल कमाई की चाह में नहीं, मुझे शाकाल की तलाश थी। उसने मुझे यतीम ही नहीं बनाया बल्कि मेरे भविष्य को भी बेकार करके रख दिया था। यूं कहने को तो सब-इंस्पेक्टर मधुप करकरे भी मेरा अपराधी था, लेकिन उस कमीने को उसके किये की सजा कुदरत दे चुकी थी। वो एक आतंकवादी की गोली का शिकार तब बना था जबकि वो उस आतंकवादी को आत्मसमर्पण के लिये ललकार रहा था...।"

"यानि करकरे अब इस दुनिया में नहीं है।" चने के दो दाने मुंह में सरकाने पर बोला आशीर्वाद पण्डित—"अभी मैं यही सोच रहा था कि शाकाल तक पहुंचने के लिये मैं उसी हरामखोर को पकडूंगा। लेकिन...। खैर, हसनू भाई...तुम्हें भी शाकाल की तलाश है और मुझे भी। मुझे लगता है कि हम दोनों को जिस शाकाल की तलाश है...वो एक ही है। तुमने छः वर्ष की उम्र में उसे देखा है। उसका चेहरा कुछ हद तक तो याद होगा ही तुम्हें?"

"कुछ हद तक नहीं बिग ब्रदर।" आंखों में नफरत के भाव लिये सपाट से लहजे में बोला हसनू—"उस कमीने का चेहरा हर समय मेरी आंखों के सामने नाचता रहता है। करकरे ने जो किया उसी के इशारे पर किया था...।"

"तब तुम्हारी सहायता से मैं उसका चित्र बनाना चाहता हूं...इससे उसकी तलाश में आसानी होगी। बोलो, करोगे तुम मेरी मदद?"

"बिल्कुल करेगा बिग ब्रदर। पन तेरे कू भी अपुन के लिये कुछ करना होगा।" एक बार फिर से टपोरियों वाली भाषा का इस्तेमाल किया हसनू ने।

"बोलो हसनू...मुझसे तुम क्या चाहते हो?" हसनू की तरफ देखते हुये बोला आशीर्वाद पण्डित।

"अगर शाकाल तुम्हारे हाथ लगे तो उसे तुम मारोगे नहीं। उसे अपुन मारेगा। अपुन उससे अपनी बर्बादी का बदला लेगा।"

"ठीक है हसनू...।" चने चबाते हुये बोला आशीर्वाद—"शाकाल को मैं नहीं मारूंगा। उसे मैं ठीक उसी तरह

तुम्हारे हवाले करूंगा जैसे फिल्म शोले में धर्मेन्द्र गब्बर सिंह को संजीव कुमार के हवाले करता है। अब तुम पहले तो मुझे एक पेन और कोई सादा कागज दो और फिर शाकाल का हुलिया बताओ।"

❑❑❑
❑❑❑

आधे घण्टे की मेहनत के बाद लड़के ने जो चित्र बनाया उसे देखकर हसनू चिल्ला ही तो पड़ा—"बिल्कुल ये हीच चेहरा है उस शैतान का। सात साल में कोई फर्क आया हो तो आया हो—पन तब ऐसा हीच दिखता था। तुम कमाल का आर्टिस्ट है बिग ब्रदर...।"

"फिर ठीक है हसनू भाई।" चारपाई से उठते हुये बोला मुण्डा—"मुझे जैसे ही इसके बारे में कोई खबर लगेगी तो मैं तुम्हें कैसे भी करके खबर करूंगा...।"

"बिग ब्रदर...तुम अपना कॉन्टेक्ट नम्बर देकर जाने का। कल अपुन कोई सेकेंड हैण्ड मोबाइल खरीदेगा और साथ ही शाकाल की तलाश में इधर-उधर हाथ-पांव मारेगा। तुम्हेरे से पहले अपुन को उसका खबर लगा तो अपुन तेरे कू खबर करेगा।"

मुण्डे ने उसे अपना मोबाइल नम्बर नोट कराया और फिर वहां से रुख्सत हुआ। रास्ते में वह पाली हिल पुलिस स्टेशन रुका। उस समय पुलिस स्टेशन का इंचार्ज इंस्पेक्टर अनिल यादव अपने ऑफिस में बैठा ऊंघ-सा रहा था।

"नमस्ते इंस्पेक्टर अंकल...। लगता है आज आपके पास कोई काम नहीं है...?"

"ऐं हां...!" मुण्डे की आवाज सुनकर बिल्लौरी आंखें खुलीं और वह झेंपी-सी हंसी हंसते हुये बोला—"बस ऐसे ही नींद-सी आ रही थी। बैठिये आप छोटे पण्डित जी...।"

केशवपुत्र कुर्सी पर बैठा और जेब से तह किया कागज निकालकर उसकी तह खोलते हुये बोला—"ये शाकाल नाम के अपराधी का स्केच है। आप कल दिन में हैडक्वार्टर जाकर अपराधियों की जानकारी वाली फाइल में देखना, शायद इसके बारे में पुलिस रिकॉर्ड में और भी ज्यादा जानकारी हो।"

"ठीक है छोटे पण्डित जी...।" आशीर्वाद से कागज लेकर उस पर नजर डालकर बोला इंस्पेक्टर अनिल यादव—"मैं देखूंगा। आप कहें तो अभी...।"

"इतनी जल्दी भी नहीं है मुझे इंस्पेक्टर अंकल।" चने के दो दाने मुंह में सरकाने पर बोला मुण्डा—"आप सुबह चले जाना। अभी मैं घर जा रहा हूं। कल कॉलेज से लौटते वक्त मैं आपसे मिलूंगा। तब तक आप क्रिमिनल्स का रिकॉर्ड चेक करवा ही लेंगे। वैसे आपकी जानकारी के लिये ये बता दूं—कि शाकाल के कहने पर ही परमा ने विमल राय की बीवी और उसके बच्चों का अपहरण किया था और वो विमल राय से देश के सीक्रेट्स की मांग कर रहे थे।"

"हां छोटे पण्डित जी...।" विल्स की डिब्बी से सिगरेट निकालते हुये बोला अनिल यादव—"तब...जबकि परमा के कुछ चेले यहां लॉकअप में थे तो आप उनसे शाकाल के बारे में पूछ तो रहे थे। तब शाकाल के लिये मैंने नोन क्रिमिनल रिकॉर्ड चेक भी किया था। लेकिन पुलिस के पास शाकाल नाम के किसी अपराधी के बारे में कोई जानकारी नहीं थी।"

"नाम का क्या है इंस्पेक्टर अंकल?" चने चबाते हुये बोला आशीर्वाद पण्डित—"अपराध जगत हो या सभ्य समाज, नाम तो लोग कभी भी बदल लेते हैं। आप स्केच के आधार पर अपराधियों को चेक करना। काम बना तो ठीक—वरना कोई और रास्ता तलाश किया जायेगा उस देश-द्रोही तक पहुंचने के लिये।"

उसके बाद मुण्डे ने इंस्पेक्टर को नमस्ते कहकर उनसे विदा ली।

❑❑❑
❑❑❑

"ले मेरी बन्नो...आ गया तेरा मनमीत।" प्राची शर्मा जो अपनी दो सहेलियों नेहा तथा प्रियंका वर्मा के साथ कॉलेज के बरामदे में खड़ी थी उसकी कमर पर चुटकी भरकर प्रियंका फुसफुसाकर बोली—"अभी अकेले है। स्टैण्ड पर गाड़ी लगा रहा है—मौका बढ़िया है...जा, जाकर हैल्लो-हाय कर ले। वरना क्लास में घुसते ही उसके जो तीन-चार पुराने दोस्त हैं वो तब तक लसूड़े की तरह उससे चिपके रहते हैं जब तक कि छुट्टी होने पर वो घर के लिये रवाना नहीं हो जाता है।"

"यार प्रियंका...म...मैं अकेले नहीं जा रही। तुम लोग भी मेरे साथ चलो। अकेले त...तो मेरा जी यहां ही घबरा रहा है। त...तुम लोग साथ चलो।" प्राची शर्मा के चेहरे पर घबराहट के साथ-साथ हिचकिचाहट के भाव भी थे।

"ओये मेरी प्यारी कबूतरी...अब ये हमसे अदायें तो मत दिखा।" प्राची पर कृत्रिम गुस्सा प्रकट करती गुर्राकर बोली नेहा–"सुबह कॉलेज टाइम से एक घण्टा पहले खुद भी आई, हमें भी यहां बुलवा लिया। यहां बरामदे में खड़ी घण्टेभर से उसका वेट कर रही है, और अब आया तो बोल रही है कि अकेले उसके पास जाने से डर लग रहा है। हमें साथ चलने को बोल रही है। अरी बावली...उससे शादी हो गई तेरी तो क्या सुहागरात में भी हमें अपने साथ लेकर चलेगी...?"

"चुप बेशर्म...।" नेहा की तरफ आंख तरेरते हुये गुर्राई प्राची शर्मा–"जब देखो उल्टा-सीधा बोलती रहती है। नहीं चलती मेरे साथ तो रहने दे। मैं जाती हूं...।" कहने पर प्राची तेज-तेज कदमों से चलते हुये साइकिल तथा स्कूटर बाइक पार्किंग की ओर बढ़ी।

आशीर्वाद बाइक को खड़ा करके टोकन ले रहा था कि तभी वह उसके पास पहुंचते हुये बोली–"हाय आशीर्वाद! कैसे हो?"

"बढ़िया! तुम कैसी हो प्राची?"

"बहुत बढ़िया...।" मुण्डे के मधुर व्यवहार से उत्साहित हो चहकी–"मेरा फर्स्ट पीरियड खाली है–बाहर ही थी। तुम्हें देखा तो तुम्हारे पास आ गई। दरअसल कल तुमने कैन्टीन में बिगड़ैल लड़कों को अच्छा सबक सिखाया। मुझे बहुत अच्छा लगा। उससे अच्छा तुम्हारे बारे में जानकर लगा। मुझे मेरी दोस्तों ने बताया कि तुम देश से तथा अपने देश के लोगों से बहुत प्यार करते हो और किसी के साथ कोई ज्यादती या अन्याय करे तो वह तुमसे बर्दाश्त नहीं होता। मैंने सखी हातिम के बारे में किताबों में पढ़ा है–वो दूसरों की भलाई के लिये अपनी जान तक दांव में लगा देता था। तुम्हारा चरित्र भी वैसा ही है। मुझे नहीं लगता कि इस युग में तुम जैसा कोई और भी है।"

"कई हैं मेरे जैसे।" चने के दो दाने मुंह में सरकाकर बोला केशवपुत्र–"बल्कि मुझसे भी अच्छे बहुत सारे लोग हैं हमारे देश में। ये राम, कृष्ण, गौतम तथा बाबा नानक साहब का देश है। आज भी उनके बताये मार्ग पर चलने वाले बहुत से लोग हैं...। कभी-कभार अखबारों में या टी० वी० न्यूज में अच्छे लोगों के किस्से सुनने को मिलते रहते हैं।"

"तुम कहते हो तो जरूर होंगे और भी बहुत से अच्छे लोग इस देश में। मैं ना तो अखबार पढ़ती हूं, ना ही टी० वी० में

न्यूज देखती हूं...। बाई दि वे अगर तुमने फर्स्ट पीरियड अटैण्ड नहीं करना हो तो क्यों ना हम कैन्टीन चलें? घर से कुछ खा के नहीं आई। एक-एक हॉट डाग और गर्मागर्म कॉफी हो जाये तो...?"

"नहीं प्राची...सॉरी।" कुदुर-कुदुर करते हुये बोला आशीर्वाद–"आज मैं खासकर फर्स्ट पीरियड ही अटैण्ड करने आया हूं। दूसरे घर से गोभी के परांठे खाकर आ रहा हूं। मूंगफली के दाने की भी गुंजाईश नहीं है पेट में...। फिर कभी हॉट डॉग और कॉफी पीयूंगा तुम्हारे साथ। अब चलता हूं मैं।" कहने पर वह कॉलेज की इमारत की तरफ बढ़ गया।

"कोई बात नहीं मेरे पत्थर के सनम।" पीछे प्राची शर्मा होंठों ही होंठों में बुदबुदाई–"मेरा दिल तुम पर आ ही गया है। मैं तो दीवानी हो ही चुकी हूं तुम्हारी। एक दिन तुमको भी अपना दीवाना ना बनाया तो मेरा नाम भी प्राची शर्मा नहीं...।"

❑❑❑

❑❑❑

विनोद कश्यप के दायें पैर में पैर से लेकर घुटने के ऊपर तक कच्चा तथा बायें हाथ की कलाई पर पक्का प्लास्टर चढ़ा हुआ था।

माथे पर चार टांके लगाने के बाद पट्टी बांधी गई थी।

उस समय वो अपने घर में बेडरूम में पड़ा मन-ही-मन आशीर्वाद को हजार-हजार गालियां दे रहा था कि तभी उसके चार खास दोस्त लकी, मुकुल, हरीश तथा राजेश वहां आ पहुंचे।

वे चारों भी टूटे-फूटे हुये थे। किसी का हाथ टूटा था तो कोई लंगड़ाकर चल रहा था, तो किसी के सिर पर पट्टी बंधी थी।

"आओ यारो बैठो...।" किसी तरह खिसककर तथा दर्द को बर्दाश्त करते हुये तकिये के सहारे उठकर बैठते हुये बोला विनोद कश्यप–"कल बड़ा बुरा हुआ। मेरी वजह से तुम लोगों को भी मार खानी पड़ी।"

"कैसी बात करते हो तुम विनोद भाई।" कंधे तक लम्बे बालों वाला लकी बोला–"दोस्ती में तो ये सब चलता ही रहता है। फिर हम तो तुम्हारे जिगरी दोस्त हैं–वक्त पड़ने पर जान भी देने से नहीं हिचकिचायेंगे। क्यों राजेश...मुकुल, हरीश...गलत तो नहीं कहा मैंने?"

"नहीं लकी, तूने बिल्कुल सच कहा।" मुकुल बोला—"हम यारों के यार हैं ये बात विनोद भी जानता है। आखिर चार साल से इसके साथ हैं। कई बार इसके लिये लड़ाई कर चुके हैं...।"

"लेकिन मार पहली बार खाई है, आह।" दर्द से कराहते हुये बोला हरीश—"बहुत तोड़ा है उस हरामी ने। जी तो करता है साले का क्या से क्या कर डालूं...लेकिन वश नहीं चलता।"

"वश चलेगा...जरूर चलेगा।" इस बार मानो लकी नहीं उसके गले में बैठा कोई भेड़िया ही इन्सानी भाषा में बोला—"उस पण्डित की औलाद से बदला तो लिया ही जायेगा। वो भी कॉलेज में ही। उसकी मार का इतना दर्द नहीं है जितना उस अपमान का दुख है जो उसने कैन्टीन में हमारा किया। कितनी धाक थी हमारी कॉलेज में, अब तो कॉलेज जाया ही नहीं जायेगा। उसकी ऐसी-तैसी करने का इन्तजाम करने पर ही कॉलेज जाऊंगा।"

"नहीं लकी।" उसकी बात को बीच में ही काटते हुये बोला विनोद कश्यप—"अभी फिलहाल उसे कुछ नहीं कहना है हमें। पापा डांट रहे थे। कह रहे थे कि इस तरह गुण्डागर्दी से कॉलेज की बदनामी होती है। दूसरे प्रिंसीपल का बेटा ऐसा करे तो उन पर भी उंगली उठेगी। कमेटी के मेम्बर्स उनसे मेरे रेस्टीकेशन के लिये भी कह सकते हैं। इस तरह हमारा भविष्य बर्बाद हो सकता है...।"

"लेकिन विनोद भाई...।" सोचपूर्ण लहजे में बोला हरीश—"तुम्हारे पापा चाहें तो आशीर्वाद पर गुण्डागर्दी का इल्जाम लगाकर उसे कॉलेज से निकाल सकते हैं।"

"नहीं कर सकते वो ऐसा।" इन्कार में सिर हिलाते हुये अफसोस भरे लहजे में बोला विनोद कश्यप—"उस हरामी का बाप मेरे पापा से कई गुना ज्यादा पहुंच वाला है। कैन्टीन वाली घटना के कई चश्मदीद गवाह हैं जिसमें कैन्टीन का मालिक शम्भू खास है। उसका बाप जो कि शहर का नामी वकील और पहुंचा हुआ जासूस है, स्कूल की कमेटी के मेम्बर्स के सामने हमें दोषी सिद्ध कर देगा। तब पापा को बेटे का पक्ष लेकर एक गलत निर्णय करने की सजा के रूप में कॉलेज से निकाला भी जा सकता है। पापा ने मुझे सख्त हिदायत दी है कि अब हमने कॉलेज में उसकी तरफ बुरी नजर से देखना तक नहीं है।"

"विनोद भाई...कुछ तो करूंगा ही। ऐसे नहीं छोडूंगा उस हराम के पिल्ले को।" दांत पीसते हुये-सा बोला लकी—"उसे

सामने से लड़कर नहीं तो कैसे भी करके बेइज्जत जरूर करूंगा। तुम लोग जानते ही हो कि लकी का दिमाग दोधारी तलवार है। छोडूंगा नहीं उसे। पुरानी खुन्दक है मुझे उससे...।"

"पुरानी कैसी खुन्दक?" उसके चेहरे पर नजरें जमाकर बोला मुकुल—"क्या पहले भी उससे कोई पंगा हुआ था तुम्हारा लकी?"

"मेरी मां की मौत का जिम्मेदार उसका बाप केशव पण्डित है।"

❑❑❑
❑❑❑

चारों ही दोस्त चौंके और उसकी तरफ देखने लगे।

जबकि लकी के चेहरे पर एकाएक क्रोध की लाली झलकने लगी थी।

"यार लकी...ये तू क्या कह रहा है?" हैरानी में पड़ा विनोद कश्यप उसकी तरफ देखते हुये बोला—"केशव पण्डित के बारे के बारे में तो यही सुना गया है कि वो बहुत ही इन्साफ पसन्द और मजलूमों की मदद करने वाला है। लोग नेकी का फरिश्ता अथवा सखी हातिम भी कहते हैं। फिर...वो तुम्हारी मां की मौत का जिम्मेदार कैसे हुआ?"

"दरअलस...यार...।"कुछ हिचकिचाते हुये-सा बोला लकी—"अपराध मेरे पापा से हुआ। उस समय मैं बहुत छोटा था। पापा एक मल्टीनेशनल कम्पनी में टेरीटॉरी मैनेजर थे। उन्होंने कम्पनी में थोड़ी हेर-फेर करनी शुरू कर दी और डिवीजन मैनेजर को खबर लग गई। उसने फोन पर पापा को कहा कि वो उनकी शिकायत कम्पनी के डायरेक्टर-मैनेजर से करने जा रहा है तो पापा ने उसे समझाने की कोशिश की। लेकिन वह पापा की सुनने को राजी नहीं हो रहा था। तब पापा ने कहा कि वो उसके ऑफिस आकर प्रमाणित करेंगे कि वह गलत नहीं हैं। डिवीजनल मैनेजर ने उन्हें एक घण्टे का टाइम दिया। पापा उसके ऑफिस गये। उनके हाथ-पैर जोड़े, लेकिन जब उसने उनकी सुनने से इन्कार किया तब क्रोध में पापा ने उनकी हत्या कर दी। ये सब जब हुआ तब ऑफिस टाइम नहीं था। ऑफिस में उस मैनेजर ही अकेला था। उसकी हत्या करके पापा वहां से चले आये। बाद में उस मैनेजर की हत्या की जांच पुलिस एस० पी० के कहने पर केशव पण्डित ने शुरू की। जल्द ही उसने पापा के

खिलाफ सबूत जुटा लिये और घर पहुंच गया। घर पहुंचकर उसने पापा को पुलिस के सामने आत्मसमर्पण करने को कहा तो पापा ने उस पर गोलियां चलानी शुरू कर दी। जवाब में केशव पण्डित ने भी गोली चलाई। तब पापा को बचाने के लिये मां आगे आ गई। मां ने उसी समय दम तोड़ दिया था और पापा को पकड़कर केशव पण्डित ने कानून के हवाले कर दिया था। अदालत में पापा के खिलाफ मुकदमा भी उसी ने लड़ा और पापा को उम्रकैद की सजा सुनाई गई। मैं मौसी के यहां पला बड़ा हुआ। अभी कुछ दिन पहले ही मेरे पापा उम्रकैद की सजा काटकर घर वापस आये हैं। मौसा या मौसी ने तो मुझे कभी पापा या मम्मी के बारे में ज्यादा कुछ बताया नहीं। पापा से ही ये कहानी सुनी है मैंने। तभी से केशव पण्डित से बदला लेने की सोच रहा था मैं कि कल कॉलेज में उसकी औलाद ने पंगा ले लिया। अब मैं कुछ ऐसा करूंगा कि मेरे एक ही वार में बाप-बेटा दोनों जल बिन मछली की तरह फड़फड़ा उठेंगे।"

"तो फिर बना कोई बढ़िया-सा प्लान लकी।" उत्साह में भरकर बोला विनोद कश्यप—"दिमाग का तो तू तेज है ही। कुछ ऐसा कर कि हमें उंगली भी ना हिलानी पड़े और उस कमीने की औलाद की ऐसी-तैसी हो जाये। उसके खिलाफ जाती जरा सी बात भी कॉलेज में हुई तो पापा उसे कॉलेज से बाहर कर देंगे।"

"ऐसा ही होगा विनोद भाई।" मानो अपना हरेक शब्द चबा-चबाकर, चिंगल-चिंगलकर, दांतों से कुचल-कुचलकर बोला लकी—"लकी का दिमाग दोधारी तलवार है। उसके खिलाफ ऐसा खेल खेलूंगा कि कॉलेज में ही नहीं पूरे शहर में बदनाम हो जायेगा। उसकी बदनामी की स्याही उसके बाप तक भी पहुंचाकर रहूंगा मैं। लड़के की बदनामी की स्याही से उसके बाप का चेहरा भी नीला न कर दिया तो मेरा नाम भी लकी नहीं।"

❑❑❑

❑❑❑

"क्यों जानेमन...क्या बात हुई हीरो से?" प्राची जैसे ही नेहा और प्रियंका के करीब पहुंची कौतूहलता में भरी हुई-सी प्रियंका वर्मा बोली—"तूने उससे क्या कहा और उसने क्या जवाब दिया?"

"अभी दो मिनट में क्या बात होती?" ठण्डी आह-सी भरते हुये प्राची शर्मा बोली—"सिर्फ हैल्लो-हाय ही हुई। जल्दी में था

वो। कह रहा था कि खास फर्स्ट पीरियड ही अटैण्ड करने आया है। अब ऐसे में मैं उससे क्या कहती?"

"अरी मूर्ख...आई लव यू बोलने में कितना टाइम लगता है?" नेहा कृत्रिम क्रोध का प्रदर्शन करते हुये बोली—"ये शार्ट-कट भी है और इसका कोई साइड इफेक्ट भी नहीं है। महीनों-सालों किसी के पीछे पड़े रहना। सीरियस हो जाना उसे लेकर और बाद में वो ना करे तो दिमाग में रोग पाल लेना। ये सब मेरी समझ से तो बाहर है। इस मामले में मुझे अपनी इस प्रियंका का हिसाब बढ़िया लगा।"

"इसका हिसाब कैसे बढ़िया लगा?" नेत्र सिकोड़कर नेहा की ओर देखते हुये प्राची ने पूछा।

"इसको पहली नजर में विनोद नाम के लड़के से प्यार हो गया। तब हम तीन दोस्त...यानि मैं, प्रियंका और चारू छुट्टी वाले दिन कम्पनी गार्डन गये थे। वहां विनोद भी अपने एक दोस्त के साथ आया हुआ था। अपनी पिंकी ने उसे देखा तो मरमिटी उस पर। वैसे सुन्दर भी है वो। ये पट्ठी गई उसके पास और जाते ही सीधे बोली आई लव यू। वो बौखलाकर इसकी तरफ देखने लगा तो जानती हो इसने चौके के बाद सीधा छक्का मार दिया...।"

"चौके के बाद छक्का मारा इसने?" नेत्रों में उलझन के भाव लिये कभी नेहा की तरफ तो कभी प्रियंका की तरफ देखते हुये बोली प्राची—"मैं कुछ समझी नहीं नेहा।"

"अरी मेरी भोली बन्नो।" उसकी उलझन का भरपूर लुत्फ उठाते हुये मजे लेने के अन्दाज में बोली नेहा—"इसके चौके पर...यानी इसके आई लव यू बोलने पर विनोद बौखलाया हुआ-सा इसे देख रहा था कि इसने इजहार-ए-प्रेम का छक्का जड़ दिया। यानि विनोद के होंठों से अपने होंठ चिपका दिये थे। इसकी उस हरकत पर विनोद हैरान था तो मेरा और चारू का इतना बुरा हाल था कि हम लोग वहां से भागने की सोच रहे थे। हम दोनों सोच रही थीं कि लड़का अभी इसके गाल पर थप्पड़ मारेगा और ही साथ हमारी भी इन्सल्ट करेगा। लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ। इसकी उस हरकत पर कुछ देर तक तो वह ठगा-सा इसकी तरफ देखता रहा। फिर उसने इसे बांहों में भरकर आई लव यू बोल डाला।"

"तो तुम मुझसे भी यही अपेक्षा कर रही थी, क्यों?" नेहा को घूरते हुये बोली प्राची—

"अरी ये तो दिलवालों का काम है—सबमें अपनी प्रियंका जैसी हिम्मत कहां है। मैं तो सिर्फ इतना कहना चाह रही थी कि दो मिनट का मौका मिला था तो उसे कैश कराना चाहिये था तुझे। अपने दिल की बात कह देती तो तुरन्त वह जवाब ना देता तो तेरे बारे में सोचना तो अभी से ही शुरू कर देता। ऐनी वे, अब दुबारा कभी ऐसा कोई चांस मिले तो चूकना नहीं। आज जमाने की रफ्तार बहुत तेज है और तू भी आज के जमाने की रफ्तार से चलेगी तभी तेरा कल्याण होगा। वर्ना खड़ी पछतायेगी और कोई चिड़िया तेरा खेत चुग जायेगी...।"

"ऐसा नहीं होगा नेहा।" बहुत ही मजबूत लहजे में बुदबुदाई प्राची—"मेरा खेत कोई दूसरी चिड़िया नहीं चुग सकेगी।"

❑❑❑
❑❑❑

रेड लाइट पर खड़ा हसनू अपनी तरफ की लाइट रेड होने का इन्तजार कर रहा था—फिलहाल उस साइड का सिग्नल ग्रीन था ट्रैफिक सांय-सांय करके भाग रहा था।

यूं उस दिन पहले तो टैक्सी की हड़ताल होना तय हुआ था टैक्सी यूनियन की तरफ से। लेकिन बाद में जिस बात को लेकर टैक्सी यूनियन वाले हड़ताल करना चाह रहे थे उस किस्से को प्रशासन और पुलिस के उच्चाधिकारियों ने यूनियन के नेताओं से मिलकर सुलझा लिया था और टैक्सियों का संचालन सुबह दस बजने पर शुरू हो गया था।

रेड लाइट पर हसनू अपने धंधे की वजह से खड़ा था। उसके हाथ में स्लेटी रंग का कपड़ा था जिसे वह रेड लाइट पर रुकने वाली टैक्सियों तथा कारों पर मारकर उनके ड्राइवरों अथवा मालिकों से दो रुपये, पांच रुपये लिया करता था। कोई-कोई उसे डांटकर भगा भी देता था।

फिर उसके साइड की लाइट रेड होने पर सबसे पहले जो कार रुकी वो सफेद रंग की इण्डिगो थी।

हसनू लपककर उस कार के पास पहुंचा और जल्दी-जल्दी उस पर दो-चार हाथ मारे और ड्राइवर के सामने अपना हाथ फैलाकर बोला—"सलाम बाप...दो रुपये का सवाल है...।"

"चल भाग इधर से...साला...।" ड्राइवर ने उसे घुड़का तो वह कार की पिछली सीट पर बैठे शख्स के सामने हाथ फैलाकर बोला—"सलाम बाप...।"

फिर पिछली सीट पर बैठे शख्स पर नजर पड़ते ही उसके नेत्र फैलते चले गये।

"ओये टुण्डे...।" तभी ड्राइवर ने उसे फिर से घुड़का—"तेरे को बोला ना...भाग इधर से नहीं तो दबाकर देगा कान के नीचे।"

"जाता है बाप...डांटता काहे कू है?"

कार से हटकर हसनू पीछे लपका। पीछे दो कारों के बाद एक टैक्सी थी।

कारों की तरफ उसने देखा भी नहीं। उसकी आंखों के सामने इण्डिगो की पिछली सीट पर बैठे शख्स की तस्वीर नाच रही थी। हालांकि छः-सात वर्ष बाद उसने उस शख्स को देखा था—लेकिन देखते ही पहचान लिया था। वह कोई और नहीं शाकाल का साथी जोरावर सिंह था।

टैक्सी के पास पहुंचकर देखा तो उसमें कोई फैमिली थी।

वह और पीछे की तरफ भागा।

दो कारों और एक बस के बाद वह खाली टैक्सी थी और संयोगवश वह उस टैक्सी के ड्राइवर को पहचानता था।

"सलाम बाप...।" वह ड्राइवर के पास पहुंचकर जल्दी से बोला—"अपुन को खाली टैक्सी मांगता। फुल भाड़ा भरेगा। पन बैठना तेरे बाजू में मांगता है।"

"ओये हलकट...तू टैक्सी में बैठेगा?" ड्राइवर उसे अजीब-सी नजरों से घूरते हुये नीम के तेल जैसे ही कड़वे लहजे में बोला—"भाड़ा भी भरेगा। पन टैक्सी खाली नहीं है। अपुन एयरपोर्ट जा रहेला है। उधर अपुन की पक्की सवारी दो बजे की फ्लाइट से आ रहेली है। चार दिन पहले उसे एयरपोर्ट छोड़ने गया था तभीच वो आज का भाड़ा भी एडवांस में भर दियेला था। उसीच को लेने जा रहेला है अपुन। चलता है...।" आगे के वाहन रेंगना शुरू हुये तो मौजी लाल ने भी अपनी टैक्सी स्टार्ट करके आगे बढ़ा दी। और तभी चलती टैक्सी का पिछला दरवाजा खोलकर हसनू टैक्सी में बैठ गया।

"ओये तू साला टैक्सी में बैठा।" रिवर्स व्यू मिरर पर हसनू को घूरते हुये गुर्राकर बोला टैक्सी ड्राइवर मौजी लाल—"अपुन बोला था कि टैक्सी खाली नेई। अपुन एयरपोर्ट से पैसेंजर उठाने जा रहेला है। आगे टैक्सी रोकता हूं—नीचे उतर लेने का नेई तो दो लगायेगा कान के नीचे और बाहर फेंक देगा तेरे कू।"

"टैक्सी नेई रोकने का बाप।" गिड़गिड़ा उठा हसनू—"प्लीज बोलता है। देख बाप...तेरा पैसेंजर दो बजे की फ्लाइट से आ रहेला है और अब्बी एक भी नेई बजा। कुछ देर पहले अपुन एक से टेम पूछेला था। बारह चालीस बताया था। अब ज्यादा-से-ज्यादा बारह पचास होगा। तेरे पास अब्बी एक घण्टा दस मिनट का टेम है। अपुन कू तेरे से तीस मिनट चाहिये। उसके बाद तू अपुन को किधर बी उतार देना नो प्रॉब्लम। पन अब्बी आगे सफेद इण्डिगो जा रहेली है उसके पीछे लगने का। चाहे तो मीटर डाउन करके चलने का। अपुन मीटर देखकर डबल भाड़ा भरेगा। ये देख अपुन के पास रोकड़ा भीच है।" कहने के साथ ही हसनू ने जेब से पांच-पांच सौ के नोट निकालकर टैक्सी ड्राइवर के आगे लहराये।

दरअसल वो पैसे हसनू मोबाइल खरीदने के लिये घर से लाया था।

"चल, रोकड़ा अन्दर रखने का।" हसनू को फटकारते हुये-सा बोला टैक्सी ड्राइवर—"साला कल का छोकरा अपुन को रोकड़े की धौंस देता है। नेई चाहिये अपुन को तेरा रोकड़ा। पन दिया तेरे कू आधा घण्टा। ये बोल, ये सफेद इण्डिगो का पीछा काहे कू करने कू मांगता है?"

"वो बाप...इसमें जो आदमी है उसकी तलाश में अपुन का एक जानने वाला है। इसका पीछा करके अपुन इसके घर का पता लगायेगा और जानने वाले कू खबर करेगा तो वो अपुन कू हजार-पांच सौ रुपये इनाम में देगा। वो देखने का बाप...वो गाड़ी पाली हिल वाले ओवरब्रिज की तरफ मुड़ेला है। तुम...।"

"अपुन की भी आंखें हैं हलकट। अपुन भी देख रहेला है कि वो गाड़ी किदर मुड़ेला है। अब तू चुप होकर बैठने का।"

❑❑❑

❑❑❑

पहला पीरियड बायो का था और दूसरा खाली था।

पहला पीरियड लेने के बाद जैसे ही बायो का टीचर क्लास से बाहर आया आशीर्वाद की जेब में पड़ा वायब्रेशन पर लगा मोबाइल खिर्र-खिर्र करने लगा।

मुण्डे ने जेब से मोबाइल निकालकर स्क्रीन पर नजर डाली तो पाया वो अपरिचित नम्बर है। उसे समझते देर नहीं लगी कि लाइन पर शाकाल है।

उसका फोन वह एकान्त में अटैण्ड करना चाहता था इसलिये सीट से उठा तो उठते ही टीटू बोल पड़ा—"कहां चले प्यारे? कैन्टीन चल रहे हो तो...।"

"कैन्टीन नहीं जा रहा हूं मैं।" वह अपने दायें हाथ की छोटी उंगली उसे दिखाते हुये बोला—"यहां जा रहा हूं। चलना है तो चल।"

"तू ही हो आ।" बुरा-सा मुंह बनाकर बोला टीटू—"मैं घर से फिट-फाट होकर चला हूं।"

विशाखा और क्लास के और भी स्टूडेंटस ने उनकी बातें सुनी और मुस्करा उठे।

केशवपुत्र क्लास से बाहर निकलकर कॉलेज की बैक साइड में एकान्त में पहुंचा।

उसका मोबाइल लगातार 'खिर्र-खिर्र' किये जा रहा था।

"हां बोल शाकाल...।" फोन ऑन करने पर वह बोला—"कहां आऊं मैं...?"

"बताता हूं...।" दूसरी तरफ शाकाल ही था—"पहले ये बता कि फोन उठाने में इतनी देर क्यों लगाई? कहीं तू फोन को सर्विलांस पर लगाकर मुझ तक पहुंचने का जुगाड़ तो नहीं कर रहा था?"

"नहीं ओये शाकाल...तू चिन्ता में मत पड़।" फोन को बायें हाथ में ट्रांसफर कर दायां हाथ जेब में डालते हुये बोला केशवपुत्र—"मैं ऐसा कुछ नहीं कर रहा था जैसा कि तू शक कर रहा है। कॉलेज में क्लासरूम में था। वहां तेरा फोन अटेण्ड नहीं कर सकता था। बाहर आकर अटेण्ड किया। इसलिये देर लग गई। अब तू वह बोल जिसके लिये फोन किया है तूने।"

"तू अपने सींकड़ी पहलवान को बचाना चाहता है ना?"

"हां, बोल...इसके लिये मुझे क्या करना होगा?" चने के दाने मुंह में सरकाने पर कुटुर-कुटुर करते हुये सहज भाव में बोला केशवपुत्र।

"तू अकेला और अभी-का-अभी रेसकोर्स की बुकिंग विण्डो नम्बर सात पर पहुंच। मुझे पता है कि तेरे कॉलेज से तुझे वहां तक पहुंचने में आधा घण्टा लगेगा। मेरा आदमी भी वहां आधे ण्टे तक पहुंच जायेगा। उसका नाम शौकत अली है। तुम्हें पहचानता है वो। काले रंग की मारुति वेन से वह वहां पहुंचे ा। वेन नम्बर होगा एम० बी० थ्री टू डबल ए फोर फोर थ्री नाइन।

वेन में बैठने पर वो तेरी तलाशी लेगा। उससे किसी तरह की होशियारी मत दिखाना। वो मेरे लिये काम जरूर करता है—लेकिन अभी नया है। उसे मेरे छोटे-मोटे एक-आध ठिकाने की ही खबर है। बाकी वह तुम्हें मुझ तक मेरी इच्छा के बिना नहीं पहुंचा सकता है। मेरी इच्छा से मतलब ये कि वह मेरे राइट हैण्ड के सम्पर्क में रहेगा—और मेरा राइट हैण्ड उसे अगला निर्देश तेरे उसकी कार में बैठने पर ही देगा। इसके अलावा हमारे और आदमी उसकी निगरानी पर रहेंगे। तूने उसके साथ कोई जोर-जबरदस्ती की तो हमें उस साधारण मोहरे की कोई परवाह नहीं होगी। तब हम तेरे सींकड़ी पहलवान की लाश तेरे घर पार्सल कर देंगे। तू समझ गया ना पण्डित कि मैं क्या कह रहा हूं?"

"हां बे, समझ गया मैं। अब तू अपनी चोंच बन्द कर। मैं रेसकोर्स पहुंच रहा हूं।" कहने पर मुण्डे ने फोन ऑफ करके जेब में रखा और तेज-तेज कदमों से चलते हुये कॉलेज के फ्रंट भाग की ओर बढ़ा।

□□□

□□□

सफेद इण्डिगो जिसमें जोरावर सिंह था मालाबार हिल इलाके में स्थित एक शानदार कोठी में प्रवेश हुई तो मौजी लाल ने अपनी टैक्सी उस कोठी से आगे ले जाकर एक किनारे करके रोकी।

"अब बोलने का छोकरा...अब तेरे कू क्या मांगता है?" गर्दन घुमाकर हसनू की तरफ देखते हुये वह बोला—"अपुन ज्यादा-से-ज्यादा दस मिनट इदर और रुक सकता है। उसके बाद किसी भी कीमत पर नहीं रुकेगा। रुकूं दस मिनट...?"

"नक्को बाप...।" टैक्सी से उतरते हुये बोला हसनू—"पता नेई वो गाड़ी और गाड़ी में बैठा बीडू कितनी देर में बाहर निकले। फिर हो सकता है ये उसी की कोठी हो। नहीं बाप...अब अपुन तेरे कू रुकने को नेई बोलेगा। मदद के लिए थैंक्यू बोलता है। बोले तो कुछ खर्चा-पानी भी देने कू तैयार है...।"

"नहीं मांगता तेरे से खर्चा-पानी। चलता है अपुन। पन जाते-जाते एक बात बोलता है तेरे से, तू जो गेम खेल रहेला है वो रिस्की गेम है। इस तरह जासूसी करने से तेरी जान भी जा सकती है। अपुन की माने तो ये हजार-पांच सौ का लालच छोड़ने का और इधर से निकल लेने का। बोला क्या?"

"ठीक है बाप...अपुन तेरी एडवाइज पर सोचेगा। तूने अब्बी अपुन की जो मदद कियेला है उसके लिये अपुन एक बार फिर से तेरे कू थैंक्यू बोलता है।"

"हूं।" हसनू के थैंक्यू को सिर हिलाकर स्वीकृति प्रदान करने पर टैक्सी स्टार्ट करके मौजीलाल ने आगे बढ़ा दी।

पीछे हसनू सोचने लगा कि अब उसे क्या करना चाहिये? सोचते हुये वह बड़बड़ाया—

"काश कि अपुन पहले हीच मोबाइल खरीदा होता तो शाकाल के इस साथी की खबर अपुन अभीच बिग ब्रदर कू करता। इदर आस-पास कोई पी० सी० ओ० भी नेई दिखाई पड़ रहेला है नेई तो उसका नम्बर तो था अपुन के पास।"

फिर कुछ सोचकर वह टहलते हुये उस कोठी की तरफ बढ़ा जिसमें उसने सफेद इण्डिगो को जाते देखा था।

कोठी के गेट के खम्बे पर सफेद पत्थर पर सोम विला लिखा हुआ था।

पत्थर पर लिखे नाम को पढ़ते हुये वह आगे निकल गया और कुछ दूर चलने पर रुककर कोठी की तरफ देखने लगा।

आधे घण्टे बाद सफेद इण्डिगो कोठी से बाहर निकली और वापस उधर को चल पड़ी जिधर से आई थी।

"अब मैं क्या करूं?"

तभी जैसे बिल्ली के भाग्य से छींका टूटा।

एक टैक्सी उसके बराबर में आकर रुकी तो वह उसकी तरफ पलटा।

"पीटर अंकल आप...?" उसके नेत्रों में एक चमक-सी कौंधी।

"हां, हसनू...।" पचास वर्षीय टैक्सी ड्राइवर पीटर बोला—"तेरे कू देखकर ही अपुन टैक्सी रोकेला है। दूर से ही पहचान लिया था तेरे कू। आ बैठ...अपुन इदर सवारी छोड़ने आयेला था। वापस घर जा रहेला है। अब आज और नेई चलाने कू मांगता है। आज अपुन की बेटी रोजी का बर्थडे है ना। उसका बर्थडे पार्टी की तैयारी करेगा। तू भी आना शाम को। हमारे साथ ही डिनर भी करना।"

"जरूर आयेगा अपुन पीटर अंकल।" हसनू लपककर टैक्सी में अगली सीट पर बैठते हुये बोला—"रोजी बहन अपुन को भाई बोलती हैं। अपुन से बड़ी है। प्यार भी करती है [illegible]

भी उसे अपनी बहन ही समझता है। पन पीटर अंकल...इस समय अपुन की रिक्वेस्ट है—वो सामने सफेद गाड़ी दिख रहेली है ना उसका पीछा करना मांगता है। इसके लिये अपुन भाड़ा भी भरेगा। स्पीड बढ़ाने का अंकल...।"

"पन काहे कू उस कार का पीछा करने कू मांगता है तू?" उसे सन्देह भरी नजरों से देखते हुये बोला पीटर—"ये लफड़े वाला काम है और अपुन आज के दिन किसी लफड़े में नेई पड़ने कू मांगता है।"

"कोई लफड़ा नहीं होने वाला अंकल। आप स्पीड बढ़ाओ...उस कार में जो बीडू है वो एक खतरनाक अपराधी का साथी है। उसने अपुन की अम्मी का मर्डर कियेला था। अपुन कू पता लगाने का कि वो किदर रहता है। पता लगने पर पुलिस कू खबर करेगा।"

"ऐसा है तो चल...।" एक्सीलेटर पर पैर का दबाव बढ़ाते हुये पीटर बोला—"ये तेरी अम्मी का कातिल है तो अपुन पाताल तक इसका पीछा करेगा।"

❑❑❑
❑❑❑

बाइक को पार्किंग में खड़ी करके केशवपुत्र चने चबाते हुये विण्डो नम्बर सात के सामने पहुंचा।

दो मिनट तक वह वहीं खड़े रहकर चने चबाता रहा। फिर टहलने वाले अन्दाज में एक ओर बढ़ा कि तभी—

"अपुन का नाम शौकत अली है।" एक साढ़े चार फुट कद का तथा मजबूत जिस्म वाला सांवला-सा व्यक्ति उसके बराबर में आकर उसके साथ चलते हुये फुसफुसाकर बोला—"अपुन तेरे कू पहचानता है आशीर्वाद पण्डित। तेरे कू मेरे साथ चलना है। अपुन की गाड़ी सड़क पार खड़ेली है। अपुन के साथ चलने का।" कहने पर वह नाटा सड़क की तरफ बढ़ा तो मुण्डा भी उसके पीछे हो लिया।

वह सड़क पार खड़ी काले रंग की मारुति पर सवार हुआ और उसे पीछे बैठने को कहा तो मुण्डे ने बेहिचक वेन का पिछला दरवाजा खोला और उसमें बैठ गया।

वेन का नम्बर उसने वहां पहुंचने पर ही देख लिया था—नम्बर वही था जो उसे फोन पर बताया गया था।

वेन की पिछली सीट पर पहले से ही एक लम्बा-चौड़ा तथा काला-कलूटा, चेहरे से ही खतरनाक लगने वाला इन्सान बैठा था।

मुण्डे के कार में सवार होते ही शौकत अली ने कार स्टार्ट करके आगे बढ़ा दी।

अगले आधे घण्टे तक वह कार को मुम्बई की विभिन्न सड़कों पर यूं ही दौड़ाकर तसल्ली करता रहा कि कोई उनके पीछे तो नहीं लगा था। तत्पश्चात् वह रिवर व्यू मिरर को पीछे बैठे शख्स पर सेट करके उसमें उसे देखते हुये बोला—"किशना...अब्बी तक तो सब ठीक है। पीछे कलूट की तरफ से भीच कोई मैसेज नहीं आयेला है। आगे इस बीडू को बेहोशी का इन्जेक्शन लगाने का। इसके बेहोश होने पर अपुन कोलाबा वाले ठीये पर चलेगा।"

शौकत अली की बात सुनने पर मुण्डे के बराबर में बैठे किशना ने सहमति में गर्दन हिलाई। फिर मुण्डे की तरफ देखते हुये रेगिस्तान के खुश्क मौसम जैसे ही खुश्क लहजे में बोला—"सुना तुमने ओये पण्डित की औलाद...अब अपुन तेरे कू बेहोशी का इन्जेक्शन लगायेगा। कोई शरारत ना करके चुपचाप इंजेक्शन लगवा लेने का। तब्बी अपुन तेरे कू आगे लेकर चलेगा, नेई तो इदरीच उतार देगा।"

"अगर मैं इंजेक्शन लगवाने से इन्कार कर दूं तो?" तिरछी निगाहों से किशना की तरफ देखते शान्त से लहजे में बोला आशीर्वाद पण्डित।

"तो अपुन तेरे कू इदरीच उतार देगा।" जवाब शौकत अली ने दिया।

"और तब मेरे हाथों मार कौन खायेगा?" इस बार मुण्डे के लहजे में ग्लास पेपर जैसा खुरदुरापन था।

"अपुन दोनों हीच तेरे से मार खाने कू तैयार हैं आशीर्वाद पण्डित।" गैंडे की खाल जैसे सख्त लहजे में बोला शौकत अली—"अपुन लोग तेरे पर हाथ नेई उठायेगा। ये शाकाल साहब का हुक्म है। तू चाहे तो अपुन लोगों को मार भीच सकता है। जान बचाने के लिये भीच अपुन लोगों के हाथ नेई उठने के। शाकाल साहब के वफादार हैं अपुन दोनों। लेकिन हमें मारेगा तो तेरा जोड़ीदार भीच मारा जायेगा...।"

"वो नहीं मारा जायेगा।" अपने हरेक शब्द पर पांच-पांच किलो का वजन चढ़ाते हुये-सा बोला छः फुट का नेवला—"तुम लोग बताओगे कि वो कहां है और फिर मैं उसे बचा लाऊंगा।"

लड़के की बात सुनकर शौकत अली और किशना दोनों ही कुछ इस तरह मुस्कराये मानो लड़के ने कोई मजाक वाली बात कही हो।

"मुस्करा लो प्यारो...।" चने के दो दाने मुंह में सरकाने पर मुण्डा भी मुस्कराकर व्यंग भरे लहजे में बोला—"जी खोलकर मुस्करा लो। जब तक मेरे हाथ नहीं उठते तब तक मौका है तुम दोनों के पास कि मुस्कराओ अथवा हंसो। लेकिन जब मैं तुम्हारे लोगों की पिटाई शुरू करूंगा तो फिर चीखने तक का अवसर नहीं दूंगा।"

"फिर शुरू हो जाओ। कर लो अपने मन की।" मुस्कराते हुये बोला किशना—"पन यहां तुमको असफलता हीच मिलेगी। हम दोनों में से कोई भीच ये नेई जानता कि शाकाल साहब ने तेरे जोड़ीदार को किदर रखा है।"

चने चबाते हुये मुण्डे ने किशना की आंखों में झांका तो पाया कि वो इस मामले में झूठ नहीं बोल रहा है।

"ठीक है...मानता हूं कि तुम दोनों को पीटने से मुझे कोई लाभ नहीं होने वाला है।" कंधे उचकाकर ठण्डी आह-सी भरते हुये बोला आशीर्वाद—"तुम मुझे बेहोशी का इंजेक्शन लगा सकते हो।"

मुण्डे को सिरेंडर करते देख किशना के काले तथा मोटे-मोटे होंठों पर विषभरी मुस्कान थिरकने लगी।

❑❑❑
❑❑❑

सफेद इण्डिगो के ड्राइवर का नाम श्याम राव डोंगरे था और वह बहुत ही खतरनाक किस्म का बन्दा था। उस समय जबकि कार मालाबार हिल इलाके से बाहर निकल शिवाजी स्टेडियम को जाने वाले मार्ग की तरफ मुड़ी तो कार के रिवर्स व्यू मिरर पर नजर पड़ते ही उसके नेत्र सिकुड़ चले।

फिर जब उसकी कार गोखले मार्ग के फ्लाई ओवर पर पहुंची तो श्याम राव डोंगरे ने कार को साइड में लाते हुये कार की गति को कम कर दिया। मंथर गति से साइड में ही कार को आगे बढ़ाते हुये उसने रिवर्स व्यू मिरर पर नजर डाली तो पाया कि उसके पीछे लगी टैक्सी की स्पीड भी कम हो चुकी थी।

इस बात का एहसास हो जाने पर कि टैक्सी उसके पीछे लगी हुई है उसका चेहरा चट्टान जैसा सख्त हो चला तथा आंखों में खतरनाक किस्म के भाव चमकने लगे।

"क्या बात है डोगरे?" कार की स्पीड को कम होते देख पिछली सीट पर बैठा जोरावर सिंह सख्त लहजे में बोला—"ये

तुम कार चला रहे हो या बैलगाड़ी...?"

"बाप...!" रिवर्स व्यू मिरर पर नजरें जमाये सपाट से लहजे में बोला श्याम राव डोंगरे—"चला तो अपुन कार ही रहेला है। स्पीड इसलिये कम कियेला है कि अपुन को लगा अपुन की कार का पीछा किया जा रहेला है। तस्दीक के वास्ते हीच कार की स्पीड कम कियेला था। पक्का हो गयेला पीछे टैक्सी लगेली है। टैक्सी वाले ने भीच अपनी टैक्सी की स्पीड घटायेली है। अब साला अपुन उस टैक्सी को थोड़ा टहलायेगा और फिर घाट कोपर पर रोकेगा। तब देखेगा कि कौन है जो अपुन लोगों का पीछा कर रहेला है?"

"ओह तो ये बात है।" गर्दन घुमाकर पीछे देखते हुये बोला जोरावर सिंह—"पीछा किये जाने का अहसास होने पर तुमने कार की स्पीड कम की है। लेकिन ताज्जुब की बात ये है कि हमारा पीछा कौन और क्यों कर रहा...ओह...ओह...। डोंगरे कार की स्पीड बढ़ा। मैं दलेली लाल को फोन करता हूं। घाट कोपर के इलाके में टैक्सी रोकेंगे हम। मुझे लगता है टैक्सी में कोई जासूस है। ये जब से चीनी जासूस लू चिन मुम्बई में आया है—उसके चक्कर में जासूस हमारे पीछे भी पड़ने लगे हैं। टैक्सी वाले जासूस को थामकर शाकाल साहब के सामने पेश करना होगा। वहीं उससे पूछताछ करेंगे कि वह हमारे पीछे कैसे क्यों कर लगा है?"

"ठीक है बाप...।" कहते हुये डोंगरे ने कार की स्पीड बढ़ाई तो जोरावर सिंह फोन पर दलेली नाम के अपने चमचे को समझाने लगा कि वह उससे क्या चाहता है?

घाट कोपर में धोबी घाट की तरफ जाने वाली सड़क पर ट्रैफिक ना के बराबर ही था।

सफेद इण्डिको के पीछे सिर्फ पीटर वाली टैक्सी ही थी और बाकी दुपहिया वाहन थे।

पीटर इण्डिगो से थोड़ा फासला रखे हुये उसका पीछा कर रहा था।

तभी आगे साठ की रफ्तार से दौड़ रही इण्डिगो एकाएक रुकी। अपनी तरफ से पूरी तरह सावधान पीटर इण्डिगो के एकाएक रुकने से बौखलाया और फिर टैक्सी को रोकने के लिये उसे ब्रेक पैडल पर लगभग खड़े हो जाना पड़ा।

'चींई ऽऽऽ चींई ऽऽऽ।'

हथिनी सी चिंघाड़ती हुई-सी टैक्सी इण्डिगो से मुश्किल से एक कदम के फासले पर रुकी।

पीटर के बगल में बैठे हसनू का सिर डैशबोर्ड से टकराया।

फिर इससे पहले कि पीटर अथवा हसनू कुछ समझ सकें टैक्सी को चार गुण्डों ने घेर लिया था।

"क...क्या है बाप...?" माथे पर उभर आये पसीने को पोंछते तथा खिड़की पर खड़े लम्बे-चौड़े गुण्डे की ओर देखते हुए सहमे हुये से लहजे में बोला पीटर—"अपुन ने क्या कियेला है जो...?"

"बाहर निकल साले...अपुन तेरे कू बताता है कि तू क्या कियेला है।" लम्बे-चौड़े गुण्डे ने उसे कॉलर पकड़कर टैक्सी से बाहर निकाला तो वह डोंगरे के कदमों पर जा पड़ा।

डोंगरे ने लात मारकर उसे पीछे गिराया।

"ऐ...ऐ साहब...ये क्या करता है?" डोंगरे के सामने आते हुये हसनू बोला—"अपुन के अंकल को क्यों मार रहेला है? ये तुम्हारा क्या बिगाड़ेला है?"

"ये मालाबार हिल से अपुन का पीछा कर रहेला है।" पीटर का कॉलर पकड़कर उसे उठाकर खड़े करते हुये गुर्राकर बोला श्याम राव डोंगरे—"अपुन इस हरामी से पूछता है कि ये अपुन का पीछा क्यों कर रहेला था? बोल ओये...क्यों कर रहेला था अपुन का पीछा?"

"साहब तेरे कू धोखा लग रहेला है।" उंगली से अपने होंठ से खून पोंछते हुये बोला पीटर—"अपुन तेरा पीछा काहे कू करने लगा? अपुन तो मालाबार हिल में पैसेंजर छोड़ा और इधर अपने साले जैक्सन के पास आयेला था। व...वो क्या है कि आज अपुन की बेटी का बर्थडे होने का। साले और उसकी फैमिली को रात को खाने में इन्वाइट करने के वास्ते आयेला था...।"

"ये बीडू ठीक हीच बोल रहेला है बाप...।" जोरावर सिंह के फोन पर वहां पहुंचे चार गुण्डों में से एक डोंगरे की तरफ देखते हुये बोला—"अपुन इसकू पहचानता है। अपुन की बस्ती में हीच रहता है पीटर। अपुन को ये भीच मालूम कि इसका साला जैक्सन इधरीच रहता है। ये टुण्डा उसी बिल्डिंग में रहता है जिसमें पीटर रहता है। जरूर तेरे कू मिस्टेक लग रहेला है कि ये बड़े बाप के पीछे लगा था। तू हीच बोलने का कि एक मामूली टैक्सी ड्राइवर क्योंकर किसी का पीछा करेगा?"

"मिस्टेक तो नहीं लगा अपुन को।" गहरी नजरों से पीटर की ओर देखते हुये बड़बड़ाने वाले से अन्दाज में बोला डोंगरे—"था तो ये बरोबर अपुन के पीछे। पन ये भी सच है कि साला ये अपुन का पीछा क्यों करने लगा? ये साला इत्तफाक ही होगा कि...खैर जाने दे इसे। पन...एक मिनट।" वह नेत्र सिकोड़कर हसनू को देखते हुये बोला—"इस लड़के कू अपुन कहीं देखेला है। पन याद...।"

"बाप अपुन...।" डोंगरे की बात पूरी होने से पहले ही हसनू बोला—"ट्रैफिक सिग्नल पर...दिन में आठ घण्टे महीने में थर्टी डेज होता है। जरूर तू अपुन को किसी ट्रैफिक सिग्नल पर देखा होयेगा। उधर अपुन कारों पर कपड़ा मारकर अपना पेट भरता है।"

"हूं...!" हुंकारी भरने पर पीटर की तरफ पलटते हुये बोला डोंगरे—"सुनने का ओये हलकट...अपुन इधर से जा रहेला है। पन आधा घण्टे तक तू इधर से हिलेगा भी नेई। अगर हिला औ अपुन को पता लगा तो अपुन तेरे कू पूरा-का-पूरा हिला डालेगा बोला क्या?"

"अपुन समझ गयेला है बाप। आधाच क्या एक घण्टे तक अपुन इदर से नहीं हिलेगा।"

फिर डोंगरे अपनी कार की तरफ बढ़ा तो बाकी के चार गुण्डे टैक्सी के पीछे खड़ी स्काई ब्लू कलर की फीयेट कार की ओर बढ़ चले।

❑❑❑

❑❑❑

आशीर्वाद की आंख खुली तो उसने खुद को स्टील के जाल वाले एक बहुत ही बड़े ग्लोब में पाया।

लाल रंग से रंगा वह ग्लोब ठीक ऐसा ही था जैसे अच्छे किस्म के सर्कस में मौत का जाल होता है जिसमें सर्कस के कलाकार एक ही समय में तीन-तीन मोटर साइकल्स चलाते हैं।

उठकर खड़ा होने से पहले मुण्डे ने जेब में हाथ डाला तो जेब से मोबाइल गायब था। हां, उसका देशी टॉनिक जरूर पूरे का पूरा जेब में मौजूद था। चार दाने चने के जेब से निकालकर मुंह में सरकाते हुये लड़का उठ खड़ा हुआ। नजरें घुमाकर चारों तरफ देखा तो पाया कि वह ग्लोब किसी बड़े स्टेडियम के बीचोंबीच मैदान में पड़ा था।

ग्लोब से एक सीमित फासले पर चारों ओर दर्शक दीर्घायें थीं। हां, बीच में एक तरफ पांच फुट चौड़ी गैलरी जरूर नजर आ रही थी।

चारों ओर नजर डालने के बाद स्टील की चौड़ी पत्तियों से निर्मित उस ग्लोब की मजबूती को परखने के लिये जाली में हाथ फंसा दिये।

तभी–

"बेकार है ओये पण्डित। कितनी भी कोशिश कर ले पर तू इस ग्लोब की एक पत्ती तक नहीं तोड़ सकेगा। बहुत ही मजबूत जाल है ये।"

चने चबाते हुये आशीर्वाद आवाज वाली दिशा में पलटा।

सामने गैलरी में उसकी तरफ अपने दो बाडी गार्डों के साथ बढ़ते हुये फाइट क्लब का मैनेजर टोनी डिसूजा बर्फ जैसे ठण्डे लहजे में बोला–"...तू सालों तक इस जाल से फाइट करता रहेगा तब भी ये तेरे से टूटने वाला नहीं है...।"

"मान ली तेरी बात ओये नाटियल।" कुटुर-कुटुर करते तथा डिसूजा की तरफ देखते हुये शान्त से लहजे में बोला आशीर्वाद पण्डित–"परख भी लिया इस जाल को। वाकई ये बहुत मजबूत जाल है। लेकिन भाई मेरे...ये तो बता शाकाल ने मुझे फोन पर कहा था कि मेरे यहां पहुंचने पर वो गामा अंकल को छोड़ देगा। कहां है शाकाल? कहां हैं हमारे गामा अंकल?"

"शाकाल मेरा ही नाम है लड़के।"

"झूठ मत बोल ओये चार फुटिये! तू शाकाल नहीं है।" अपने हरेक शब्द पर जोर देते हुये गुर्राहट भरे लहजे में बोला आशीर्वाद पण्डित–"शाकाल से दो बार फोन पर बात हो चुकी है मेरी। उसकी आवाज को मैं लाखों में पहचान सकता हूं। दूसरे मुझे यह भी पता लगा है कि शाकाल टकला है। तूने सिर पर विग नहीं लगाई हुई है। तेरे बाल असली हैं, ये मेरा दावा है। अब तू ये बता शाकाल के चमचे...जब तेरे बाप में मेरा सामने करने तक की हिम्मत नहीं है तो उसने मुझे यहां क्यों बुलाया है?"

"चुपकर ओये इसी बरसात में जन्मे मेंढ़क।" क्रोध में आकर मानसूनी बादलों की मानिन्द ही गरजकर बोला डिसूजा–"फालतू टर्र-टर्र की तो हलक में हाथ डालकर जुबान बाहर खींच लूंगा...।"

"जा ओये छक्के...तू क्या मेरे हलक में हाथ डालेगा।" नाक सिकोड़कर डिसूजा की तरफ उसका मखौल उड़ाने वाले से अन्दाज

में देखते हुये व्यंगभरे लहजे में बोला आशीर्वाद पण्डित–"शेर के बच्चे के हलक में हाथ डालने के लिये गजभर का कलेजा चाहिये और तुममें या तुम्हारे बाप शाकाल में तो चूहों के जितना बड़ा दिल भी नहीं है। अपने अड्डे पर बुलाया और दम खुश्क हो गया तो पिंजरे में डलवा दिया। अब क्या बाहर खड़े होकर ताली पीट-पीटकर मेरा दिल बहलाओगे?"

मारे क्रोध और अपमान के टोनी डिसूजा का चेहरा पके टमाटर-सा लाल हो उठा।

उसकी मुट्ठियां यूं ही भिंचती चली गईं कि उस समय अगर उनमें हीरे होते तो पिसकर उनका पाउडर बन जाना तय था।

"बस...बस कर ओये पण्डित की औलाद।" क्रोधातिरेक थर-थर कांपते हुए वह मानो अपना हरेक शब्द चबा-चबाकर, चिंगल-चिंगलकर, चने के दानों के साथ कुचल-कुचलकर ही बोला–"मेरे सब्र का इम्तिहान मत ले। अपनी जुबान को लगाम लगा वरना...वरना...।"

"वरना क्या कर लेगा तू मेरा?" उसका मखौल उड़ाते हुये बोला केशवपुत्र–"तेरी औकात ही क्या है बौने? मुझ पर हाथ उठाने की हिम्मत ही नहीं है तेरे में। तुझे पता है कि तू मुझ पर हाथ उठायेगा तो मैं तेरे हाथ तोड़कर तेरी जेब में डाल दूंगा।"

"नहीं छोडूंगा तुझे हरामी। अब तुझे हरगिज नहीं छोडूंगा।" दांत पीसते हुये उसने जेब से रिवॉल्वर निकाला और नाल का रुख आशीर्वाद की तरफ करते हुये किंग कोबरे की मानिन्द ही फुंफकारा टोनी–"अब बाद में चाहे बॉस मुझे ही क्यों ना गोली मार दे, लेकिन मैं तुझे जिन्दा नहीं छोडूंगा...।"

"ओये मूर्ख! ध्यान से सुन...नैन छिन्दन्ति शस्त्राणि नैन दहति पावकः। न नैन क्लेवयन्त्यापो न शोषयति मारुतः। योगीराज श्री कृष्ण ने कहा है कि शरीर में मौजूद आत्मा या प्राण को हथियार काट नहीं सकते, आग जला नहीं सकती, जल गला नहीं सकता और वायु सुखा नहीं सकती। क्योंकि आत्मा अभेद्य है। दुनिया की कोई भी शक्ति आत्मा का बाल बांका नहीं कर सकती। जब तक आत्मा जिस्म में है, कोई प्राणी मर नहीं सकता। आत्मा शरीर में कब तक वास करेगी, इसका निर्णय भाग्यविधाता वो परमपिता परमेश्वर ही करता है। तेरे हाथ में रिवॉल्वर है, मौत नहीं! अगर ऊपर वाले ने मेरे खाते में सांसों का कोटा खत्म नहीं किया है तो तू तो क्या, तेरे फरिश्ते भी मुझे मौत का कफन नहीं

ओढ़ा सकते। विश्वास नहीं होता तो अपनी रिवॉल्वर का ट्रेगर दबाकर देख। इसमें भरी तमाम गोलियां मुझ पर चलाकर देख ले, अगर ऊपरवाले ने अभी मेरी मौत निश्चित नहीं की है तो तेरी गोलियां चने के दानों जितना भी असर नहीं करेंगी। चल अपनी गलतफहमी दूर कर और फायरिंग कर।"

तमतमाये टोनी डिसूजा ने जबड़ों को चक्की के पाटों की तरह कसकर रिवॉल्वर वाला हाथ सीधा किया ही था कि...!

"रुक जा ओये मूर्ख...। अगर तूने गोली चलाई तो उस हरामी से पहले तू मरा पड़ा होयेगा।"

बर्फ जैसे ठण्डे लहजे को सुनकर टोनी डिसूजा पलटा।

❑❑❑
❑❑❑

"थैंक्स गॉड!" दोनों कारों के वहां से जाने पर पीटर अपने सीने पर क्रॉस बनाते हुये राहत की मीलों लम्बी सांस लेते हुये बोला—"आज तू अपुन की जान बचायेला है—अपुन तेरे कू हण्डरेड टाइम थैंक्स बोलता है। साथ में कान पकड़ता है कि फिर कभीच कैसे भी लफड़े में नेई पड़ेगा।"

"अपुन सॉरी बोलता है पीटर अंकल।" गर्दन नीचे गिराकर गम्भीर होकर बोला हसनू—"अपुन की वजह से तेरी वॉट लगेली है। सॉरी अभी अपुन चलता है। पन शाम को अपनी सिस्टर की बर्थडे पार्टी में आयेगा अपुन।"

"ठीक है...।" सहमति में गर्दन हिलाते हुये बोला पीटर—"अपुन तो अभीच आधा घण्टा इदर से हिल भी नेई सकता। वो खतरनाक बीडू थे। अगर उन्हें पता लगा कि अपुन आधा घण्टा से पहले हीच इदर से निकला था तो वो अपुन को फोड़ डालेगा। तुमको जाने का तो अपुन रोकेगा नेई।"

"हां...अपुन तो चलेगा। एक फोन लगाना जरूरी है। इदर कोई पी० सी० ओ० भीच नेई दिख रहेला है। आगे देखेगा।" कहने पर हसनू एक ओर बढ़ चला।

आगे मोड़ पर पी० सी० ओ० था। हसनू पी० सी० ओ० के बूथ में दाखिल हुआ और जेब से वो स्लिप निकाली जिसमें आशीर्वाद पण्डित ने रात उसे अपने मोबाइल का नम्बर नोट कराया था।

फोन पर नम्बर लगाते ही आवाज आई—"बी० एस० एन० एल० के जिस नम्बर से आप सम्पर्क करना चाहते हैं उसका स्विच ऑफ है। कृपया थोड़ी देर बाद कोशिश करें।"

फोन काटकर फिर से री-डायल वाला बटन दबाया हसनू ने तो फिर से वही दोहराया गया। एक बार नहीं कई बार ट्राई किया उसने। लेकिर हर बार स्विच ऑफ बताया गया।

हारकर वह पी० सी० ओ० से बाहर निकला और बस स्टॉप की ओर बढ़ चला।

"थोड़ी देर बाद फिर लगायेगा बिग ब्रदर का नम्बर। नम्बर लगने पर उसे बतायेगा कि उसने शाकाल के जोड़ीदार को देखेला है। ये भी बतायेगा कि वह मालाबार हिल के एक बंगले में किसी से मिलने भीच गयेला था।"

❑❑❑
❑❑❑

वह शाकाल था जो जोरावर सिंह और लू चिन के साथ वहां पहुंचा था।

"शाकाल साहब...अ...आप...?" टोनी डिसूजा हड़बड़ाकर बोला—"अचानक ही...?"

"हां ओये टोनी...।" शाकाल नहीं मानो उसके कण्ठ में बैठा कोई किंग-कोबरा इन्सानी भाषा में बोला—"शाकाल काल का दूसरा नाम है। वह जहां भी पहुंचता है अचानक ही पहुंचता है। तू इस पण्डित की औलाद को शूट करने जा रहा था। किसके हुक्म से...? कौन बोला तुझसे इसे खत्म करने को...?"

"शाकाल साहब...ये मुझे...मुझसे बदतमीजी से पेश आ रहा था इसलिये मुझे गुस्सा आ गया। अ...और...।"

"खामोशऽऽऽ।" मानसूनी बादलों की मानिन्द ही गरजा शाकाल—"तू कल का एक मामूली टपोरी आज इज्जत वाला हो गया। ये लड़का तेरे से उल्टा-सीधा बोला तो तू इसे शूट करने जा रहा था। तुझे मालूम तो है ना कि ये मेरा शिकार है। इसकी मौत के बारे में कुछ अलग ही सोचा हुआ है मैंने। ये मरेगा तो...लेकिन मरने से पहले ये हमें करोड़ों कमाकर देगा। तुझे ये भी मालूम था कि आज इस फाइट क्लब में इसकी जिंगारा से फाइट होनी है। फाइट की टिकटों की बिक्री के लिये अपने आदमियों ने काउंटर लगा लिये हैं। वैसे आमतौर पर यहां होने वाली मौत की फाइट के टिकट दो हजार से लेकर पांच हजार तक की कीमत के होते हैं। लेकिन आज की ये फाइट स्पेशल

फाइट होगी। आज की फाइट का सबसे कम रेट वाला टिकट पांच हजार का तो आगे की सर्किल का टिकट पन्द्रह हजार का बिक्री के लिये रखा गया है। एक घण्टा पहले ही बुकिंग काउंटर खुले हैं और नब्बे परसेंट टिकट बिक भी चुके हैं। आज की फाइट में मुझे करोड़ों नहीं अरबों का फायदा होगा। मोटे-मोटे दांव लगेंगे आज तो...। और तू हरामी, सारा खेल ही बिगाड़ने जा रहा था। जी तो चाहता है कि तुझे गोली मार दूं। लेकिन ये सोचकर शान्त हुये जा रहा हूं कि वर्षों से मेरे साथ है, और आज ये तेरी पहली गलती है। लेकिन आइन्दा के लिये याद रखना...जितना कहा जाये उतना ही करना है तुम्हें। फालतू करना तो दूर सोचने की जरूरत भी नहीं है तुम्हें।"

"मैं समझ गया शाकाल साहब।" अपराधियों की मानिन्द ही गर्दन झुकाकर बोला टोनी—"आईन्दा आपको शिकायत का मौका नहीं दूंगा।"

"और तू सुना ओये पण्डित की औलाद।" ग्लोब में खड़े आशीर्वाद से मुखातिब हो उसका मखौल उड़ाते हुये-सा बोला शाकाल—"कैसे मिजाज हैं तेरे? घर से खा-पीकर फिट होकर निकला है या फिर तेरे लिये यहां खाना मंगवाया जाये?"

"अपने लिये एक कफन, एक अर्थी मंगवा ले। श्मशान घाट पर चिता के लिये लकड़ियां और बाकी सामग्री भिजवा दे। मेरी चिन्ता क्यों करता है? शेर का बच्चा भूख लगने पर अपनी खुराक का जुगाड़ खुद ही कर लेता है। वो भूखा-प्यासा भी हो तो उस पर कोई फर्क नहीं पड़ता। भूख लगने पर चूहे ही छटपटाते हैं और फिर बेदम होकर बिल के भीतर फैल जाते हैं...।"

"तेरी जुबान भी केशव पण्डित की तरह ही मेरठ वाली कैंची की तरह चलती है।"

"सिर्फ चलती ही नहीं है, बल्कि जुर्म के कपड़ों को काटती भी बढ़िया है। जब तू धार पर रखा जायेगा तो पता चल जायेगा।"

"मत भूल कि तू मेरे रहमो-करम पर है। मैंने टोनी को नहीं रोका होता तो इस पिंजरे के भीतर तेरी लाश पड़ी होती...।"

"जिसको अल्लाह रखे...उसे कौन चखे? जाको राखे साइयां...मार सके ना कोय, बाल ना बांका कर सके...चाहे जग बैरी होय। अभिमन्यु नहीं हूं कि चक्रव्यूह में घिर गया तो मारा ही जाऊंगा। मुझे जुर्म का हर चक्रव्यूह तोड़कर बाहर निकलने में महारथ हासिल है। मेरी रगों में केशव पण्डित नाम के शेर

का खून और सोफिया पण्डित नाम की लोमड़ी का दूध गर्दिश किया करता है। नहीं...कुछ मत बोल! अपनी चोंच बन्द ही रख। तुझ जैसे मुजरिम की गीदड़ भभकियां सुन-सुनकर बोर हो चुका हूं मैं। चोंच खोलनी ही है तो इस सवाल का जवाब देने के लिये खोल कि गामा अंकल को छोड़ने वाला अपना वायदा पूरा करेगा कि नहीं?"

"तेरे उस सींकड़ी पहलवान का मैंने क्या करना है ओये पण्डित?" ग्लास पेपर जैसे ही खुरदुरे लहजे में बोला शाकाल—"उसे आजाद कर दिया जायेगा...।"

"और मुझे...?" ब्लेड की धार जैसी पैनी निगाहों से शाकाल को देखते हुये उसकी बात पूरी होने से पहले ही बोला केशवपुत्र—"मुझे क्या इसी पिंजरे में कैद रखोगे?"

"नहीं!" जेब से सिगार और लाइटर निकालते हुये सपाट से लहजे में बोला शाकाल—"तेरी और तेरे सींकड़ी पहलवान की आजादी की एक शर्त है।" कहने पर सिगार सुलगाने में व्यस्त हो गया शाकाल।

"कैसी शर्त...?" शाकाल पर नजरें जमाये हुये मुण्डे ने जेब में हाथ सरकाया।

"तुम्हें हमारे अफ्रीकी शेर से फाइट करनी होगी।" सिगार का कश लगाने पर नथुनों से उसका काला, गाढ़ा लेकिन खुशबूदार धुआं बाहर करते हुये बोला शाकाल—"मौत की फाइट होगी वो। तुममें या जिंगारा में से एक को मरना होगा। तुमने जिंगारा को मार लिया तो तुम्हें और तुम्हारे साथी को रिहा कर दिया जायेगा। तुम्हारे मरने पर भी तुम्हारे साथी को आजादी ही मिलेगी। बस तुम्हें पूरी ईमानदारी से फाइट लड़नी होगी।"

"और अगर मैं ये फाइट लड़ने से इन्कार कर दूं तो...?" चार दाने चने के मुंह में सरकाने पर भावहीन लहजे में बोला केशवपुत्र।

"तो तुम तो जिंगारा के हाथो मारे ही जाओगे।" सिगार का कश भरने से पहले रेगमाल से खुरदुरे लहजे में बोला शाकाल—"लेकिन तुमसे पहले तुम्हारा वो सींकड़ी पहलवान मारा जायेगा।"

"और वो फाइट कब लड़नी होगी मुझे?"

"आज रात नौ बजे।" सिगार का कश लगाकर मुंह से धुआं उगलते हुये सपाट से लहजे में बोला शाकाल—"अब चलता हूं।

हां...नौ बजने में अभी काफी वक्त है। तब तक तुम चाहो तो इस ग्लोब से फाइट कर सकते हो। अगर इसे तोड़कर निकल सके तो शाकाल का वादा है कि यहां से जाने में तुम्हें कोई नहीं रोकेगा।"

इसी के साथ शाकाल अपने साथियों सहित वहां से चला गया।

❑❑❑
❑❑❑

उस शानदार कमरे में शाकाल, लू चिन, जोरावर सिंह तथा उनके साथ दोनों विदेशी युवतियां मौजूद थीं।

एक युवती तो लू चिन की गोद में बैठी हुई थी और लू चिन का दायां हाथ उसके जिस्म का भूगोल समझने में लगा हुआ था।

शाकाल और लू चिन में शराब और कबाब चल रहा था। जबकि जोरावर सिंह एक ओर गुलामों की भांति गर्दन लटकाये हुये-सा खड़ा हुआ था।

"क्यों शाकाल साहब?" शराब का एक घूंट भरने पर शाकाल की तरफ देखते हुये बोला लू चिन—"रात अगर आशीर्वाद पण्डित फाइट जीत लेता है तो क्या सच में ही आप उसको और उसके साथी को आजाद कर देंगे?"

"कतई नहीं लू चिन साहब...।" कबाब का एक पीस मुंह में डालने पर उसे चबाते हुये सपाट से लहजे में बोला शाकाल—"वह हराम की औलाद अब जिन्दा यहां से बचकर नहीं जायेगा। मारने के लिये ही उसे यहां बुलाया गया है। ये फाइट वाला आइडिया तो बाद में दिमाग में आया है। वैसे ये फाइट बहुत ही रोमांचक और मेरे लिये लाभकारी रहेगी। जिंगारा में हाथी जैसी ताकत है तो वो पण्डित की औलाद भी कुछ कम नहीं है। जीते या हारे, मौत उसकी सुनिश्चित है। इसीलिये ये फाइट उस ग्लोब में करवा रहे हैं हम। उस ग्लोब से वह नहीं उसकी लाश ही बाहर निकाली जायेगी।"

"ये ठीक रहेगा। उसकी मौत से हमें फायदा ही रहेगा।" गोद में बैठी युवती के नो एण्ट्री जोन में बेशर्मी से हाथ डालते हुये बोला लू चिन—"साला यूं है तो कल की ही पैदाईश, लेकिन खतरनाक बहुत है। दूसरे उसे इस बात की भनक भी लग चुकी है कि उसके देश के खुफिया राज चीन पहुंचाये जा रहे हैं। यहां ये भी स्वीकार करने में मुझे कतई हिचक नहीं है कि पाकिस्तान की तरह हमारा मुल्क भी उसका खौफ खाता है। अभी कुछ देर

पहले कमांडर साहब से बात हुई थी। मैंने उन्हें बताया था कि इस समय आशीर्वाद पण्डित शाकाल साहब के कब्जे में है तो उन्होंने कहा कि शाकाल से कहो कि उसे एक क्षण का भी मौका ना देकर तुरन्त खत्म कर दे। लेकिन आपसे कहा इसलिये नहीं कि मुझे आपने पहले अपना प्लान बता दिया था। प्लान से मेरा मतलब आपने ये बता ही दिया था कि आशीर्वाद की मौत के साथ आप लम्बी कमाई भी करना चाहते हैं। खैर, आपका प्लान ठीक-ठाक ही है इसलिये इस विषय में मैं कुछ नहीं कहूंगा। अब आप उस प्लॉन की ओर आइये, जिसके लिये मुझे यहां भेजा गया है।"

"आपकी योजना पर भी काम शुरू हो गया है लू चिन साहब...।" शराब का एक बड़ा-सा घूंट भरने पर मुंह में कबाब का पीस डालते हुये बोला शाकाल—"जोरावर सिंह को सोम ठाकरे के पास भेजा था। उसे बता दिया गया है कि हम क्या चाहते हैं। वो इस तरह के कामों में माहिर है। उसने आश्वासन दिया है कि हमारा काम हो जायेगा। वो ये सब कैसे करेगा, इस बात की योजना बनाने पर मुझे फोन पर बतायेगा। हमने जोरावर सिंह के हाथ उसे दस करोड़ रुपये भिजवाये थे और रकम को लेकर वह सन्तुष्ट है।"

"ये ठीक रहेगा।" शराब का एक घूंट भरने पर बोला लू चिन—"तुम्हारा आदमी जो प्लान बनाये उसका हमें पता होना चाहिये। हम भी समझेंगे उसका प्लान, ताकि उसके प्लान में कहीं कोई झोल रह रहा हो तो हम उसे दुरुस्त कर सकें। हमारे इस मिशन को सफल होना ही चाहिये। ये तिब्बत वाला मसला बरसों से हमारे गले की फांस बना हुआ है। हमारा मिशन सफल हुआ तो तिब्बत हमारा हो जायेगा।"

"हमारा मिशन जरूर सफल होगा।" कबाब चबाते हुये आत्मविश्वास से भरे लहजे में बोला शाकाल—"मुझे सोम ठाकरे पर, उसके दिमाग पर पूरा-पूरा भरोसा है।"

❑❑❑
❑❑❑

पूरा स्टेडियम फ्लड लाइट के प्रकाश में नहाया हुआ था।

खासकर ग्लोब में दूधिया किन्तु दिन का-सा प्रकाश था और उसमें खड़े आशीर्वाद को देखकर दर्शक दीर्घाओं में काना-फूसी सी हो रही थी।

"य...ये लड़का ग्लोब में क्या कर रहा है?" एक अण्डरटेकर जैसे जिस्म वाला युवक च्यूइंगम चबाते हुये माथे पर बल डाले हुये अपने साथी से बोला—"मुझे तो यही पता लगा है कि आज की फाइट वेरी-वेरी स्पेशल है।"

"बताया मुझे भी यही गया है।" उसका साथी जो कि उसके मुकाबले में दसवां हिस्सा ही नजर आ रहा था, बोला—"आते होंगे फाइटर। ये लड़का होगा कोई साफ-सफाई वाला कर्मचारी। फाइट नौ बजे शुरू होनी है और अभी साढ़े आठ ही तो बजे हैं। स्पेशल फाइट के लिए ही तो दस हजार का टिकट खरीदा है।"

"चलो देखते हैं वेरी-वेरी स्पेशल फाइट।" हाथी जैसे जिस्म वाला बोला।

कुछ ही दूरी पर सबसे आगे वाली लाइन में पांच युवक बैठे थे। उनमें से एक जिम्मी था। राज्य के पूर्व मुख्यमंत्री का बेटा।

गले में दो सौ पचास ग्राम वजन की सोने की चेन तो बायें कान में छोटी-सी बाली पहने फिल्म अभिनेताओं जैसा सुन्दर सजीला युवक था जिम्मी।

बाकी उसके चारों दोस्त...उसके चमचे ही थे। उन पांचों में भी खुसुर-फुसुर हो रही थी। क्या चल रहा उनमें, थोड़ा ये जाने लेते हैं—

"आज की फाइट वाकई वेरी-वेरी स्पेशल होगी।" ग्लोब की तरफ देखते हुये जिम्मी बोला—"फाइट शुरू होते ही आज लोगों से पैसा मैं लगवाऊंगा। यहां दो फाइटर्स में लड़ाई होती है—और एक के दो भाव रहता है। उस पर भी विनर को क्लब का दस परसेंट टैक्स चुकाना होता है। यानि किसी फाइट पर हजार लगाने पर जीत होने पर उन्नीस सौ रुपया ही विनर को मिलता है। लेकिन आज मैं यहां अनोखा जुआ खिलवाऊंगा। तुम लोग ग्लोब में खड़े लड़के को देख रहे हो ना? मैं उसकी साइड से जुआ खेलूंगा...।"

"य...ये क्या बोल रहे हो जिम्मी भाई?" चारों में से एक हैरान होते हुये-सा बोला—"ग्लोब में जो लड़का है व...वो फाइट करेगा? बोला ये गया है आज बहुत ही धांसू किस्म की फाइट होगी। लेकिन अगर ये फाइटर है तो फाइट क्या कद्दू होगी? ये चिकना किसी पहलवान से क्या फाइट करेगा? एक ही घूंसे में इसकी टें बोल जायेगी। या फिर कोई इसी तरह का लड़का इसके सामने आ जाये, तो भी बेकार। ये फाइट क्लब वालों ने आज हम सबको बेवकूफ बनाया है। डबल-ट्रिपल पैसे भी वसूले

और मौत की फाइट के नाम पर चूजों की फाइट करवा रहे हैं। मैं तो कहता हूं पब्लिक को आर्गेनाइजर के पास जाकर इसका विरोध करना चाहिये और अपने पैसे वापस ले लेने चाहिये।"

"और क्या?" दूसरा भी बुरा-सा मुंह बनाते हुये बोला—"यहां तो वही मिसाल हुई कि खोदा पहाड़ निकला चूहा। स्पेशल फाइट बोलकर दुगने-तिगने दाम पर टिकटों की बिक्री की और बच्चों की फाइट करवा रहे हैं यहां। थर्सडे वाली फाइट बढ़िया थी। अफ्रीकी सांड और जिंगारा वाली फाइट देखने में मजा आ गया था। मैंने तो सांड पर दस हजार का दांव भी लगाया था। लेकिन हार गया।"

"एक तू ही क्या, हम पांचों ने ही सांड पर दांव लगाया था।" तीसरा दोस्त उकताये हुये से लहजे में बोला—"जिम्मी भाई तो एक लाख रुपये हारे थे।"

"उस दिन वाली हार आज कवर करूंगा मैं।" अपने एक-एक शब्द पर जोर देते हुये-सा बोला जिम्मी—"इस लड़के की तरफ से दांव लगवाऊंगा मैं। जीतने वाले को एक के पांच दूंगा मैं...।"

"क...क्या...क्या बोला भाई?" विस्फारित नेत्रों से जिम्मी को देखते हुये उसका चौथा साथी बोला—"तुम...तुम इस लड़के पर इतना तगड़ा रिस्क लोगे? य...ये मामूली लड़का तुम्हें बीजापुर की तोप लग रहा है क्या?"

अपने साथी की बात सुनकर जिम्मी यूं ही मुस्कराया मानो उसे उसकी मन्दबुद्धि पर तरस आ रहा हो।

"जिम्मी भाई।" पहले वाला बोला—"राजीव ठीक ही तो कह रहा है। इस लड़के में फाइटरों जैसा क्या दिख रहा है आपको जो एक के पाँच देने की बात बोल रहे हो? ऐसा करोगे तो करोड़ों के चपेटे में आ जाओगे। मानता हूं आपके पास बहुत पैसा है। जब आपके पापा महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री थे उस समय आपने पुलिस भर्ती, गांवों तथा शहर की सड़कों के निर्माण में अपने दोस्तों...जानने वालों को ठेके दिलवाकर पचास करोड़ से ऊपर कमाये हैं। आज भी आप लोगों के छोटे-मोटे काम करवाकर लाखों कमा रहे हो। लेकिन जो आप कमा रहे हो, वो रिस्क लेकर कमा रहे हो। यहां आज आप पैसा लुटाने की बात कर रहे हो। आपकी बात जंच नहीं रही है मुझे।"

"जंचेगी मेरी बात दोस्तों...तुम सबको जंचेगी।" पैरों को सामने लम्बा करके फैलाते हुये तथा च्यूइंगम चबाते हुये रहस्य

भरे अन्दाज में बोला जिम्मी—"लेकिन अभी नहीं। अभी पहले तो दांव लगाने वाले मुझे पागल समझेंगे। बाद में जब वे पागल होंगे तब तुम्हें समझ आयेगा कि जिम्मी वास्तव में चीज क्या है। फिलहाल अभी जरा फाइटर्स के नाम एनाउंस होने दो।"

जिम्मी के इतना कहने पर उसके दोस्त ने अपने मुंह में तो ढक्कन लगा लिये। लेकिन वो एक-दूसरे को कुछ ऐसे अन्दाज में देखने लगे मानो एक-दूसरे से पूछ रहे हों कि ये जिम्मी को हो क्या गया है? कहीं ये सठिया तो नहीं गया है?

❑❑❑

❑❑❑

सेठ बलवन्त राय भसीन की मैरिज एनवर्सरी की पार्टी में शहर की जानी-मानी हस्तियां मौजूद थीं। उनमें प्राची शर्मा भी अपने दादा राजेश्वर शर्मा के साथ मौजूद थी।

शहर के बहुत बड़े सेठ की पार्टी थी वह और उसमें खाने-पीने की फुल व्यवस्था थी। दुनियाभर के चुनिन्दा ब्राण्डों की शराब और खाने में इण्डियन, मुगलई, चायनीज, हर तरह का खाना था।

फिलहाल लोगों ने खाना नहीं शुरू किया था। शराब और डांस का दौर चल रहा था। जो पीता नहीं था और डांस का शौक भी नहीं रखता था—वो कोल्ड ड्रिंक्स अथवा कॉफी के साथ आलू, गोभी तथा पनीर के पकोड़े खाते हुये पार्टी का आनन्द ले रहा था।

प्राची अपने दादा के साथ एक ओर खड़ी हॉट डाग खा रही थी तो उसका दादा राजेश्वर शर्मा कॉफी की चुस्कियां भर रहा था।

तभी मेजबान यानि बलवन्त राय भसीन केशव पण्डित के साथ वहां पहुंचा और राजेश्वर शर्मा से मुखातिब हो बोला—"अरे शर्मा जी...आप इधर एकान्त में क्यों खड़े हैं? आइये हमारे साथ...। उधर हम लोगों के बहुत सारे दोस्त हैं। सब में चलकर इन्जवॉय करते हैं। रही प्राची बिटिया की बात तो उधर मेरी फेमली है। मेरी बेटी नीता और मीता इसी की उम्र की हैं। इसकी भी बढ़िया कम्पनी हो जायेगी। और हां, सॉरी...शर्मा जी...। मैं आपका परिचय इनसे कराना तो भूल ही गया। ये अपने शहर की ही नहीं देश की जानी-मानी हस्तियों में से एक हैं। केशव पण्डित नाम है इनका। टॉप के वकील, टॉप के जासूस तथा टॉप क्लास के ही लेखक हैं।"

"पहचानता हूं मैं इन्हें।" सपाट-सा चेहरा लिये सपाट से ही लहजे में बोला राजेश्वर शर्मा—"बहुत अच्छी तरह जानता हूं मैं। कई बार मुलाकात हो चुकी है हमारी। गलत तो नहीं कह रहा हूं मैं पण्डित जी...?"

"नहीं शर्मा जी...।" मुस्कराकर अत्यन्त ही मीठे लहजे में बोला केशव पण्डित—"आप सच कह रहे हैं—हम पहले भी कई बार मिल चुके हैं...।"

"नमस्ते अंकल जी...।" केशव पण्डित को हाथ जोड़कर नमस्ते करते हुये प्राची बोली—"पार्टी में आपके साथ आशीर्वाद नहीं आया क्या? हम दोनों एक ही कॉलेज में पढ़ते हैं और एक-दूसरे को अच्छी तरह जानते हैं। दोस्त ही कह लीजिये आप हमें...।"

"नहीं बेटा...।" प्राची के सिर पर हाथ फेरते हुये अपनत्व भरे लहजे में बोला झील-सी नीली आंखों वाला—"आशीर्वाद अथवा घर का और कोई मेम्बर मेरे साथ नहीं आया है। पड़ोस में एक बर्थ डे पार्टी थी। आशीर्वाद शाम से ही घर नहीं आया। बाकी के लोग पड़ोस वाली पार्टी में गये। अच्छा शर्मा जी...अच्छा बेटा...फिर मुलाकात होगी। आइये भसीन साहब...मैं जरा भाभी जी से मिल लूं—फिर मैं भी चलूंगा।"

"अच्छा शर्मा जी...।" शर्मा जी से मुखातिब हो भसीन बोला—"मैं जरा पण्डित जी को अपनी धर्मपत्नी से मिला आऊं। दरअसल ये अभी ही पधारे हैं—और आते ही कह बैठे कि इन्हें जल्दी लौटना है। बहुत ही व्यस्त रहने वाले हैं ये—मैं इन्हें रोकना भी चाहूं तो ये रुकने वाले नहीं हैं। अभी आता हूं—और फिर हम सब दोस्त मिलकर चीयर्स बोलेंगे।"

"नहीं भसीन...।" भसीन आगे बढ़ा तो हाथ के इशारे से उसे रुकने का संकेत करने के साथ बोला राजेश्वर शर्मा—"आज तो मुझे भी जल्दी है। मैं तो आज आने वाला ही नहीं था—लेकिन तुम्हारे प्यार और अपनेपन का ध्यान करके चला आया। तुमको नाराज नहीं कर सकता था ना। चीयर्स फिर कभी बोल लेंगे।"

"मतलब रुकेंगे नहीं आप शर्मा जी...?" ठिठकने पर शर्मा की तरफ पलटते हुये बोला भसीन—"चलिये जब आप कह रहे हैं कि आपको जल्दी है—किसी और वजह से आप व्यस्त हैं तो मैं आपको भी नहीं रोक सकता...। ऐनी वे, खाना तो खाकर ही जाना है आपने। जब भी जाना खाना खाकर ही जाना। आइये पण्डित जी...।" कहने पर भसीन आगे बढ़ गया।

□□□
□□□

पूरा स्टेडियम खचाखच भरा हुआ था। पचास हजार से भी ज्यादा दर्शक मौजूद थे वहां।

सबके अन्दर कौतूहलता थी उस वेरी-वेरी स्पेशल फाइट को लेकर। अफवाहों का बाजार गर्म था। अधिकांश लोग आपस में यही कह रहे थे कि इस बार आर्गेनाइजर ने उन्हें मूर्ख बनाया था। जिस तरह की फाइट के लिये वह क्लब मशहूर था वैसी भी फाइट आज उन्हें देखने को मिलने वाली नहीं थी। ग्लोब में जो एक साधारण-सा लड़का खड़ा है उसी की टक्कर का कोई और लड़का उससे लड़वाकर बोल देंगे कि खेल खत्म पैसा हजम।

लेकिन उनमें से हजार से भी ज्यादा ऐसे थे जो आप सबके चहेते को पहचानते थे। उसके बारे में खूब अच्छी तरह जानते और उनमें ये विश्वास था कि उसके मुकाबले में कोई भी पहलवान होगा तो मारा जायेगा। उनके अन्दर ये भी था कि आज की फाइट के लिये उन्होंने जो दुगने-तिगुने पैसे भरे हैं वो वसूल होने ही होने थे।

बहरहाल, स्टेडियम एक तरह से मछली बाजार बना हुआ था।

स्टेडियम के तरफ ऊपर बॉल्कनी में बुलेट प्रूफ केबिन में लू चिन, शाकाल, जोरावर सिंह के साथ टोनी डिसूजा मौजूद था। वे चारों पांच मिनट पहले ही वहां पहुंचे थे।

वहीं पहुंचने पर शाकाल और टोनी डसूजा में कोई बात हुई और फिर टोनी केबिन में लगे माइक के सामने जा खड़ा हुआ।

"दोस्तों...भाईयों।" स्टेडियम में जगह-जगह लगे लाउडस्पीकर में टोनी डिसूजा की आवाज गूंजने लगी—"आप लोगों की प्रतीक्षा की घड़ियां खत्म हुईं। आज की वेरी-वेरी स्पेशल फाइट शुरू होने में सिर्फ पांच मिनट रह गये हैं। फाइट शुरू होने से पहले मैं आपको ये बताना चाहूंगा कि आज की ये फाइट वेरी-वेरी स्पेशल क्यों है। तो दिल थामकर सुनिये...। लेकिन रुकिये, पहले आप सब शान्त हो जाइये। कृपया शान्त होकर आप मेरी बात सुनें...।"

तुरन्त तो नहीं, लेकिन उस फाइट के विषय में जानने की जिज्ञासा में पचास-पचपन हजार के लोगों से भरे उस स्टेडियम में दो मिनट बाद ऐसा सन्नाटा हुआ कि अगर वहां कोई चुटकी

भी बजा बैठता तो ऐसा लगता मानो वहां दुश्मन देश ने बम फेंका हो।

सन्नाटा होने के क्षणोपरांत टोनी डिसूजा की आवाज गूंजने लगी—

"आज की फाइट के सितारों में से एक पिछला विजेता जिंगारा ही है। दूसरा सितारा ग्लोब में आप देख ही रहे हैं। आश्चर्य में मत पड़ें दोस्तों, ना ही ये समझने की भूल करें कि जिंगारा जैसे फाइटर का इस लड़के से क्या मुकाबला होगा। जिंगारा के सामने ये मच्छर साबित होगा...ये समझना या सोचना गलत ही नहीं मूर्खता होगी। ये देखने में कम उम्र लड़का जरूर है—लेकिन ये बहुत ही खतरनाक है। इसकी फाइट देखकर आप अपने दांतों तले उंगलियां दबा लेंगे। अभी आपको मेरी बात पर विश्वास भले ना हो रहा हो, लेकिन फाइट शुरू होते ही आप खुद देखेंगे कि लड़के में कितना दम है। इस कम उम्र सितारे का नाम आशीर्वाद पण्डित है। एक खास बात और, आप सब जानते ही हैं कि यहां होने वाली प्रत्येक मौत की फाइट में बड़े-बड़े दांव लगते हैं। विजेताओं को एक के दो, दस परसेंट कमीशन काटकर दिया जाता है। लेकिन इस वेरी-वेरी स्पेशल फाइट में विजेताओं की राशि से सिर्फ दो परसेंट कमीशन लिया जायेगा। इसके अलावा आप फाइट शुरू होने से पहले ही जिस पर चाहें जितना मोटा दांव लगाना चाहें, लगा सकते हैं। आपको लगे कि जिंगारा के मुकाबले में आशीर्वाद एक भुनगा है तो जिंगारा पर ही दांव लगायें। कितना भी मर्जी लगायें। धन्यवाद।"

फिर पांच फुट की गैलरी में पहाड़ जैसा जिंगारा नजर आया।

वह भयानक किस्म की किलकारियां भरते, दर्शकों में फ्लाइंग किस उछालते हुये ग्लोब की तरफ बढ़ने लगा।

लोग जिंगारा-जिंगारा करके शोर करने लगे।

पचास हजार में हजारेक लोग 'आशीर्वाद...आशीर्वाद' कर भी रहे थे तो उनकी आवाज पचास-पचपन हजार लोगों की आवाजों में गुम हो रही थी।

□□□
□□□

जिंगारा ग्लोब के निकट पहुंचा तो चार कर्मचारियों ने दस स्टेप की लकड़ी की मजबूत सीढ़ी, जो नीचे से ग्लोब के दरवाजे तक जाती थी, लगा दी।

ग्लोब का दरवाजा अभी बन्द था।

सीढ़ियां चढ़कर जिंगारा दरवाजे के सामने पहुंचा तो ग्लोब का दरवाजा अपने आप खुल गया। कदाचित वो रिमोट से कन्ट्रोल होने वाला इलेक्ट्रॉनिक द्वार था।

जैसे ही जिंगारा ग्लोब में दाखिल हुआ ग्लोब का जालीदार दरवाजा जो कि ऊपर उठकर खुला था—गिरकर बन्द हो गया।

ग्लोब में दाखिल होकर जिंगारा भयानक अन्दाज में चीखते हुये घूम-घूमकर उछलने लगा।

जबकि आप सबका चहेता शान्त भाव से खड़े रहकर चने चबाता रहा।

नौ बजकर एक मिनट पर डोरबेल जैसी घंटी बजी—जो कि फाइट शुरू होने का संकेत थी।

"हूंऽऽऽ आ ऽऽऽ हूं।" आशीर्वाद की तरफ देखते हुये जिंगारा चिल्लाया तो वह मुस्करा दिया। फिर अपनी छाती पीटते हुये जिंगारा उसकी तरफ बढ़ा और उसके निकट पहुंचने पर पलभर तक उसे उसकी ताकत को जांचने-परखने वाले अन्दाज में घूरता रहा।

फिर एकाएक ही उसने मुण्डे को मेमना समझकर उस पर जम्प लगा दी।

लेकिन नीलम-सी नीली आंखों वाला मेमना थोड़े ही था। वह दुनियाभर के फाइटर्स के गुरुओं के गुरु शाओलीन का सबसे तेज-तर्रार शिष्य था—और भला ऐसे या इतनी आसानी से जिंगारा के काबू में कैसे आ जाता?

ऐन वक्त पर वह अपने स्थान से स्लाइडिंग डोर की तरह एक ओर खिसका तो जिंगारा अपनी ही झोंक में उसके बगल से निकला। तभी मुण्डे ने उसके नितम्बों पर लात भी जमा दी।

परिणाम स्वरूप!

एक तो झोंक में था वह काला-कलूटा हाथी। दूसरे नितम्बों पर पड़ी लात ने उसकी स्पीड बढ़ाई तो वह पूरी तेजी से ग्लोब की दीवार से जा टकराया।

टकराते ही वह पलटा।

उसका काला-कलूटा चेहरा खून से नहाया हुआ था। ऐसा लग रहा था मानो किसी शरारती बच्चे ने कोयले के ऊपर ढक्कन भरके लाल स्याही उड़ेल दी हो।

जिंगारा ने अपना दायां हाथ चेहरे पर फिराने के बाद आंखों

के सामने किया और हाथ पर खून देखते ही वह क्रोध में पागल हो हाथी की मानिन्द ही चिंघाड़ने लगा।

"होंऽऽऽऽ होंऽऽऽ होऽऽऽ।"

जबकि उससे कुछ दूरी पर खड़ा केशवपुत्र मुस्कराते हुये चने चबा रहा था।

यूं तो फाइट शुरू होने से पहले ही जिंगारा पर मोटे-मोटे दांव लगाये जाने लगे थे। दांव का पैसा कलेक्ट करने वाले टोनी डिसूजा के आदमी थे और वो हरेक दर्शक दीर्घाओं में कई-कई करके मौजूद थे।

उनके पास क्लब के विशेष प्रकार के टोकन थे और हर टोकन पर कीमत अंकित थी। जो जितना दांव लगाता उसे उतनी कीमत के टोकन दे दिये जाते थे। टोकन दो प्रकार के थे। एक ताश के पान के पत्ते जैसा तो दूसरा चिड़िया के पत्ते जैसा। पान के पत्ते जैसी बनावट वाले टोकन जिंगारा पर दांव लगाने वालों को दिये जा रहे थे, तो आशीर्वाद पर दांव लगाने वालों को चिड़िया के पत्ते जैसी बनावट वाले टोकन दिये जा रहे थे।

अभी तक ज्यादातर लोगों ने जिंगारा पर ही दांव लगाये थे। आशीर्वाद पर उसे जानने वालों में से भी कुछ एक ने ही दांव लगाये थे। वो भी मामूली दांव। ग्लोब में खड़ा जिंगारा आशीर्वाद को भष्म कर देने वाली निगाहों से घूर रहा था।

"जिम्मी भाई।" आगे की लाइन में, यानि ग्लोब के पास वाली लाइन में कुर्सी पर बैठे चूइंगम चबाते हुये जिम्मी से मुखातिब हो उसका दोस्त राजीव बोला—"तुम तो कह रहे थे कि तुम लड़के पर दांव लगवाओगे। एक के पांच देने को भी बोल रहे थे। जाओ और आर्गेनाइजर से मिलो और...।"

"नहीं राजीव।" च्यूइंगम चबाते हुये शान्त भाव से बोला जिम्मी—"अब मैंने इरादा बदल दिया है। दरअसल अब मेरा मूड दांव लगवाने का नहीं, लगाने का बन गया है।"

"यानि अब तुम्हारा विश्वास इस लड़के पर से हट रहा है?" दूसरा दोस्त उसकी तरफ देखते हुये बोला—"तुम खुद जिंगारा की तरफ से दांव लगाना चाहते हो?"

"नहीं रतन...।" च्यूइंगम को अपने सामने थूकते हुए ठोस लहजे में बोला जिम्मी—"दांव मैं आशीर्वाद पर ही खेलूंगा। मुझे उस पर पूरा-पूरा भरोसा है। दांव लगवाने की जगह लगाने की

सिर्फ इसलिये सोची कि दांव लगवाने पर आया और एक के पांच देने का एनाउंस करवाते ही करोड़ों का दांव लग जायेगा। इतनी बड़ी रकम देने के लिये पहले मुझसे गारण्टी मांगी जायेगी। बैंक में इतनी रकम तो होती नहीं, फिर गारण्टी कहां से दूंगा? हालांकि यहां का मैनेजर टोनी मुझे अच्छी तरह जानता है—लेकिन फिर भी वो मेरे पर इतना बड़ा रिस्क नहीं लेगा। बीस लाख का दांव लगाऊंगा मैं आशीर्वाद पर...।"

"और हमें क्या करना चाहिये जिम्मी भाई...?" राजीव ने पूछा।

"जीतना है तो आशीर्वाद पण्डित पर दांव लगाओ। हारना है तो काले पहाड़ पर पैसा लगा दो। ऐ...भाई, इधर आ।" जिम्मी ने एक कलेक्टर को आवाज लगाई तो वह उसके पास आकर बोला—"बोलो साहब...किस पर कितना पैसा लगाना है?"

"बीस लाख का चेक दे रहा हूं...आशीर्वाद पर लगाना है। यहां मेरा चेक चलता है—तुम्हें मालूम तो है ही।" जेब से चेक बुक और पेन निकालते हुये बोला जिम्मी।

"मालूम है साहब। आप पहले भी कई बार चेक देकर दांव लगा चुके हैं।" कलेक्टर तनिक हिचकिचाते हुये-सा बोला—"लेकिन बीस लाख काफी बड़ी रकम है। आप चेक दीजिये और अपना मोबाइल नम्बर...। मैं मैनेजर साहब को देता हूं। आपका दांव डन होने पर आपके पास मैसेज आ जायेगा।"

"ठीक है।" कहने पर जिम्मी ने बीस लाख का चेक काटकर उसे पकड़ा दिया।

पच्चीस-पच्चीस हजार नकद उसके चारों दोस्तों ने उसे पकड़ाकर उससे टोकन ले लिये।

❑❑❑
❑❑❑

तीन मिनट बाद जिम्मी के मोबाइल पर मैसेज आ गया कि उसका चेक स्वीकार कर लिया गया है।

इधर उसके मोबाइल पर मैसेज आया और उधर ग्लोब में—

इस बार जिंगारा ने ये साबित कर दिखाया कि उसके भेजे में निरा गोबर ही नहीं भरा हुआ है, दिमाग भी है।

हुआ ये कि लड़के की पहली चाल से मात खाये जिंगारा ने इस बार अपना दिमाग इस्तेमाल किया। लड़के पर छलांग लगाने

का उपक्रम भर किया और लड़का जैसे ही अपने बायें सरका कालिये ने उसके चेहरे पर घूंसा उड़ा दिया।

घूंसा क्या वो तो मानो तोप से निकला कोई गोला ही था जो लड़के के चेहरे से टकराया तो लड़का गैस भरे गुब्बारे की मानिन्द ही उड़ते ही ग्लोब की दीवार से टकराया।

'धाड़!'

और फिर पेड़ से टपकी गिलहरी की मानिन्द ही जमीन पर आ गिरा।

जिन लोगों ने जिंगारा पर दांव लगाया था वो खुशी में उछलने तथा 'जिंगारा-जिंगारा' चिल्लाने लगे।

"जिम्मी भाई...तुम्हारे बीस लाख और हमारे चारों के पच्चीस-पच्चीस हजार गये पानी में।" निराशा में भरे स्वर में बोला राजीव।

"मर मत ओये राजीव।" दांत पीसते हुये किंग कोबरे की मानिन्द ही फुंफकारा जिम्मी—"अभी तो शुरूआत ही हुई है। आगे-आगे देख होता है क्या? और सुन, तुम चारों को अगर हार का खतरा लग रहा हो तो तुम्हारे वाला दांव मेरा हुआ। मेरे से सुबह बैंक खुलते ही पच्चीस-पच्चीस अपने ले लेना। अगर वो पैसे जिंगारा पर लगाना चाहते हो तो मैं एक के पांच दूंगा। यानि पच्चीस के सवा लाख। कोई कमीशन नहीं कटेगा। बोलो, जिसे मंजूर हो वो हां कहे।"

चारों ही दोस्तों ने हां कर दी—वो भी ऐसे नहीं, जब उन्होंने देखा कि गिरे आशीर्वाद को जिंगारा ने उठाकर अपने सिर से ऊंचा कर रखा है तब हां की उन्होंने। यानि एक लाख का दांव आशीर्वाद पर से हटाकर जिंगारा पर लगा दिया उन चारों ने।

और जिम्मी मान भी गया।

जिंगारा आशीर्वाद को अपने सिर से उठाये कुछ देर तक ग्लोब में घूमता रहा।

फिर उसने उसे दीवार पर फेंक मारा।

लेकिन ये क्या?

लड़के का जिस्म ग्लोब की दीवार से नहीं टकराया, सिर्फ उसके पैर टकराये और फिर लड़के का जिस्म यूं ही वापस हुआ जैसे रबड़ की गेंद दीवार से टकराने पर फोर्स के साथ वापस होती है।

अगले ही पल—

'धाड़' करके उसका सिर जिंगारा के सीने से टकराया।

लेकिन यह क्या?

वो काला पहाड़ उस चोट को ऐसे ही झेल गया मानो उसके पेट से लड़के का सिर नहीं सच में ही प्लास्टिक की गेंद टकराई हो। लड़खड़ाया भी तो नहीं वो पट्ठा।

जबकि नीचे गिरने पर लड़के को ब्रह्माण्ड के दर्शन होने लगे थे।

स्टेडियम में एक बार फिर से 'जिंगारा-जिंगारा' का शोर उठने लगा।

"रतन...मैंने अच्छा किया ना...?" बगल में बैठे युवक के कान में फुसफुसाकर बोला राजीव—"दांव पलटकर जिंगारा पर लगा दिया। अपने जिम्मी भाई का दिमाग चल गया लगता है जो हाथी और चूहे की लड़ाई में चूहे को अहमियत दे रहे हैं। देखना अब जिंगारा उस लड़के को अपने पैरों तले रौंद डालेगा।"

"तुम ठीक कह रहे हो राजीव।" रतन भी फुसफुसाकर बोला—"मुझे जिंगारा की जीत का आभास हो चला है। तुम्हारी वजह से नुकसान होने की जगह फायदा होगा। वो भी पूरे एक लाख का। मैं तो कल ही नई पल्सर खरीदूंगा।"

"मैंने अपनी गर्ल फ्रेन्ड को सोने की चेन लेकर देनी है। काफी दिनों से कह रही है। मैं टाल रहा हूं और वो नाराज चल रही है। फोन भी नहीं अटैण्ड करती है मेरा। कल उसे बाजार ले जाऊंगा। सोने की चेन दिलवा देने पर जुगाड़ भी लग जायेगा अपना।" राजीव बोला।

"फिर तो अभी से मेरी मुबारकबाद कबूल कर। वैसे तेरी गर्लफ्रेन्ड है झक्कास। क्या नाम बताया था तूने उसका, याद नहीं आ रहा है...।"

"रूचिका...। अब तू उधर देख। गया काम से चिकना। पता नहीं किस मजबूरी में मौत की फाइट के लिये उतरा था। वैसे क्लब वालों की ये बड़ी गलती है। जिंगारा के मुकाबले में एक मामूली और कल के लड़के को उतारा। बोला ये गया कि स्पेशल फाइट होगी। बल्कि वेरी-वेरी स्पेशल फाइट बोला गया था। लेकिन यहां तो फाइट एक तरफा है। मजा नहीं आ रहा है। जिंगारा शुरू से ही लड़के पर हावी है। और...और अब तो लड़के का राम ही मालिक है...।"

□□□
□□□

लड़के के दोनों पैर पकड़े जिंगारा खुद घूमते हुये उसे सीलिंग फैन बनाये हुये था।

मुण्डे पर पैसे लगाये लोगों के चेहरे लटके हुये थे तो जिंगारा पर दांव लगाने वाले मारे खुशी के हाथ-हाथ भर उछलते हुये 'जिंगारा-जिंगारा चिल्ला रहे थे। लेकिन जिम्मी के चेहरे पर इत्मीनान के कुछ ऐसे भाव थे मानो उसे अभी भी इस बात का पूरा-पूरा भरोसा था कि लड़का ही वो फाइट जीतेगा।

फुल स्पीड में लड़के को सीलिंग फैन की नचाकर जिंगारा ने उसके पैर छोड़े तो लड़के का जिस्म रॉकेट की तरह ग्लोब की दीवार की तरफ बढ़ा।

उस पर दांव लगाने वालों ने अपनी आंखें बन्द कर लीं।

जबकि केबिन में शाकाल के साथ मौजूद टोनी चेहरे पर कसमसाहट के भाव लिये शाकाल से मुखातिब हो बोला—"बॉस...आज की फाइट में हमें अरबों का घाटा होगा। बावजूद इसके कि टिकट के रेट को हमने दुगना-तिगुना किया। साथ ही आज स्टेडियम भी फुल है। लेकिन जिंगारा पर आज एक तरफा ही दांव लगाया गया है। आशीर्वाद पर तो कुछ ही लोगों ने दांव लगाया है...।"

"कोई बात नहीं टोनी।" सिगार का कश लगाकर उसका धुआं छोड़ने पर सपाट से लहजे में बोला शाकाल—"धन्धे में नफा-नुकसान तो लगा ही रहता है। बहुत माल कमाया है मैंने इस धंधे में, आज नुकसान ही सही। मुझे हार में भी खुशी है। वर्षों पुराना हिसाब चुकता होना है इस लड़के की मौत के साथ ही। हां, थोड़ा अजीब-सा इस बात पर महसूस हो रहा है कि ये फाइट टक्कर की नहीं रही। दर्शकों को मजा नहीं आ रहा होगा। वो सोच रहे होंगे कि वेरी-वेरी स्पेशल फाइट के नाम पर टिकटों के दाम बढ़ाकर उन्हें धोखा दिया गया है। दरअसल मुझे इस हराम की औलाद को समझने में धोखा हुआ है। इसके बारे में अब तक बहुत कुछ सुना था। कोई इसे दो पैरों वाला बम, कोई छः फुट का नेवला तो कोई सौ के बराबर अकेला कहता था। ये सब सुना तो ही फाइट की पब्लिसिटी वेरी-वेरी स्पेशल करके की। लेकिन ये कुत्ते का पिल्ला बिल्कुल ही बोगस निकला। ऐसी उम्मीद नहीं थी इससे। ये चींटी और हाथी का मुकाबला बनकर रह गया है।

अब तो...अर्र-रे ये क्या?" बोलते हुये शाकाल की आंखों में आश्चर्य के भाव नजर आने लगे।

सिर्फ शाकाल की आंखों में ही नहीं, बल्कि स्टेडियम में उस समय मौजूद सभी दर्शकों की आंखों में हैरत के मेंढक 'छप्पक-छप्पक' करते नजर आने लगे थे।

सिर्फ जिम्मी को छोड़कर। वो हैरान होने की जगह मुस्करा रहा था और चेहरे पर कुछ ऐसे भाव थे मानो सबसे कह रहा हो कि उसे मालूम था कि उसका हीरो मात खाने वालों में से है ही नहीं।

दरअसल दर्शकों की आंखों में आश्चर्य के भाव तब प्रकट हुये जबकि जिंगारा ने केशवपुत्र को घुमाकर एक ओर उछाला तो उन्होंने समझ लिया कि अब वो बचेगा नहीं। ग्लोब की दीवार से उसके जिस्म के टकराने पर उसका तीया-पांचा हो जायेगा।

लेकिन ऐसा नहीं हुआ। जो हुआ, जो दर्शकों ने देखा, उनकी कल्पना से परे था वह सबकुछ।

हुआ ये कि, जिंगारा द्वारा घुमाकर फेंके जाने पर मुण्डे का जिस्म कुछ दूर तक तो रॉकेट की-सी गति पकड़े रहा। फिर वह जिस्म हवा में कलाबाजियां खाकर सुरक्षित ढंग से, अपने पैरों के बल पर जमीन खड़ा नजर आया।

दर्शकों के साथ-साथ जिंगारा भी हैरानी में पड़ा नजर आया।

जबकि मुण्डे ने जेब से चने के दो दाने निकालकर मुंह में सरकाये और उन्हें दांतों से घायल करने पर दबाकर छोड़े गये स्प्रिंग की मानिन्द ही उछला।

फिर हवा में कलाबाजियां खाते हुये उसकी किक हैरानी में पड़े जिंगारा के चेहरे पर पड़ी तो वह तिलमिला उठा।

जबकि मुण्डा हवा में ही कलाबाजी खाकर पहले तो उसके सामने उतरा। फिर दोनों हथेलियों की मुट्ठियां बनाकर हवा में उछला और फिर—

"भड़ाक!"

जिंगारा की कनपटी पर उसके दोनों घूंसे लौहार के हथौड़े की भांति पड़े।

जिंगारा के मुंह से गालियों का तूफान-सा निकला।

मुण्डे ने गालियों के उस तूफान को घुटना चलाकर रोका। उसका घुटना शालीमार एक्सप्रेस ट्रेन की गति से उसकी टांगों के जोड़ के बीचों-बीच टकराया तो वह 'ओउफ-ओउफ' करके उछलते हुये लट्टू की तरह नाचने लगा।

बाजी के पलटते ही दर्शक दीर्घाओं में उठता शोर हल्का पड़ा। वो लोग जिन्होंने आशीर्वाद की तरफ से दांव लगाये थे उत्साहित हो चिल्ला रहे थे—

"आशीर्वाद...आशीर्वाद...।"

"अब ठीक है।" सिगार का धुंआ मुंह से उगलने के साथ-साथ सन्तुष्टिपूर्ण अन्दाज में सिर हिलाते हुये बोला शाकाल—"अब ये लड़का मारा भी जाता है तो दर्शक हम पर ये इल्जाम नहीं लगा सकेंगे कि हमने आज की फाइट की जो वेरी-वेरी करके पब्लिसिटी की थी वो गलत थी। लड़के ने अपना कमाल दिखा ही दिया है।"

"अब तो वही भारी भी पड़ रहा है। अगर ये फाइट जीत जाता है तो हमें तीन अरब का फायदा होगा बॉस। रही लड़के की मौत की बात तो मरेगा तो ये है ही। फाइट में ना सही तो बाद में सही।"

"हां ये तो है। इसके जीतने पर फायदा तो होगा ही हमें।"

ग्लोब का दृश्य कुछ इस प्रकार था—

जिंगारा अपनी टांगों के बीच दोनों हाथ दिये छत्तीस प्रकार के मुंह कुछ ऐसे बना रहा था मानो दर्द के मारे उसकी जान निकली जा रही हो।

और मुण्डा चने चबाते हुये अपना दायां हाथ हवा में लहराते हुये, ग्लोब में घूम-घूमकर दर्शकों का अभिवादन स्वीकार कर रहा था।

दर्शक चिल्ला रहे थे—"हिट हिम...हिट हिम।"

तभी जिंगारा अपना सिर नीचे झुकाये उसकी तरफ दौड़ा। उसका इरादा लड़के की पीठ पर प्रहार करके उसे उड़ाकर रख देने का था।

लेकिन ये इतना आसान नहीं था—लड़के का मुंह हालांकि दर्शकों की तरफ था। लेकिन जैसे ही जिंगारा उसके निकट पहुंचा लड़का अपने स्थान से सरका।

परिणाम स्वरूप—

जिंगारा का सिर पूरी तेजी से ग्लोब की दीवार से टकराया और वह वहीं दोहरा होता चला गया।

फिर लड़का दौड़कर घुटनों के बल उसके कंधों पर कूदा तो वह अरने भैंसे की तरह डकराने...और पानी से निकाली गई मछली की मानिन्द ही तड़फने लगा।

"लग गया अपना तो पचास हजार का चूना।" अब तक कुर्सी पर तना बैठा रतन एकाएक ऐसे ढीला पड़ा जैसे हवा निकल जाने पर गुब्बारा पिचक जाता है—"ये सब तेरी वजह से हुआ है राजीव। अच्छा भला जिम्मी भाई के कहने पर आशीर्वाद पर दांव लगाया था—पर तूने डबल माइण्ड करके लड़के से दांव हटाकर जिंगारा पर लगवा दिया था। आज की ये फाइट पैंतीस हजार की चपत लगा गई।"

"तू ही क्या...हम दोनों भी तो इस राजीव के चक्कर में पड़कर अपना नुकसान करा बैठे हैं। अब तो वो चिकना ही जीतेगा। उस काले पहाड़ की हालत खराब करके रख दी है उसने।" गणेशी नामक युवक ठण्डी आह-सी भरते हुये बोला—"अच्छा भला पहले चिकने पर दांव लगाया था, फिर दिमाग खराब करके रख दिया राजीव ने और अब लग गई पचास हजार चपत..."

"तुम्हारे लोगों के साथ मेरा नुकसान भी तो हुआ है।" मानो तिलमिलाकर छटपटाकर ही बोला राजीव—"अभी जब जिंगारा लड़के को ठोंक रहा था तो तुम मेरी तारीफ कर रहे थे। रतन कह रहा था कि मेरे कहने पर दांव बदलकर इसने समझदारी का काम किया है। पल्सर खरीदने के सपने भी देखने लगा था। अब दांव उल्टा पड़ता नजर आ रहा है तो मुझे दोषी ठहराने लगा है। मैंने जबरदस्ती थोड़े की थी कि तुम लोग मेरा कहना मानो-ही-मानो। पहले राउण्ड में मुझे लगा कि जिंगारा ही जीतेगा तो मैंने अपना दांव चेंज कर दिया। जिम्मी भाई ने बैठे-बिठाये दो लाख हमारे से कमा लिये हैं।"

"रोओ मत लल्लुओ।" उन चारों की चिक-चिक का भरपूर आनन्द उठाते हुये तथा चबड़-चबड़ करके च्यूइंगम चबाते हुये बोला जिम्मी—"तुम चारों मेरे दोस्त हो। तुम्हारे नुकसान पर मुझे दुख है। तुम्हारे दुख को हल्का करने के लिये रास्ते में दारू-मुर्गा दोनों मेरी तरफ से होंगे। दारू में जो ब्राण्ड कहोगे वो लूंगा।"

"दारू तो तुम्हारी रोज ही पीते हैं जिम्मी भाई।" रो देने वाले से लहजे में बोला रतन—"आज टिकट के पैसे ही वापस कर दो। आखिर बीस-इक्कीस लाख का प्रोफिट हुआ है तुमको।"

"चलो, मान ली तुम्हारी ये बात भी—तुम लोग भी क्या याद रखोगे कि किसी दिलवाले दोस्त से पाला पड़ा है।" गर्दन अकड़ाकर बोला जिम्मी।

उधर ग्लोब में केशवपुत्र उस काले पहाड़ की हालत इतनी

खराब कर चुका था कि वह चित्त पड़ा बुरी तरह तड़फड़ा रहा था।

फाइट का नियम था, मारो या मरो। उस नियम का पालन करने पर ही उसकी तथा गामा पहलवान की आजादी के लिये उससे कहा गया था।

अतः ना चाहते हुये भी आप सबके चहेते को जिंगारा को मारना पड़ा।

तड़फते...फड़फड़ाते जिंगारा की छाती पर मुण्डा घुटनों के बल कूदा तो 'कड़-कड़ाक' की ऐसी ही आवाज हुई मानो पेड़ की सूखी हुई जमीन पर पड़ी टहनियों के ढेर पर पत्थर की सिला आ पड़ी हो। और इसी के साथ जिंगारा के मुंह से खून की पिचकारी-सी छूटी।

फिर दो मिनट और तड़फने तथा छटपटाने पर उसकी गर्दन एक ओर ढुलक गई।

टोनी डिसूजा माइक पर चीख-चीखकर लड़के के विनर होने की घोषणा करने लगा।

❑❑❑
❑❑❑

एक घण्टे बाद!

जबकि सारा स्टेडियम खाली हो चुका।

शाकाल, लू चिन, जोरावर सिंह तथा टोनी डिसूजा मैदान में पड़े ग्लोब के निकट पहुंचे।

ग्लोब को चारों ओर से नीली वर्दी पहले ए० के० छप्पन से लैस, शक्ल से ही बेरहम लगने वाले गार्डों ने घेर रखा था।

"क्यों ओये टकले?" उन चारों के निकट पहुंचने पर चने चबाते हुये रेगमाल से भी ज्यादा खुरदुरे लहजे में बोला आशीर्वाद—"मौत की फाइट जीत ली है मैंने, अब तू शर्त के मुताबिक मुझे इस ग्लोब से बाहर निकाल और मेरे गामा अंकल को बुला, हम दोनों यहां से जाना चाहेंगे।"

"दोनों क्यों ओये पण्डित की औलाद।" ग्लोब में खड़े आशीर्वाद की तरफ मखौल उड़ाने वाली सी मुस्कराहट उछालते हुये व्यंग भरे लहजे में बोला शाकाल—"तेरे उस सींकड़ी अंकल को तो हम पहले ही जहन्नुम के लिये रवाना कर...।"

"हरामजादे ऽऽऽ कुत्ते ऽऽऽ सूअर की औलाद!" उसकी पूरी बात सुने बिना ही हलक फाड़कर चीखा केशवपुत्र—"दोगले

इन्सान। अब तू मेरे हाथों से बचेगा नहीं। कुत्ते की मौत मारूंगा मैं तुझे और तेरे साथियों को...।" कहने पर वह ग्लोब की जाली में हाथ फंसाकर उसे तोड़ने के लिये जोर लगाने लगा।

"हा...हा...हा...!" शाकाल हंसा तो लू चिन, जोरावर सिंह और टोनी डिसूजा भी उसके साथ जोर-जोर से हंसने लगे।

ग्लोब की स्टील वाली जालीदार चादर आधा इंच मोटी और बेहद मजबूत थी। कुछ देर तक आशीर्वाद उसे हाथ से फाड़ने की कोशिश करता रहा। फिर नाकामयाब होने पर झल्लाकर उस पर पैर पटकते हुये उसे तोड़ने की कोशिश करने लगा।

"शाबाश बहादुर...और जोर लगा...।" उसकी झल्लाहट का भरपूर आनन्द उठाते हुये बोला शाकाल—"बचपन में मां का जितना भी दूध पीया है आज सब निकाल दे...आजाद हो गया तो फिर इस बार वाकई में तुझे यहां से जाने से कोई नहीं रोकेगा। ये मेरी...शाकाल की जुबान है।"

"जा ओये दोगले कुत्ते...।" किसी जख्मी भेड़िये की मानिन्द ही गुर्राकर बोला नीलम-सी नीली आंखों वाला—"तू और तेरी जुबान दोनों ही काटकर गटर में फेंकने लायक हैं। जब तक मैं ग्लोब में हूं—तू मेरा मखौल उड़ा ले। लेकिन बाहर आने पर डर के मारे तेरी जुबान लकड़ी की हो जायेगी। एक शब्द भी नहीं बोल पायेगा तू। हंसने के लिए मुंह खोलेगा तो आंखों की जगह मुंह से आंसू गिरेंगे। हरामजादे तूने गामा अंकल को मारकर अपने जीवन की सबसे बड़ी भूल की है। मुझे वैसे भी दो पैरों वाला बम कहा जाता है। आज ये बम फटेगा तो इस दुनिया से तेरा और तेरे साथियों का नाम हमेशा-हमेशा के लिये मिट जायेगा...।"

"तू कुछ नहीं कर सकेगा ओये पण्डित की औलाद।" इस बार लू चिन की वाणी मुखर हुई। वह मानो अपने हरेक शब्द पर जोर देते हुये बोला—"ये ग्लोब नहीं तेरी मौत का पिंजरा है। इसमें ही दम तोड़ेगा तू। इससे तू नहीं तेरी लाश ही बाहर आयेगी। अब हम इस ग्लोब में चार सौ चालीस वोल्ट का करेंट छोड़ने जा रहे हैं। उसके बाद शुरू होगा तेरी मौत का तमाशा। ये ग्लोब के बाहर छः गर्नर खड़े हैं। ये तुझ पर गोलियां बरसायेंगे और गोलियों से बचने के लिये तू उछल-कूद मचायेगा। उछल-कूद मचाते हुये जैसे ही तेरा जिस्म ग्लोब के किसी हिस्से से टकरायेगा, तेरा काम तमाम हो जायेगा। पैरों में तुमने रबर सोल वाले जूते ना पहने होते तो मिनट भी नहीं लगना था—करण्ट छोड़ते ही तू अपने स्थान

पर चिपककर मर जाता। खैर कोई बात नहीं, तेरी मौत में थोड़ा तमाशा होने से हमें मजा आ जायेगा। ओये, चालू करो करण्ट...।"

लू चिन के कहने पर ग्लोब से काफी परे एक दीवार पर लगे बटन को ऑन कर दिया गया। उसके बाद लूचिन ने गार्डों को फायर का आदेश दिया।

अगले ही पल—

"तड़...तड़...तड़...टा...टा...टा...।"

और आप सबके चहेते के पास अपना बचाव करने के सिवाय उस समय कोई रास्ता न होने की वजह से उसे वही रास्ता अपनाना पड़ा।

गार्डों द्वारा गोलियां चलाये जाने पर पहले तो उसका जिस्म दबाकर छोड़े गये स्प्रिंग की मानिन्द ऊपर उठा और फिर हवा में ऐसे कलाबाजियां खाने लगा मानो पानी के अन्दर डॉल्फिन खेल कर रही हो।

पल में ग्लोब के इस कोने पर तो दूसरे पल दूसरे कोने में कलाबाजियां खाते हुये नजर आ रहा था वह।

हां, बीच में पलभर के लिये वह ग्लोब के फर्श पर भी रेस्ट के लिये उतर आता था।

यूं तो मुण्डा उन छः गनधारियों को आश्चर्य में डाले उनकी गनों से निकलने वाली गोलियों को धोखा दे ही रहा था। लेकिन सच ये भी था कि वह अन्दर-ही-अन्दर हिला हुआ था। वह जानता था कि वो करतब वह ज्यादा देर तक नहीं दिखा सकता था।

और इसके अलावा बचाव की कोई सूरत भी नजर नहीं आ रही थी। सच ये भी था कि हालात ऐसे थे कि दिमाग के चैम्पियन का दिमाग ठप्प होकर रह गया था।

जबकि शाकाल और उसके साथी उसकी बेबसी पर ठहाके-पर-ठहाके लगाये जा रहे थे।

गार्ड अपने मालिक का हुक्म बजा रहे थे। उनकी गनों से मौत का संगीत फूट रहा था।

तभी—

एक अन्य दिशा से गोलियां चलीं।

"धांय...धांय...धांय...।"

और छः में से तीन गार्ड पीठ पर गोलियां खाकर औंधे मुंह जमीन पर गिर पड़े।

शाकाल और उसके साथी समेत गार्ड भी बुरी तरह चिहुंके।
उस तरफ घूमे जिधर से गोलियां चलाई गई थीं।

फिर गोलियां चलाने वाले शख्स पर नजर पड़ते ही शाकाल और लू चिन की नजरें मारे आश्चर्य के आखिरी कोने तक फटती चली गईं।

❑❑❑
❑❑❑

पहचान उसे जोरावर सिंह ने भी लिया था। वह आंखों में आश्चर्य के भाव समेटे हुये होंठों ही होंठों में बुदबुदाया—"य...ये तो इन्टरनेशनल क्रिमिनल अलफांसे है। ल...लेकिन यह यहां क्यों आया?"

"गार्डस...।" आश्चर्य के समन्दर से बाहर निकल शाकाल चिल्लाकर बोला—"खड़े-खड़े इस हरामी का मुंह क्या देख रहे हो? खत्म कर दो इसे। शूट हिम...।"

तीनों गार्डस् मानो सोते से जगे हों।

लेकिन इससे पहले कि वह अपनी गनों का रुख अलफांसे की तरफ करते, उसके रिवॉल्वर से तीन गोलियां एक के बाद एक करके चलीं और तीनों ही गार्डों के सीनों में जा धंसीं।

तीनों के हाथों से उनकी गनें छूटी और तीनों ही ढेर सारी शराब पीये शराबियों की मानिन्द लड़खड़ाते हुये इधर-उधर फैल गये।

"ओये मेरे खट्टे बादाम...।" खाली हो चुकी रिवॉल्वर को एक ओर उछालते हुये अलफांसे ग्लोब में अभी भी कलाबाजियां खाते आशीर्वाद की ओर देखकर चिल्लाकर बोला—"अब ये उछल-कूद बन्द कर दे। तेरा अंकल आ गया है। अब इन हरामियों के बन्दरों की तरह नाचने तथा उछलने की बारी है।"

"पांय लागूं अंकल जी...।" ग्लोब में मुण्डा पूर्ववत् कलाबाजियां खाते हुये चिल्लाकर बोला—"अब मैं अपनी जान बचाने के लिये उछल-कूद नहीं कर रहा हूं बल्कि मैं तो आपके आने की खुशी में भांगड़ा, डिस्को, रॉक-एन-रोल कर रहा हूं। आपको तो मैंने तभी देख लिया था जब आपने पहले वाले तीन गार्ड्स को ढेर किया था। अंकल जी...एक विनती है आपसे... आप यहां सबको मारना पर टकले को नहीं टपकाना। इसके लिये मैंने अपने एक दोस्त को वचन दिया है कि शाकाल को वही मारेगा। मैं इसे जीवित ही उसके हवाले करूंगा।"

"चल प्यारे केशवनन्दन। तू भी क्या याद करेगा कि किसी शाही आदमी से तूने रिक्वेस्ट की है। मान ली तेरी रिक्वेस्ट...। नहीं मारूंगा इस चापड़गंजू को। लेकिन बाकी तीन का कीमा बनाकर रख दूंगा।"

कहने पर वह शाकाल तथा उसके तीनों साथियों की तरफ पलटा।

तभी लू चिन अपने स्थान से उछला और उसका सिर अलफांसे के पेट से तोप से निकले गोले की मानिन्द टकराया और उसके पैर उखड़ गये।

दोनों ही गिरे—और फिर लगभग एक साथ उठ खड़े हुये।

"बहुत पुराना हिसाब चुकता करना है तुझसे ओये अलफांसे।" भस्म कर देने वाली-सी निगाहों से अलफांसे को घूरते हुये गुर्राकर बोला लू चिन—"आज मैं अपना वो हिसाब चुकता करके ही मानूंगा।"

"अबे जा ओये खटमल...।" झगड़ालू औरतों की तरह हाथ नचाते हुये किंग कोबरे की मानिन्द ही फुंफकार भरे लहजे में बोला अलफांसे—"तू क्या मुझसे अपना हिसाब चुकता करेगा। अलफांसे उस हस्ती का नाम है कि तेरे जैसे हजारों-लाखों खटमल अपने मन में उससे बदला लेने की ख्वाहिश लेकर उसके सामने आते हैं और उसके कदमों के तले कुचलकर दम तोड़ बैठते हैं। चीन में तेरे से हुई मुलाकात याद है मुझे। तब तू एक हिन्दुस्तानी परिवार पर अत्याचार कर रहा था। तेरे साथ दो लोग और थे। वो परिवार मेरे जानने वाला परिवार था और संयोगवश उस दिन जब तू भगवन्त राय के घर में उसकी बेटियों के साथ अत्याचार करने अपने दो साथियों के साथ पहुंचा था उस दिन भगवन्त राय के घर मैं डिनर पर आमन्त्रित था। मैंने वहां पहुंचकर तुम तीनों चीनी बन्दरों की वो ठुकाई की थी कि तुम तीनों ही कुत्तों की तरह कूं-कूं करके भगवन्त राय की बेटियों से माफी मांगने पर मजबूर हो गये थे। उल्लू के पट्ठे...जब उस दिन अपने देश में तू मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सका, कुत्तों की तरह कूं-कूं करके भागा तो आज मेरा क्या कर लेगा?"

"उस दिन मैं नशे में टल्ली था अलफांसे...इसलिये मार खा गया।" क्रोधातिरेक थर-थर कांपते हुये मानो अपना हरेक शब्द चबा-चबाकर, चिंगल-चिंगलकर ही बोला लू चिन—"आज मार नहीं खाऊंगा बल्कि मारूंगा।"

कहने पर एक बार फिर से उछला लू चिन। इस बार उसका इरादा अलफांसे के सीने पर फ्लाइंग किक जड़ने का था।

लेकिन ये लू चिन की मूर्खता ही थी। अलफांसे के विषय में सारी जानकारी रखनें पर भी वह ऐसी गलती कर बैठा। और ये गलती उसके लिये उसके जीवन की आखिरी गलती साबित हुई।

उसका जिस्म हवा में ही था कि तनिक एक ओर हटते हुये अलफांसे ने उसके दोनों पैर ककड़ी की तरह दबोचे और उसे दो राउण्ड घुमाकर ग्लोब की ओर उछाल दिया।

फिर जैसे ही उसका जिस्म ग्लोब से टकराया वहीं चिपककर रह गया।

'ई ऽऽऽऽ ई ऽऽऽ।'

पलभर तक वह ग्लोब से चिपका चिल्लाता रहा। फिर निर्जीव होकर जमीन पर गिरा तो कोयले की तरह काला पड़ चुका था।

अलफांसे को नहीं पता था कि ग्लोब में करेण्ट दौड़ रहा है इसलिये वह वहां जा चिपके लू चिन की ओर हैरान हो देख ही रहा था कि उसे असावधान समझकर टोनी ने उस पर छलांग लगा दी।

अचानक हुए आक्रमण से अलफांसे थोड़ा लड़खड़ाया, लेकिन तुरन्त ही संभल भी गया।

पलटकर उसने पहले तो टोनी की नाक पर घूंसा जड़ा। फिर जैसे ही वह गिरने को हुआ उसके पेट पर लात भी जमा दी।

परिणामस्वरूप वह लड़खड़ाकर पीछे जा गिरा।

तभी ग्लोब में खड़ा लड़का चिल्लाया—

"अंकल जी...वो टकला और उसका साथी मैदान छोड़कर भाग रहे हैं। उन्हें पकड़िये। खासकर टकला बचकर जाने ना पाये।"

टोनी को छोड़कर अलफांसे शाकाल और जोरावर सिंह के पीछे दौड़ा।

लेकिन व्यर्थ!

पांच मिनट बाद वह हताशा में भरा वापस लौटा तो केशवपुत्र बड़बड़ा उठा—"भाग निकला साला टकला। चलो, आज बच निकला तो कल फिर से हत्थे चढ़ेगा। तब साले को छठी का दूध ना याद दिलाया तो मेरा नाम भी आशीर्वाद पण्डित नहीं।"

□□□
□□□

"ये इधर एक को गिराया था वो भी भाग गया।" टोनी डिसूजा की तलाश में नजरें घुमाते हुये बोला अलफांसे।

"जी...अंकल जी...।" चने के दो दाने मुंह में सरकाने पर बोला आशीर्वाद—"अब आप सबसे पहले मुझे इस पिंजरे से बाहर निकालने के लिये कुछ कीजिये।"

"करता हूं मेरे लाल...करता हूं।" जेब से ट्रिपल फाइव मार्का सिगरेट की डिब्बी तथा काले रंग का लाइटर निकालते हुये बोला अलफांसे—"कुछ क्या, तुम्हें इस पिंजरे से बाहर निकालने के लिये सबकुछ करूंगा। पहले एक कश मारकर थोड़ा मूड फ्रेश कर लूं।"

फिर सिगरेट सुलगाकर उसका एक कश लगाने पर बोला वह—"इस ग्लोब में करण्ट है। कोई दरवाजा भी नहीं दिख रहा है दशरथ नन्दन...। अब मैं करूं तो करूं क्या?"

"पिंजरे का दरवाजा है तो सही लेकिन रिमोट से खुलता है। शाकाल और उसके साथी पहले उस शीशे वाले केबिन में थे। वहीं से उन्होंने रिमोट दबाकर दरवाजा खोला था तो जिंगारा अन्दर आया था। आप उस केबिन में जाकर देखिये, रिमोट वहीं होगा।"

केबिन में जाने पर अलफांसे को टेबल पर रखा रिमोट मिल गया। उसके एक के बाद एक करके बटन दबाते चले जाने पर ग्लोब का दरवाजा एरोप्लेन के दरवाजे की तरह ही बाहर को ऊपर उठकर खुल गया तो मुण्डा छलांग लगाकर बाहर आ गया।

बाहर आने पर सबसे पहले तो उसने अलफांसे के पैर छुये। तत्पश्चात् कुटुर-कुटुर करते हुये बोला—"अब बताइये अंकल जी...कि आप यहां कैसे पहुंचे? आपको कैसे पता लगा कि मैं यहां फंसा हुआ हूं?"

"तुम यहां हो अथवा फंसे हुये हो ये मुझे नहीं मालूम था मेरे प्यारे कड़वे रसगुल्ले।" सिगरेट का कश मारकर नथुनों के रास्ते उसका धुआं बाहर करते हुये बोला अलफांसे—"मैं तो शाकाल का पता लगाने के लिये टोनी डिसूजा की ऐसी-तैसी फेरने आया था यहां। दरअसल कल जब दिल्ली में मुझे तुम्हारा फोन मिला उसके बाद मैंने मुम्बई में अपने चेले-चपाटों को शाकाल की खोज-खबर निकालने को कहा। दिल्ली से आज दोपहर के

बाद में यहां पहुंचा—वैसे आना तो सुबह ही था। लेकिन सुबह वाली फ्लाइट मिस हो गई। बारह बजे वाली फ्लाइट पकड़नी पड़ी। मुम्बई आने पर मैं अभी घर पहुंचा ही था कि मेरे चेले सलमान भट्ट का फोन आ गया। उसने बताया कि उसका बड़ा भाई रहमान भट्ट टोनी डिसूजा के फाइट क्लब में काम करता है और उसका कहना है कि वो क्लब टोनी डिसूजा का ना होकर शाकाल का है। टोनी मात्र उसका मोहरा है। फिर चाय-नाश्ता करते हुये मैंने वो जानकारी तुम्हें देने के लिये कई बार फोन पर तुम्हारा नम्बर लगाया। लेकिन हर बार स्विच ऑफ बताया गया। फिर मैंने घर भी फोन लगाया। सोफिया भाभी ने बताया कि तुम कॉलेज गये हुये हो। मैंने सोचा कॉलेज में फोन बन्द कर रखा होगा तुमने। तब मैं नाश्ता करके टोनी के पास उसके फाइट क्लब इसलिये पहुंचा कि यहां उससे शाकाल के बारे में पता करूंगा। यहां आया तो गेट पर ही पता चल गया कि अन्दर अपने बच्चे के साथ मौत का खेल चल रहा है। गेट पर खड़े दो गार्ड आपस में तुम्हारे बारे में ही बातें कर रहे थे।" कहने पर उसने फिर से एक लम्बा कश मारा।

"तो इस तरह आप यहां पहुंचे अंकल जी...।" चने चबाते हुये बोला मुण्डा—"ये शाकाल का खास अड्डा है। यहां वो मौत की फाइट कराकर हर फाइट में करोड़ों की कमाई करता है। अब उसका ये खेल खत्म समझो। मैं इंस्पेक्टर अंकल को फोन करके यहां बुलाता हूं। यहां टोनी का कोई आदमी आपने जीवित छोड़ा होगा तो वो पुलिस को बतायेगा कि यहां क्या होता था...।"

"उसके बहुत से आदमी बेहोश किये हैं मैंने।" नथुनों से धुआं बाहर करते हुये बोला अलफांसे—"मारा उन्हीं को है जो मुझे गन का निशाना बनाने जा रहे थे। तुम अनिल भाई को फोन लगाओ। मैं निकलता हूं यहां से...।"

"इतनी जल्दी क्या है...यहां से जाने की अंकल जी...? मेरे पास फोन कहां है? आपके मोबाइल से ही इंस्पेक्टर अंकल को फोन करूंगा।"

फिर केशवपुत्र ने इंस्पेक्टर अनिल यादव को फोन करके फोर्स सहित वहां पहुंचने को कहा और साथ ही इण्डिया न्यूज चैनल पर काम करने वाली अपनी बुआ, जो कि वास्तव में केशव पण्डित की मुंहबोली बहन है, माधवी चोपड़ा को भी फोन करके टीम सहित वहां बुलवा लिया।

□□□
□□□

अपने गुप्त कमरे में रखी सेफ में रखे ट्रांसमीटर पर चीन की सीक्रेट सर्विस के कमांडर से सम्पर्क करने पर जैसे ही शाकाल ने उसे लू चिन की मौत के विषय में बताया कमांडर भड़क उठा। उसका गुर्राता हुआ-सा स्वर शाकाल के कानों पर चढ़े हैडसेट के माध्यम से उसके कानों से टकराया—"अव्वल दर्जे के बेवकूफ और गधे हो तुम शाकाल—तुमसे मना किया था कि जब तक हमारा ये मिशन कामयाब नहीं हो जाता है तुमने पण्डित की औलाद से कैसे भी करके पंगा नहीं लेना है...।"

"ग...गलती हो गई कमांडर।" कमांडर की फटकार पर सहमे हुये से लहजे में बोला शाकाल—"आइन्दा नहीं होगी।"

"तुम्हारे माफी मांगने से क्या होगा बेवकूफ? यहां हमारे प्लान का भट्टा बैठ गया।" दूसरी तरफ मानो कोई भेड़िया ही इंसानी भाषा में बोल रहा हो—"कितना बढ़िया प्लान लेकर तुम्हारे पाया आया था लू चिन और...।"

"कमांडर...!" कमांडर की बात पूरी होने से पहले ही बोल पड़ा शाकाल—"आपने लू चिन के हाथ जो प्लान भेजा था उसकी तैयारी पूरी हो चुकी है। कल आपके सारे दुश्मन मारे जायेंगे...।"

"बेवकूफ ही नहीं...परले दर्जे के मूर्ख भी हो तुम शाकाल।" कोड़े की फटकार जैसा स्वर टकराया शाकाल के कानों से तो उसने अपने होंठ भींच लिये—"आशीर्वाद पण्डित बहुत ही खतरनाक है। अगर उसने लू चिन से प्लान के बारे में जान लिया है तो वो उस प्लॉन को कभी सक्सैस नहीं होने देगा।"

"ल...लेकिन कमांडर उसे अभी आपके...हमारे प्लान की भनक भी नहीं लगी है। दरअसल लू चिन आशीर्वाद पण्डित के हाथों नहीं अलफांसे के हाथों मारा गया है।" इसी के साथ शाकाल ने सारा किस्सा विस्तारपूर्वक कह सुनाया।

"ओह! इसका मतलब हमारा प्लान लीक नहीं हुआ।" शाकाल से पूरी बात सुनने पर कमांडर के लहजे में नर्मी आयी—"शाकाल अब तुम्हें बहुत सावधान रहते हुये हमारा मिशन पूरा करना है। जब तक मिशन पूरा ना हो जाये तब तक छिपे ही रहना होगा तुम्हें।"

"आप मेरी तरफ से बेफिक्र रहें कमांडर।" दृढ़ता भरे लहजे में बोला शाकाल—"वो लड़का कभी भी मुझ तक नहीं पहुंच सकत

है और आपसे मेरा ये वादा है कि तिब्बत के धर्मगुरु और उनके चेलों का काम कल ही तमाम कर दिया जायेगा।"

"ऐसा होने पर मुल्क के राष्ट्रपति तुम्हारा सम्मान करेंगे। ओवर एण्ड ऑल।" कहने पर दूसरी तरफ से सम्बंध विच्छेद कर दिया गया।

❑❑❑
❑❑❑

ट्रिपल सी के नवी मुम्बई स्थित हैडक्वार्टर में चीफ के ऑफिस में जोकर के रूप में धन्नो और उसके सामने आशीर्वाद, नदीम और आयशा मौजूद थे।

वे चारों सिर झुकाये दो मिनट तक मौन रहते हुये खड़े रहे। फिर शान्तिपूर्वक अपनी-अपनी सीटों पर बैठ गये।

दरअसल दो मिनट का वो मौन उन्होंने ट्रिपल सी के जूनियर एजेन्ट गामा की आत्मा की शान्ति के लिये रखा था।

फिर अगले दो मिनट तक वहां शान्ति ही रही—कोई किसी से नहीं बोला।

तत्पश्चात्—

"लू चिन मारा गया ये कोई अच्छी खबर नहीं है।" जोकर की फटे बांस जैसी आवाज में गम्भीरता थी—"वह जीवित काबू में आता तो उससे मालूम किया जा सकता था कि वो यहां किस उद्देश्य से आया था। उससे भी बुरा ये हुआ कि अब शाकाल चौकन्ना हो जायेगा।"

"होने दीजिये उसे चौकन्ना...।" जोकर की बात पूरी होने से पहले ही बोल उठा आशीर्वाद—"हम भी तो उसके प्रति चौकन्ने हैं। हमें उसकी तलाश है, उसकी शक्ल मैं देख चुका। हालांकि उसका स्कैच मैंने दो दिन पहले ही तैयार कर लिया था, लेकिन वह इतना परफैक्ट नहीं था। अब मैं अपने हाथों से उसकी फोटो बनाकर उसे पुलिस में और अण्डरवर्ल्ड के लोगों में बंटवाऊंगा। उसका पता बताने वाले को तगड़े इनाम का लालच दिया जायेगा तो कोई-ना-कोई तो उसकी खबर बतायेगा। जोकर जी...आप निश्चिंत रहें—लू चिन यहां चाहे जिस मकसद आया था—उसका उद्देश्य पूरा नहीं हो सकेगा। शाकाल को मैं मौका नहीं दूंगा कि वो लू चिन के प्लान को कामयाब कर सके।"

"तुम पर हमें पूरा विश्वास है ब्लैक मास्टर...तुम्हारे रहते शाकाल क्या, कोई भी नहीं कर सकता है यहां गड़बड़ अथवा

गदर। फिर भी एक बार तुम्हें फिर से करते हैं सावधान...एक कर दो उसकी तलाश में जमीन...आसमान। जितनी जल्दी वो पकड़ा जायेगा...हमारे दिमाग से टेंशन दूर हो जायेगा।"

जोकर की अजीबो-गरीब तुकबन्दी पर नदीम और आयशा मुस्करा दिये।

जबकि मुण्डा गम्भीर बना रहा।

"जोकर जी...!" गम्भीरता भरे लहजे में वह बोला—"अगर आप अब इजाजत दें तो मैं चलता हूं। शाकाल का स्कैच बनाकर उसकी कापियां कराके मैं इंस्पेक्टर अंकल को दूंगा। आगे वो शाकाल के स्कैच को पुलिस में तथा पुलिस के मुखबिरों में बंटवायेंगे। इसके अलावा मैं चाहता हूं कि मुमताज आंटी और नदीम अंकल भी पुलिस से नोन क्रिमिनल्स की लिस्ट लेकर उनमें से कुछ गुण्डे-बदमाशों से क्रिमिनल बनकर मिलें और उनसे शाकाल के बारे में जानने की कोशिश करें।"

"क्या मुमताज...नदीम सुना तुम दोनों ने क्या कह रहा है लड़का?" दोरंगे शीशों वाले चश्में के भीतर से बारी-बारी मुमताज तथा नदीम की तरफ देखते हुये बोला जोकर—"अगर सुन समझ लिया है तो तुरन्त ही इसकी सलाह पर लगाओ देशी घी का तड़का।"

"जी...जोकर जी...।" कहने पर मुमताज उठी तो नदीम भी उठ खड़ा हुआ।

फिर तीनों ने मिलकर जोकर जी का अभिवादन किया और पलटकर दरवाजे की तरफ बढ़ चले।

❑❑❑
❑❑❑

मुमताज वाले ऑफिस में ही बैठकर आशीर्वाद ने शाकाल का स्कैच बनाया और वहीं कम्प्यूटर पर उसकी सौ कापियां निकालीं। फिर नदीम और मुमताज को कुछ आवश्यक निर्देश देकर वह वहां से निकला। पाली हिल के पुलिस स्टेशन में वह इंस्पेक्टर अनिल यादव से मिला। उसे शाकाल के फोटो देकर, समझाया कि वह उससे क्या चाहता है और फिर वहां से सीधा अपने कॉलेज पहुंचा।

क्लास में पहुंचा तो पता लगा कि वो पीरियड खाली था और उसके दोस्त कैन्टीन में हैं तो वह कैन्टीन पहुंचा।

"आओ भाई...।" जैसे ही एक मेज पर जमे बैठे टीटू,

कमल, विशाखा, काजल तथा अविनीति के पास पहुंचा कमल चहक उठा—"स्वागत है तुम्हारा। लेकिन ये कोई टाइम है कॉलेज आने का?"

"बस यार...फंस गया किसी काम में और लेट हो गया।" दूसरी टेबल से खाली कुर्सी घसीटकर काजल के बराबर में लगाकर उस पर बैठते हुये बोला आशीर्वाद—"अब आप लोग ये बताओ कि आज कौन कैंटीन का बिल पे करने वाला है तथा अभी ऑर्डर किया या नहीं?"

"आज मेरी जेब ढीली कराने पर लगे हुये हैं ये सब।" च्यूइंगम चबाते हुये दुखी से लहजे में बोला टीटू—"इन्हें तुम्हीं समझाओ यार कि ये मुझ गरीब पर रहम खायें...। प्लीज हैल्प मी...।"

"अब आशीर्वाद काहे को तुम्हारी हैल्प करेगा ओये मोटे।" टीटू का मखौल उड़ाते हुये बोली अवनीति—"बात-बात पर खुद को राजकुमार कहता है। अबे जब जेब में टका नहीं तो काहे को उछलता है?"

"ऐ अवनीति की बच्ची...।" उस पर आंखें निकालकर गुर्राया टीटू—"तू कहना क्या चाहती है? मैं झूठ बोलता हूं कि मैं चमनगढ़ का राजकुमार हूं? पूछ ले अपने भाई से, क्या मैं राजकुमार नहीं हूं? तुम बताओ आशीर्वाद...मैंने गलत कहा...?"

"नहीं राजकुमार अम्बुज जी...।" टीटू के आगे सिर को तनिक झुकाकर सम्मान भरे लहजे में बोला आशीर्वाद—"आपने सही फरमाया। आप चमनगढ़ के राजकुमार हैं। इस लड़की ने आपका मखौल उड़ाकर गुस्ताखी की है। आप कहें तो सजा के रूप में आज का कैन्टीन का बिल इसी से भरवाया जाये।"

"बिल्कुल...! इस नकचढ़ी लड़की को सजा मिलनी ही चाहिये।" गर्दन अकड़ाकर बोला टीटू।

"जा ओये जा भिखारी कहीं का।" अविनीत टीटू के आगे हाथ नचाते हुये बोली—"मुझे नकचढ़ी कहता है—भिखमंगी स्टेट का राजकुमार। घर में नहीं हैं दाने, अम्मा चली भुनाने। ठीक है दोस्तों...मेरे भाई की बात है तो आज का बिल मैं पे करूंगी। बुलाओ लड़के को...और जिसका जो मन चाहे ऑर्डर करे।"

लड़के को बुलाना नहीं पड़ा—वह खुद उनके पास पहुंचा।

"आशीर्वाद जी...।" वह मुण्डे के कान के पास मुंह लाते हुये फुसफुसाकर बोला—"ये चिट्ठी आपके लिये इन मेमसाहब

ने भिजवाई है।" कहने पर कैन्टीन के सर्विस ब्वाय ने वहां से तीन टेबल छोड़ चौथी टेबल पर अपनी दोस्तों के साथ बैठी प्राची शर्मा की तरफ उंगली से इशारा किया।

मुण्डे ने एक नजर प्राची पर तो डाली—लेकिन सर्विस ब्वाय से चिट्ठी लेने की कतई जरूरत ही नहीं समझी।

"ला...भाई...।" कमलकान्त उसके हाथ से चिट्ठी झपटते हुये बोला—"अपना यार तो शर्मीला है। लड़कियों की चिट्ठी इसे बम जैसी लगती हैं। तू यहां से ऑर्डर ले और जा। मैं इसे चिट्ठी पढ़कर सुनाता हूं।"

❑❑❑
❑❑❑

"ऐ कमल रहने दे।" कमल को घूरते हुये बोली काजल—"किसी की चिट्ठी यूं नहीं पढ़नी चाहिये। प्राची ने आशीर्वाद के लिये दी है। तू आशीर्वाद को दे दे।"

"अगर मैं पढूंगा इस चिट्ठी को...और तुम लोग सुन लोगे तो कोई आफत आ जायेगी?" कमलकान्त के चेहरे पर, आंखों में और लहजे में भी शरारत थी—"अरे भाई अपने फ्रेन्ड को किसी ने पहला लव लेटर भेजा है। हमें पढ़ना चाहिये कि प्राची ने क्या लिखा है! इससे हमें भी अपनी गर्ल्स फ्रेन्डियों को, तुम लोगों को अपने ब्वॉय फ्रेन्डों को लव लेटर लिखने का ज्ञान होगा। हां, अगर आशीर्वाद को ऐतराज हो तो...।" कहने पर वह आशीर्वाद की ओर देखने लगा।

"नहीं...नहीं!" कमल की शरारत पर बौखलाते हुये बोला आशीर्वाद—"म...मुझे भला क्यों ऐतराज होने लगा? म...मैंने थोड़े प्राची से लेटर लिखने को कहा था। मेरी उसकी अभी कल-परसों की जान-पहचान है आ...और...। तुम पढ़ो...पता नहीं उसने लेटर में क्या लिखा है?"

"फिर ठीक है...।" लेटर खोलकर ड्रामाई अन्दाज में अपना गला खंखारकर बोला कमलकान्त—"सुनो, जिगर थामकर सुनो, एक दिलवाली ने अपने हीरो के लिये क्या लिखा है...?"

कहने पर उसने तिरछी निगाहों से एक बार विशाखा की ओर देखा।

विशाखा के दिलोदिमाग पर चाहे उस पत्र को लेकर ठीक वैसी ही हलचल...कौतूहलता मची हुई थी जैसे कभी समुद्र मंथन

के दौरान जब समुद्र में विष निकला था तब समुद्र में ऐसी हलचल मची थी। लेकिन...।

उस घड़ी उसका चेहरा भावहीन था।

"लिखा है...।" विशाखा की तरफ से नजरें हटाकर कमल कान्त ने पढ़ना शुरू किया—"आशीर्वाद मैं तुमसे प्रेम करती हूं। आज शाम छः बजे मैं जुहू बीच पर तुम्हारा इंतजार करूंगी। जब तक नहीं आओगे...तब तक करूंगी। तुम्हारी...प्राची शर्मा...।"

"पागल हो गई है वो लड़की।" कमल के हाथ से पत्र छीनकर गुस्से में उसके पुर्जे-पुर्जे करते तथा दांत पीसते हुये बोला आशीर्वाद—"कल मिली...मिली क्या जबरदस्ती गले पड़ी और आज बेवकूफी भरे सपने देखने लगी। इसे कहते हैं तू कौन...मैं खामखाह...।"

"तुम क्यों अपसेट होते हो भाई...?" आशीर्वाद के हाथ पर हाथ रखते हुये तनिक दबे हुये से लहजे में बोली अविनति—"वो रईस दादा की बिगड़ी हुई पोती है। उसके दिमाग में यही होगा कि लोग आसानी से उसकी रईसी के आगे नत-मस्तक हो सकते हैं। दफा करो उस पागल को, मैं गर्मागर्म ब्रेड पकौड़े और कॉफी मंगवाती हूं...।"

"अपनी होने वाली भाभी के लिये भी मंगवा...अरे वो तो गई...।"

कमल की बात सुनकर पांचों दोस्तों की नजरें प्राची वाली मेज की तरफ उठी तो वह अपनी दोस्तों के साथ वहां से जा चुकी थी।

❑❑❑

❑❑❑

कॉलेज के बाद आशीर्वाद शंकर रोड पर स्थित रिलायंस की शॉप पहुंचा। वहां उसने बताया कि उसका मोबाइल खो गया है। बताया क्या लिखकर दिया, साथ में डिमांड की उसे पुराना नम्बर दिया जाये। उस शॉप का मालिक विनय गर्ग आशीर्वाद को पहचानता था और उसका फैन था। उसने आधे घण्टे में उसे उसके मोबाइल का पुराना नम्बर दिलवा दिया।

वापसी में मुण्डे ने नोकिया का एक बढ़िया सेट खरीदा और उसमें रिलायंस की जी० एस० एम० वाली चिप डाली तो दो मिनट बाद उसके मोबाइल की घंटी बजने लगी।

मुण्डे ने स्क्रीन पर नजर डाली तो पाया कि उसके लिये वह नम्बर नया था। बाइक की स्पीड कम करते हुये मोबाइल को ऑन करके अपने कंधे पर रखे उसे कान से दबाकर बोला—"कौन...?"

"अपुन बोल रहेला बिग ब्रदर...अली हसन।" फोन पर हसनू की उत्तेजना में भरी आवाज सुनाई दी—"क्या बात है बिग ब्रदर...अपुन कल से तेरे कू फोन लगा रहेला था। तू फोन ऑफ करके रखेला है...।"

"फोन ऑफ नहीं किया था हसनू...।" हसनू की बात पूरी होने से पहले ही बोल उठा आशीर्वाद—"मेरा फोन गुम गया था। दूसरा फोन खरीदा और उसमें अभी-अभी पुराने वाला नम्बर चालू करवाया है। खैर, तुम बोलो, कोई खास बात थी जो तुम कल से फोन मिला रहे थे?"

"हां बिग ब्रदर...। बात खासीच है...। अपुन इस समय चैम्बूर टैक्सी पर है। आकर मिलने का। अपुन तेरे कू जो बतायेगा...उससे हो सकता है कि तुम शाकाल तक पहुंच सको।"

"ऐसा है तो मैं अभी दस मिनट में तुम्हारे पास पहुंच रहा हूं।" कहने पर मुण्डे ने मोबाइल ऑफ करके जेब में रखा और बाइक की स्पीड बढ़ा दी।

ठीक दसवें मिनट पर वह चैम्बूर के टैक्सी स्टैन्ड के सामने अपनी बाइक को स्टैण्ड पर लगा रहा था।

"सलाम बिग ब्रदर...।" उसके पास पहुंचते हुये हसनू अपने दायें हाथ की दो उंगलियां पेशानी पर लगाते हुये बोला—"अपुन कल से हीच तुम्हेरे से मिलने को व्याकुल हो रहेला था।"

"हां...बोलो हसनू...।" उसके कंधे पर हाथ रखते हुये बोला आशीर्वाद—"क्या बताना चाहते हो तुम?"

"बिग ब्रदर...। अपुन कल उस बीडू को देखा जो उस दिन शाकाल और इंस्पेक्टर के साथ इंस्पेक्टर के घर में था जब अपुन की अम्मी और अपुन इंस्पेक्टर के घर पहुंचेले थे, और उसी दिन उन लोगों ने अपुन की अम्मी...।"

"हां...हां हसनू...।" हसनू की बात पूरी होने से पहले ही व्याकुल-सा होकर बोला आशीर्वाद—"मैं समझ गया कि तुम क्या कहना चाहते हो। अब तुम ये बताओ कि तुमने शाकाल के साथी को कहां देखा और उस तक पहुंचने में मेरी क्या मदद कर सकते हो?"

"बिग ब्रदर...। अपुन को कल वो हिल्टन रोड की रेड लाइट पर दिखेला था।" उत्साह में भरा हसनू बिना कौमा विराम के तथा

फुल स्पीड पकड़ते हुये बोला—"वो एक सफेद तथा नई कार में था। कार की नम्बर प्लेट पर अभी नम्बर भी नहीं लिखेला था। सिर्फ ए०/ एफ० लिखेला था...।"

"फिर क्या फायदा हुआ?" जेब में हाथ डालते हुये मुण्डा निराशा भरे लहजे में बोला—"सिग्नल होने पर वो कार निकल गई होगी और...।"

"ऐसेइच कैसे निकल जाती वो कार?" लड़के की बात पूरी होने से पहले ही बोला अली हसन—"अपुन को शाकाल की तलाश सात सालों से है—और वो बीड़ू उसका राइट हैण्ड, साले कू ऐसे कैसे निकल जाने देता...।"

हसनू की बात सुनकर मुंह में चने डालने जा रहे केशवपुत्र का हाथ रुका और वो कौतूहलता भरी निगाहों से उसकी तरफ देखने लगा।

"ट्रैफिक शुरू होने से पहले...।" हसनू अपनी री में बोले जा रहा था—"अपुन एक टैक्सी पकड़ लियेला था। ये इत्तफाक था कि रेड लाइट पर वो टैक्सी खाली खड़ेली थी और उसका ड्राइवर अपुन का जानने वाला था। इस टैक्सी पर अपुन उस कार का पीछा कियेला था। कार वाला बीड़ू मालाबार हिल में जिस बंगले में गयेला था तेरे कू अपुन उस बंगले तक पहुंचा सकता है। तू उस बंगले के मालिक से...।"

"यानि वो बंगला शाकाल के जोड़ीदार का ना होकर किसी और का है?" चने चबाते तथा हसनू की तरफ देखते हुये बोला आशीर्वाद —"ये मालूम होने पर तुमने फिर से...मेरा मतलब जब शाकाल का जोड़ीदार बंगले से बाहर निकला था तो तुमने उसका पीछा नहीं किया?"

"कियेला था बिग ब्रदर...।" ठण्डी आह-सी भरकर अफसोस भरे लहजे में बोला अली हसन—"अपुन साला फिर से दूसरी टैक्सी का जुगाड़ करके उसके पीछे लगेला था। पन साला उसके ड्राइवर को सन्देह हो गयेला था कि टैक्सी से उनका पीछा किया जा रहेला है। आगे उसने अपुन को घेरकर ठोकेला भी था। बस बिग ब्रदर वो तो उस वक्त अपना अल्लाह अपुन के साथ था वरना वो अपुन को खल्लास कर देता...।" कहने पर हसनू ने उसे आपबीती कह सुनाई।

"ठीक है हसनू...।" उसकी पूरी बात सुनकर मुण्डा बाइक

खराब कर चुका था कि वह चित्त पड़ा बुरी तरह तड़फड़ा रहा था।

फाइट का नियम था, मारो या मरो। उस नियम का पालन करने पर ही उसकी तथा गामा पहलवान की आजादी के लिये उससे कहा गया था।

अतः ना चाहते हुये भी आप सबके चहेते को जिंगारा को मारना पड़ा।

तड़फते...फड़फड़ाते जिंगारा की छाती पर मुण्डा घुटनों के बल कूदा तो 'कड़-कड़ाक' की ऐसी ही आवाज हुई मानो पेड़ की सूखी हुई जमीन पर पड़ी टहनियों के ढेर पर पत्थर की सिला आ पड़ी हो। और इसी के साथ जिंगारा के मुंह से खून की पिचकारी-सी छूटी।

फिर दो मिनट और तड़फने तथा छटपटाने पर उसकी गर्दन एक ओर ढुलक गई।

टोनी डिसूजा माइक पर चीख-चीखकर लड़के के विनर होने की घोषणा करने लगा।

❑❑❑
❑❑❑

एक घण्टे बाद!

जबकि सारा स्टेडियम खाली हो चुका।

शाकाल, लू चिन, जोरावर सिंह तथा टोनी डिसूजा मैदान में पड़े ग्लोब के निकट पहुंचे।

ग्लोब को चारों ओर से नीली वर्दी पहले ए० के० छप्पन से लैस, शक्ल से ही बेरहम लगने वाले गार्डों ने घेर रखा था।

"क्यों ओये टकले?" उन चारों के निकट पहुंचने पर चने चबाते हुये रेगमाल से भी ज्यादा खुरदुरे लहजे में बोला आशीर्वाद—"मौत की फाइट जीत ली है मैंने, अब तू शर्त के मुताबिक मुझे इस ग्लोब से बाहर निकाल और मेरे गामा अंकल को बुला, हम दोनों यहां से जाना चाहेंगे।"

"दोनों क्यों ओये पण्डित की औलाद।" ग्लोब में खड़े आशीर्वाद की तरफ मखौल उड़ाने वाली सी मुस्कराहट उछालते हुये व्यंग भरे लहजे में बोला शाकाल—"तेरे उस सींकड़ी अंकल को तो हम पहले ही जहन्नुम के लिये रवाना कर...।"

"हरामजादे ऽऽऽ कुत्ते ऽऽऽ सूअर की औलाद!" उसकी पूरी बात सुने बिना ही हलक फाड़कर चीखा केशवपुत्र—"दोगले

इन्सान। अब तू मेरे हाथों से बचेगा नहीं। कुत्ते की मौत मारूंगा मैं तुझे और तेरे साथियों को...।" कहने पर वह ग्लोब की जाली में हाथ फंसाकर उसे तोड़ने के लिये जोर लगाने लगा।

"हा...हा...हा...!" शाकाल हंसा तो लू चिन, जोरावर सिंह और टोनी डिसूजा भी उसके साथ जोर-जोर से हंसने लगे।

ग्लोब की स्टील वाली जालीदार चादर आधा इंच मोटी और बेहद मजबूत थी। कुछ देर तक आशीर्वाद उसे हाथ से फाड़ने की कोशिश करता रहा। फिर नाकामयाब होने पर झल्लाकर उस पर पैर पटकते हुये उसे तोड़ने की कोशिश करने लगा।

"शाबाश बहादुर...और जोर लगा...।" उसकी झल्लाहट का भरपूर आनन्द उठाते हुये बोला शाकाल—"बचपन में मां का जितना भी दूध पीया है आज सब निकाल दे...आजाद हो गया तो फिर इस बार वाकई में तुझे यहां से जाने से कोई नहीं रोकेगा। ये मेरी...शाकाल की जुबान है।"

"जा ओये दोगले कुत्ते...।" किसी जख्मी भेड़िये की मानिन्द ही गुर्राकर बोला नीलम-सी नीली आंखों वाला—"तू और तेरी जुबान दोनों ही काटकर गटर में फेंकने लायक हैं। जब तक मैं ग्लोब में हूं—तू मेरा मखौल उड़ा ले। लेकिन बाहर आने पर डर के मारे तेरी जुबान लकड़ी की हो जायेगी। एक शब्द भी नहीं बोल पायेगा तू। हंसने के लिए मुंह खोलेगा तो आंखों की जगह मुंह से आंसू गिरेंगे। हरामजादे तूने गामा अंकल को मारकर अपने जीवन की सबसे बड़ी भूल की है। मुझे वैसे भी दो पैरों वाला बम कहा जाता है। आज ये बम फटेगा तो इस दुनिया से तेरा और तेरे साथियों का नाम हमेशा-हमेशा के लिये मिट जायेगा...।"

"तू कुछ नहीं कर सकेगा ओये पण्डित की औलाद।" इस बार लू चिन की वाणी मुखर हुई। वह मानो अपने हरेक शब्द पर जोर देते हुये बोला—"ये ग्लोब नहीं तेरी मौत का पिंजरा है। इसमें ही दम तोड़ेगा तू। इससे तू नहीं तेरी लाश ही बाहर आयेगी। अब हम इस ग्लोब में चार सौ चालीस वोल्ट का करेंट छोड़ने जा रहे हैं। उसके बाद शुरू होगा तेरी मौत का तमाशा। ये ग्लोब के बाहर छः गर्नर खड़े हैं। ये तुझ पर गोलियां बरसायेंगे और गोलियों से बचने के लिये तू उछल-कूद मचायेगा। उछल-कूद मचाते हुये जैसे ही तेरा जिस्म ग्लोब के किसी हिस्से से टकरायेगा, तेरा काम तमाम हो जायेगा। पैरों में तुमने रबर सोल वाले जूते ना पहने होते तो मिनट भी नहीं लगना था—करण्ट छोड़ते ही तू अपने स्थान

पर चिपककर मर जाता। खैर कोई बात नहीं, तेरी मौत में थोड़ा तमाशा होने से हमें मजा आ जायेगा। ओये, चालू करो करण्ट...।"

लू चिन के कहने पर ग्लोब से काफी परे एक दीवार पर लगे बटन को ऑन कर दिया गया। उसके बाद लूचिन ने गार्डों को फायर का आदेश दिया।

अगले ही पल—

"तड़...तड़...तड़...टा...टा...टा...।"

और आप सबके चहेते के पास अपना बचाव करने के सिवाय उस समय कोई रास्ता न होने की वजह से उसे वही रास्ता अपनाना पड़ा।

गार्डों द्वारा गोलियां चलाये जाने पर पहले तो उसका जिस्म दबाकर छोड़े गये स्प्रिंग की मानिन्द ऊपर उठा और फिर हवा में ऐसे कलाबाजियां खाने लगा मानो पानी के अन्दर डॉल्फिन खेल कर रही हो।

पल में ग्लोब के इस कोने पर तो दूसरे पल दूसरे कोने में कलाबाजियां खाते हुये नजर आ रहा था वह।

हां, बीच में पलभर के लिये वह ग्लोब के फर्श पर भी रेस्ट के लिये उतर आता था।

यूं तो मुण्डा उन छः गनधारियों को आश्चर्य में डाले उनकी गनों से निकलने वाली गोलियों को धोखा दे ही रहा था। लेकिन सच ये भी था कि वह अन्दर-ही-अन्दर हिला हुआ था। वह जानता था कि वो करतब वह ज्यादा देर तक नहीं दिखा सकता था।

और इसके अलावा बचाव की कोई सूरत भी नजर नहीं आ रही थी। सच ये भी था कि हालात ऐसे थे कि दिमाग के चैम्पियन का दिमाग ठप्प होकर रह गया था।

जबकि शाकाल और उसके साथी उसकी बेबसी पर ठहाके-पर-ठहाके लगाये जा रहे थे।

गार्ड अपने मालिक का हुक्म बजा रहे थे। उनकी गनों से मौत का संगीत फूट रहा था।

तभी—

एक अन्य दिशा से गोलियां चलीं।

"धांय...धांय...धांय...।"

और छः में से तीन गार्ड पीठ पर गोलियां खाकर औंधे मुंह जमीन पर गिर पड़े।

शाकाल और उसके साथी समेत गार्ड भी बुरी तरह चिहुंके। उस तरफ घूमे जिधर से गोलियां चलाई गई थीं।

फिर गोलियां चलाने वाले शख्स पर नजर पड़ते ही शाकाल और लू चिन की नजरें मारे आश्चर्य के आखिरी कोने तक फटती चली गईं।

❑❑❑
❑❑❑

पहचान उसे जोरावर सिंह ने भी लिया था। वह आंखों में आश्चर्य के भाव समेटे हुये होंठों ही होंठों में बुदबुदाया—"य...ये तो इन्टरनेशनल क्रिमिनल अलफांसे है। ल...लेकिन यह यहां क्यों आया?"

"गार्डस...।" आश्चर्य के समन्दर से बाहर निकल शाकाल चिल्लाकर बोला—"खड़े-खड़े इस हरामी का मुंह क्या देख रहे हो? खत्म कर दो इसे। शूट हिम...।"

तीनों गार्डस् मानो सोते से जगे हों।

लेकिन इससे पहले कि वह अपनी गनों का रुख अलफांसे की तरफ करते, उसके रिवॉल्वर से तीन गोलियां एक के बाद एक करके चलीं और तीनों ही गार्डों के सीनों में जा धंसीं।

तीनों के हाथों से उनकी गनें छूटी और तीनों ही ढेर सारी शराब पीये शराबियों की मानिन्द लड़खड़ाते हुये इधर-उधर फैल गये।

"ओये मेरे खट्टे बादाम...।" खाली हो चुकी रिवॉल्वर को एक ओर उछालते हुये अलफांसे ग्लोब में अभी भी कलाबाजियां खाते आशीर्वाद की ओर देखकर चिल्लाकर बोला—"अब ये उछल-कूद बन्द कर दे। तेरा अंकल आ गया है। अब इन हरामियों के बन्दरों की तरह नाचने तथा उछलने की वारी है।"

"पांय लागूं अंकल जी...।" ग्लोब में मुण्डा पूर्ववत् कलाबाजियां खाते हुये चिल्लाकर बोला—"अब मैं अपनी जान बचाने के लिये उछल-कूद नहीं कर रहा हूं बल्कि मैं तो आपके आने की खुशी में भांगड़ा, डिस्को, रॉक-एन-रोल कर रहा हूं। आपको तो मैंने तभी देख लिया था जब आपने पहले वाले तीन गार्ड्स को ढेर किया था। अंकल जी...एक विनती है आपसे... आप यहां सबको मारना पर टकले को नहीं टपकाना। इसके लिये मैंने अपने एक दोस्त को वचन दिया है कि शाकाल को वही मारेगा। मैं इसे जीवित ही उसके हवाले करूंगा।"

"चल प्यारे केशवनन्दन। तू भी क्या याद करेगा कि किसी शाही आदमी से तूने रिक्वेस्ट की है। मान ली तेरी रिक्वेस्ट...। नहीं मारूंगा इस चापड़गंजू को। लेकिन बाकी तीन का कीमा बनाकर रख दूंगा।"

कहने पर वह शाकाल तथा उसके तीनों साथियों की तरफ पलटा।

तभी लू चिन अपने स्थान से उछला और उसका सिर अलफांसे के पेट से तोप से निकले गोले की मानिन्द टकराया और उसके पैर उखड़ गये।

दोनों ही गिरे—और फिर लगभग एक साथ उठ खड़े हुये।

"बहुत पुराना हिसाब चुकता करना है तुझसे ओये अलफांसे।" भस्म कर देने वाली-सी निगाहों से अलफांसे को घूरते हुये गुर्राकर बोला लू चिन—"आज मैं अपना वो हिसाब चुकता करके ही मानूंगा।"

"अबे जा ओये खटमल...।" झगड़ालू औरतों की तरह हाथ नचाते हुये किंग कोबरे की मानिन्द ही फुंफकार भरे लहजे में बोला अलफांसे—"तू क्या मुझसे अपना हिसाब चुकता करेगा। अलफांसे उस हस्ती का नाम है कि तेरे जैसे हजारों-लाखों खटमल अपने मन में उससे बदला लेने की ख्वाहिश लेकर उसके सामने आते हैं और उसके कदमों के तले कुचलकर हम तोड़ बैठते हैं। चीन में तेरे से हुई मुलाकात याद है मुझे। तब तू एक हिन्दुस्तानी परिवार पर अत्याचार कर रहा था। तेरे साथ दो लोग और थे। वो परिवार मेरे जानने वाला परिवार था और संयोगवश उस दिन जब तू भगवन्त राय के घर में उसकी बेटियों के साथ अत्याचार करने अपने दो साथियों के साथ पहुंचा था उस दिन भगवन्त राय के घर में डिनर पर आमंत्रित था। मैंने वहां पहुंचकर तुम तीनों चीनी बन्दरों की वो ठुकाई की थी कि तुम तीनों ही कुत्तों की तरह कूं-कूं करके भगवन्त राय की बेटियों से माफी मांगने पर मजबूर हो गये थे। उल्लू के पट्ठे...जब उस दिन अपने देश में तू मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सका, कुत्तों की तरह कूं-कूं करके भागा तो आज मेरा क्या कर लेगा?"

"उस दिन मैं नशे में टल्ली था अलफांसे...इसलिये मार खा गया।" क्रोधातिरेक थर-थर कांपते हुये मानो अपना हरेक शब्द चबा-चबाकर, चिंगल-चिंगलकर ही बोला लू चिन—"आज मार नहीं खाऊंगा बल्कि मारूंगा।"

कहने पर एक बार फिर से उछला लू चिन। इस बार उसका इरादा अलफांसे के सीने पर फ्लाइंग किक जड़ने का था।

लेकिन ये लू चिन की मूर्खता ही थी। अलफांसे के विषय में सारी जानकारी रखने पर भी वह ऐसी गलती कर बैठा। और ये गलती उसके लिये उसके जीवन की आखिरी गलती साबित हुई।

उसका जिस्म हवा में ही था कि तनिक एक ओर हटते हुये अलफांसे ने उसके दोनों पैर ककड़ी की तरह दबोचे और उसे दो राउण्ड घुमाकर ग्लोब की ओर उछाल दिया।

फिर जैसे ही उसका जिस्म ग्लोब से टकराया वहीं चिपककर रह गया।

'ई ऽऽऽऽ ई ऽऽऽ।'

पलभर तक वह ग्लोब से चिपका चिल्लाता रहा। फिर निर्जीव होकर जमीन पर गिरा तो कोयले की तरह काला पड़ चुका था।

अलफांसे को नहीं पता था कि ग्लोब में करेण्ट दौड़ रहा है इसलिये वह वहां जा चिपके लू चिन की ओर हैरान हो देख ही रहा था कि उसे असावधान समझकर टोनी ने उस पर छलांग लगा दी।

अचानक हुए आक्रमण से अलफांसे थोड़ा लड़खड़ाया, लेकिन तुरन्त ही संभल भी गया।

पलटकर उसने पहले तो टोनी की नाक पर घूंसा जड़ा। फिर जैसे ही वह गिरने को हुआ उसके पेट पर लात भी जमा दी।

परिणामस्वरूप वह लड़खड़ाकर पीछे जा गिरा।

तभी ग्लोब में खड़ा लड़का चिल्लाया—

"अंकल जी...वो टकला और उसका साथी मैदान छोड़कर भाग रहे हैं। उन्हें पकड़िये। खासकर टकला बचकर जाने ना पाये।"

टोनी को छोड़कर अलफांसे शाकाल और जोरावर सिंह के पीछे दौड़ा।

लेकिन व्यर्थ!

पांच मिनट बाद वह हताशा में भरा वापस लौटा तो केशवपुत्र बड़बड़ा उठा—"भाग निकला साला टकला। चलो, आज बच निकला तो कल फिर से हत्थे चढ़ेगा। तब साले को छठी का दूध ना याद दिलाया तो मेरा नाम भी आशीर्वाद पण्डित नहीं।"

□□□
□□□

"ये इधर एक को गिराया था वो भी भाग गया।" टोनी डिसूजा की तलाश में नजरें घुमाते हुये बोला अलफांसे।

"जी...अंकल जी...।" चने के दो दाने मुंह में सरकाने पर बोला आशीर्वाद—"अब आप सबसे पहले मुझे इस पिंजरे से बाहर निकालने के लिये कुछ कीजिये।"

"करता हूं मेरे लाल...करता हूं।" जेब से ट्रिपल फाइव मार्का सिगरेट की डिब्बी तथा काले रंग का लाइटर निकालते हुये बोला अलफांसे—"कुछ क्या, तुम्हें इस पिंजरे से बाहर निकालने के लिये सबकुछ करूंगा। पहले एक कश मारकर थोड़ा मूड फ्रेश कर लूं।"

फिर सिगरेट सुलगाकर उसका एक कश लगाने पर बोला वह—"इस ग्लोब में करण्ट है। कोई दरवाजा भी नहीं दिख रहा है दशरथ नन्दन...। अब मैं करूं तो करूं क्या?"

"पिंजरे का दरवाजा है तो सही लेकिन रिमोट से खुलता है। शाकाल और उसके साथी पहले उस शीशे वाले केबिन में थे। वहीं से उन्होंने रिमोट दबाकर दरवाजा खोला था तो जिंगारा अन्दर आया था। आप उस केबिन में जाकर देखिये, रिमोट वहीं होगा।"

केबिन में जाने पर अलफांसे को टेबल पर रखा रिमोट मिल गया। उसके एक के बाद एक करके बटन दबाते चले जाने पर ग्लोब का दरवाजा एरोप्लेन के दरवाजे की तरह ही बाहर को ऊपर उठकर खुल गया तो मुण्डा छलांग लगाकर बाहर आ गया।

बाहर आने पर सबसे पहले तो उसने अलफांसे के पैर छुये। तत्पश्चात् कुटुर-कुटुर करते हुये बोला—"अब बताइये अंकल जी...कि आप यहां कैसे पहुंचे? आपको कैसे पता लगा कि मैं यहां फंसा हुआ हूं?"

"तुम यहां हो अथवा फंसे हुये हो ये मुझे नहीं मालूम था मेरे प्यारे कड़वे रसगुल्ले।" सिगरेट का कश मारकर नथुनों के रास्ते उसका धुआं बाहर करते हुये बोला अलफांसे—"मैं तो शाकाल का पता लगाने के लिये टोनी डिसूजा की ऐसी-तैसी फेरने आया था यहां। दरअसल कल जब दिल्ली में मुझे तुम्हारा फोन मिला उसके बाद मैंने मुम्बई में अपने चेले-चपाटों को शाकाल की खोज-खबर निकालने को कहा। दिल्ली से आज दोपहर के

बाद में यहां पहुंचा—वैसे आना तो सुबह ही था। लेकिन सुबह वाली फ्लाइट मिस हो गई। बारह बजे वाली फ्लाइट पकड़नी पड़ी। मुम्बई आने पर मैं अभी घर पहुंचा ही था कि मेरे चेले सलमान भट्ट का फोन आ गया। उसने बताया कि उसका बड़ा भाई रहमान भट्ट टोनी डिसूजा के फाइट क्लब में काम करता है और उसका कहना है कि वो क्लब टोनी डिसूजा का ना होकर शाकाल का है। टोनी मात्र उसका मोहरा है। फिर चाय-नाश्ता करते हुये मैंने वो जानकारी तुम्हें देने के लिये कई बार फोन पर तुम्हारा नम्बर लगाया। लेकिन हर बार स्विच ऑफ बताया गया। फिर मैंने घर भी फोन लगाया। सोफिया भाभी ने बताया कि तुम कॉलेज गये हुये हो। मैंने सोचा कॉलेज में फोन बन्द कर रखा होगा तुमने। तब मैं नाश्ता करके टोनी के पास उसके फाइट क्लब इसलिये पहुंचा कि यहां उससे शाकाल के बारे में पता करूंगा। यहां आया तो गेट पर ही पता चल गया कि अन्दर अपने बच्चे के साथ मौत का खेल चल रहा है। गेट पर खड़े दो गार्ड आपस में तुम्हारे बारे में ही बातें कर रहे थे।'' कहने पर उसने फिर से एक लम्बा कश मारा।

"तो इस तरह आप यहां पहुंचे अंकल जी...।" चने चबाते हुये बोला मुण्डा—"ये शाकाल का खास अड्डा है। यहां वो मौत की फाइट कराकर हर फाइट में करोड़ों की कमाई करता है। अब उसका ये खेल खत्म समझो। मैं इंस्पेक्टर अंकल को फोन करके यहां बुलाता हूं। यहां टोनी का कोई आदमी आपने जीवित छोड़ा होगा तो वो पुलिस को बतायेगा कि यहां क्या होता था...।"

"उसके बहुत से आदमी बेहोश किये हैं मैंने।" नथुनों से धुआं बाहर करते हुये बोला अलफांसे—"मारा उन्हीं को है जो मुझे गन का निशाना बनाने जा रहे थे। तुम अनिल भाई को फोन लगाओ। मैं निकलता हूं यहां से...।"

"इतनी जल्दी क्या है...यहां से जाने की अंकल जी...? मेरे पास फोन कहां है? आपके मोबाइल से ही इंस्पेक्टर अंकल को फोन करूंगा।"

फिर केशवपुत्र ने इंस्पेक्टर अनिल यादव को फोन करके फोर्स सहित वहां पहुंचने को कहा और साथ ही इण्डिया न्यूज चैनल पर काम करने वाली अपनी बुआ, जो कि वास्तव में केशव पण्डित की मुंहबोली बहन है, माधवी चोपड़ा को भी फोन करके टीम सहित वहां बुलवा लिया।

□□□
□□□

अपने गुप्त कमरे में रखी सेफ में रखे ट्रांसमीटर पर चीन की सीक्रेट सर्विस के कमांडर से सम्पर्क करने पर जैसे ही शाकाल ने उसे लू चिन की मौत के विषय में बताया कमांडर भड़क उठा। उसका गुर्राता हुआ-सा स्वर शाकाल के कानों पर चढ़े हैडसेट के माध्यम से उसके कानों से टकराया—"अव्वल दर्जे के बेवकूफ और गधे हो तुम शाकाल—तुमसे मना किया था कि जब तक हमारा ये मिशन कामयाब नहीं हो जाता है तुमने पण्डित की औलाद से कैसे भी करके पंगा नहीं लेना है...।"

"ग...गलती हो गई कमांडर।" कमांडर की फटकार पर सहमे हुये से लहजे में बोला शाकाल—"आइन्दा नहीं होगी।"

"तुम्हारे माफी मांगने से क्या होगा बेवकूफ? यहां हमारे प्लान का भट्टा बैठ गया।" दूसरी तरफ मानो कोई भेड़िया ही इंसानी भाषा में बोल रहा हो—"कितना बढ़िया प्लान लेकर तुम्हारे पाया आया था लू चिन और...।"

"कमांडर...!" कमांडर की बात पूरी होने से पहले ही बोल पड़ा शाकाल—"आपने लू चिन के हाथ जो प्लान भेजा था उसकी तैयारी पूरी हो चुकी है। कल आपके सारे दुश्मन मारे जायेंगे...।"

"बेवकूफ ही नहीं...परले दर्जे के मूर्ख भी हो तुम शाकाल।" कोड़े की फटकार जैसा स्वर टकराया शाकाल के कानों से तो उसने अपने होंठ भींच लिये—"आशीर्वाद पण्डित बहुत ही खतरनाक है। अगर उसने लू चिन से प्लान के बारे में जान लिया है तो वो उस प्लॉन को कभी सक्सैस नहीं होने देगा।"

"ल...लेकिन कमांडर उसे अभी आपके...हमारे प्लान की भनक भी नहीं लगी है। दरअसल लू चिन आशीर्वाद पण्डित के हाथों नहीं अलफांसे के हाथों मारा गया है।" इसी के साथ शाकाल ने सारा किस्सा विस्तारपूर्वक कह सुनाया।

"ओह! इसका मतलब हमारा प्लान लीक नहीं हुआ।" शाकाल से पूरी बात सुनने पर कमांडर के लहजे में नर्मी आयी—"शाकाल अब तुम्हें बहुत सावधान रहते हुये हमारा मिशन पूरा करना है। जब तक मिशन पूरा ना हो जाये तब तक छिपे ही रहना होगा तुम्हें।"

"आप मेरी तरफ से बेफिक्र रहें कमांडर।" दृढ़ता भरे लहजे में बोला शाकाल—"वो लड़का कभी भी मुझ तक नहीं पहुंच सकत

है और आपसे मेरा ये वादा है कि तिब्बत के धर्मगुरु और उनके चेलों का काम कल ही तमाम कर दिया जायेगा।"

"ऐसा होने पर मुल्क के राष्ट्रपति तुम्हारा सम्मान करेंगे। ओवर एण्ड ऑल।" कहने पर दूसरी तरफ से सम्बंध विच्छेद कर दिया गया।

❑❑❑
❑❑❑

ट्रिपल सी के नवी मुम्बई स्थित हैडक्वार्टर में चीफ के ऑफिस में जोकर के रूप में धन्नो और उसके सामने आशीर्वाद, नदीम और आयशा मौजूद थे।

वे चारों सिर झुकाये दो मिनट तक मौन रहते हुये खड़े रहे। फिर शान्तिपूर्वक अपनी-अपनी सीटों पर बैठ गये।

दरअसल दो मिनट का वो मौन उन्होंने ट्रिपल सी के जूनियर एजेन्ट गामा की आत्मा की शान्ति के लिये रखा था।

फिर अगले दो मिनट तक वहां शान्ति ही रही—कोई किसी से नहीं बोला।

तत्पश्चात्—

"लू चिन मारा गया ये कोई अच्छी खबर नहीं है।" जोकर की फटे बांस जैसी आवाज में गम्भीरता थी—"वह जीवित काबू में आता तो उससे मालूम किया जा सकता था कि वो यहां किस उद्देश्य से आया था। उससे भी बुरा ये हुआ कि अब शाकाल चौकन्ना हो जायेगा।"

"होने दीजिये उसे चौकन्ना...।" जोकर की बात पूरी होने से पहले ही बोल उठा आशीर्वाद—"हम भी तो उसके प्रति चौकन्ने हैं। हमें उसकी तलाश है, उसकी शक्ल मैं देख चुका। हालांकि उसका स्कैच मैंने दो दिन पहले ही तैयार कर लिया था, लेकिन वह इतना परफैक्ट नहीं था। अब मैं अपने हाथों से उसकी फोटो बनाकर उसे पुलिस में और अण्डरवर्ल्ड के लोगों में बंटवाऊंगा। उसका पता बताने वाले को तगड़े इनाम का लालच दिया जायेगा तो कोई-ना-कोई तो उसकी खबर बतायेगा। जोकर जी...आप निश्चिंत रहें—लू चिन यहां चाहे जिस मकसद आया था—उसका उद्देश्य पूरा नहीं हो सकेगा। शाकाल को मैं मौका नहीं दूंगा कि वो लू चिन के प्लान को कामयाब कर सके।"

"तुम पर हमें पूरा विश्वास है ब्लैक मास्टर...तुम्हारे रहते शाकाल क्या, कोई भी नहीं कर सकता है यहां गड़बड़ अथवा

गदर। फिर भी एक बार तुम्हें फिर से करते हैं सावधान...एक कर दो उसकी तलाश में जमीन...आसमान। जितनी जल्दी वो पकड़ा जायेगा...हमारे दिमाग से टेंशन दूर हो जायेगा।"

जोकर की अजीबो-गरीब तुकबन्दी पर नदीम और आयशा मुस्करा दिये।

जबकि मुण्डा गम्भीर बना रहा।

"जोकर जी...!" गम्भीरता भरे लहजे में वह बोला—"अगर आप अब इजाजत दें तो मैं चलता हूं। शाकाल का स्कैच बनाकर उसकी कापियां कराके मैं इंस्पेक्टर अंकल को दूंगा। आगे वो शाकाल के स्कैच को पुलिस में तथा पुलिस के मुखबिरों में बंटवायेंगे। इसके अलावा मैं चाहता हूं कि मुमताज आंटी और नदीम अंकल भी पुलिस से नोन क्रिमिनल्स की लिस्ट लेकर उनमें से कुछ गुण्डे-बदमाशों से क्रिमिनल बनकर मिलें और उनसे शाकाल के बारे में जानने की कोशिश करें।"

"क्या मुमताज...नदीम सुना तुम दोनों ने क्या कह रहा है लड़का?" दोरंगे शीशों वाले चश्मे के भीतर से बारी-बारी मुमताज तथा नदीम की तरफ देखते हुये बोला जोकर—"अगर सुन समझ लिया है तो तुरन्त ही इसकी सलाह पर लगाओ देशी घी का तड़का।"

"जी...जोकर जी...।" कहने पर मुमताज उठी तो नदीम भी उठ खड़ा हुआ।

फिर तीनों ने मिलकर जोकर जी का अभिवादन किया और पलटकर दरवाजे की तरफ बढ़ चले।

❑❑❑
❑❑❑

मुमताज वाले ऑफिस में ही बैठकर आशीर्वाद ने शाकाल का स्कैच बनाया और वहीं कम्प्यूटर पर उसकी सौ कापियां निकालीं। फिर नदीम और मुमताज को कुछ आवश्यक निर्देश देकर वह वहां से निकला। पाली हिल के पुलिस स्टेशन में वह इंस्पेक्टर अनिल यादव से मिला। उसे शाकाल के फोटो देकर, समझाया कि वह उससे क्या चाहता है और फिर वहां से सीधा अपने कॉलेज पहुंचा।

क्लास में पहुंचा तो पता लगा कि वो पीरियड खाली था और उसके दोस्त कैन्टीन में हैं तो वह कैन्टीन पहुंचा।

"आओ भाई...।" जैसे ही एक मेज पर जमे बैठे टीटू,

कमल, विशाखा, काजल तथा अविनीति के पास पहुंचा कमल चहक उठा—"स्वागत है तुम्हारा। लेकिन ये कोई टाइम है कॉलेज आने का?"

"बस यार...फंस गया किसी काम में और लेट हो गया।" दूसरी टेबल से खाली कुर्सी घसीटकर काजल के बराबर में लगाकर उस पर बैठते हुये बोला आशीर्वाद—"अब आप लोग ये बताओ कि आज कौन कैंटीन का बिल पे करने वाला है तथा अभी ऑर्डर किया या नहीं?"

"आज मेरी जेब ढीली कराने पर लगे हुये हैं ये सब।" च्यूइंगम चबाते हुये दुखी से लहजे में बोला टीटू—"इन्हें तुम्हीं समझाओ यार कि ये मुझ गरीब पर रहम खायें...। प्लीज हैल्प मी...।"

"अब आशीर्वाद काहे को तुम्हारी हैल्प करेगा ओये मोटे।" टीटू का मखौल उड़ाते हुये बोली अवनीति—"बात-बात पर खुद को राजकुमार कहता है। अबे जब जेब में टका नहीं तो काहे को उछलता है?"

"ऐ अवनीति की बच्ची...।" उस पर आंखें निकालकर गुर्राया टीटू—"तू कहना क्या चाहती है? मैं झूठ बोलता हूं कि मैं चमनगढ़ का राजकुमार हूं? पूछ ले अपने भाई से, क्या मैं राजकुमार नहीं हूं? तुम बताओ आशीर्वाद...मैंने गलत कहा...?"

"नहीं राजकुमार अम्बुज जी...।" टीटू के आगे सिर को तनिक झुकाकर सम्मान भरे लहजे में बोला आशीर्वाद—"आपने सही फरमाया। आप चमनगढ़ के राजकुमार हैं। इस लड़की ने आपका मखौल उड़ाकर गुस्ताखी की है। आप कहें तो सजा के रूप में आज का कैन्टीन का बिल इसी से भरवाया जाये।"

"बिल्कुल...! इस नकचढ़ी लड़की को सजा मिलनी ही चाहिये।" गर्दन अकड़ाकर बोला टीटू।

"जा ओये जा भिखारी कहीं का।" अविनीत टीटू के आगे हाथ नचाते हुये बोली—"मुझे नकचढ़ी कहता है—भिखमंगी स्टेट का राजकुमार। घर में नहीं हैं दाने, अम्मा चली भुनाने। ठीक है दोस्तों...मेरे भाई की बात है तो आज का बिल मैं पे करूंगी। बुलाओ लड़के को...और जिसका जो मन चाहे ऑर्डर करे।"

लड़के को बुलाना नहीं पड़ा—वह खुद उनके पास पहुंचा।

"आशीर्वाद जी...।" वह मुण्डे के कान के पास मुंह लाते हुये फुसफुसाकर बोला—"ये चिट्ठी आपके लिये इन मेमसाहब

ने भिजवाई है।" कहने पर कैन्टीन के सर्विस ब्वाय ने वहां से तीन टेबल छोड़ चौथी टेबल पर अपनी दोस्तों के साथ बैठी प्राची शर्मा की तरफ उंगली से इशारा किया।

मुण्डे ने एक नजर प्राची पर तो डाली—लेकिन सर्विस ब्वाय से चिट्ठी लेने की कतई जरूरत ही नहीं समझी।

"ला...भाई...।" कमलकान्त उसके हाथ से चिट्ठी झपटते हुये बोला—"अपना यार तो शर्मीला है। लड़कियों की चिट्ठी इसे बम जैसी लगती हैं। तू यहां से ऑर्डर ले और जा। मैं इसे चिट्ठी पढ़कर सुनाता हूं।"

□□□
□□□

"ऐ कमल रहने दे।" कमल को घूरते हुये बोली काजल—"किसी की चिट्ठी यूं नहीं पढ़नी चाहिये। प्राची ने आशीर्वाद के लिये दी है। तू आशीर्वाद को दे दे।"

"अगर मैं पढूंगा इस चिट्ठी को...और तुम लोग सुन लोगे तो कोई आफत आ जायेगी?" कमलकान्त के चेहरे पर, आंखों में और लहजे में भी शरारत थी—"अरे भाई अपने फ्रेन्ड को किसी ने पहला लव लेटर भेजा है। हमें पढ़ना चाहिये कि प्राची ने क्या लिखा है! इससे हमें भी अपनी गर्ल्स फ्रेन्डियों को, तुम लोगों को अपने ब्वॉय फ्रेन्डों को लव लेटर लिखने का ज्ञान होगा। हां, अगर आशीर्वाद को ऐतराज हो तो...।" कहने पर वह आशीर्वाद की ओर देखने लगा।

"नहीं...नहीं!" कमल की शरारत पर बौखलाते हुये बोला आशीर्वाद—"म...मुझे भला क्यों ऐतराज होने लगा? म...मैंने थोड़े प्राची से लेटर लिखने को कहा था। मेरी उसकी अभी कल-परसों की जान-पहचान है आ...और...। तुम पढ़ो...पता नहीं उसने लेटर में क्या लिखा है?"

"फिर ठीक है...।" लेटर खोलकर ड्रामाई अन्दाज में अपना गला खंखारकर बोला कमलकान्त—"सुनो, जिगर थामकर सुनो, एक दिलवाली ने अपने हीरो के लिये क्या लिखा है...?"

कहने पर उसने तिरछी निगाहों से एक बार विशाखा की ओर देखा।

विशाखा के दिलोदिमाग पर चाहे उस पत्र को लेकर ठीक वैसी ही हलचल...कौतूहलता मची हुई थी जैसे कभी समुद्र मंथन

के दौरान जब समुद्र में विष निकला था तब समुद्र में ऐसी हलचल मची थी। लेकिन...।

उस घड़ी उसका चेहरा भावहीन था।

"लिखा है...।" विशाखा की तरफ से नजरें हटाकर कमल कान्त ने पढ़ना शुरू किया—"आशीर्वाद मैं तुमसे प्रेम करती हूं। आज शाम छः बजे मैं जुहू बीच पर तुम्हारा इंतजार करूंगी। जब तक नहीं आओगे...तब तक करूंगी। तुम्हारी...प्राची शर्मा...।"

"पागल हो गई है वो लड़की।" कमल के हाथ से पत्र छीनकर गुस्से में उसके पुर्जे-पुर्जे करते तथा दांत पीसते हुये बोला आशीर्वाद—"कल मिली...मिली क्या जबरदस्ती गले पड़ी और आज बेवकूफी भरे सपने देखने लगी। इसे कहते हैं तू कौन...मैं खामखाह...।"

"तुम क्यों अपसेट होते हो भाई...?" आशीर्वाद के हाथ पर हाथ रखते हुये तनिक दबे हुये से लहजे में बोली अविनति—"वो रईस दादा की बिगड़ी हुई पोती है। उसके दिमाग में यही होगा कि लोग आसानी से उसकी रईसी के आगे नत-मस्तक हो सकते हैं। दफा करो उस पागल को, मैं गर्मागर्म ब्रेड पकौड़े और कॉफी मंगवाती हूं...।"

"अपनी होने वाली भाभी के लिये भी मंगवा...अरे वो तो गई...।"

कमल की बात सुनकर पांचों दोस्तों की नजरें प्राची वाली मेज की तरफ उठी तो वह अपनी दोस्तों के साथ वहां से जा चुकी थी।

□□□
□□□

कॉलेज के बाद आशीर्वाद शंकर रोड पर स्थित रिलायंस की शॉप पहुंचा। वहां उसने बताया कि उसका मोबाइल खो गया है। बताया क्या लिखकर दिया, साथ में डिमांड की उसे पुराना नम्बर दिया जाये। उस शॉप का मालिक विनय गर्ग आशीर्वाद को पहचानता था और उसका फैन था। उसने आधे घण्टे में उसे उसके मोबाइल का पुराना नम्बर दिलवा दिया।

वापसी में मुण्डे ने नोकिया का एक बढ़िया सेट खरीदा और उसमें रिलायंस की जी० एस० एम० वाली चिप डाली तो दो मिनट बाद उसके मोबाइल की घंटी बजने लगी।

मुण्डे ने स्क्रीन पर नजर डाली तो पाया कि उसके लिये वह

नम्बर नया था। बाइक की स्पीड कम करते हुये मोबाइल को ऑन करके अपने कंधे पर रखे उसे कान से दबाकर बोला—"कौन...?"

"अपुन बोल रहेला बिग ब्रदर...अली हसन।" फोन पर हसनू की उत्तेजना में भरी आवाज सुनाई दी—"क्या बात है बिग ब्रदर...अपुन कल से तेरे कू फोन लगा रहेला था। तू फोन ऑफ करके रखेला है...।"

"फोन ऑफ नहीं किया था हसनू...।" हसनू की बात पूरी होने से पहले ही बोल उठा आशीर्वाद—"मेरा फोन गुम गया था। दूसरा फोन खरीदा और उसमें अभी-अभी पुराने वाला नम्बर चालू करवाया है। खैर, तुम बोलो, कोई खास बात थी जो तुम कल से फोन मिला रहे थे?"

"हां बिग ब्रदर...। बात खासीच है...। अपुन इस समय चैम्बूर टैक्सी पर है। आकर मिलने का। अपुन तेरे कू जो बतायेगा...उससे हो सकता है कि तुम शाकाल तक पहुंच सको।"

"ऐसा है तो मैं अभी दस मिनट में तुम्हारे पास पहुंच रहा हूं।" कहने पर मुण्डे ने मोबाइल ऑफ करके जेब में रखा और बाइक की स्पीड बढ़ा दी।

ठीक दसवें मिनट पर वह चैम्बूर के टैक्सी स्टैन्ड के सामने अपनी बाइक को स्टैण्ड पर लगा रहा था।

"सलाम बिग ब्रदर...।" उसके पास पहुंचते हुये हसनू अपने दायें हाथ की दो उंगलियां पेशानी पर लगाते हुये बोला—"अपुन कल से हीच तुम्हेरे से मिलने को व्याकुल हो रहेला था।"

"हां...बोलो हसनू...।" उसके कंधे पर हाथ रखते हुये बोला आशीर्वाद—"क्या बताना चाहते हो तुम?"

"बिग ब्रदर...। अपुन कल उस बीडू को देखा जो उस दिन शाकाल और इंस्पेक्टर के साथ इंस्पेक्टर के घर में था जब अपुन की अम्मी और अपुन इंस्पेक्टर के घर पहुंचेले थे, और उसी दिन उन लोगों ने अपुन की अम्मी...।"

"हां...हां हसनू...।" हसनू की बात पूरी होने से पहले ही व्याकुल-सा होकर बोला आशीर्वाद—"मैं समझ गया कि तुम क्या कहना चाहते हो। अब तुम ये बताओ कि तुमने शाकाल के साथी को कहां देखा और उस तक पहुंचने में मेरी क्या मदद कर सकते हो?"

"बिग ब्रदर...। अपुन को कल वो हिल्टन रोड की रेड लाइट पर दिखेला था।" उत्साह में भरा हसनू बिना कौमा विराम के तथा

फुल स्पीड पकड़ते हुये बोला—"वो एक सफेद तथा नई कार में था। कार की नम्बर प्लेट पर अभी नम्बर भी नहीं लिखेला था। सिर्फ ए०/ एफ० लिखेला था...।"

"फिर क्या फायदा हुआ?" जेब में हाथ डालते हुये मुण्डा निराशा भरे लहजे में बोला—"सिग्नल होने पर वो कार निकल गई होगी और...।"

"ऐसेइच कैसे निकल जाती वो कार?" लड़के की बात पूरी होने से पहले ही बोला अली हसन—"अपुन को शाकाल की तलाश सात सालों से है—और वो बीडू उसका राइट हैण्ड, साले कू ऐसे कैसे निकल जाने देता...।"

हसनू की बात सुनकर मुंह में चने डालने जा रहे केशवपुत्र का हाथ रुका और वो कौतूहलता भरी निगाहों से उसकी तरफ देखने लगा।

"ट्रैफिक शुरू होने से पहले...।" हसनू अपनी रौ में बोले जा रहा था—"अपुन एक टैक्सी पकड़ लियेला था। ये इत्तफाक था कि रेड लाइट पर वो टैक्सी खाली खड़ेली थी और उसका ड्राइवर अपुन का जानने वाला था। इस टैक्सी पर अपुन उस कार का पीछा कियेला था। कार वाला बीडू मालाबार हिल में जिस बंगले में गयेला था तेरे कू अपुन उस बंगले तक पहुंचा सकता है। तू उस बंगले के मालिक से...।"

"यानि वो बंगला शाकाल के जोड़ीदार का ना होकर किसी और का है?" चने चबाते तथा हसनू की तरफ देखते हुये बोला आशीर्वाद —"ये मालूम होने पर तुमने फिर से...मेरा मतलब जब शाकाल का जोड़ीदार बंगले से बाहर निकला था तो तुमने उसका पीछा नहीं किया?"

"कियेला था बिग ब्रदर...।" ठण्डी आह-सी भरकर अफसोस भरे लहजे में बोला अली हसन—"अपुन साला फिर से दूसरी टैक्सी का जुगाड़ करके उसके पीछे लगेला था। पन साला उसके ड्राइवर को सन्देह हो गयेला था कि टैक्सी से उनका पीछा किया जा रहेला है। आगे उसने अपुन को घेरकर ठोकेला भी था। बस बिग ब्रदर वो तो उस वक्त अपना अल्लाह अपुन के साथ था वरना वो अपुन को खल्लास कर देता...।" कहने पर हसनू ने उसे आपबीती कह सुनाई।

"ठीक है हसनू...।" उसकी पूरी बात सुनकर मुण्डा बाइक

ही चमक रही थीं जैसे शिकारी की आंखें अपने शिकार को जाल में फंसते देख चमकने लगती हैं।

सूरत जरूर वो आशीर्वाद पण्डित की थी, लेकिन सीरत किसी शैतान जैसी थी। जाने कौन था वह भेड़ की खाल में छुपा भेड़िया?

❑❑❑
❑❑❑

"ए...ऐ...क...क्या नाम लियेला तू?" मेज के पार बैठे जोरावर सिंह को खुर्दबीनी निगाहों से घूरते हुये बौखलाकर बोला शक्ल से ही बेरहम तथा क्रूर-सा नजर आने वाला काला-कलूटा जफर सुपारी—"नाम फिर से दोहराने का।"

"मैंने जो नाम लिया वो तुमने सुना ही है।" अपने एक-एक शब्द पर जोर देते हुये रेगमाल से खुरदुरे लहजे में बोला जोरावर सिंह—"लेकिन मुझे लगता है कि वो नाम सुनकर तेरी हवा शन्ट हो गई है। बहुत नाम सुना था तुम्हारा—तभी तुम्हारे पास आया था। लेकिन लगता है यहां आकर मैंने अपना कीमती वक्त जाया ही किया है। जफर सुपारी...सुपारी किलर का नहीं चूहामार इन्सान का नाम है। चलता हूं...।"

"ओये हराम के...।" जफर सुपारी के मुंह से भेड़िये की-सी गुर्राहट खारिज हुई—"उठने की छोड़, अगर तू कुर्सी से हिला भी तो अपुन तेरे कू इधरीच ठोक के रख देगा...।"

उठने का उपक्रम करते जोरावर सिंह ने कुर्सी पर अपना बदन ढीला कर दिया।

लेकिन उसके चेहरे पर ऐसा एक भी लक्षण नहीं था कि उसे जफर सुपारी की धमकी से डर लगा हो अथवा उसकी धमकी से डरकर उसने कुर्सी से उठने का अपना इरादा छोड़ा हो।

"क्या फायदा अब यहां रुकने का?" जेब से ट्रिपल फाइव ब्राण्ड की सिगरेट की डिब्बी तथा महरून कलर का लाइटर निकालते हुये बोला जोरावर सिंह—"जब आशीर्वाद पण्डित का नाम सुनकर ही तुम्हारे होश फाख्ता हो गये तो तुम उसकी मौत की सुपारी क्यों लेने लगे?"

"अबे ओये ढक्कन के।" मेज पर घूंसा मारकर दांत पीसते हुये गुर्राकर बोला जफर सुपारी—"अपुन का नाम जफर सुपारी है। डरना अपुन सीखाहीच नेई है। पन तू जब पहली बार आशीर्वाद पण्डित का नाम लिया अपुन चौंका जरूर था। आज अण्डरवर्ल्ड

में कौन ऐसा है जो आशीर्वाद पण्डित का नाम से अपरिचित है। उसके नाम सेहीच नेई अपुन उसके कारनामों से भीच उसे जानता समझता है। बहुत खतरनाक लड़का है। दुनियाभर के अपराधी उसे दो पैरों वाला बम तथा छः फुट का नेवला के नाम से भीच जानते हैं। तू उसकी सुपारी लेकर अपुन के पास आयेला है। अपुन उससे डरता नेई। तेरे काम से इन्कार भीच नेई कर रहेला। पन उसकू खल्लास करने की जब तू फीस सुनेगा तो उठकर भाग खड़ा होगा। पन अपुन तेरे कू भागने कू नेई देगा। तू जायेगा इदर से तो अपने पैरों से नहीं, बैशाखी से चलकर जायेगा। तू साला इधर...जफर सुपारी के ऑफिस में उसकू चूहामार बोलकर उसका अपमान कियेला है। इस बात की सजा अपुन तेरे कू जरूर देगा।"

"तू अपने काम की कीमत बोल जफर सुपारी।" हिमालय पर्वत पर जमी बर्फ से भी ठण्डा लहजा था जोरावर सिंह का। सुनकर एक बारगी तो जफर सुपारी जैसे सुपारी किलर के सारे बदन में झुरझुरी-सी फैलती चली गई।

"पचास करोड़...।" सहमी हुई-सी आवाज निकली सुपारी किलर के मुंह से।

"दस मिनट में पैसे तुम्हारे पास पहुंच जायेंगे।" कुर्सी से उठकर सिगरेट को मुंह में फंसाने पर जफर सुपारी की आंखों में झांकते हुये बोला जोरावर सिंह—"पूरी रकम एडवांस में दूंगा। लेकिन ध्यान रहे। मेरा काम नहीं हुआ तो तुम्हारा काम लग जायेगा।"

कहने पर उसने लाइटर जलाकर सिगरेट सुलगाई। एक कश खींचा।

फिर उसका ढेर सारा धुआं जफर सुपारी के मुंह का लक्ष्य करते हुये मुंह से उगलने पर पलटकर वापस चल दिया।

और जफर सुपारी का दिल तो कर रहा था कि वह मेज की दराज से रिवॉल्वर निकालकर उसे शूट कर दे। लेकिन उसके हाथ उस समय इस कदर कांप रहे थे मानो घण्टों तक बर्फ की सिल्ली के नीचे दबे रहने के बाद उसी समय बाहर निकले हों।

❑❑❑

❑❑❑

भेड़ की खाल में छिपे भेड़िये ने बड़े ही इत्मीनान से...मजे ले-लेकर बियर का गिलास खाली किया। दूसरी बोतल खोलकर

उसमें फिर से दोनों गिलास भरे और तिरछी निगाहों से बगल में सिर को थामें बैठी प्राची की ओर देखा।

"लो प्राची...!" फिर एक गिलास उसकी तरफ बढ़ाते हुये बोला—"ये गिलास खत्म करो। मैं भी अपना गिलास खत्म करता हूं—फिर दोनों यहां से चलते हैं।"

प्राची ने नजरें उठाकर उसकी तरफ देखा। फिर मुस्कराई। एक अजीब से अन्दाज में।

"लाओ...!" बायें से बियर भरा गिलास पकड़कर दायां हाथ लड़के के कंधे पर रखकर उससे ब्रेड पर मक्खन की मानिन्द ही चिपकते हुये अजीब से लहजे में बोली प्राची शर्मा—"यार आशीर्वाद...ये बियर तो बहुत ही अच्छी चीज है। एक गिलास पीते ही मेरे पूरे बदन में सनसनी-सी होने लगी है।" फिर उसने लड़के के गाल पर एक चुम्बन अंकित किया और बोली—"अब ये यहां से जाने की बात अभी मत करो। थोड़ा रुककर चलेंगे। मुझे ग्यारह बजे तक घर पहुंचना है और अभी दस भी नहीं बजे।"

सुनकर भेड़ की खाल में छिपे उस भेड़िये के होंठों पर कुत्सित किस्म की मुस्कान खेलने लगी।

"ऐसा है तो फिर बहुत ही बढ़िया है।" उस शैतान के हाथ प्राची शर्मा के वक्षों से शैतानी हरकत करने लगे—"अब आराम से ये गिलास खाली करेंगे।"

उसकी अश्लील हरकत से नाराज होने की जगह प्राची आनन्दित हो उससे और कसकर चिपटने लगी।

दरअसल उस शैतान लड़के ने, जिसके बारे में अब पूरे विश्वास से कहा जा सकता है कि वो आप सबका चहेता नहीं था, उसने प्राची की बियर में औरतों में सैक्स जगाने वाली हाई पॉवर की गोली मिला दी थी। गोली का जैसे-जैसे प्राची पर असर हो रहा था, वैसे-वैसे उसके अन्दर सैक्स की भूख बढ़ती जा रही थी।

उस पर भेड़ की खाल में छिपा भेड़िया उसके हाथ हरकतें भी कुछ ऐसी कर रहा था कि वो आपे से बाहर हुई जा रही थी।

पांच मिनट बाद आलम ये था कि प्राची के मुंह से कामोत्तेजना की सिसकारियां-सी छूटने लगी थीं और वह लड़के को इस तरह झंझोड़ रही थी कि जैसे लड़का, लड़का ना होकर आम का वृक्ष हो और उसमें पके हुये आम लटक रहे हों तथा

वो उस वृक्ष को हिलाकर...झंझोड़कर उसमें लगे आम गिराना चाहती हो।

फिर हद तो तब हुई जब वासना में पागल हुई पड़ी लड़की ने पहले तो अपने सारे वस्त्र एक-एक करके उतार फेंके। फिर लड़के के वस्त्र उतारने लगी।

और वह धूर्त लड़का।

होंठों पर कुत्सित किस्म की मुस्कराहट लिये कमरे में चार जगह लगे ऑटोमेटिक वीडियो कैमरों की तरफ देख रहा था।

दरअसल उसने होटल का वह कमरा शाम ही बुक करा लिया था और उसी समय उसने उसमें चार वीडियों कैमरे कुछ इस अन्दाज में लगा दिये थे कि यूं ही तो वह किसी की नजर में ना आ सकें।

फिर लड़के के निर्वस्त्र होते ही प्राची उस पर ऐसे टूट पड़ी मानो कई दिनों से भूखी बिल्ली मलाई का कटोरा नजर आने पर उस पर टूट पड़ी हो।

□□□
□□□

"गड्डी जांदी है छलांगा मारदी...सानूं याद आये साढ़े यार दी...।"

लाल रंग की टाटा सफारी ड्राइव करते हुये सरदार करतार सिंह मस्ती में झूमते हुये लय के साथ गा रहा था—

"ओ सानूं याद आये साढ़े यार दी...।"

"पटियाला वाले अंकल जी...।" उसके बगल वाली सीट पर बैठा आशीर्वाद चने चबाते हुये तथा उसकी तरफ शरारतभरी नजरों से देखते हुये बोला—"ये तो ठीक है कि साढ़ी गड्डी छलांगा मारते हुये चल रही है—लेकिन ये नहीं समझ में आ रहा है कि आपको इस समय अपने किस यार की याद सता रही है?"

"निक्के पुत्तर जी...तुसी वी ना...।" मुण्डे की शरारत पर औरतों की तरह ही शरमाकर बोला करतार सिंह—"...बस...। मैं तो यूं गाना गा रेहा सी, और तुसी मेरी खिंचाई शुरू कर दित्ती। लो हुण नी गावांगा...।"

"अरे नहीं अंकल जी...।" मुण्डा बौखलाने की शानदार एक्टिंग करते हुये बोला—"ऐसे गजब मत करना। मैंने तो मजाक किया, वैसे आप बढ़िया गा रहे थे। मन-सा लगा हुआ था...अरे ये क्या करते हैं आप?"

फिर मुण्डे की निगाह विण्ड स्क्रीन के पार सड़क पर पड़ी तो उसने करतार सिंह को धक्का देकर उसकी तरफ की खिड़की की तरफ गिराया और खुद को डैशबोर्ड के नीचे गिरा दिया।

उसी समय कार की विण्ड स्क्रीन को तोड़ते हुये कई गोलियां सीट की पुश्त में आ धंसीं।

अगर मुण्डे ने करतार सिंह को एक ओर धकलने में और खुद को नीचे गिराने में पलभर की भी देरी की होती तो दोनों के जिस्म आटा छानने वाली छलनी बन गये होते।

दरअसल उनकी कार को ओवर टेक करके काले रंग की मार्शल एकाएक ही उनकी कार के सामने तिरछी होकर रुकी थी। ये तो करतार सिंह जैसा अनुभवी ड्राइवर ही था जो उसने सफारी को मार्शल का चुम्बन लेने से बचा लिया था।

लेकिन जैसे सफारी मार्शल के मुश्किल से छः इंच के फासले पर रुकी। मार्शल की पिछली तथा अगली सीट पर बैठे दो गुण्डों ने मशीनगन से उन पर अंधाधुंध गोलियां बरसानी शुरू कर दी थीं।

सीट पर एक ओर लुढ़कने पर खतरे का एहसास हो चुका था करतार सिंह को, इसलिये उसने खुद को पायदान पर लुढ़का दिया।

"पटियाला वाले अंकल जी...।" पेट के बल लेटा आशीर्वाद करतार सिंह की तरफ देखते हुये बोला—"मुझे लगता है ये शाकाल के आदमी हैं। मुझे उनमें से एक-आध को जीवित पकड़ना है। हो सकता है मुझे शाकाल तक पहुंचने का पता मिल जाये। मैं अपनी तरफ से दरवाजा खोलकर कूदने जा रहा हूं। मेरे बाहर कूदते ही उनका ध्यान मेरी तरफ हो जायेगा। फिर आप भी अपनी तरफ का दरवाजा खोलकर बाहर कूद जाना। फिर...।"

"नी निक्के पुत्तर जी...।" लड़के की पूरी बात सुने बगैर ही करतार सिंह बोला—"इस तरह बाहर कूदने से आपकी जान को खतरा हो सकता है और मेरी जान को भी। इनसे निबटने के लिये मेरे दिमाग में एक आइडिया आया है।"

"बोलो पटियाला वाले अंकल जी...।" जेब में हाथ डालते हुये बोला मुण्डा।

"अपनी गड्डी स्टार्ट है ही, मैं गेयर लगाकर मार्शल पर ठोकर मारता हूं। फिर...।"

"वाह पटियाला वाले अंकल जी। क्या धांसू किस्म का

आइडिया आया है आपके दिमाग में।" चने के दो दाने मुंह में सरकाने पर लेटे-ही-लेटे उछल पड़ने वाले से अन्दाज में बोला केशवपुत्र—"यहां देशी टॉनिक का इस्तेमाल मैं कर रहा हूं और दिमाग के दरवाजे आपके खुल रहे हैं। वैसे आप चाहते यही हैं ना कि मार्शल को ठोकर लगने से उसमें बैठे गुण्डे कुछ पलों के लिये बौखला उठेंगे और हमें समय मिल जायेगा और हम उनका अच्छे से बैण्ड बजा सकेंगे?"

"हां निक्के पुत्तर जी...।"

"तो ठीक है पटियाला वाले अंकल जी...। शुभ कार्य में देर कैसी? ठोक दो मार्शल को। ये साले अभी भी गोलियां चलाये जा रहे हैं। दम ही नहीं ले रहे हैं...।"

फिर पायदान पर लेटे ही लेटे करतार सिंह ने एक हाथ से सफारी का क्लच पैडल दबाया, दूसरे हाथ से गेयर लगाया और उस हाथ के खाली होने पर उसे एक्सीलेटर पैडल पर रखकर क्लच पैडल को छोड़ा तथा एक्सीलेटर पर एकदम से दबाव डाला।

परिणाम स्वरूप—

सफारी तोप से निकले गोले की मानिन्द ही सामने तिरछी होकर खड़ी काली मार्शल से टकराई।

❑❑❑

❑❑❑

"भड़ाक!"

सफारी की जोरदार तथा अप्रत्याशित ठोकर से मार्शल के अन्दर बैठे पांचों गुण्डे बुरी तरह हड़बड़ा...बौखला उठे।

एक जो खिड़की के पास बैठा सफारी पर गोलियां बरसा रहा था। वह पीछे बैठे अपने साथी पर गिर पड़ा।

जबकि दूसरा जो पिछली सीट पर से गोलियां चला रहा था—पलभर लिये हड़बड़ाया, और फिर दांत पीसकर गुर्रा उठा—"रुको सालो...मैं अभी तुम्हारी ऐसी-तैसी करता हूं...।"

गन लेकर वह कार से नीचे उतरा।

उसी समय अपनी साइड का दरवाजा खोलकर सफारी से मुण्डा बाहर कूदा—

सामने मुण्डा नजर आया तो उसकी छाती पर लात मारी तो वह गैस वाले गुब्बारे की मानिन्द हवा में उड़ते हुये पीछे अपनी कार से टकराकर पके आम की मानिन्द नीचे गिरा।

तभी उसका दूसरा साथी भी कार से नीचे उतरा और उसके उतरते ही उसका स्वागत मुण्डे के घूंसे से हुआ।

घूंसा क्या मानो लौहार का हथौड़ा ही उसके चेहरे से टकराया। मिनट भर तक वह अपनी आंखें बन्द किये अपने सिर को झटके देते हुये दर्द को बर्दाश्त करने की कोशिश करता रहा।

जबकि मुण्डे ने मार्शल का अगला दरवाजा खोला और उसमें से गन वाले गुण्डे को पकड़कर बाहर खींच लिया। फिर उसकी गन छीनकर उसके घुटनों पर गन के बट से प्रहार करने लगा।

गुण्डा हलाल होते बकरे की मानिन्द चीखने लगा।

तभी पहले गुण्डे ने अपनी गन का रुख मुण्डे की तरफ करके फायरिंग शुरू कर दी।

"तड़...तड़...तड़...।"

करतार सिंह ने धक्का देकर मुण्डे को एक तरफ गिरा दिया। लेकिन तभी एक गोली उसकी बांह में आ धंसी। इसके बावजूद भी करतार सिंह ने सामने वाले गुण्डे को उठाकर उसे अपने सामने कर लिया।

एक साथ कई गोलियां उस गुण्डे के जिस्म में आ धंसीं।

"आऽऽऽई!" वह चीखा।

उसके जिस्म से खून के फव्वारे छूटने लगे।

इससे पहले कि वह गुण्डा लहराकर जमीन पर गिरता करतार सिंह ने उसे लात मारी तो वह उड़ता हुआ पीछे खड़े अपने साथी से टकराया और फिर दोनों ही सड़क पर गिर पड़े।

करतार सिंह ने अपने जख्मी हाथ-पर-हाथ रखा और पीड़ा को पीने का यत्न करने लगा।

उधर लड़के ने उस बीच बाकी के तीनों गुण्डों को मार-मारकर उनके सारे कस-बल निकाल दिये थे।

फिर वह लपककर करतार सिंह के पास पहुंचा और व्याकुलता में भरकर बोला—

"पटियाला वाले अंकल जी...आप ठीक तो हैं ना?"

"हां निक्के पुत्तर जी...।" दर्द को हाजमोला की गोली की तरह भीतर सटकते हुये बोला पटियाले वाला सरदार—"मैं ठीक हूं। गोली बाजू में लगी है...।"

"ओह...! आपको जल्दी ही हॉस्पिटल पहुंचाना होगा।" परेशान-सा होकर बोला केशवपुत्र—"आप गाड़ी में बैठिये, मैं इन बदमाशों के लिये इंस्पेक्टर अंकल को फोन करता हूं।"

आशीर्वाद ने अनिल यादव को फोन लगाकर जल्दी-जल्दी उसे सब समझाया और उसे तुरन्त ही वहां पहुंचने को कहा।

❑❑❑
❑❑❑

वासना का भूत उतरने पर प्राची की चेतना को एक झटका-सा लगा और अपने-आपको नग्न अवस्था में देखकर उसका मन आत्म-ग्लानि से भर उठा।

उसने एक नजर पलंग पर नग्न लेटे आशीर्वाद पर डाली और फिर उसकी तरफ से नजरें हटाकर पलंग से नीचे उतरी और फर्श पर पड़े अपने कपड़े उठाकर पहनने लगी।

"तुम भी उठो आशीर्वाद और कपड़े पहनो।" शर्म से नजरें झुकाये धीमे स्वर में बोली वह—"हमें तुरन्त ही यहां से निकलना है...।"

"अभी रुको प्राची...।" पूरी बेशर्मी से अंगड़ाई लेते हुये बोला वह बहरूपिया—"जल्दी क्या है...अभी ग्यारह कहां बजे हैं? थोड़ा रुककर चलेंगे।"

"नहीं आशीर्वाद...! अब मैं एक मिनट भी यहां नहीं रुक सकती।" लुटे-पिटे से लहजे में बोली प्राची—"यहां जो हुआ अच्छा नहीं हुआ। तुम्हें दोष नहीं दे सकती क्योंकि मैं भी शायद अपने होश खो बैठी थी। बियर का नशा इतना खराब होता है ये जानती तो कभी नहीं पीती।"

"ये क्या प्राची...? तुम तो परेशान हो उठी।" बिना कपड़ों के ही उठा वह बहरूपिया और पीछे से प्राची की कोहली भरकर बोला—"माना शादी से पहले हमें ये सब नहीं करना चाहिये था। लेकिन अब हो गया सो हो गया। आज के जमाने में ये सब मामूली बातें हैं। तुम्हें कोई गड़बड़ ना हो इसके लिये बाजार में बहुत सी दवायें हैं। न्यूज पेपर में अनवांटेड सेवेन्टी टू की रोज एड आती है। कल मैं जुहू बीच पर मिलूंगा तो टेबलेट्स तुम्हें दे दूंगा। खा लेना, फिर कोई टेंशन नहीं रहेगी। और सुनो, अब ये रोनी सूरत मत बनाओ। विश्वास करो मेरा, मैं तुम्हें सच्चा प्यार करता हूं और कभी धोखा नहीं दूंगा। हां, एक बात का ध्यान रखना। कॉलेज में हम दोनों अभी सिर्फ हैल्लो-हाय वाले दोस्त बने रहेंगे। कॉलेज में एकान्त में भी कभी तुम अपने प्यार का इजहार अथवा कॉलेज के बाद हम आपस में मिलते हैं—ऐसा जिक्र नहीं करोगी।"

"लेकिन क्यों?" लड़के की तरफ नेत्र सिकोड़कर देखते हुये

बोली प्राची—"ये कैसा प्यार है तुम्हारा? तुम मुझसे प्यार करते हो और मैं तुमसे। और कॉलेज में मैं तुमसे दो बातें भी नहीं कर सकती। जबकि कॉलेज में तो दो प्यार करने वाले अपने-अपने प्यार के बारे में अपने दोस्तों को खूब बढ़-चढ़कर बताते हैं। तुम कहते हो कि...। सुनो यार...उफ्! अब कपड़े पहनो...और ये बताओ कि मुझे सच में ही प्यार करते हो या फिर यही सब करने के लिये मुझे मूर्ख बनाया तुमने?"

"देखो प्राची...मुझे गलत मत समझो।" पतलून पहनते हुये चेहरे पर गम्भीरता की चादर चढ़ाये गम्भीरता भरे लहजे में बोला वह बहरूपिया—"मैं तुम्हें सच में ही प्यार करता हूं। लेकिन ये नहीं चाहता कि लोग हमारे प्यार को लेकर मजाक बनायें। थोड़ा धीरज रखो...पहले मुझे घर में तुम्हारे बारे में बात कर लेने दो। घर से हरी झण्डी होते ही तुम कॉलेज की छत पर खड़ी होकर माइक में चिल्ला-चिल्लाकर कहना कि तुम मुझसे प्यार करती हो। तब मैं भी नीचे से तुम्हारी हां-में-हां मिलाऊंगा।"

"सच आशीर्वाद...?" उस धूर्त से लिपटते हुये बोली प्राची—"तुम सच में ही हमारे प्यार की बात अपने घर में करोगे? मुझे अपने घरवालों से...।"

"हां प्राची...।" उसे अपने बांहों में भरते हुये लेकिन चेहरे पर कुटिल भाव लिये बोला महाधूर्त—"इस मामले में मैं बहुत सीरियस हूं। डैडी जी से तो बात नहीं कर सकता। मम्मी जी के सामने भी शायद झिझकूं। लेकिन...चांदनी आंटी ऐसी हैं जिनसे मैं अपने दिल की बात निःसंकोच कर सकता हूं। उनसे बात करूंगा...वो भी एक-आध दिन में ही। उनसे मिलवाऊंगा भी तुम्हें। लेकिन तब तक मेरी बात को ध्यान में रखना है तुम्हें। कॉलेज में जिक्र भी नहीं करोगी इस बात का। दोस्तों की तरह मिलेंगे हम...और हो सकता है वह मेरा व्यवहार तुम्हें थोड़ा शुष्क भी लगे, तुम्हें माइण्ड नहीं करना है। दोस्तों को सरप्राइज करना चाहता हूं। तुम समझ रही ना कि मैं क्या चाहता हूं?"

"हां आशीर्वाद...मैं समझ गई। कॉलेज में मैं तुमसे उचित दूरी बनाये रखूंगी। जब तक तुम अपने घरवालों से मुझे नहीं मिलवाओगे...मैं अपनी किसी दोस्त को भी अपने इस प्यार के बारे में नहीं बताऊंगी। अब चलो...। मुझे देर हो रही है।"

फिर चेहरे पर कुत्सित किस्म की मुस्कान लिये उस बहरूपिये ने कपड़े पहने और फिर दोनों होटल से बाहर आ गये।

□□□
□□□

ऑपरेशन थियेटर के दरवाजे से थोड़ा ऊपर करके जल रहा लाल रंग का बल्ब बुझा तो दरवाजे के सामने चौड़ी-सी गैलरी में मौजूद आशीर्वाद पण्डित, केशव, सोफिया, राजन शुक्ला, चांदनी तथा इंस्पेक्टर अनिल यादव की निगाहें दरवाजे से चिपक गईं।

उन सभी की आंखों में उस समय चिन्ता की बड़ी-बड़ी मछलियां 'छप्पक-छप्पक' करती साफ परिलक्षित हो रही थीं।

दो मिनट पश्चात् ऑपरेशन थियेटर का दरवाजा खुला और उसमें से डॉक्टर अश्वनी शुक्ला और एक नर्स बाहर निकले तो केशव पण्डित लपककर उनके पास पहुंचते हुये व्याकुलता भरे लहजे में बोला—"डॉक्टर साहब...हमारा पेशन्ट कैसा है...ऑपरेशन तो ठीक रहा ना...?"

"पण्डित जी आप?" केशव पण्डित पर निगाह पड़ते ही डॉक्टर रुका और थोड़ा हैरान-सा होते हुये बोला—"नमस्कार! आपका पेशेन्ट बिल्कुल ठीक है। मैंने ऑपरेशन करके गोली निकाल दी है। सरदार जी को सही समय पर आशीर्वाद यहां लाया था। आधा घण्टा और देर होने पर गोली का जहर फैलने लगता। आशीर्वाद को पहचानता हूं मैं—और आपको भी अच्छी तरह जानता हूं...आपके चेलों का भी खूब नाम सुन रखा है मैंने। मैं जब आपरेशन थियेटर गया था तो आप लोग नहीं थे ना इसलिये आप लोगों को देखकर चौंका था। आइये आप लोग मेरे कमरे में, मैं आप लोगों को चाय-पानी पिलाता हूं।"

"नहीं डॉक्टर साहब...चाय-वाय नहीं पीयेंगे हम। अभी कुछ देर पहले ही एक शादी अटैण्ड करके घर वापस लौट रहे थे कि रास्ते में ही आशीर्वाद का फोन आ गया और हम सीधे यहीं चले आये। आप ये बताइये कि हम अपने पेशेन्ट से कब मिल सकेंगे?"

"अभी तो वो बेहोश ही है। तकरीबन दो घण्टे लगेंगे उसे होश में आने में। होश में आने पर आप लोग उससे मिल लेना। वैसे, बता ही चुका हूं कि सरदार जी बिल्कुल ठीक हैं। गोली लगने से उनके जिस्म से जो खून बहा था, उतना खून उन्हें दिया जा रहा है। उनके ग्रुप का खून हमारे हॉस्पिटल में था। मैं तो कहता हूं कि आप लोग मेरे साथ एक-एक कप चाय पीते तो मुझे बेहद खुशी होती।"

"ऐसा है तो चलिये...।" केशव पण्डित उसके आग्रह को ठुकरा ना सका और चाय के लिये हामी भर दी।

फिर डॉक्टर ने चाय नहीं सबके लिए कॉफी मंगवाई। दरअसल जब मुण्डे ने कहा कि वह चाय नहीं पीता तो डॉक्टर ने पूछा कॉफी तो पीते हो? उसके हां कहने पर उसने सबसे कॉफी की हामी भरवाई और कॉफी मंगवा ली।

कॉफी पीने के पश्चात् डॉक्टर अश्वनी को धन्यवाद कहकर सब लोग उसके कमरे से बाहर आये और केशव पण्डित ने सोफिया, चांदनी और आशीर्वाद को यह कहकर घर भेज दिया कि वो तथा राजन रात को हॉस्पिटल में रहेंगे—वो लोग सुबह आकर करतार सिंह से मिल लेंगे।

दरअसल उस रात के केशव पण्डित के यहां तीन जगह के निमंत्रण कार्ड थे। एक शादी में शामिल होने के लिये वह और सोफिया गये थे तो दूसरी शादी में राजन शुक्ला और चांदनी। तीसरा कार्ड एक वकील की लड़की की रिंग सेरेमनी का था जिसमें शामिल होने के लिये आशीर्वाद और करतार सिंह जा रहे थे कि रास्ते में काली मार्शल में सवार गुण्डों ने उन पर जानलेवा हमला कर दिया था।

गुण्डों पर काबू पाने पर आशीर्वाद ने फोन करके अनिल यादव को वहां बुलाया और उसके आने पर गुण्डों को उसके हवाले करके करतार सिंह को जसलोक हॉस्पिटल ले आया था। उसके हॉस्पिटल पहुंचने के दस मिनट बाद ही गुण्डों वाला मामला अपने सहयोगी सब-इंस्पेक्टर दियाराम तावड़े को सौंप अनिल यादव भी हॉस्पिटल पहुंच गया था। डॉक्टर अश्वनी लड़के को ना केवल जानता था बल्कि वह उसका तथा केशव पण्डित दोनों का जबरदस्त फेन था। दोनों के उपन्यास बहुत चाव से पढ़ता था। आशीर्वाद के साथ घायल सरदार को देखकर उसने सहज ही अन्दाजा लगा लिया था कि वह केशव के दो चेलों में से एक सरदार करतार सिंह था।

उसने बहुत तेजी से करतार सिंह के ऑपरेशन की तैयारी की और ऑपरेशन करने चला गया।

उधर शादी में ही शिकरत करके सोफिया के साथ वापस घर लौट रहे केशव ने यूं ही आशीर्वाद से ये जानने के लिये कि वो अभी तक घर लौटा था या नहीं, उसे फोन लगाया तो आशीर्वाद ने बता दिया कि वो पार्टी में जा ही नहीं सका। क्यों नहीं जा

सका ये भी बताया। उसकी पूरी बात सुनने पर केशव ने कार का रुख घर की बजाय हॉस्पिटल की तरफ किया। रास्ते में ही उसने राजन शुक्ला को भी फोन करके बता दिया कि करतार सिंह के गोली लगी है और वो जसलोक हॉस्पिटल में है।

उस समय राजन शुक्ला और चांदनी अभी राणा गेस्ट हाउस में ही थे। बारात बाहर से आनी थी और राह में कहीं बारात वाली बस खराब हो जाने से बारात मुम्बई में ही देर रात पहुंची थी और रात एक बजे तक अभी अगवानी नहीं हुई थी। केशव का फोन मिलने पर राजन शुक्ला और चांदनी लड़की के माता-पिता के पास गये। उन्हें वो लिफाफा दिया जो शगुन देने के लिये लाये थे। उनसे वहां और ना रुक पाने के लिये क्षमा मांगी और वहां से निकल लिये थे।

ये थी केशव पण्डित, सोफिया, राजन शुक्ला और चांदनी के वहां पहुंचने की कहानी।

आगे का किस्सा कुछ ऐसे कि सोफिया, चांदनी और आशीर्वाद के वहां से चल देने के बाद केशव ने चारमीनार मार्का सिगरेट सुलगा ली और उसके कश लगाते हुये अनिल यादव से मुखातिब हो बोला—"अनिल भाई...फिलहाल तो आपका भी यहां रुकना कोई मायने नहीं रखता। डॉक्टर ने बताया है कि उसे दो घण्टे बाद होश आयेगा। रात के ढाई बज रहे हैं...आप घर जाकर दो घण्टे आराम कर लीजिये। मैं और राजन यहां करतार सिंह के पास हैं ही। आप सुबह आ जाना।"

"ठीक है पण्डित जी...।" अनिल यादव बोला—"मुझे अभी पुलिस स्टेशन भी जाना होगा। देखना पड़ेगा सब-इंस्पेक्टर तावड़े ने कैसे क्या किया।"

फिर केशव तथा राजन को अभिवादन कर अनिल यादव वहां से चला गया और केशव तथा राजन गैलरी में दीवार से सटी तथा कतार से लगी कुर्सियों पर बैठ गये।

□□□
□□□

आशीर्वाद के रूप में वो बहरूपिया जो भी था आधी रात के वक्त अभी जाग ही रहा था। ठीक-ठाक कहे जा सकने वाले कमरे में जिसमें तेईस वॉट का सूर्या कम्पनी का सी० एफ० एल० रोशन था। उसमें फोल्डिंग पलंग पर आलथी-पालथी मारे बैठा

हुआ शराब की चुसकियों के साथ गोल्ड फ्लैक के कश भी लगा रहा था।

"वाह प्राची शर्मा!" शराब का घूंट भरने पर वह तृप्ति-पूर्ण भाव से अपने होंठ चटकाने पर बड़बड़ाया—"वाकई तुम गजब की चीज हो। महीनों तुमसे मजे करूंगा मैं...।"

बड़बड़ाते हुये उसने सिगरेट का कश खींचकर उसका धुआं मुंह से उगला तो उसे धुयें के गुब्बार में प्राची का निर्वस्त्र जिस्म दिखाई देने लगा।

"यार तुम तो भुलाये नहीं भूल रही हो।" बड़बड़ाते हुये उसने फिर से व्हिस्की का एक घूंट भरा।

फिर सिगरेट का कश लगाने पर उसने पलंग पर सिगरेट की डिब्बी तथा माचिस के पास पड़ा अपना मोबाइल उठाया और उसमें कोई नम्बर लगाने लगा।

नम्बर लगा और घंटी जाने लगी। लेकिन फोन दो बार पूरी-पूरी बेल जाने पर उठाया गया।

"हैल्लो...कौन...?"

नींद में डूबी हुई-सी आवाज फोन के स्पीकर में आई।

"पापाजी मैं बोल रहा हूं। नमस्ते। आपकी नींद खराब की, सॉरी...।" सिगरेट का कश लगाने पर नथुनों से धुआं बाहर करते हुये बोला वह बहरूपिया—"दरअसल मेरे पास बढ़िया खबर थी और मुझसे कन्ट्रोल नहीं हो रहा था इसलिये...।"

"बोल बेटा कूकी...। क्या कहना चाहता है तू? कैसी खबर हैं तेरे पास जो तुमने रात में मुझे जगाया?"

"पापाजी...मैंने अपना खेल शुरू कर दिया है।" सिगरेट का आखिरी कश मारने पर टोटे को एक ओर डालते हुये उत्साह में भरे लहजे में बोला कूकी जो कि उस समय आशीर्वाद के मेकअप में था—"मेरी योजना का प्रथम चरण आज पूरा कर लिया मैंने। जल्दी ही मैं अपनी योजना के अगले चरण की शुरूआत करूंगा। उसके बाद जल्दी ही मैं अपने मकसद में कामयाब होऊंगा। जी हां पापा जी...अब वो दिन दूर नहीं जब मैं आपको खून के आंसू रुलाने वाले को खून के आंसू रोने पर मजबूर करूंगा। आपके दुश्मन का मैं वो हाल करूंगा कि...कि आप देखना पापा जी...।"

"नहीं कूकी बेटा...तू कुछ मत कर।" स्पीकर से निकलने वाली आवाज में पानी से निकालकर गर्म रेत में डाली गई मछली जैसी ही तड़फड़ाहट...छटपटाहट थी—"मेरे साथ या तुम्हारे साथ

जो बीता उसे भूल जा। मैं तुझ पर किसी खतरे की परछाई भी नहीं देखना चाहता हूं। सब भूलकर तू अपनी पढ़ाई पर ध्यान दे। हमारा दुश्मन बहुत ही खतरनाक है—उसे अगर भनक भी लग गई कि कोई उसका राई बराबर भी अहित करने की फिराक में लगा है तो वह उसके पीछे पड़कर उसका काम तमाम करने में देर नहीं लगाता। वो शक्तिशाली ही नहीं, पहुंच वाला भी है...।"

"होगा वह पहुंच वाला...। खतरनाक भी होगा।" बोतल से गिलास में शराब डालते हुये लापरवाही भरे अन्दाज में बोला कूकी—"लेकिन वह मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकेगा। मुझ तक पहुंच नहीं सकता है। आप निश्चिंत रहें पापा जी...मैंने उसके खिलाफ दिमागी जंग का मोर्चा खोला है। उस हरामी को तो पता भी नहीं लगेगा और मौत उसके सिर पर आ खड़ी होगी। उसका मैं वो हाल करूंगा पापाजी कि वो आत्म-हत्या के लिये मजबूर हो जायेगा।"

"ले...लेकिन बेटा कूकी...।" कूकी की बात के बीच में ही मोबाइल फोन के स्पीकर में व्याकुलता में भरी आवाज आई...। लेकिन अपने पापा की पूरी बात सुने बिना ही कूकी ने शुभरात्रि बोलकर फोन काटा और साथ में उसका स्विच भी ऑफ करके एक ओर रख दिया।

"पापाजी बेमतलब ही मेरे लिये चिन्ता कर रहे हैं।" शराब का तगड़ा घूंट भरने पर सिगरेट की डिब्बी और माचिस की तरफ हाथ बढ़ाते हुये बोला बहरूपिया—"वो मुझे बच्चा समझते हैं। लेकिन वो ये भूल रहे हैं कि उनका बेटा अब बड़ा हो गया है। उन्हें ये नहीं मालूम कि उनके बेटे का दिमाग कम्प्यूटर जैसा काम करता है। लेकिन जब मैं अपने कम्प्यूटर जैसे दिमाग से उनके दुश्मन को परास्त करूंगा तब उन्हें एहसास होगा कि उनका बेटा वास्तव में क्या चीज है!"

❑❑❑

❑❑❑

मम्मी सोफिया और चांदनी आंटी को घर पहुंचाकर आशीर्वाद पाली हिल के पुलिस स्टेशन पहुंचा।

वह अपनी बाइक पुलिस स्टेशन के कम्पाउंड में खड़ी कर ही रहा था कि अनिल यादव भी वहां पहुंच गया। जीप से उतरकर वह मुण्डे की तरफ बढ़ा।

"छोटे पण्डित जी...आप इस समय...?" बोलते हुये सहसा ही उसे कुछ ध्यान आया तो वह अल्प विराम के बाद बोला—"ओह! समझ गया मैं। जरूर आप उन गुण्डों से पूछना चाहते होंगे कि आप पर जानलेवा हमला उन्होंने किसके कहने पर किया?"

"करैक्ट!" चने के दो दाने मुंह में सरकाने पर स्थिर लहजे में बोला केशवपुत्र—"मैं उन हरामियों से उनके बाप के बारे में पूछने के अलावा उनकी थोड़ी खातिरदारी भी करने आया हूं। आखिर उनकी गोली से अपने पटियाला वाले अंकल जी घायल हुये हैं।"

"आइये आप...।" बरामदे की ओर बढ़ते हुये बोला बिल्लौरी आंखों वाला—"वैसे आप ना आते तो उन बदमाशों की खातिरदारी में कसर तो मैंने भी नहीं छोड़नी थी। वैसे तो आपने पहले ही उन्हें तोड़-फोड़ रखा है, लेकिन मैं हॉस्पिटल से होकर आ रहा हूं और करतार भाई अपने अजीज हैं। जिन्होंने अपने भाई को कष्ट दिया उनकी थोड़ी-बहुत खबर लेनी ही थी मैंने।"

दोनों अन्दर पहुंचे। हवलदार से कहकर अनिल यादव ने लॉकअप का दरवाजा खुलवाया।

अन्दर चारों गुण्डे फर्श पर लेटे बुरी तरह कराह रहे थे।

अन्दर पहुंचकर मुण्डे ने एक की पसली पर ठोकर मारते हुये गुर्राकर कहा—

"अबे ओये, उठकर खड़ा हो जा वर्ना ठोकर मार-मारकर सारी पसलियां तोड़ डालूंगा...।"

"र...रुको, म...मुझे मत मारो...।" बाकी तीन गुण्डों की अपेक्षा वह कुछ ज्यादा ही मजबूत था। लेकिन था पहले से टूटा-फूटा। लड़के की ठोकर ने उसकी पहले से खस्ता हुई पड़ी हालत को और भी खस्ता कर दिया। वह कराहते हुये उठने के साथ घिघियाकर बोला—"म...मैं मर जाऊंगा। म...मैं...आह...उठता हूं। अ...अब मारना नहीं...आह...।"

जैसे ही वह गुण्डा उठकर खड़ा हुआ आशीर्वाद ने अपना दायां पैर उसके दायें तथा बिना जूते-चप्पल के पैर पर ठीक वैसे ही उठाकर मारा जैसे ओखली में पड़े मसाले को कूटने के लिये उस पर मूसल की चोट की जाती है।

"आईऽऽऽ...।" पैर की कई नसें फट गईं थीं और

जगह-जगह से मांस छिल गया था और तेजी से खून रिसने लगा था।

"सीधा खड़ा हो वरना दूसरा पैर भी फोड़ डालूंगा।" मानो आशीर्वाद नहीं उसके गले में बैठा कोई किंग-कोबरा इन्सानी भाषा में बोला।

उस गुण्डे ने हड़बड़ाकर अपना जख्मी पैर फर्श पर टिकाया तो मारे हड़बड़ाहट के अपने जिस्म का सन्तुलन बरकरार नहीं रख सका और औंधे मुंह गिर पड़ा।

मुण्डे ने पीछे से उसकी कमीज का कॉलर पकड़कर उठाया और उसका मुंह अपनी तरफ किया।

"बोल ओये, तेरा नाम क्या है?" जेब में हाथ डालते हुये मुण्डा गुर्राया।

"छ...छंगू...।" भूकम्प की चपेट में आई झोपड़ी की मानिन्द ही थर-थर कांपते हुये वह बोला।

"मुझे खत्म करना चाहते थे तुम लोग।" भष्म कर देने वाली-सी निगाहों से उसे घूरते हुये गुर्राकर बोला मुण्डा—"तुम्हारी मेरे से तो कोई दुश्मनी है नहीं। फिर किसके कहने पर तुम मेरी हत्या करने आये थे? बोल...!"

"ह...हमारे बॉस ने हमें तुम्हारी हत्या करने के लिये भेजा था।"

"तुम्हारे बॉस का नाम क्या है और वो कहां पाया जाता है?"

"ज...जफर सुपारी नाम है उसका। सर्कल रोड पर उसका ऑफिस है। कहने क...को तो वह प्रॉपर्टी डीलर का काम करता है—लेकिन अण्डरवर्ल्ड में सभी जानते हैं कि उसका अ...असली धंधा पैसे लेकर लोगों की हत्या करना है...और भी प्रापर्टी सम्बंधी बड़े-बड़े लफड़े वाले कामों को देखना है।"

"और उसका काम तुम लोग करते हो।" पूर्ववत् उसे भष्म कर देने वाली-सी निगाहों से घूरते हुये मानो अपना हरेक शब्द चबा-चबाकर, चिंगल-चिंगलकर, कुचल-कुचलकर ही बोला केशवपुत्र—"तुम लोग उसके पालतू गुण्डे हो। हरामजादे...आज मैं तेरे दोनों हाथों को इस तरह नकारा कर दूंगा कि उनसे तू भीख मांगने के सिवाय कोई काम नहीं ले सकेगा।"

कहने पर क्रोध में उफनते हुये मुण्डे ने उसकी दोनों हथेलियों

से अपनी हथेलियां चिपकाकर उसकी उंगलियों में अपनी उंगलियां आंकड़ों की ही तरह फंसाकर एक जोर का झटका दिया।

"कड़...कड़ाक...!"

छंगू हलाल होते बकरे की मानिन्द चीखने लगा।

मुण्डे ने उसके हाथों को छोड़ा तो उसके हाथ लुंज-पुंज होकर झूलने लगे और छंगू आतंक भरी निगाहों से अपने हाथों को देखने लगा।

उसके पश्चात् आशीर्वाद ने बाकी के तीनों गुण्डों को भी हाथों से एक तरह से नकारा ही कर दिया। उसके बाद उसने अनिल यादव से विदा ली और घर के लिये चल दिया।

❑❑❑

❑❑❑

प्राची और उसके दादा राजेश्वर शर्मा नाश्ता कर रहे थे। नाश्ते में उबले हुये अण्डे, ब्रेड मक्खन, दो तरह की नमकीन, बिस्कुट और पनीर के पकौड़े थे।

"क्या बात है प्राची...?" उबले हुये अण्डे का एक पीस जिसमें नमक, काला नमक तथा पिसे हुये जीरे का मसाला बुरका हुआ था उसे मुंह में डालने पर चबाते हुये तथा प्राची की तरफ नेत्र सिकोड़कर देखते हुये राजेश्वर शर्मा बोला—"तुम कुछ जल्दी में लगती हो। नाश्ता ऐसे फटाफट कर रही हो जैसे...।"

"जी हां दादाजी...!" राजेश्वर शर्मा की बात को बीच में ही शहीद कर टोस्ट-मक्खन को चबाते हुये साथ में चाय का घूंट भरने पर बोली प्राची—"आज मुझे कॉलेज जल्दी पहुंचना है। बायो की आज एक्स्ट्रा क्लास लगेगी।"

"इसका मतलब इस कॉलेज में तुम्हारा मन लग गया है। शिमला से तुम्हें यहां बुलाया तो मन में एक डर-सा था। सोच रहा था कि यदि तुम्हारा मन ना लगा तो फिर से तुम्हें शिमला भेजना पड़ेगा। अच्छा हुआ तुम्हारा मन यहां लग गया।"

"हां दादाजी...मेरा मन यहां और कॉलेज में भी पूरी तरह से लग चुका है।" चाय का अन्तिम घूंट भरने पर कप को प्लेट में रखने पर प्राची उठी और राजेश्वर शर्मा के पीछे पहुंचकर उसके गाल पर पप्पी करते हुये बोली—"अब मैं आपको छोड़कर कहीं नहीं जाने वाली। चलती हूं बॉय...।" कहने पर वह पलटी।

तभी कमरे में राजेश्वर शर्मा की स्टील फैक्ट्री के मैनेजर दिलीप गुप्ता ने प्रवेश किया। प्राची उसे पहचानती थी।

"नमस्ते अंकल।" उसे नमस्ते बोलकर वह कमरे से बाहर निकल गई।

"नमस्ते अंकल जी...।" राजेश्वर शर्मा के निकट पहुंचकर दिलीप ने उसे हाथ जोड़कर नमस्ते बुलाई तो नेपकिन से हाथ पोंछते हुये शर्मा बोला—"नमस्ते गुप्ता। बैठो और नाश्ता करो।"

"धन्यवाद अंकल। मैं घर से नाश्ता करके ही निकला हूं। रात आपने फोन किया था कि सुबह ऑफिस जाते समय मैं आपसे मिलकर जाऊं। शायद आप...।"

"हां गुप्ता। मैं जानना चाहता था कि आजकल क्या चल रहा है हमारी फैक्ट्री में? स्टील का भाव तो लगातार बढ़ रहा है—हमें कुछ फायदा हो रहा है या नहीं?"

"फायदा क्यों नहीं होगा अंकल? हमारे पास तो पुराने रेट की टनों स्टील है। मैंने अपने पुराने आर्डरों का ही माल तैयार कराकर भेजा है और नये आर्डर, नये रेट पर वो भी पुरानी पार्टियों को भेज रहा हूं। बाकी काम अभी ढीला कर रखा है। जैसे ही बाजार में स्टील के भाव स्थिर होंगे, मैं काम तेजी से करवाऊंगा।"

"गुड! तुम बहुत ही काबिल हो गुप्ता।" हाथी के दांत से बने बॉक्स में से हवाना का सिगार निकालते हुये बोला राजेश्वर शर्मा—"और भरोसेमन्द भी। हां, तुम्हारे एक बेटा भी तो है। बहुत पहले देखा था उसे। तब वो चारेक साल का था। अब तो बड़ा हो गया होगा। पढ़ाई चल रही होगी उसकी तो अभी।"

"जी अंकल...! नागपुर में अपनी मौसी के यहां है वो। अब मैं चलूं?"

"हां...हां...!" सिगार सुलगाते हुये बोला राजेश्वर तो दिलीप गुप्ता उसका अभिवादन करके वहां से चला गया।

❑❑❑

❑❑❑

सुबह दस बजे आशीर्वाद सर्कल रोड पर स्थित उस कमर्शियल कॉम्पलेक्स में जफर सुपारी के प्रापर्टी डीलर वाले ऑफिस पहुंचा तो उस समय ऑफिस में जफर सुपारी की जगह एक कम उम्र वाला लड़का था।

लड़का वहां नौकरी करता था और उसका नाम इकबाल अहमद था। आशीर्वाद ने उससे जफर सुपारी के बारे में पूछा तो उसने बताया कि वह अभी कोलाबा में अपने ऑफिस में ही है।

इकबाल ने उसे ये भी बताया कि कुछ देर पहले उसका फोन आया था कि आज वो ऑफिस नहीं आने वाला था।

उसके बाद मुण्डा कोलाबा में उस इमारत में पहुंचा जिसमें उसका ऑफिस था।

काफी बड़ी तथा पुरानी इमारत थी वह और उसमें किसी तरह का कोई ऑफिस वगैरह नहीं था। दरअसल जफर सुपारी को रात ही पता लग गया था कि उसके आदमी जिन्हें उसने आशीर्वाद को खत्म करने के लिये भेजा था वो ना केवल अपने मकसद में नाकामयाब रहे बल्कि उनमें से दो मुण्डे के हाथों मारे गये और चार हवालात में पहुंच चुके हैं। ये पता लगते ही वह समझ चुका था कि केशव का छोरा देर-सबेर उस तक पहुंचेगा जरूर। इसीलिये उसने स्कीम बनाई थी कि लड़के को वह ऐसी जगह बुलायेगा जहां उसको घेरकर मारा जा सके। फोन पर सुबह उसने अपने ऑफिस में काम करने वाले लड़के इकबाल को बताया था कि वो आज ऑफिस नहीं आयेगा। अपने दूसरे ऑफिस में रहेगा और दूसरे ऑफिस के पते के रूप में उसने उस इमारत का पता बताया था जहां कि आप सबका चहेता जफर सुपारी की तलाश में पहुंचा था।

इमारत के मुख्यद्वार, जो कि लकड़ी का था, के पास पहुंचकर आशीर्वाद ने एक साइड पर लगा कालबेल का बटन पुश किया और जेब से चने के चार दाने निकालकर उन्हें मुंह में डालने पर चबाते हुये दरवाजा खुलने की प्रतीक्षा करने लगा।

दो मिनट की प्रतीक्षा के बाद दरवाजा खुला।

दरवाजा खोलने वाला छः फुट से ऊंचा तथा कसरती जिस्म वाला काला-कलूटा तथा शक्ल से ही बेरहम लगने वाला शख्स था।

"जफर सुपारी है?" चने चबाते हुये सपाट से लहजे में बोला मुण्डा।

"है!" लड़के को वह ऐसी निगाहों से देख रहा था मानो उसके सामने लड़का ना होकर कोई मच्छर-मक्खी हो—"पन तेरे कू बॉस से क्या काम है?"

"ये मैं तेरे बॉस को ही बताऊंगा।" उस काले ऊंट को धक्का देकर एक ओर हटाने पर दरवाजे के अन्दर प्रविष्ट होते हुये रेगमाल से भी ज्यादा खुरदुरे लहजे में बोला आशीर्वाद, "अन्दर किधर मिलेगा वो?"

"ठहर साले...अभी अपुन तेरे कू बताता है कि बॉस किदर

है।" वह गुर्राते हुये लड़के की तरफ झपटा—"तू साला कल का लड़का बाबू भाई को धक्का दियेला। अपुन तेरा कचूमर निकालकर रख देगा।"

"लेकिन जैसे ही वह लड़के के पास पहुंचा लड़के का घूंसा उसके चेहरे से टकराया तो वह चकराकर पीछे जा गिरा।

चेहरे पर खूंखार किस्म के भाव लिये लड़का उसके पास पहुंचा और उसकी पसलियों पर ठोकर जड़ने पर उस पर झुककर किंग-कोबरे की मानिन्द फुंफकारा—"बोल, तेरा बॉस किधर मिलेगा? बोल नहीं तो तेरे चेहरे का भुर्ता बना दूंगा।"

थोड़ी-सी मार ने ही बाबू भाई के कस-बल ढीले कर दिये।

"व...वो...।" चेहरे पर आतंक के भाव लिये वह एक तरफ इशारा करते हुये बोला—"उस तरफ जो दरवाजा दिख रहा है उसके अन्दर उसका ऑफिस है।"

"हूं!" लड़के ने एक घूंसा उसकी कनपटी पर जड़ा तो वह बेहोश हो गया।

❑❑❑
❑❑❑

दरवाजे को अन्दर ठेलकर आशीर्वाद ने अन्दर झांका तो उसे तुरन्त गड़बड़ का एहसास हो गया।

अन्दर कोई ऑफिस नहीं था। बहुत बड़ा हॉल था। किसी बड़ी कम्पनी के गोदाम जैसा।

वैसे ही उसमें जगह-जगह लकड़ी के बड़े-बड़े बॉक्सों के ढेर तथा कई जगह लोहे व कई जगह प्लास्टिक के ड्रमों के पहाड़ से लगे हुये थे।

हां, इन्सान नाम की कोई चीज वहां लड़के को नजर नहीं आ रही थी।

गड़बड़ का एहसास होने पर भी लड़का कुटुर-कुटुर करते हुये अन्दर पहुंचा।

गोदाम में जहां पिन ड्रॉप साइलेन्स था वहां लड़के के कदमों की आवाज ऐसे गूंज रही थी मानो वहां रुक-रुककर नगाड़ा बजा रहा हो। उसके अलावा कुटुर-कुटुर की गूंजती आवाज हॉरर फिल्मों के बैक ग्राउण्ड म्यूजिक की तरह प्रतीत हो रही थी।

फिर मुण्डा जैसे ही गोदाम के बीचों-बीच पहुंचा एक साथ कई गुण्डे वहां रखी पेटियां तथा ड्रमों की आड़ से निकलकर उसके सामने आ डटे।

वे सारे गुण्डे चाकू, मोटर साइकल की चेन, हॉकी, चापर, कुल्हाड़ी जैसे हथियारों से लैस थे।

हरेक के चेहरे पर खतरनाक किस्म के भाव थे।

"एक, दो, तीन, चार...पन्द्रह, सोलह, उन्नीस...बीस...।" चेहरे पर उन गुण्डों का मखौल उड़ाने जैसे भाव लिये गिनती गिनते हुये बोला आशीर्वाद—"बस बीस...और नहीं थे तुम्हारे हरामी बॉस के पास किराये के टट्टू...तुम लोगों को ढेर करने में मुझे बीस मिनट लगेंगे। एक मिनट एक के लिये लगना है। उसके बाद क्या फिल्म खत्म हो जायेगी? इतनी छोटी फिल्म में दर्शकों का मनोरंजन कैसे होगा?"

तभी खट...खट करती किसी के चलकर नजदीक आने की आवाज गूंजने लगी। लड़का शान्त होकर आवाज वाली दिशा में देखने लगा।

ड्रमों की आड़ से निकलकर जफर सुपारी नमूदार हुआ।

"तो तू है जफर सुपारी...।" लड़का नेत्र सिकोड़कर उसकी तरफ देखते हुये बोला—"तूने मेरी हत्या की सुपारी ली है। अच्छा हुआ तू खुद सामने आ गया। थोड़ी फिल्म बढ़ गई और थोड़ा मेरा टाइम भी बच गया। वरना तेरे किसी आदमी को ठोंककर तेरा पता पूछना पड़ता। फिर तुझे ढूंढना पड़ता।"

"चल बे ओये छिपकली के अण्डे...! तू अपने आपको समझता क्या है हलकट?" लड़के को खूनी नजरों से घूरते हुये गुर्राकर बोला जफर सुपारी—"तू बीजापुर की तोप है साला...? तू जफर सुपारी को ढूंढेगा। साला अपुन हीच तेरे कू फिट करने के वास्ते इदर बुलाया। अपुन का चेला लोग मामूली बीडू नेईच। सबके सब एक से बढ़कर एक डैंजरेस हैं। इनमें कोई भीच ऐसा नेई है जिसने कम-से-कम छः मर्डर नेई कियेला है। तू अब्बी बोला बीस मिनट की फिल्म है ये। नेई ओये पण्डित ये बीस मिनट की फिल्म नेई दो मिनट का ट्रेलर है। दो मिनट बाद तू इदर पड़ा सूख रहेला होयेंगा। जैकी...मदन...कालिया...पिंटू, काट पीट डालो इस हरामीच को...।"

"सक...सक...सक...!"

चालीस वर्षीय ठिगना जिसके चेहरे पर चीनियों जैसी ही बकराकट दाढ़ी थी, अपने हाथ में पकड़ी मोटर साइकल की चेन घुमाने लगा।

चाकू वाले चाकू को हवा में लहराते हुये तथा लोहे की रॉड

वाले गुण्डे रॉड को वार करने वाले अन्दाज में उठाये हुये लड़के की तरफ बढ़े।

हरेक गुण्डे के चेहरे पर बेहद क्रूर किस्म के भाव थे।

जबकि बीच में खड़े नीलम-सी नीली आंखों वाले लड़के के चेहरे पर जमानेभर की मासूमियत बिखरी पड़ी थी।

वो उन गुण्डों की तरफ ऐसे देख रहा था जैसे वो खतरनाक किस्म के हथियार लेकर उसकी हत्या करने के इरादे से नहीं, फूल मालायें लेकर उसके गले में डालने के लिये उसकी तरफ बढ़ रहे थे।

कम्बख्त के चेहरे पर ना तो खौफ का कोई लक्षण था...ना ही माथे पर एक भी शिकन।

❑❑❑
❑❑❑

पहला वार बकराकट दाढ़ी वाले ठिगने की तरफ से हुआ। उसने मोटर साइकल की चेन का प्रहार लड़के पर करना चाहा तो लड़के ने इस साधारण ढंग से हवा में लपका मानो घर के पिछवाड़े में अपने छोटे भाई के साथ क्रिकेट खेल रहा हो। उसने जैसे ही चेन लपकी उस पर चाकू का प्रहार किया गया—और मुण्डे ने उस प्रहार को चेन आगे करके रोका और साथ ही चाकू वाले के पेट पर लात मारी तो वह गैस भरे गुब्बारे की मानिन्द ही उड़ते हुये पीछे पड़ी पेटियों से टकराया और एक के ऊपर एक करके रखी सारी पेटियां उसके ऊपर आ गिरीं।

इधर उसी समय एक गुण्डे ने कुल्हाड़ी से मुण्डे के सिर के दो फाड़ करने चाहे लेकिन मुण्डा तनिक एक ओर हटा और उसने हाथ में पकड़ी चेन को एक जोरदार झटका दिया।

परिणामस्वरूप!

बकराकट दाढ़ी वाला ठिगना गुण्डा कुल्हाड़ी की सीध में आ गया।

"भचाक!"

कुल्हाड़ी के तेज फल ने उसका सिर गर्दन तक दो हिस्सों में बांट दिया।

लेकिन उसके प्राण तुरन्त ही नहीं निकले। कुछ देर तक वह गैलन भर शराब पीये शराबी की मानिन्द इधर-उधर लहराता रहा।

उसके बाद उसके प्राण उसके जिस्म रूपी पिंजरे से बाहर

निकले और वह कटे वृक्ष की मानिन्द जमीन पर गिरा।

उसकी चेन अब छः फुट के नेवले के हाथ में थी और बाकी के गुण्डों पर कहर बनी हुई थी।

चेन "सड़ाक" करके गुण्डे के चेहरे से टकराई तो उसने अपने हाथ में पकड़ा चापर छोड़ा और दायें हाथ से चेहरे को ढांपकर एक ओर भागा।

दूसरे एक अन्य गुण्डे की कनपटी पर मुण्डे की जूते की नोक पड़ी तो वह उछलकर दूर जा गिरा और कुछ देर तक जमीन पर छिपकली की कटी पूंछ की मानिन्द तड़फने के बाद हमेशा-हमेशा के लिये शान्त हो गया।

मुण्डे का चेन वाला हाथ ही नहीं उसके पैर भी तेजी से काम कर रहे थे।

गुण्डों की चीखों से वो गोदाम थर्रा रहा था।

बाजी को हाथ से निकलते देख जफर सुपारी एक ओर भागते हुये चीखा—

"टाइसन...मोसूना...बाली...गोलियां बरसाने का...हथगोले फेंकने का...। यह हरामी पण्डित की औलाद बचकर यहां से नेई जानी चाहिये। खल्लास कर डालो साले को।"

❑❑❑
❑❑❑

उस दिन प्राची शर्मा समय से पहले ही कॉलेज सिर्फ इसीलिये पहुंची थी कि कदाचित आशीर्वाद उसे अकेला दिखे तो उससे हाय-हैल्लो तो कर ही लेगी। लेकिन उसकी उम्मीदों पर घड़ों पानी तब गिरा जबकि फर्स्ट पीरियड शुरू हो जाने पर भी वो नहीं पहुंचा।

मूड खराब होकर रह गया प्राची का और उसने अपना पहला पीरियड अटैण्ड ही नहीं किया। लेकिन दूसरे पीरियड में वह क्लास में थी। क्लास में थी क्या, क्लास में होते हुये भी वह मानो क्लास में नहीं थी। सर कब क्लास में आये? क्या लेक्चर दिया? कब चले गये? उसे पता ही नहीं लगा। वो तो बस लड़के के ख्यालों में गुम क्लास में बैठी रही।

"क्या बात है मेरी बन्नो?" प्रोफेसर के क्लास से बाहर जाने के बाद उसके बगल में बैठी प्रियंका वर्मा शरारत से उसके वक्ष पर कोहनी मारते हुये बोली—"कहां खोई हुई हो? किधर ध्यान है तुम्हारा?"

"क...कहीं तो नहीं।" मानो कोई चोर चोरी करते हुये

केशव पण्डित के अब तक प्रकाशित 121 उपन्यास

1. सुहाग की हत्या
2. हत्यारा जज
3. खून से सनी वर्दी
4. कानून की दहशत
5. कानून किसी का बाप नहीं
6. सोलह साल का हिटलर
7. कब मिटेगी गुण्डागर्दी
8. नसीब वाला गुण्डा
9. डण्डे की दुनिया
10. केशव का चक्रव्यूह
11. गुण्डों की जंग
12. हिंसा भड़क उठी
13. वर्दी में भरा बारूद
14. मां टकरायेगी कानून से
15. दिमाग का जादूगर
16. धमाका करेगी रोटी
17. लाठी की आवाज
18. जंग का ऐलान
19. तबाही का तूफान
20. जज खड़ा कटहरे में
21. कोर्ट रूम
22. टाइम बम
23. टुकड़े कर दो कानून के
24. लाश पर सजा तिरंगा
25. **कानून की लोमड़ी**
26. मुंहतोड़ जवाब
27. खून बहा दे लाल मेरे
28. शेर की औलाद
29. मां करोड़ों हैं लाल तेरे
30. दुनिया मेरे कदमों में
31. हिटलर का अवतार
32. मत बेचो कानून को
33. मकड़ी का जाल
34. जिसकी लाठी उसकी भैंस
35. यमराज
36. तबाही मचायेगी विधवा
37. नाच नचायेगा मदारी
38. कानून का खिलाड़ी
39. तिगनी का नाच
40. होली खेलेगा तिरंगा
41. छक्के छुड़ा दूंगा
42. दुल्हन लड़ेगी कानून से
43. खादी में लिपटा माफिया
44. जूता करेगा राज
45. आंचल में है बारूद
46. डाक बंगला
47. मां ललकारे शैतान को
48. चींटी लड़ेगी हाथी से
49. पगली माई बोले जयहिन्द
50. **तू लोमड़ी मैं चाणक्य**
51. मास्टर माइंड
52. दस दिन का सिकन्दर
53. लड़ेगा भाई भगवान से
54. 48 इंच का हिटलर
55. दिमाग की जंग
56. शेर-चीते की लड़ाई
57. रिंग मास्टर
58. ढाई इंच का बाजीगर
59. चूहे-बिल्ली का खेल
60. बन जा बेटा भस्मासुर
61. अन्धा वकील गूंगा गवाह
62. गंगा बहेगी अदालत में
63. ढाई आने का वकील
64. कानून का जोकर
65. बच्चा-बच्चा है हिन्दुस्तानी
66. बावन गज का बौना
67. आया ऊं पहाड़ के नीचे
68. जूता ऊंचा रहे हमारा
69. चवन्नी का हाथी
70. डकैती एक रुपये की
71. आंटी बड़ी शैतान है
72. गुरु-चेले की जंग
73. कानून की दुकान
74. तू पण्डित मैं कसाई
75. बब्बर शेर
76. चकमा
77. सास-बहू की जंग
78. ये देश है वीर जवानों का
79. मेरा रंग दे बसंती चोला
80. काला कातिल गोरी लाश
81. पचास करोड़ का भिखारी
82. सौ सुनार की एक लौहार की
83. छूमंतर
84. मर्डर मिस्ट्री
85. बालम का चक्रव्यूह
86. झटका 440 वोल्ट का
87. मुर्दा बड़ा बदमाश है
88. कब्ज़ा
89. बारात जायेगी पाकिस्तान
90. किन्नर बादशाह
91. हिमालय से ऊँचा है कानून
92. कातिल मिलेगा माचिस में
93. अन्धा नहीं है कानून
94. दीपावली मनायेंगे सरहद पर
95. दिमाग घूम जायेगा
96. फंस गया जादूगर
97. मर्डर स्पेशलिस्ट
98. तू सेर मैं सवा सेर
99. जिसका डंडा उसका कानून
100. **केशव की शादी**
101. अर्जुन एक कौरव 101
102. कंकर का जवाब गोली
103. दुल्हन एक रुपये की
104. देख तमाशा नागिन का
105. वो लाश खाने वाला
106. ये शहर है चूहों का
107. डेढ़ पसली का रावण
108. चिराग लड़ेगा तूफान से
109. सिकन्दर हारेगा दिमाग से
110. मेरी बीवी झांसी की रानी
111. बन जाओ सजना तानाशाह
112. शंख बजाऊंगा हाथी नचाऊंगा
113. कब आओगे कृष्ण कन्हैया
114. शेर बोलेगा म्याऊं-म्याऊं
115. कश्मीर नहीं कटोरा मिलेगा
116. बच्चों की बनेगी बटालियन
117. शादी करूंगी यमराज से
118. चिड़िया लड़ाऊंगा बाज से
119. पुतला नहीं रावण जलेगा
120. तलवार उठा लो गांधी जी
121. सुदर्शन चक्र है दिमाग मेरा

पकड़ा गया हो, कुछ इसी तरह हड़बड़ाई प्राची। फिर उससे नजरें चुराते हुये-सी बोली—"व...वो तो बस ऐसे ही सिर में हल्का दर्द-सा हो रहा था। सोच रही थी कि घर चली जाऊं...।"

"अरी मेरी जान...क्यों बनके दिखा रही है?" चेहरे पर शरारत के भाव लिये उसकी तरफ देखते हुये प्रियंका फुसफुसाकर बोली—"दाई से भी भला कहीं पेट छिपता है।"

"क...क्या मतलब? त...तू कहना क्या चाहती है प्रियंका?" प्राची और भी ज्यादा बौखला उठी और प्रियंका की ओर देखते हुये दबे स्वर में बोली।

"यही कि तेरे सिर-विर में कहीं कोई दर्द नहीं है। तुझे तेरे हीरो का इन्तजार था और शायद वो नहीं आया तो तेरा मूड अपसेट हो गया है। क्योंकि जब मैं कॉलेज में आई तो मैंने तुझे लॉबी में खड़े और कॉलेज के गेट की ओर देखते पाया था। तब तुमने भी जरूर मुझे देखा होगा। लेकिन मुझसे नजरें चुरा लीं। पहले पीरियड से पहले ही आ गई थी तू—लेकिन क्लास नहीं अटेण्ड की। उसी का इन्तजार करती रही होगी। नहीं आया तो क्लास में आ गई। लेकिन क्लास में आने पर भी दिमाग उसी की तरफ लगा रहा। मेरी तरफ देखा तक नहीं। मैंने हैलो-हाय भी की लेकिन तुमने सुना तक नहीं। सर जी लेक्चर दे रहे थे, तब भी मैंने मार्क किया कि तुम्हारा ध्यान लेक्चर की तरफ था ही नहीं। अगर मैं गलत हूं तो बता, सर जी ने आज क्या पढ़ाया? क्या समझाया?"

"मुझे नहीं पता। मैंने कहा ना कि सिर में दर्द होने से...।"

"चल...मैं समझ गई तूने आज झूठ बोलने का व्रत रखा हुआ है। सच बोलकर व्रत थोड़े खराब करेगी। वैसे लाख रुपये की बात ये है कि मेरा आइडिया गलत नहीं है...।"

"प्रियंका की बच्ची।" प्रियंका को कच्चा चबा जाने वाली-सी निगाहों से घूरते हुये प्राची दांत पीसकर बोली—"अब तू पिटेगी मेरे हाथों से...।"

"यानि मैं गलत हूं...।" गम्भीरता की मुख मुद्रा में आते हुये बोली प्रियंका—"और तू सही...?"

"करेक्ट...!"

"तो फिर लगी शर्त।"

"कैसी शर्त?" प्राची के चेहरे पर असमंजस के भाव नजर आये।

"यही कि अगर आशीर्वाद कॉलेज आया होगा तो मैं गलत।

मेरी ये थ्योरी गलत कि आशीर्वाद के कॉलेज न आने की वजह से तेरा मूड खराब हुआ है। और यहां मैं शर्त हारी। लेकिन अगर वो कॉलेज नहीं आया तो तू गलत और तू शर्त हारेगी। बोल, लगी शर्त सौ-सौ रुपये की?"

"लेकिन जब मुझे मालूम ही नहीं कि वो...।"

"तू शर्त तो लगा।" प्राची की बात को बीच में ही शहीद करते हुये बोली प्रियंका—"आगे उसकी क्लास में चलकर देखते हैं—वो आया होगा तो सौ का पत्ता तेरा खरा।"

"चल...!" सीट से उठते हुये बोली प्राची—"नहीं आया होगा तो सौ रुपये मैं तुझे दूंगी।"

❑❑❑

❑❑❑

"रेट...रेट...रेट...टा...टा...टा।"

चारों तरफ लड़के पर गोलियां चलाई जाने लगीं।

गुण्डों ने लकड़ी के बॉक्सों तथा ड्रमों में बने झरोखे से गनों की नालों का रुख लड़के की तरफ करके उस पर गोलियां चलानी शुरू की थी।

लेकिन शाओलीन का वह शिष्य तो मानो चमत्कारी था। गोलियों की आवाज सुनते ही पहले तो उसका जिस्म रॉकेट की मानिन्द ऊपर उठा और फिर हवा में कलाबाजियां खाते हुये ड्रमों की ओट में छिपकर फायरिंग करते गुण्डे के पीछे गिरा।

और गिरते ही उसने गुण्डे के नितम्बों पर लात मारी तो मुंह के बल ड्रमों के बीच घुसता चला गया।

इसी के साथ उसके ऊपर एक के बाद एक करके कई ड्रम आ गिरे और उसकी हड्डी-पसली का चूरा बनकर रह गया।

तभी एक गुण्डे ने लड़के की तरफ हैण्ड ग्रेनेड उछाला।

लड़का पूरी तरह से चौकन्ना था।

गेंद जैसी वस्तु को अपनी तरफ आते देख वह फुटबाल के खिलाड़ी की तरह हवा में उछला और हवा में ग्रेनेड को हथेली से प्रहार करके वापस उसी गुण्डे की तरफ कर दिया जिसने उसे फेंका था।

"भड़ाम...!"

धमाके की आवाज के बीच उस गुण्डे के मुंह से निकलने वाली चीखें दबकर रह गईं।

केशवपुत्र ने देखा कि जफर सुपारी दरवाजे के निकट पहुंच

चुका है तो उसने उसकी तरफ पहले तो दौड़ लगाई—

फिर चीते जैसी छलांग लगाकर उसकी कमर को दबोचा—जिससे भागते हुये जफर सुपारी का सन्तुलन बिगड़ा और पहले वह मुंह के बल जमीन पर गिरा, उसके बाद मुण्डा उसके ऊपर गिरा।

"भागता कहां है उल्लू की दुम?" उठने पर पीछे से उसकी कमीज का कॉलर पकड़कर उसे उठाकर उसके चेहरे पर अपने सिर की टक्कर मारते हुये गुर्राया केशवपुत्र—"पैसे के बदले लोगों की जान का सौदा करने वाले, अपनी मौत की झलक देखते ही जिस्म का सारा खून पानी हो गया? दुम दबाकर भागने जा रहा था। लेकिन आज तेरी लाइफ की स्टोरी का एण्ड होने वाला है। मौत तेरे दरवाजे पर दस्तक दे चुकी है। कैसे भी करके बच नहीं सकेगा...।"

चेहरे पर पड़ी मुण्डे के सिर की टक्कर से बिलबिला ही तो उठा जफर सुपारी। कुछ क्षणों तक उसकी ऊपर की सांस ऊपर और नीचे की सांस नीचे ही थमी रही।

आंखों के सामने गहरी काली धुन्ध की मोटी परत छा गई तो जेहन में समूचा ब्रह्माण्ड घूमने लगा।

पलभर तक वह अपने हाथों से सिर थामें शराबियों की मानिन्द इधर-उधर चकराता रहा। फिर उसकी थमी हुई सांसें गतिमान हुई।

होश थोड़ा ठिकाने आये तो वह एड़ी से लेकर सिर तक का जोर लगाकर चीखा—"हरामजादोंऽऽऽ नमकहरामोंऽऽ कहां मर गयेले हो सालों? आकर इस हरामजादे को पकड़ने का...नेई तो अपुन तुम सबको खल्लास कर डालेगा...आह!"

उसक बात पूरी होने से पहले ही लड़के का घूंसा उसकी कनपटी पर पड़ा और वह चकराकर जमीन पर जा गिरा।

❑❑❑

❑❑❑

जफर सुपारी को बेहोशी की नींद सुला देने के बाद लड़के ने जेब में हाथ डाला। चने के दो दाने निकालकर मुंह में सरकाये ही थे कि तभी हाथ में गन लिये एक गुण्डा दौड़ते हुये उसके सामने आया।

लेकिन इससे पहले कि वह लड़के पर फायरिंग शुरू करे, लड़के ने उछलकर फ्लाइंग किक उसके सीने पर मारी तो वह मुंह

से 'हुच्च' की आवाज के साथ खून की पिचकारी छोड़ते हुये पीछे जा गिरा।

गिरा मुण्डा भी, लेकिन गिरते ही दबाकर छोड़े गये स्प्रिंग की मानिन्द ही उछलकर खड़ा हुआ और लपककर उस गुण्डे की गिरी गन को उठाने के बाद छलांग लगाकर वह स्थान छोड़ दिया।

अगर वो ऐसा ना करता या वो तमाम एक्शन करने में एक सेकेंड के सौवें हिस्से के समय की भी देरी कर बैठता तो उसका जिस्म आटा छानने वाली छननी बन चुका होता।

वो तीन लोग थे जो दौड़ते हुये वहां पहुंचे थे और लड़के को निशाना बना गोलियां चलाना शुरू कर दिया था।

अपना स्थान छोड़ देने पर लड़के ने अपने प्राण बचाने के साथ ही जमीन पर खुद को गिराकर पलटते हुये उन गुण्डों पर फायरिंग की तो वे तीनों चीखते हुये तथा उछल-उछलकर पीछे को उलटते चले गये।

उन तीनों की जीवन लीला समाप्त करने पर नीलम-सी नीली आंखों वाला अभी उठा ही था कि उसे अपनी तरफ आता हैण्डग्रेनेड दिखा तो उसने उस पर गोली चलाकर हवा में ही फोड़ने के साथ ही अपना स्थान बदल दिया।

उसके बाद उस दो पैरों वाले बम ने ढूंढ-ढूंढकर एक-एक गुण्डे को मौत की नींद सुलाना शुरू किया और अपने उस अभियान को तब तक जारी रखा जब तक कि उसने गोदाम में मौजूद आखिरी और घायल पड़े गुण्डे तक को मौत के घाट नहीं उतार दिया।

उसके बाद वह जफर सुपारी के पास पहुंचा और उसकी कनपटी पर थोड़ी मसाज-सी करके उसे होश में लाया। जेब से चने के दाने निकालकर मुंह में सरकाने पर उन्हें दांतों से घायल कर कुछ ऐसी निगाहों से जफर सुपारी की तरफ देखा कि मारे खौफ के वह अपनी पैन्ट गीली कर बैठा।

"हरामी...तो ये है तेरी असलियत।" उसके कूल्हे पर ठोकर जमाते हुये नफरत भरे लहजे में बोला आशीर्वाद—"नाम है जफर सुपारी...और दिल है चूहे जैसा। बोल कुत्ते के पिल्ले...तुझे मेरी हत्या की सुपारी किसने दी?"

"ज...जोरावर सिंह ने...।" वो आतंकित भाव से बोला—"वो श...शाकाल का बीड़ू है। पहले अपुन उसे नहीं पहचानता था। ल...लेकिन अपुन के ऑफिस में आकर अपुन के साथ जिस अन्दाज में बात कियेला उसकी वजह से अपुन उसके

बारे में सोचने पर मजबूर हो गया। अपुन के ऑफिस एक गुप्त कैमरा फिट है जो वहां आने वाले हर आदमी की ना केवल तस्वीर खींचता है बल्कि वो सब बातें रिकॉर्ड कर लेता है जो हमारे बीच होती हैं। जोरावर सिंह की फोटो बनवाकर अपुन अण्डरवर्ल्ड के लोगों में पूछताछ कराई तो ही पता लगा कि उसका नाम जोरावर सिंह है और वो मुम्बई ही नहीं अक्खा इण्डिया के डॉन का राइट हैण्ड है। अपुन को माफ करने का बाप। अपुन से गलती हो गयेली जो...।

"माफी बाद में मांगना हरामी की औलाद।" उसकी बात पूरी होने से पहले ही गुर्राकर बोला आशीर्वाद पण्डित—"पहले ये बता, शाकाल के विषय में क्या जानता है?"

"ब...बस इतना हीच कि वो बहुत ही डेंजरेस है। उसका नेटवर्क अक्खा इंडिया में है। मुम्बई में इशारा करता है तो कलकत्ता में तूफान आ जाता है।"

"उसकी तारीफ में गजल गाना बन्द कर ओये ढेकची के। मुझे उसके अड्डे के बारे में...उस तक पहुंचने के बारे में जानकारी चाहिये।"

"अ...अपुन को ना तो उसके अड्डे के बारे में पता है और ना ही अपुन त...तेरे कू उस तक पहुंचने का रास्ता बता सकता है। अपुन को मालूम हीच नेई तो...।"

"तू झूठ बोलता है।" लड़का नहीं इस बार मानो उसके कण्ठ में बैठा कोई किंग कोबरा ही बोला हो—वो भी इन्सानी जुबान में—"पक्का हरामी जो ठहरा। लेकिन ठहर मैं अभी तेरे हरामीपन का परफेक्ट इलाज करता हूं।" कहने पर उसने अपनी तर्जनी उंगली को शीशम की लड़की की मानिन्द ही सख्त किया और जफर सुपारी की दाईं आंख में बर्फ तोड़ने वाले सुये की मानिन्द धोंप दिया।

जफर सुपारी हलाल होते बकरे की मानिन्द चींखते हुये ठण्डे पानी से निकालकर गर्म रेत में फेंकी गई मछली की मानिन्द तड़फने...छटपटाने लगा।

मुण्डे ने उसके सीने पर अपना घुटना टिकाकर छटपटाहट को रोका और उसकी इकलौती आंख में झांकते हुये उससे फिर से शाकाल का पता पूछा। जवाब में ना मिला तो मुण्डे ने उसकी दूसरी आंख को भी फोड़ डाला।

फिर उससे शाकाल का पता पूछा, लेकिन जब वो शाकाल

का पता जानता ही नहीं था तो भला उसे बताता कैसे? और जब आशीर्वाद को इस बात का एहसास हो गया कि वो शाकाल का पता नहीं जानता तो उसने अपनी शीशम की लकड़ी सी सख्त हुई पड़ी रक्त रंजित उंगली को उसकी कनपटी में घुसेड़ दिया।

मुण्डे के घुटने के नीचे दबा जफर सुपारी का जिस्म दो पलों तक तो गर्दन से काट दिये गये मुर्गे की मानिन्द फड़फड़ाता रहा। फिर उसकी गर्दन एक ओर लुढ़की तथा उसका जिस्म शान्त हो गया।

मुण्डे ने अपनी रक्त से सनी उंगली उसकी कमीज से पोंछी और फिर उठ खड़ा हुआ।

❑❑❑

❑❑❑

प्राची और प्रियंका दोनों पहले तो आशीर्वाद की तलाश में उसकी क्लास में गये।

वहां आशीर्वाद अथवा उसके दोस्तों में से कोई ना दिखा तो दोनों कैन्टीन पहुंचीं। वहां भी कोई ना दिखा तो दोनों कॉलेज की इमारत के पीछे की ओर पहुंचीं। वहां आशीर्वाद तो नहीं आशीर्वाद के पांचों दोस्त, टीटू, कमलकान्त, विशाखा, काजल तथा अविनीत हरी-हरी घास पर बैठे आपस में हंसी-मजाक करते दिख गये।

"देख, मैं शर्त जीत गई।" मेहंदी की बाड़ की ओट से आशीर्वाद के दोस्तों की ओर देखते हुये बोली प्रियंका वर्मा—"तेरा हीरो यहां नहीं है। कॉलेज आया होता तो यहीं, अपने दोस्तों के साथ होता। अब तू शराफत से अपनी हार कबूल कर और सौ का पत्ता ढीला कर।"

"तू सौ ले ले। लेकिन ये सच नहीं है कि आशीर्वाद की वजह से मैं अपसेट हूं। वाकई मेरे सिर में दर्द है। और अब मैं घर जा रही हूं...।"

"पक्की बात है कि तू घर जा रही है?" प्राची की आंखों में झांकते हुये बोली प्रियंका—"ये भी सच है कि तेरा मूड तेरे हीरो के कॉलेज न आने की वजह से नहीं बल्कि सिर में दर्द होने की वजह से खराब है...?"

"हां भई, हां।" मानो झल्लाकर बोली प्राची—"कितनी बार तो बता चुकी हूं। अब तू कहे तो ये बात स्टाम्प पेपर पर लिखकर दूं।"

"ओके मान ली मैंने तेरी बात।" ठण्डी आह-सी भरते हुये बोली प्रियंका—"अपना सौ का पत्ता अपने पास रख। चल मैं भी घर चलती हूं। नेहा आई नहीं, तू वापस जा रही है। मैंने दो पीरियड अटैण्ड कर लिये। अब मेरा भी यहां मन नहीं लगने वाला। वैसे उधर देख...तेरा हीरो आ रहा है।"

प्राची की निगाहों ने प्रियंका की निगाहों का अनुसरण किया।

सच में ही आशीर्वाद उसी तरफ आ रहा था।

मुण्डे को देख प्राची का दिल फ्रन्टियर मेल की रफ्तार से धड़कने लगा।

"चल, अब उधर क्या देख रही है? तेरे तो सिर में दर्द हो रहा है। घर नहीं चलना क्या?"

"न...नहीं जाना मुझे घर।" अपलक लड़के की तरफ देखते हुये फुसफुसाकर बोली—"तुझे जाना है तो जा।"

"क्यों अब सिरदर्द ठीक हो गया?" उसका मखौल उड़ाते हुये बोली प्रियंका—"अब भी कहेगी कि इसी की वजह से तेरा मूड उखड़ा हुआ नहीं था? अब भी शर्त के पैसे देने में आना-कानी करेगी?"

"ले पैसे की भूखी चुड़ैल...।" जेब से निकालकर सौ का नोट उसकी हथेली पर पटकती हुई दांत पीसकर बोली प्राची—"सौ का नोट ले और दफा हो जा।"

"जाती हूं मेरी जान!" सौ का नोट जेब में डालने पर प्राची के कचौरियों सी फूले गाल पर चुटकी भरते हुये बोली प्रियंका—"लेकिन अभी घर नहीं जा रही। कैन्टीन में हूं—फुर्सत मिले तो आ जाना। तेरा सौ का नोट अकेले नहीं हजम करूंगी। इसमें से तुझे भी माल खिलाऊंगी। हैल्लो आशीर्वाद...।"

"हैल्लो...।"

"हैल्लो...।"

उनकी बगल से होकर गुजरते नीलम-सी नीली आंखों वाले मुण्डे ने प्रियंका के हैल्लो कहने पर उसे और उसके साथ खड़ी प्राची को मुस्कराकर हैल्लो कहा और आगे बढ़ गया।

❑❑❑

❑❑❑

प्राची के दिल को एक घूंसा-सा लगा।

लड़के का वह रूखा-सा व्यवहार उसे पसन्द नहीं आया।

हालांकि लड़के ने उसे होटल के कमरे में समझा दिया था कि कॉलेज में अभी वह उसके साथ दोस्ताना व्यवहार नहीं कर सकेगा। इसके बाद भी उसे अपने मनमीत से ऐसे व्यवहार की अपेक्षा नहीं थी। हैल्लो-हाय करने के अलावा वह दो मिनट उसके पास रुक जाता तो कौन-सी आफत आ जाती।

कुछ ऐसी ही सोच थी प्राची की। लेकिन वो बेचारी क्या जाने कि किसी धूर्त ने उसे बहुत ही बुरी तरह से छला था। ना लड़के का व्यवहार गलत था ना वह गलत थी। गलत था तो कोई और ही।

कौन था वह?

"अब यही ठूंठ की तरह खड़ी रहेगी या मेरे साथ कैन्टीन चलेगी?" उसे बुत बनी खड़ी देख प्रियंका बोली।

"तू जा...। मैं उनके पास जाती हूं।" कहने पर प्राची आशीर्वाद एण्ड पार्टी की ओर बढ़ चली।

"हैल्लो गाइज...।" उनके निकट पहुंचने पर वह बोली तो सबने हैल्लो बोलकर उसका अभिवादन किया और उसे बैठने को कहा।

"और सुनाईये भाभी...म...मेरा मतलब प्राची?" शरारत से पहले उसे भाभी कहने जा रहा कमलकान्त बीच में हड़बड़ाने का नाटक करते हुये बोला—"क्या हालचाल हैं आपके?"

"फाइन...थैंक्यू।" मुस्कराकर बोली प्राची—"तुम लोगों को यहां देखा तो मैं भी चली आई। दरअसल अब मेरे दो पीरियड खाली हैं। मेरे तीन में से दो दोस्त आई नहीं...एक आई है—तो उसकी तबियत भी थोड़ी गड़बड़ है। बोल रही है कि उसे एकान्त चाहिये...। अकेलापन महसूस होने पर ही...।"

"अच्छा हुआ तुम यहां आ गई।" मुस्कराकर बोली विशाखा—"हमारे भी अगले दो पीरियड खाली हैं। हमें अपना दोस्त समझो। कुछ सुनाओ। हमसे गपशप करो...।"

"हां प्राची...!" आशीर्वाद की तरफ शरारत भरी नजरों से देखते हुये शरारत भरे लहजे में बोला कमलकान्त—"आशीर्वाद का मानना है कि तुम्हारी आवाज बहुत अच्छी होनी चाहिये। ये कल हमसे कह भी रहा था कि अबकि बार प्राची मिली तो उससे गाने की फरमाईश करूंगा। अब आशीर्वाद ही क्या हम सभी तुमसे गाना सुनना चाहते हैं। क्यों दोस्तों...?"

"हां...हां...हां...हां...।" सबने स्वर में स्वर मिलाकर हां

कहा तो प्राची बौखला-सी उठी–

"ल...लेकिन म...मुझे तो गाना-वाना आता नहीं। ना ही मैंने कभी किसी के सामने गाना गाया है...।"

"बाथरूम में गाया होगा?" कमलकान्त के चेहरे पर अभी भी शरारत नाच रही थी–"फिलहाल तुम थोड़ी देर के लिये मानकर चलो कि ये तुम्हारे घर का बाथरूम है–और हम लोग हैं ही नहीं...।"

"हां प्राची...!" अविनीति उसकी पीठ पर हाथ फेर उसका उत्साह और आत्मविश्वास जगाते हुये बोली–"अब जब सब कह ही रहे हैं तो सुना दो। एक-आध लाइन ही सही। यहां सब दोस्त हैं और दोस्तों से क्या शरमाना?"

टीटू को छोड़ सभी लोगों ने उसे ऐसे ही समझाया तो वह गाने लगी–

"जाने कैसा है...मेरा दीवाना, कभी अपना सा लगे कभी बेगाना। बड़ी भोली हो, ये भी ना जाना कभी अपनों को नहीं कहते बेगाना। जाने कैसा है...।"

दो लाइन गाने पर जब वो चुप हुई तो सभी ने उसकी आवाज की प्रशंसा की। बस टीटू को छोड़कर। वह भैंस के आगे बीन बजाय–भैंस खड़ी पगुराय वाली कहावत को चरितार्थ करते हुये च्यूइंगम चबाता रहा।

"वाकई प्राची...।" कमलकान्त उसकी तरफ देखते हुये बोला–"तुम्हारी आवाज तो कोयल की-सी मीठी है। मजा आ गया तुम्हारा गाना सुनकर...।"

कमलकान्त जब उसकी तरफ देख रहा था तो जाने क्यों प्राची की आंखें उसकी तरफ देखते हुये सिकुड़ने लगी थीं।

और फिर प्राची को एकटक अपनी तरफ देखती पाकर कमलकान्त ने अपना चेहरा ही दूसरी तरफ घुमा लिया।

उसके बाद प्राची कुछ देर तक तो नेत्र सिकोड़े कुछ सोचती रही, फिर विशाखा ने उसका ध्यान अपनी तरफ आकर्षित करने के लिये उसकी आंखों के सामने चुटकी बजाई और फिर सब लोग आपस में हंसी-मजाक करने लगे।

□□□

□□□

उसके बाद वह बहरूपिया आप सबके चहेते आशीर्वाद के मेकअप में प्रत्येक शाम को समुद्र किनारे प्राची से मिलने लगा। कभी-कभार वो प्राची को होटल के कमरे में ले जाता और उसके

साथ फुल मौज-मस्ती करता। एकआध बार ही उसे प्राची को शराब में सैक्स जगाने वाली अथवा सीधे शब्दों में कहें तो काम वासना भड़काने वाली दवा देनी पड़ी। उसके बाद तो प्राची ने खुद ही शर्म-संकोच त्याग दिया और होटल के कमरे में पहुंचते ही वह उस बहरूपिये से लिपट जाया करती थी।

कुल मिलाकर उस बहरूपिये की चांदी-ही-चांदी थी।

दूसरी तरफ आप सबके चहेते को शाकाल की तलाश थी–लेकिन बहुत कोशिश करने पर भी उसके बारे में उसे कोई हल्का-सा भी सुराग नहीं मिल पा रहा था।

कुछ दिनों तक तो वह शाकाल की तलाश में कुछ ज्यादा ही भाग-दौड़ करता रहा। फिर धीरे-धीरे उसने अपना ध्यान उसकी तरफ से हटाकर अपनी पढ़ाई में लगाना शुरू कर दिया।

इस बीच करतार सिंह को हॉस्पिटल से छुट्टी मिल गई थी और डॉक्टरों की हिदायत के मुताबिक वो फुल रेस्ट में केशव के बंगले में ही रह रहा था। डॉक्टर ने उसे कैसे भी काम के लिये सख्ती से मना कर रखा था।

लेकिन एक शाम!

जबकि वह अपने तथा अपने डैडी जी के गुरु रमाकान्त चोपड़ा के यहां से उनकी तबियत का हाल-चाल लेकर वापस लौट रहा था कि रास्ते में एक कार में उसे जोरावर सिंह की झलक मिली। जोरावर सिंह के साथ उस समय कोई और भी था और वो लोग विपरीत दिशा में जा रहे थे।

बीच में डिवाइडर था और मुण्डा तो अपनी बाइक डिवाइडर के पार कुदा देता किन्तु पार वाली सड़क पर उस समय ट्रैफिक तेजी में था।

आगे जहां डिवाइडर में थोड़ा कट था वहां से अपनी बाइक को दूसरी सड़क पार डालकर जब तक मुण्डा बाइक को गति प्रदान करता तब तक जोरावर सिंह वाली मिल्की व्हाइट कलर की जेन का दूर-दूर तक कहीं कोई पता नहीं था।

लेकिन चूंकि उस सड़क पर अभी दूर-दूर तक कोई लालबत्ती चौक भी नहीं था इसीलिये केशवपुत्र निराश भी नहीं हुआ। फुल स्पीड पर उसने बाइक को दौड़ाना शुरू किया।

उसे जेन की एक झलक तब मिली जब वह लालबत्ती पर रुकने वाले ट्रैफिक में फंसा तो वह जेन लालबत्ती पार कर चुकी थी।

शाम का समय था। उस समय ऑफिस वगैरह छूटे थे

इसलिये हर सड़क पर काफी ट्रैफिक था जिसकी वजह से उसे ट्रैफिक सिग्नल तोड़ने का मौका भी नहीं मिला।

लाइट ग्रीन होने पर ट्रैफिक के साथ उसने भी बाइक को आगे बढ़ाया। लेकिन अब तक वह निराश-सा हो चुका था।

लेकिन उस दिन शायद भाग्य उसके साथ था। वह जुहू बीच के सामने वाली सड़क पर था कि उसे वो जेन बीच पर एक किनारे खड़ी दिखाई दी तो उसने बाइक को उसकी तरफ मोड़ दिया।

जेन के निकट पहुंचने पर उसने देखा जेन में उस समय कोई नहीं था।

जोरावर सिंह की तलाश में उसने अपनी नजरें दौड़ानी शुरू कीं, लेकिन वह नहीं दिखा।

कुछ देर तक मुण्डा वहां से थोड़ा हटकर जोरावर सिंह के वहां वापस लौटने की प्रतीक्षा करता रहा। लेकिन जब वह उस प्रतीक्षा से उकता-सा गया तो बाइक को एक ओर खड़ी करके टहलते हुये उसकी तलाश करने लगा।

बीच पर उस समय काफी भीड़ थी।

❑❑❑

❑❑❑

जोरावर सिंह के साथ टोनी डिसूजा भी था। और दोनों उस समय भेलपूरी वाले एक खोखे की ओट से आशीर्वाद पर नजर रखे हुये थे।

दरअसल केशवपुत्र जोरावर सिंह की नजरों में तभी आ गया था जबकि आशीर्वाद की नजर उस पर पड़ी ही थी। उसने देख लिया था कि आशीर्वाद उसे देख चुका है। और उसे विश्वास था कि वो उसके पीछे जरूर लगेगा। तभी उसके दिमाग में लड़के को खत्म करने का एक बहुत अच्छा आइडिया आया था और उसने अपने आदमी को फोन करके उसे अपना प्लान समझा दिया था।

ये उसके प्लान का एक हिस्सा था कि उसने जुहू बीच पर अपनी कार को सड़क किनारे ऐसी जगह खड़ा किया था कि मुण्डे की नजर उस पर पड़े ही पड़े।

उसकी योजना का प्रथम चरण पूरा भी हो चुका था। साथ ही उसका ये अन्दाजा भी सही निकला था कि लड़का उसके पीछे जरूर आयेगा। कार को सड़क किनारे पार्क करके वह भेलपूरी वाले खोखे की ओट में से ही अपनी कार पर नजर रखे रहा था।

उन दोनों ने मुण्डे को वहां आते और कार में झांकते भी देखा और फिर कार से थोड़ा हटकर कार पर नजर रखे भी देखा।

इस बीच उसका वो आदमी भी वहां आ पहुंचा था जिसे फोन करके उसने वहां बुलाया था। वो आदमी अपने साथ रिमोट बम लाया था और जोरावर के कहने के मुताबिक वो रिमोट बम उसने कार में प्लांट करना था। दरअसल जोरावर सिंह को इस बात का पूरा-पूरा यकीन था कि जब मुण्डा उनका इन्तजार करते-करते थक जायेगा तो कार की तलाशी के लिये कार के अन्दर जरूर घुसेगा। और उसके कार में घुसते ही उसके आदमी ने रिमोट से कार को उड़ा देना था।

जो आदमी रिमोट बम लाया था उसका नाम दलेली लाल था। उसने अभी बम कार में प्लांट नहीं किया था। उसे ऐसा करने से जोरावर सिंह ने अभी रोका हुआ था। हां, वो मोबाइल द्वारा निरन्तर जोरावर सिंह के सम्पर्क में था। उसने रिसीवर की लीड अपने कान में फंसाई हुई थी और वह कार के आस-पास मंडरा रहा था। फिर जैसे ही आशीर्वाद जोरावर सिंह की तलाश में कार से थोड़ा परे हटा तो जोरावर सिंह ने दलेली को बम कार में फिट कर देने को कहा तो वह जल्दी से कार के नीचे घुस गया।

क्या बीतने वाली थी आप सबके चहेते के साथ?

क्या जोरावर सिंह अपने मकसद में सफल हो जाने वाला था?

जानते हैं एक छोटे से ब्रेक के बाद।

❑❑❑

❑❑❑

आशीर्वाद की नजरें जोरावर सिंह को तलाश रही थीं कि तभी—

"वाह! कौन कहता है कि सूरज पश्चिम से कभी नहीं निकलता। आज निकला है। जिसको विश्वास ना हो देख ले। रोज जनाब मुझे घण्टेभर तक यहां इन्तजार कराते थे और आज मुझसे पहले यहां पहुंचे हुये हैं।"

मुण्डे का ध्यान तो दूसरी तरफ था। उसने प्राची के उसके पुकारने पर देखा जरूर लेकिन उसकी बात पर ध्यान नहीं दिया।

"अरे प्राची! तुम यहां?" वह जोरावर सिंह की तलाश में नजरें इधर-उधर दौड़ाते हुये बोला—"तुम्हारे साथ कोई और भी है या अकेले आई हो?"

"ये तुम आज कैसी बहकी-बहकी बात कर रहे हो आशीर्वाद?" चेहरे पर उलझन के भाव लिये मुण्डे की तरफ देखते हुये बोली प्राची—"तुम और मैं रोज तो यहां मिलते हैं। हमारे यहां मिलने का छः बजे का टाइम फिक्स है। हां, वैसे तुम यहां हर रोज ही लेट आते हो और मैं टाइम से। लेकिन आज तुम मेरे से पहले यहां पहुंचे हुए हो। तुम्हें यहां देखकर मैं खुश हो गई और तुमने उल्टी-सीधी बातें करके मेरी खुशी फीकी कर दी।"

"य...ये तुम क्या कह रही हो प्राची?" अब बौखलाने की बारी केशवपुत्र की थी और वो बौखलाया भी प्राची की बात सुनकर—"मैं और तुम यहां रोज मिलते हैं? ल...लेकिन ये गलत है। मजाक कर रही हो तुम। लेकिन इस समय मैं मजाक के मूड में बिल्कुल भी नहीं हूं। दरअसल मैं यहां किसी की तलाश में आया था और मुझे अभी भी उसकी तलाश है। चलता हूं। कल कॉलेज में मिलेंगे।"

"रुको आशीर्वाद।" लड़के ने आगे बढ़ने की कोशिश की तो प्राची उसके सामने चीन की दीवार बन खड़ी हुई तथा गम्भीरता भरे लहजे में बोली—"तुम्हारा ये व्यवहार मेरी समझ में नहीं आ रहा है। यहां आस-पास कोई ऐसा नजर भी नहीं आ रहा है जिससे मैं ये समझूं कि तुम उसकी वजह से ऐसा कर रहे हो। रूखा व्यवहार करके मुझे रुलाना चाहते हो क्या?"

"उफ्! हद हो गई मजाक की भी।" इस बार लड़का मानो किलसकर बोला—"मैंने तुम्हें एक अच्छी लड़की समझा इसलिये कॉलेज में तुमसे बोला भी। लेकिन अब मुझे अपनी गलती का एहसास हो रहा है। आइन्दा ख्याल रखूंगा और हर किसी लड़की से बात करने से परहेज करूंगा।"

प्रा[illegible] शर्मा आवाक्...हतप्रभ!

उसके चेहरे और आंखों में ऐसे भाव थे मानो उसे विश्वास ही ना हो रहा हो कि उसके सामने उसका प्रीतम...मनमोहन खड़ा था।

"अब खड़ी-खड़ी मेरा मुंह क्या देख रही हो? मेरा रास्ता छोड़ो...।"

रो ही तो दी प्राची शर्मा।

"आशीर्वाद...अगर तुम ये मजाक कर रहे हो तो प्लीज...।" वह मोटे-मोटे आंसू बहाते हुये बोली—"प्लीज...। बन्द करो ये मजाक, वरना मेरा हार्ट फेल हो जायेगा।"

प्राची को रोते देख चलते-फिरते लोग उनके पास ठिठकने लगे।

ये देख लड़का थोड़ा परेशान-सा हो उठा।

❑❑❑

❑❑❑

"प्राची ये क्या बेहूदगी है?" केशवपुत्र दांत पीसते हुये हल्के स्वर में गुर्राकर बोला—"ये बेकार का ड्रामा करके तुम क्यों मुझे और खुद को तमाशा बनाने पर तुली हुई हो? ईश्वर के लिये ये रोना-धोना बन्द करो और जाओ यहां से। मुझे...।"

"तुम्हें जाना है तो जाओ।" और जोर-जोर से रोते हुये बोली प्राची—"मैंने तुम्हारा हाथ पकड़ा है क्या? लेकिन जाने से पहले ये सुनते जाओ। मैंने तुमसे प्यार किया है और तुम मेरे साथ प्यार का नाटक कर मेरे साथ...मेरे जिस्म के...।"

"क्या बकती हो...?" फिर से दांत पीसते हुये गुर्राया केशवपुत्र।

"अबे ओये हीरो।" एक लम्बा-चौड़ा युवक आशीर्वाद को कच्चा चबा जाने वाली-सी नजरों से घूरते हुये उसकी तरफ बढ़ते हुये बोला—"एक तो लड़की को धोखा दिया और अब गुर्रा रहा है बेचारी पर। चल सॉरी बोल उससे वर्ना दबाके एक दूंगा तो सारी हीरोगीरी निकल जायेगी।"

"हां ओये चिकने...।" दूसरा चालीसेक वर्ष वाला आदमी जो प्राची को रोते देख वहां रुका था और उनके बीच होने वाली बात सुन रहा था, अपनी आंखें तरेरते हुये बोला—"साले अभी तेरी उम्र ही क्या है? बच्चा है और लड़की से प्यार का नाटक किया। लड़की के साथ मौज-मस्ती भी की—और अब उससे मुंह फेर रहा है। चल साले लड़की को मना वर्ना हम सब मार-मारकर तेरा कचूमर निकाल देंगे।"

"ये माफी क्या मांगेगा!" एक अधेड़ उम्र की औरत लड़के की तरफ हिकारत भरी नजरों से देखते हुये बोली—"सूरत से ही मक्कार लगता है ये। इतनी सुन्दर लड़की है...और ये कमीना, पहले तो इसने उसे खराब किया और अब इससे पल्ला झाड़ने के लिये सौ तरह के झूठ बोल रहा है। मारो साले को...और इतना मारो कि इसके होश ठिकाने आ जायें।"

"हां भाइयो...मारो इसे।" कई लोग एक साथ चिल्लाकर बोले।

लोग अपनी आस्तीनें सिकोड़ते हुये लड़के की तरफ बढ़े।

लड़का असमंजस में पड़ा रहा कि वह इस स्थिति से कैसे निपटे?

फिर इससे पहले कि भीड़ लड़के पर टूट पड़ती, प्राची उसके सामने आ गई।

"रुक जाओ आप लोग।" वह चिल्लाकर बोली—"गलती इसकी नहीं मेरी थी। शुरूआत मैंने ही की थी। अपने लिये खाई मैंने खुद खोदी है। प्लीज आप लोग यहां से चले जाइये। ये मुझे खराब करके मुकर रहा है तो मुकर नहीं सकेगा। इन्साफ मांगने के लिये मैं इसके घर जाऊंगी। आप लोग इसे कुछ नहीं कहेंगे।"

"चलो भाईयो...।" वह अधेड़ उम्र का आदमी जो आगे-आगे हो रहा था। जिसका गुस्सा सोडे की नई खोली बोतल की तरह उबाल मार रहा था—उसका गुस्सा प्राची के बोलने पर साबुन की झाग की मानिन्द ही बैठता चला गया—"ये इश्क-मुश्क चक्कर है। इनके बीच पड़ने से कोई फायदा नहीं।"

वह हटा तो बाकी के लोग भी कुछ-न-कुछ बोलते हुये अपनी-अपनी राह हो लिये।

"मुझे तमाशा बनाकर तुम्हारे कलेजे में ठण्डक पड़ गई हो तो अब मैं चलूं?" प्राची पर निगाहों से भाले-बरछियां-सी बरसाते हुये सुलगे हुये से लहजे में बोला केशवपुत्र तो रोते हुये वह वहां से भाग ली।

उससे पहल वहां से मुंह छिपकर भागा था वो बहरूपिया जो कि प्राची का असली गुनहगार था। प्रतिदिन की तरह वह उस रोज भी थोड़ा देर से ही वहां पहुंचा था और प्राची को तलाशते हुये वह वहां पहुंच गया जहां लोगों की भीड़ में आशीर्वाद और प्राची थे।

सब लोगों का ध्यान चूंकि उन दोनों की तरफ था लिहाजा किसी का ध्यान उसकी तरफ नहीं गया था। भीड़ के अन्दर आशीर्वाद की एक झलक पाते ही उसने जेब से रूमाल निकालकर उससे किसी हद तक अपना चेहरा छिपाया और वहां से खिसक लिया था।

❑❑❑
❑❑❑

प्राची के वहां से जाने के बाद कुछ देर तक तो केशवपुत्र वहीं खड़ा कुछ सोचता-सा रहा। फिर उसने जेब से चने के दो

दाने निकालकर उधर देखा जिधर सफेद जेन खड़ी थी। जेन को अपने स्थान पर खड़ी देखकर उसने पहले तो राहत की मीलों लम्बी सांस ली। फिर चने के दाने मुंह में सरकाकर कुट्टर-कुट्टर करते हुये मन-ही-मन बोला—

"इसका मतलब जोरावर सिंह अभी यहीं है। लेकिन दिख नहीं रहा है।"

उसके बाद मुण्डा उस मिल्की व्हाइट कलर की जेन पर नजर रखे काफी देर तक वहीं इस फिराक में टहलता रहा कि जैसे ही जोरावर सिंह लौटेगा वह उसे दबोच लेगा।

एक घण्टा...दो घण्टे...फिर ढाई घण्टे बीत जाने पर भी जब उसे जोरावर सिंह लौटता ना दिखा तो उसने कार में झांकने का फैसला किया। उसका इरादा कार के कागजों के जरिये जोरावर सिंह तक पहुंचने का था। इसके अलावा उसके दिमाग में ये बात भी रह-रहकर स्ट्राइक करने लगी थी कि शायद जोरावर सिंह ने उसे वहां देख लिया था इसलिये कार छोड़कर निकल लिया था।

वह टहलता हुआ जेन के नजदीक पहुंचा। चूंकि वह कोई पार्किंग स्थल तो था नहीं इसलिये वहां तो कार एक तरह से लावारिस और अकेले ही खड़ी थी। कार के आस-पास उस समय कोई इन्सान भी नहीं था।

केशवपुत्र ने चहुं ओर नजरें दौड़ाकर देखा। दूर उसे एक बन्दा तो दिखा लेकिन उसका ध्यान उसकी तरफ नहीं था ये देखकर उसने ज़ेब से पेन निकाला उसके कैप पर लगी पिन जिससे पेन को जेब में खोसा जाता है, उसे अंगूठे और तर्जनी उंगली से पकड़कर सीधा किया और फिर उसी पिन से कार का लॉक खोल लिया।

लॉक खोलने पर उसने फिर से अपनी नजरों को ये देखने के लिये कष्ट दिया कि कोई उसकी तरफ देख तो नहीं रहा था।

और तब!

उसकी निगाह में वो बन्दा आया जिसका ध्यान पहले तो उसकी तरफ नहीं था, लेकिन उस समय वो एकदम उधर ही देख रहा था। यहां उस बन्दे ने आप सबके चहेते को सन्देह में डालने वाली जो हरकत की वो ये कि नजरें मिलने पर वो हड़बड़ाकर परे देखने लगा था।

तब वो शक मामूली शक ही था केशवपुत्र के लिये।

उसके नजरें फेरते ही मुण्डे ने कार का दरवाजा खोला और

जैसे ही वह उसमें बैठने लगा, उसने उस बन्दे को पलटते तथा हाथ में रिमोट जैसी वस्तु लिये देखा तो उसके जेहन में खतरे की घण्टी बजी और अगले ही पल वह जिस कोण में उस घड़ी था उसी में उसका जिस्म रॉकेट की मानिन्द अपने स्थान से उड़ा।

और अभी उसका जिस्म हवा में ही था कि—

"भड़ाम...!"

कर्णभेदी धमाके के साथ सफेद जेन के परखच्चे उड़ गये।

आप सबका चहेता सुरक्षित दूर जा गिरा।

गिरने के साथ ही वह उठकर खड़ा हुआ—सामने कार में हुये विस्फोट के कारण रेत का गुब्बार-सा था।

वह कार का घेरा काटते हुये दौड़ते हुये उस ओर पहुंचा जहां उसने रिमोट वाला बन्दा देखा था।

लेकिन!

तब तक देर हो चुकी थी। वो बन्दा तब तक गधे के सिर का सींग बन चुका था।

मुण्डा ठण्डी आह-सी भरकर रह गया।

❑❑❑

❑❑❑

"ये तुमने ठीक नहीं किया आशीर्वाद...।" तकिये में मुंह छिपाये हिचकियां ले-लेकर रोते हुये बड़बड़ा रही थी प्राची शर्मा—"मैंने तो तुम्हें दिल की गहराईयों से चाहा था। पूजा की थी तुम्हारी। और तुम...तुम मेरे जज्बातों से खेलते रहे। मुझे जी भरकर लूटा-खसोटा और फिर पहचानने से भी इन्कार कर दिया। मैंने तुम्हें खुदा माना और तुम राक्षस निकले। लोगों को तुम्हारे बारे में कितनी बड़ी गलत फहमी है। लोग तुम्हें हिन्दुस्तान का बेटा, देश का सच्चा सिपाही, मजलूमों का रक्षक, हातिमताई समझते हैं। काश...काश उन्होंने तुम्हारा वो रूप भी देखा होता जो अभी कुछ देर पहले मैं देखकर आई हूं। कितना घिनौना तथा कुरूप है तुम्हारा वो रूप।

तुमने मुझे कहीं का नहीं छोड़ा। मेरी चाहत मेरे लिये अभिशाप बनकर रह गई है। तुमसे नहीं मुझे अपने आप से नफरत हो चली है। आज तुमने मुझे आत्महत्या करने के लिये मजबूर कर दिया है। मैं जहर पीकर अपनी जीवन लीला समाप्त करने जा रही हूं। लेकिन मरने से पहले तुझे श्राप देती हूं—तूने एक प्यार करने वाली को धोखा दिया है। तुमने प्यार को मजाक बनाया

है। उसके साथ वासना का खेल खेला है। एक दिन ऐसा आयेगा तू प्यार की एक-एक बूंद को तरसेगा। लेकिन प्यार तेरे लिये रेगिस्तान में फ्रिज के ठण्डे पानी जैसा दुरुह साबित होगा। जिस लड़की की तरफ भी तू हसरतभरी निगाहों से देखेगा—वही तेरे मुंह पर नफरत से थूकेगी। शादी भी नहीं होगी कभी तुम्हारी...।"

रोते हुये उसने चेहरे पर से तकिया हटाया और सिरहाने रखी जहर की शीशी उठाकर उसका ढक्कन खोलने लगी।

ढक्कन खोलने पर जैसे ही उसने शीशी का जहर पीना चाहा कि तभी—

"रुक मूर्ख!" मानो किसी अज्ञात शक्ति ने उसके कानों में सरगरोशी-सी की—"ये तू क्या करने जा रही है? इतनी जल्दी हार मान बैठी तू? अरे मूर्ख...तू नये जमाने की पढ़ी-लिखी समझदार लड़की है। तूने प्यार किया है और प्यार करना कोई पाप नहीं है। खुद को मिटाकर तू कायरता का परिचय दे रही है और साथ ही पाप भी कर रही है...।"

"त...तो फिर मैं करूं?" मानो अन्दर-ही-अन्दर तड़फकर, बल खाकर बोली प्राची—"अपनी ही नजरों में गिरकर कैसे जीयूं?"

"हिम्मत से काम ले प्राची...तूने तो सच्चा प्यार किया था उससे...। उसी ने तुझे धोखा दिया है। तेरे साथ अन्याय हुआ है। लेकिन तेरे पास न्याय पाने का एक रास्ता है केशव पण्डित बहुत अच्छा इन्सान है। तुम उससे मिलो। तुम्हारी पूरी बात सुनकर वो तुम्हारे साथ न्याय करेगा।"

"अ...अगर उसने भी मेरी ना सुनी। मेरे साथ न्याय ना किया तो?"

"तो फिर तू चाहे जो करना। इस तरह कम-से-कम मरने के बाद तेरी आत्मा को ये तो तसल्ली रहेगी कि तूने आत्महत्या जैसा पाप भी किया तो सारे रास्ते बन्द हो जाने पर किया। तब वे पाप किया जबकि इसके सिवाय तेरे सामने कोई रास्ता नहीं बचा था।"

"ठीक है।" जहर की शीशी पर ढक्कन लगाते हुये बड़बड़ाई प्राची—"अब पहले मैं कल केशव पण्डित के घर जाकर उसे सारी बात बताऊंगी। सुना है वो दिमाग का जादूगर है और सच-झूठ की पहचान करने की उसमें काबिलियत है। अगर उसे मुझमें सच्चाई नजर आई और सच में ही वो वैसा ही है जैसा मैंने उसके बारे में सुना है या दुनिया कहती है तो...तो उस पाजी...झूठे

मक्कार आशीर्वाद को मुझे अपनी जीवन संगिनी बनाना ही पड़ेगा। वर्ना...।"

❑❑❑
❑❑❑

कमरे में मात्र एक जीरो वाट का...वो भी नीले रंग का बल्ब जल रहा था और फोल्डिंग पलंग पर आलथी-पालथी मारे बैठा वो बहरूपिया सिगरेट के कश लगाने के साथ-साथ शराब भी पी रहा था।

फोल्डिंग पलंग के बगल में एक स्टूल पर एट पी० एम० की बोतल, शराब से भरा गिलास, पानी का जग, नमकीन और मूंगफली रखी हुई थी।

उस बहरूपिये के चेहरे पर अभी भी आशीर्वाद पण्डित वाला ही फेस मास्क लगा हुआ था। उसने जुहू बीच पर आशीर्वाद और प्राची को उलझते देखा और वहां से भाग आया था। घर आकर उसने शुक्र मनाया कि उस समय वहां किसी की नजर उस पर नहीं पड़ी थी। अगर वहां कोई उसे देख लेता और उसके मुंह से निकल जाता कि यहां तो एक ही शक्ल के दो-दो लड़के हैं तो फिर उसकी खैर नहीं थी। तब आशीर्वाद समझ जाता कि उसने उसे बदनाम करने के लिये ये सारा खेल खेला है। तब वो उसकी वो धुलाई करता कि उसका भगवान ही मालिक था।

घर पहुंचते ही उसने शराब पीनी शुरू कर दी थी। उसे इस बात पर सख्त अफसोस हो रहा था कि उसकी मौज-मस्ती का बना-बनाया खेल बिगड़ चुका था।

शराब का घूंट भरने पर दो मूंगफली छीलकर उनके दाने मुंह में डालकर चबाते हुये वह बड़बड़ाया—"कितनी बढ़िया सैटिंग की थी प्राची के साथ। उसे शीशे में उतारने के लिये दिमाग का जूस निकाला था। लेकिन सारा मामला भिंडी हो गया। पता नहीं वो हरामी पण्डित की औलाद वहां कैसे पहुंच गया। हालांकि इससे मेरी योजना में कोई फर्क नहीं पड़ा है। लेकिन अभी साला मेरा इरादा कुछ दिनों तक अपने दुश्मन की बेटी के जिस्म से खेलते रहने का था। साली है भी जोरदार आइटम। मजा आ जाता था साली के साथ बिस्तर में कबड्डी खेलने में। बहरहाल अब अपना मौजमस्ती वाला तो मामला बिगड़ ही चुका है। अब मुझे अपनी योजना को और आगे बढ़ाना होगा। पण्डित की औलाद को और प्राची को बदनाम करना है मैंने। इसके लिये मैंने पूरा इन्तजाम

किया हुआ है। होटल के कमरे में आशीर्वाद के रूप में जितनी बार भी मैंने प्राची के साथ बिस्तर में कबड्डी खेली है—उन सबकी वीडियो रिकॉर्डिंग मेरे पास है। कल मैं बाजार से ब्लैंक सी० डी० लाकर अपने कम्प्यूटर पर वीडियो रील की कई सी० डी० तैयार करूंगा और सबसे पहले एक-एक सी० डी० आशीर्वाद और प्राची के घर भेजूंगा। उसके बाद ढेर सारी सीडियां कॉलेज में बटवाऊंगा। इस तरह से मैं एक तीर से तीन शिकार करने का रिकॉर्ड स्थापित करूंगा। फिलहाल तो प्राची की याद आ रही है। उसका खूबसूरत तथा संगमरमरी बदन मेरे जेहन में नाच रहा है। टाइम पास करने के लिये उसकी तैयार की वीडियो फिल्म देखता हूं।"

फिर वो पलंग से उठा और सेफ में से वीडियो कैसेट निकालकर उसे टी० वी० वाली ट्रॉली में निचले खाने में रखे वी० सी० आर० में लगाई। सारे कनेक्शन पहले से ही हो रखे थे। टी० वी० ऑन करके वी० सी० आर० में प्ले का बटन चालू करते ही उस होटल के कमरे का दृश्य टी० वी० स्क्रीन पर चमकने लगा, जिसमें उसने प्राची के साथ हफ्तों मौज-मस्ती की थी।

❑❑❑
❑❑❑

चाइना सीक्रेट सर्विस के मुख्यालय में सीक्रेट सर्विस के चीफ हू-चांग के अलावा उसका अस्सिटेंट फ्लू यांग और चाइना सीक्रेट सर्विस का सबसे खतरनाक एजेन्ट यांग यू ही मौजूद थे।

तीनों में उस समय जो वार्ता चल रही थी वो चीनी भाषा में ही चल रही थी और उसका हिन्दी में अनुवाद कुछ इस प्रकार था—

"यांग यू, तुम्हें आज रात ग्यारह बजे वाली फ्लाइट से हिन्दुस्तान जाना होगा।" सिगार का कश लगाने पर उसका ढेर सारा धुआं मुंह से उगलने पर बोला हू-चांग—"तुम्हारी यात्रा की पूरी तैयारी की जा चुकी है। तुमने सिर्फ अपने फ्लैट जाकर अपने कपड़े और निजी इस्तेमाल की चीजें लानी होंगी। अभी रात के आठ बजे हैं और तुम्हारे पास दो धण्टे का समय है। फ्लैट से तुमने सीधे एयरपोर्ट पहुंचना है। वहां बुकिंग काउंटर के पास तुम्हें ही ली मिलेगा। उसके पास तुम्हारी यात्रा का टिकट, पासपोर्ट, वीजा और पैसा होगा। ही ली तुम्हें और तुम ही ली को पहचानते ही हो। तुम्हारी फ्लाइट ठीक साढ़े दस बजे एयरपोर्ट पर आनी है। वो आस्ट्रिया से चलकर चीन होते हुये मुम्बई वाली फ्लाइट

है। मैंने अभी एयरपोर्ट के इन्क्वारी ऑफिस से पता किया है कि वो फ्लाइट राइट टाइम है। अब तुम घर जाओ, और अपना सामान... ।"

"कामरेड, यहां से रवाना होने से पहले मैं ये जानना चाहता हूं कि मेरी ये यात्रा किस सम्बन्ध में है?" अपने होंठों पर उंगली रखकर हू-चांग और प्लू यांग को शान्त रहने का इशारा कर दबे पांव दरवाजे की ओर बढ़ते हुये बोला यांग यू ही—"मैंने इण्डिया जाकर करना क्या है? मेरा मिशन क्या है? ये सब... ।"

फिर दरवाजे के निकट पहुंचकर उसने एक झटके से दरवाजे का हैन्डल घुमाकर उसका लॉक हटाया और साथ ही दरवाजा खोल दिया।

पहले से हैरानी के रथ पर सवार हूं चांग और प्लू यांग की आंखें उस समय आखिरी कोनों तक फटती चली गई जबकि उन्होंने दरवाजा खुलने के साथ ही हू-चांग की पर्सनल सेक्रेट्री तिनशी को कमरे में आ ढेर होते देखा।

❑❑❑
❑❑❑

"कामरेड...ये दरवाजे के बाहर खड़ी हमारी बातें सुन रही थी।" तिनशी के बॉबकट बाल पकड़कर उसे उठाते हुये यांग यू ही जलती हुई-सी निगाहों से तिनशी को देखते हुये रेगमाल से भी ज्यादा खुरदुरे लहजे में बोला—"अगर आप इजाजत दें तो मैं इससे पूछूं कि ये ऐसा क्यों कर रही थी?"

"ये गद्दार है।" तिनशी के निकट पहुंच सिगार के धुयें का गोला-सा उसके मुंह पर दागते हुये गुर्राहट भरे लहजे में बोला हू चांग—"हमारे साथ रहकर ये कुतिया हिन्दुस्तानियों के लिये जासूसी करती है... ।"

"य...ये झूठ है कामरेड।" भूकम्प में फंसी झोंपड़ी की मानिन्द ही थर-थर कांपते हुये बोली तिनशी—"म...मैं तो आपसे छुट्टी के लिये पूछने आई थी। दरअसल मेरे पेट में दर्द हो रहा था। दरवाजा नॉक करने ही जा रही थी कि दरवाजा खुला और...आह!"

उसकी बात पूरी होने से पहले ही हू चांग का उल्टे हाथ का थप्पड़ उसके गाल पर पड़ा तो वह कराह उठी।

कचौरी जैसे फूले तथा सेब की रंगत लिये गाल पर पांचों उंगलियां छप गई।

आंखों में आंसू छलकने लगे तिनशी के।

"झूठ मत बोल कुतिया... ।" हू चांग नहीं मानो उसके कण्ठ में बैठा कोई किंग-कोबरा ही इन्सानी भाषा में बोला—"झूठ बोलने से कोई फायदा नहीं होने वाला है। मुझे काफी दिनों से उस गद्दार की तलाश थी जो यहां के सीक्रेट हिन्दुस्तानी खुफिया पुलिस को पहुंचा रहा था। कुछ दिनों पहले हमारा एजेन्ट लू चिन एक बहुत ही खुफिया मिशन के तहत हिन्दुस्तान गया था और वह अभी मुम्बई पहुंचा ही था कि उसके पीछे खुफिया विभाग वाले लग गये थे। तब हिन्दुस्तान से हमारे एक अन्य एजेन्ट, जिसका नाम शाकाल है, ने हमें सतर्क किया था कि हमारी संस्था में ही कोई गद्दार है जो हमें डबल क्रॉस कर रहा है। तब से मुझे उस गद्दार की तलाश थी। मैंने सबको चेक कराया, लेकिन तुम पर ध्यान नहीं दिया। जबकि मेरा ध्यान तुम्हारी तरफ भी जाना चाहिये था। तुम दोगली नस्ल की हो। तुम्हारा बाप चीनी था और मां तिब्बती। दोगली नस्ल की होने की वजह से ही तुम गद्दार बनी। तुम्हारी वजह से हमें बहुत नुकसान उठाना पड़ा। हमारा एक वफादार साथी लू चिन तुम्हारी वजह से ही मारा गया। अब तुम बताओ कि तुम हिन्दुस्तान की किस खुफिया एजेन्सी के लिये काम करती हो? तुम्हारे अलावा चीन में और कितने एजेन्ट हैं उस एजेन्सी के? उस खुफिया एजेन्सी का चीफ कौन है? हमें सब जानकारी चाहिये वो भी अभी... ।"

"क...कामरेड...मैं...मैं सच कह रही हूं कि...म...मैं गद्दार नहीं हूं... ।"

उसके बाद यांग यू ही उस पर पिल पड़ा। बिना किसी हथियार के उसने तानशी की जुबान खुलवा ही ली। उसने स्वीकार किया कि वो भारत की एक महत्वपूर्ण संस्था ट्रिपल सी के लिये काम जरूर करती है लेकिन उसे उस संस्था के बारे में और कुछ नहीं मालूम। उसे जो रिपोर्ट करनी होती थी वो ट्रिपल सी के चीफ, जिसे भारतपुत्र के नाम से जाना जाता है, को करती थी। ट्रिपल सी कौन है—वो ये भी नहीं जानती है। इसके अलावा वो कुछ नहीं बता सकी।

अन्त में हू-चांग ने उसे गोली मार दी।

उसके उसने यांग यू ही को उस मिशन के बारे में बताया जिसके लिये वो उसे इण्डिया भेज रहा था। अपने मिशन के बारे में जानने पर यांग यू ही वहां से रुख्सत हुआ।

❑❑❑
❑❑❑

केशवपुत्र के घर में नाश्ते की मेज पर उस सुबह केशव, सोफिया, राजन शुक्ला, चांदनी तथा करतार सिंह मौजूद थे और गोभी के परांठों और दही के साथ नाश्ता हो रहा था। लच्छो किचन में परांठे बना रही थी और रणछोड़ सिंह उसे सर्व कर रहा था।

आप सबका चहेता अगर उस सुबह नाश्ते की मेज पर नहीं था तो उसकी वजह थी कि सुबह धन्नो का उसके पास फोन आया था और उसने बताया था कि वह ग्यारह बजे के बाद ही ऑफिस पहुंच सकती थी इसलिये तब तक बतौर जोकर के सुबह आठ से लेकर ग्यारह बजे तक उसने ऑफिस में रहना था और वहां का सारा काम देखना था।

धन्नो का फोन मिलने पर केशवपुत्र सुबह बिना नाश्ता किये ही घर से निकल गया था।

बहरहाल केशव एण्ड फैमिली नाश्ता कर रही थी कि तभी सिक्योरिटी गार्ड ने आकर बताया कि प्राची शर्मा नाम की एक लड़की गेट पर है और वो केशव से मिलना चाहती है। केशव ने उससे कहा कि वह मेटल डिटेक्टर से उस लड़की की तलाशी लेकर अन्दर भेज दे।

सिक्योरिटी गार्ड वहां से चला गया।

"कौन हो सकती है ये लड़की?" उसके जाने के बाद केशव की तरफ देखते हुये बोली सोफिया—"और तुमसे क्यों मिलना चाहती है?"

"वो आ रही है ना।" परांठा चबाते हुये शान्त से लहजे में बोला झील-सी नीली आंखों वाला—"आकर बतायेगी कि वो कौन है और मुझसे क्या चाहती है।"

सोफिया ने फिर उससे कोई सवाल नहीं किया।

दो मिनट बाद वही सिक्योरिटी गार्ड प्राची को वहां छोड़ गया।

केशव एण्ड पार्टी ने देखा कि लड़की के चेहरे पर उदासी की मोटी पर्त चढ़ी हुई है।

"बैठो बेटी...।" गहरी नजरों से उसकी तरफ देखते हुये बोला केशव पण्डित—"मुझे लगता है कि मैं पहले भी...ओह हां! याद आया। तुम राजेश्वर शर्मा की पोती हो और उस रात मेहता

साहब के विवाह की सालगिरह पार्टी में हम मिले थे। क्यों, मैं ठीक कह रहा हूं ना बेटी...?"

"जी अंकल...!" नजरें झुकाये लुटे-पिटे से लहजे में बोली प्राची—"आप ठीक कह रहे हैं।"

सोफिया, चांदनी, राजन शुक्ला और करतार सिंह की आंखें लड़की के चेहरे पर टिकी हुई थीं।

"तुम मुझसे मिलने आई हो। क्या चाहती हो मुझसे?" केशव की निगाहें उसके उदास चेहरे पर टिकी हुई थीं।

"ज...जी...अंकल...ये मैं आपको अकेले में बताऊंगी।" नजरें झुकाये हुये ही बोली प्राची शर्मा।

"देखो बेटी...यहां सब अपने ही हैं।" सोफिया उसके सिर पर हाथ फेरते हुये अपनत्व भरे लहजे में बोली—"तुम्हें जो कहना है बिना झिझके कहो।"

फिर प्राची शुरू थोड़ा झिझकते हुये ही हुई, लेकिन बीच में वह रोने लगी और रोते हुये ही उसने अपनी कहानी समाप्त की।

उसकी बात पूरी होने तक सोफिया का चेहरा मारे क्रोध के पके टमाटर-सा लाल हो उठा था।

उसकी सांसें यूं चल रही थीं मानो वहां कोई तूफान आने वाला हो।

जबकि केशव का चेहरा शान्त तथा सपाट था।

और बाकी के लोग आवाक्...हतप्रभ!

नाश्ता-पानी सब भूले हुये प्राची की तरफ एकटक देखे जा रहे थे।

❑❑❑
❑❑❑

"बन्द कर ये रोना-धोना लड़की।" सोफिया नहीं मानो कोई मादा भेड़िया इन्सानी लहजे में बोली—"ये ड्रामा कहीं और जाकर कर। हमें ये नाटक प्रभावित नहीं करते। और सुन...दुबारा मेरे लाल के बारे में तुमने कोई उल्टी-सीधी बात की तो मैं तेरा मुंह नोच लूंगी...।"

"हां ओये कुड़िये...।" पटियाला वाला सरदार भी गुर्रा उठा—"शुक्र मना कि तू इक लड़की है और मैं लड़की जात ते हाथ नहीं उठाता, वर्ना अगर तेरी जगह किसी मर्द ने साड़े निक्के पुत्तर जी ऊपर ऐ गन्दगी उछाली होती तो सौं वाहे गुरु दी...मैं

उसदे टोटे-टोटे करके रख देने सी। जा दुर जा ऐत्थों (यहां से चली जा)।"

मारे क्रोध और अपमान के प्राची का चेहरा लाल भभूका हो उठा।

अभी तक लुटी-पिटी-सी नजर आने वाली प्राची एकाएक खतरनाक नजर आने लगी।

"तू चुप करके बैठ जा ओये सरदार।" मानो वो चोटिल नागिन क्रोध में आकर अपना फन जमीन पर पटकती हुई इन्सानी लहजे में बोल रही हो, वैसे ही बोली वह—"केशव पण्डित का नाम सुनकर...इनके बारे में ये जानकर कि ये नेकी के फरिश्ते हैं—मैं यहां इनसे न्याय मांगने आई हूं—भिखारन नहीं हूं जो तुम लोग मुझे दुत्कार रहे हो। और तुम क्यों चुप हो पण्डित जी...? तुम्हारे बारे में तो मैंने ये भी सुना है कि तुम लोगों की आंखों में झांककर ये ताड़ लेते हो कि वो सच बोल रहा है अथवा झूठ। मेरी आंखों में झांको और इन सबको बताओ कि मैं झूठ बोल रही हूं या सच। झांको पण्डित मेरी आंखों में झांको। बगले क्यों झांक रहे हो?"

"शान्त हो जाओ लड़की।" गम्भीरता में भरा केशव पण्डित अत्यन्त ही धीमे स्वर में बोला—"शान्त होकर मेरी बात सुनो...।"

"नहीं सुननी हमें इसकी कोई बात...।" केशव की बात पूरी होने से पहले ही दांत पीसते हुये गुर्रा उठी हरी-हरी आंखों वाली अप्सरा सरीखी सोफिया—"ये मक्कार बहुत बड़ी एक्टर है। इसके आगे तो स्वर्गीय मीनाकुमारी की एक्टिंग भी फेल है। और इसकी बात सुनने की या इसे अपनी बात सुनाने की जरूरत भी क्या है? आशीर्वाद मेरे जिगर का टुकड़ा है। मेरा दूध दौड़ रहा है उसके जिस्म में लहू बनकर और मेरा दूध...मेरा खून इतना गन्दा...हरगिज...हरगिज भी नहीं हो सकता है।"

"जीजी ठीक कह रही हैं...लड़की।" चांदनी के लहजे में भी आक्रोश झलक रहा था—"हमारा आशीर्वाद बहुत ही शरीफ और नेक लड़का है। उसके बारे में तुमने जो कहा वो हरिद्वार जाकर बहती गंगा में खड़ी होकर भी कहोगी तो हममें से कोई एक भी तुम्हारी बात नहीं मानेगा। पता नहीं तुम उसे बदनाम करके क्या हासिल करना चाहती हो...?"

"मैं भिखारिन नहीं हूं आंटी जो कुछ पाने के लिये झूठ का सहारा लूंगी। मेरे दादा राजेश्वर शर्मा अरबपति इन्सान हैं और मैं उनकी इकलौती पोती। मेरी खुशियों के लिये वो अपना सबकुछ

न्योछावर कर सकते हैं। यहां अपना दुखड़ा रोने मैं हरगिज भी नहीं आती अगर मैंने इस शख्स के बारे में इतना कुछ ना सुना होता।" केशव की तरफ जलती हुई-सी निगाहों से देखते हुये वह बोली। बोली क्या, उसके मुंह से तो मानो शब्द नहीं दहकते हुये अंगारे ही निकल रहे थे—"अब अफसोस हो रहा है यहां आकर। मुझे पता होता कि लोग-बाग इस इन्सान के बारे में जो कहते हैं वो झूठ है, बकवास है। वास्तव में ये उस नीच लड़के का ही बाप है तो...।"

"तड़ाक...!"

और नहीं बर्दाश्त कर सकी सोफिया अपने केशव के बारे में तो उसने प्राची के गाल पर थप्पड़ जड़ दिया।

'चटाक...चटाक...चटाक' कुछ देर तक तो उस कमरे में थप्पड़ की आवाज गूंजती रही।

प्राची पलभर तक तो अपने गाल पर हाथ रखे सोफिया की ओर देखती रही। फिर पलटकर रोते हुये वहां से चली गई।

❑❑❑

❑❑❑

कुछ पलों के लिये उस कमरे में ऐसा सन्नाटा रहा कि वहां कोई मक्खी या मच्छर चकराकर गिरता तो ऐसा लगता मानो किसी नगाड़े पर पांच किलो का बाट गिरा हो।

"ये तुमने ठीक नहीं किया।" परांठे वाली प्लेट परे सरकाते हुये केशव ने वहां अपना अधिपत्य जमाने की कोशिश में लगे सन्नाटे को क्लीन बोल्ड किया—"तुम्हें उस लड़की को थप्पड़ नहीं मारना चाहिये था...।"

"क्यों...? क्यों नहीं मारना चाहिये था उसे थप्पड़?" सोफिया के लहजे में अभी भी आक्रोश झलक रहा था—"वो आशीर्वाद के साथ-साथ तुम्हें भी बुरा-भला कह रही थी। नीच बोल रही थी वो आशीर्वाद को और तुमको। तुम बताओ...एक नारी अपने बेटे और पति के बारे में ऐसे शब्द सुनकर चुप रह सकती है और वो भी गलत इल्जाम लगाये जाने के साथ-साथ! केशव वो हमारे घर में थी, इस बात का ख्याल करके मैंने सिर्फ उसे एक ही थप्पड़ मारा, वर्ना वो तुम्हारे या आशीर्वाद के बारे में ये शब्द बाहर कहीं मेरे सामने इस्तेमाल करती तो मैं थप्पड़ मार-मारकर उसके दोनों गालों को पिलपिलाकर रख देती।"

"गुरुवर...दीदी ठीक ही कह रही हैं।" तत्काल ही, यानि

सोफिया की बात खत्म होते ही उसके पक्ष में राज़न शुक्ला बोल पड़ा—"वो कल की लड़की आशीर्वाद के अलावा आपकी भी बेइज्जती कर रही थी। दीदी ने ठीक ही किया जो उसके थपपड़ मारकर उसका मुंह बन्द कर दिया—वर्ना तो अभी वो ना जाने क्या-क्या और कैसी-कैसी बकवास करती। थप्पड़ पड़ा तो रोते हुये भाग ली...।"

"मेरी समझ में नहीं आता कि मैं क्या कहूं राजन...।" मेज पर पड़ी चारमीनार मार्का सिगरेट की डिब्बी को खोलते हुये कुछ इस अन्दाज में बोला झील-सी नीली आंखों वाला मानो जो बोल रहा था उसे बोलने में उसे कष्ट हो रहा हो अथवा बोझ-सा महसूस हो रहा हो—"लड़की मुझे और मेरे बेटे को गलत कह रही थी फिर भी मुझे क्रोध नहीं आया। इसका मतलब ये नहीं कि मैंने आशीर्वाद पर सन्देह किया है। उसे मेरे से बेहतर कौन जान सकता है? ये समझने पर भी मैं शान्त रहा और अब सोफी को गलत कह रहा हूं तो उसकी वजह ये है कि मुझे उस लड़की की आंखों में सच्चाई नजर आ रही थी...।"

"वाह! बहुत खूब केशव...।" किलसकर तथा अपनी जुबान-रूपी कमान से केशव पर व्यंग के तीरों की बौछार-सी करते हुये बोली सोफिया—"जवाब नहीं तुम्हारा। ये तो तुमने वही मिसाल पेश की कि अण्डा भी ना टूटे और आमलेट भी खाने को मिल जाये। लड़के को भी कोई गलत न कहे और लड़की सच्ची है उसकी आंखों में ताड़ लिया। अब जब चित्त भी तुम्हारी और पट्ट भी तुम्हारी, तो मैं तो गलत हूं ही।"

"सोफी तुम बात को समझने की कोशिश नहीं कर रही हो।" सिगरेट सुलगाने के लिये जलाया लाइटर बुझा दिया केशव ने और कसमसाते हुये-सा बोला—"आशीर्वाद गलत नहीं और लड़की भी अपनी जगह सही है तो इसका मतलब ये भी तो हो सकता है कि किसी ने आशीर्वाद को बदनाम करने के लिये उस लड़की के साथ आशीर्वाद बनकर गलत किया हो। और इस तरह आशीर्वाद की ही बदनामी क्यों, बदनामी तो हम सबकी ही होनी है,...।"

केशव की बात सुनकर सबके चेहरों पर सन्नाटा-सा छा गया।

हर कोई एक-दूसरे का मुंह ताकने लगा था।

नाश्ता सबने पहले ही बीच में छोड़ रखा था।

"केशव...अब मैं मानती हूं कि गुस्से में आकर मैंने गलती की।" अपराधियों की तरह गर्दन झुकाकर शर्मिन्दगी भरे लहजे में बोली सोफिया—"दरअसल उस समय मुझे ये सूझा ही नहीं था कि वो लड़की किसी की चाल का शिकार भी हुई हो सकती और जिसने भी उसे अपनी चाल का शिकार बनाया वो अपने आशीर्वाद का कोई दुश्मन हो सकता है। अब मुझे दुख हो रहा है उस लड़की के थप्पड़ मारने पर। वो रोते हुये यहां से गई है। शाम को आशीर्वाद आयेगा तो उससे कहूंगी कि वो कल उस लड़की को घर लेकर आयेगा। मैं...हम सब उससे सॉरी बोलेंगे और तुम्हें और आशीर्वाद को पता लागना होगा कि उसका असली अपराधी कौन है?"

"हां सोफी...।" सिगरेट सुलगाकर बोला केशव—"अब मामले की तह तक तो जाना ही होगा। मामूली बात नहीं है ये, उस लड़की के साथ तो बुरा हुआ ही है। ये बात सबके सामने आने पर हमारे साथ...हमारे परिवार के साथ उससे बुरा होगा। केशव पण्डित के नाम पर बदनामी का वो कलंक लगेगा कि जो लोग आज हमारी इज्जत करते हैं—वो हमारा घर से निकलना दूभर कर देंगे। थूकेंगे लोग केशव पण्डित के नाम पर।"

कहने पर वह सिगरेट के कश लगाने लगा।

❑❑❑
❑❑❑

नाटे कद का यांग यू ही मुम्बई एयरपोर्ट से बाहर निकला तो उसके सामने लम्बे ऊंचे कद का सरदार टैक्सी ड्राइवर आकर बोला—"सर...कहां जाना है? अगर किसी होटल में जाना है तो आप जिस रेट के भी होटल में कहेंगे मैं आपको पहुंचा दूंगा...।"

"मुझे होटल पैरामाउंट जाना है।" अपनी गोल-गोल आंखों ने सरदार टैक्सी ड्राइवर का एक्स-रे-सा करते हुये शुष्क से लहजे से बोला यांग-यू ही—"वहां एडवांस में कमरा बुक करा रखा है मैंने।"

"चलिये सर...!" टैक्सी ड्राइवर ने लगेज ट्रॉली में से उसका सामान उठा लिया।

टैक्सी ड्राइवर के स्टैण्ड से टैक्सी निकालते ही गोल-गोल आंखों तथा फोमांचूकट मूंछों वाला यांग यू ही पूरी तरह सतर्क था। उसने चहुं ओर नजरें घुमाकर देखा कि वहां से कोई और वाहन उसकी टैक्सी के साथ तो बाहर नहीं निकल रहा है।

ये देखकर उसे तसल्ली हुई कि कोई उसकी टैक्सी के पीछे नहीं लगा था।

फिर रास्तेभर वह चौंकन्ना ही रहा।

टैक्सी जैसे ही होटल पैरामाउंट के गेट पर पहुंची उसने टैक्सी ड्राइवर को गेट पर ही टैक्सी रोकने को कहा। टैक्सी ड्राइवर को उसका ये व्यवहार अजीब-सा तो लगा लेकिन उसने बिना कुछ पूछे या कहे टैक्सी को गेट से थोड़ा परे करके रोक लिया।

यांग यू ही ने टैक्सी का भाड़ा अदा किया और अपने सामान सहित टैक्सी से बाहर आ गया। फिर जब टैक्सी वहां से चली गई तो वह अपना सामान उठाये सड़क पार पहुंचा और एक खाली टैक्सी में सवार हो गया।

करीब घण्टाभर तक वो टैक्सी ड्राइवर से कहकर टैक्सी को यूं ही सड़कों पर इधर-उधर दौड़ाता रहा। फिर इस बात की पूरी तसल्ली हो जाने पर कि कोई उसका पीछा नहीं कर रहा है, उसने शाकाल को फोन किया कि वो आधे घंटे में गेटवे ऑफ इण्डिया पहुंच रहा है—वो अपने किसी आदमी को वहां उसे लेने को भेजे।

उसके बारे में शाकाल को रात ही चीन से मैसेज आ गया था, अतः उसने उसे लेने के लिये जोरावर सिंह और टोनी डिसूजा को भेज दिया।

□□□
□□□

विनोद कश्यप अपने कमरे में बैठा टी० वी० में आ रही धर्मेन्द्र और हेमामालिनी की पिक्चर प्रतिज्ञा देख रहा था कि तभी लकी हरीश और मुकुल के साथ वहां पहुंच गया।

"क्या चल रहा है विनोद भाई?" स्टूल पर कब्जा जमाते हुये पूछा लकी ने।

हरीश और मुकुल विनोद के साथ उसके बेड पर बैठ गये।

"बस यार कैसे भी करके टाइम पास कर रहा हूं।" ठण्डी आह-सी भरते हुये हुये बोला विनोद—"कई बार देख चुका हूं ये फिल्म। अब चूंकि कहीं आ-जा नहीं सकता तो मजबूरी में टी० वी० में ही दिल लगाओ। खैर, तुम लोग सुनाओ, कॉलेज जा रहे हो या नहीं?"

"जब से पण्डित की औलाद ने कॉलेज में अपनी इज्जत का कचरा किया है तब से आज तक तो हम तीनों में से कोई नहीं गया। लेकिन आज से हम लोग जायेंगे। कल मेरे हाथ हरामी

पण्डित को बदनाम करने का एक बढ़िया मसाला मिला है। कॉलेज में सबको उस मसाले को परोसकर उस हरामी को बदनाम करना है। लोगों का ध्यान उसकी तरफ जायेगा तो हमारे से ध्यान हट जायेगा। वर्ना ऐसे तो हर लड़की हमें विलेन के रूप में देखती...।"

"कह तो तुम ठीक रहे हो यार लकी।" रिमोट से टी० वी० की आवाज कम करते हुये कौतूहलता में भरकर बोला विनोद—"लेकिन तुम्हारे हाथ कौन-सा मसाला लगा जिससे तुम कॉलेज के उस हीरो को जीरो बना सकते हो?"

"वो मसाला कल जुहू बीच पर मेरे हाथ लगा।" लकी अपने लम्बे बालों पर हाथ फेरते हुये बोला—"दरअसल मुझे पता लगा था कि प्राची नाम की लड़की ने आशीर्वाद को लव लेटर दिया था और उसमें ये भी लिखा था कि वो आशीर्वाद का इन्तजार जुहू बीच पर करेगी। उस दिन मैं भी जुहू बीच पहुंचा था। वो दोनों मिले और फिर प्राची की गाड़ी में बैठकर वहां से चले गये। मैं वहां बस से पहुंचा था इसलिये मुझे नहीं पता कि वो वहां से कहां गये थे। चार दिन बाद मैं और मुकुल, मुकुल की बाइक से तफरीहन जुहू बीच गये। उस दिन भी आशीर्वाद और प्राची वहीं थे। उस दिन हमने प्राची की कार का पीछा किया और देखा कि वे दोनों वहां से होटल जनक पहुंचे। मुझे पता था कि उस होटल में गलत काम के लिये कमरे किराये पर मिलते हैं। मैं भी अपनी गर्लफ्रेन्ड के साथ वहां जा चुका हूं। होटल के स्टाफ में चोटीवाला करके एक नेपाली लड़का है वो मुझे जानता है। मैंने उसे पकड़ा और उन दोनों के बारे में पूछा तो चोटीवाला ने बताया कि पिछले चार-पांच दिनों से वो रोज ही उस होटल में आ रहे थे। आशीर्वाद ने पन्द्रह दिनों के लिये वहां कमरा नम्बर नौ किनारे पर ले रखा है। ये जानकारी मिलने पर मैं और मुकुल वहां से लौट आये। फिर उस दिन हम लोगों ने आशीर्वाद को कॉलेज में ही नहीं शहर में बदनाम करने का प्लान बनाया। लेकिन अपने प्लान को कामयाब बनाने के लिये हमें हैण्डी कैम की जरूरत थी। कल मैंने हैण्डीकैम का इन्तजाम किया और साथ ही होटल जनक के नेपाली लड़के को सेट किया कि वो कमरा नम्बर नौ की खिड़की की सिटकनी तोड़ दे, जिससे रात आशीर्वाद कमरे की खिड़की बन्द ना कर सके और जब वो और प्राची वहां हों तो वो लोग जो भी करें मुझे उनकी फिल्म तैयार करने दे। सारी सैटिंग करने के बाद मैं और मुकुल जुहू बीच पहुंचे तो वहां आशीर्वाद और प्राची में

झगड़ा हो रहा था। काफी लोगों की भीड़ जमा थी वहां। वहां किस बात को लेकर झगड़ा हो रहा था उसे तुम हैण्डीकैम में देख लो। मैंने वहां का सारा झगड़ा इसमें रिकॉर्ड कर लिया था। ये देखो...।"

कहने पर लकी ने अपने कंधे पर लटक रहे थैले में से हैण्डी कैम निकाला और उसे ऑन करके विनोद के सामने कर दिया।

वाकई कैमरे में आप सबके चहेते को बदनाम करने का पूरा-पूरा मसाला था। फिल्म में प्राची उस पर होटल के कमरे में गलत काम करने और धोखा देने का इल्जाम लगा रही थी। पब्लिक आशीर्वाद को मारने पर उतारू थी और प्राची बीच में आकर उसका बचाव करते हुये नजर आ रही थी।

"फैन्टास्टिक...!" फिल्म देखते हुये विनोद कश्यप बड़बड़ाया—"ये तुमने बहुत बढ़िया काम किया है लकी। इस फिल्म में मेरे पड़ोस के मेहता अंकल और आंटी भी हैं। पहले तुम कॉलेज में आशीर्वाद और इस लड़की का तमाशा बनाओ। उसके बाद ये फिल्म कॉलेज के प्रिंसीपल यानि मेरे डैडी को दिखाई जायेगी। फिर आशीर्वाद और उस लड़की को कॉलेज से निकाल दिया जायेगा। इस फिल्म की वजह से आशीर्वाद के बाद केशव पण्डित की पहुंच भी किसी काम नहीं आने वाली है। जरूरत पड़ने पर मैं गवाह के रूप में मेहता अंकल और आंटी को भी कॉलेज में बुलवा लूंगा।"

"हां विनोद भाई...।" हरीश बोला—"उस हरामी के कॉलेज से निकाले जाने पर ही अपनी इज्जत में कुछ बचाव होगा। तभी हमारा कॉलेज जाने में मन भी लगेगा। हम लोग अभी कॉलेज जाते हैं और जाते ही हर क्लास में जाकर स्टूडेंट्स को ये फिल्म दिखायेंगे। बहुत शरीफ बनता है वो पण्डित की औलाद। आज उसके चेहरे से शराफत की नकाब हट जायेगी। चलो भाई लकी...मुकुल...।"

❑❑❑

❑❑❑

शाकाल के अड्डे में पहुंचने पर यांग यू ही का शाकाल ने खुले दिल से स्वागत किया। उसने यांग यू ही से पूछा कि उसके खाने-पीने के लिये क्या मंगवाया जाये तो उसने ब्रेड-मक्खन और कॉफी की इच्छा जाहिर की।

कॉफी, ब्रेड-मक्खन के साथ कई तरह के बिस्कुट और नमकीन भी आये। नाश्ता शुरू हुआ।

"कामरेड से बात हुई थी तो उन्होंने बताया था कि आपको किसी खास मकसद से यहां भेजा जा रहा है।" कॉफी का घूंट भरने पर यांग यू ही की तरफ देखते हुये बोला शाकाल—"लेकिन उन्होंने ये नहीं बताया कि...।"

"आशीर्वाद को खत्म करने के लिये मुझे यहां भेजा गया है।" टोस्ट मक्खन खाते हुये बोला यांग यू ही—"उसकी फोटो वगैरह तो मुझे दिखा दी गई है—लेकिन मुम्बई में वो मुझे कहां मिलेगा ये आप बताओगे शाकाल साहब।"

"तो आप आशीर्वाद को खत्म करने के लिये यहां आये हैं। बहुत अच्छी बात होगी अगर वो हरामी मारा जाये। आपके बारे में काफी सुना है मैंने। आप चाइना सीक्रेट सर्विस के नम्बर वन जासूस तो हैं ही, आपके नाम एक रिकॉर्ड भी बना हुआ है। आज तक आपको विभाग की तरफ से जो भी मिशन सौंपा गया आप हमेशा सफल रहे हैं। मैं गॉड से...ईश्वर से ये प्रार्थना करता हूं कि इस बार भी आप अपने मिशन में सफल रहें।"

"मैं अपने मिशन में जरूर सफल होऊंगा शाकाल साहब।" यांग यू ही के लहजे में आत्म-विश्वास के साथ-साथ गर्व भी झलक रहा था। वह अपने हरेक शब्द पर जोर देते हुये-सा बोला—"मैंने एक से बढ़कर एक खतरनाक अभियानों में सफलता पाई है। वो कल का लड़का कितना भी खतरनाक क्यों ना हो, मेरे लिये एक मच्छर जैसा ही है। सामना होने पर चुटकी में दबाकर मसल दूंगा। लेकिन उसे मारने से पहले मैंने उससे ट्रिपल सी के बारे में जानना है।"

"ये ट्रिपल सी क्या है यांग साहब?" चौंकते हुये-सा बोला शाकाल।

"ट्रिपल सी के बारे में पूरी तरह से तो मुझे ही क्या शायद ही किसी को मालूम होगा। सिवाय ट्रिपल सी के मेम्बरों या हिन्दुस्तान के कुछ खास लोगों को छोड़कर। मुझे मालूम होता तो मैं क्यों कहता कि आशीर्वाद को मारने से पहले मैं उससे ट्रिपल सी के बारे में जानना चाहूंगा। वैसे मोटे तौर पर ये कह सकता हूं कि ये हिन्दुस्तान की कोई बहुत ही महत्वपूर्ण जासूसी संस्था है। इसकी एक मेम्बर हमारी संस्था के हैडक्वार्टर में हमारे कमांडर के नीचे काम करती थी। लू चिन मुम्बई आया तो उसी गद्दार ने उसकी सूचना यहां भेजी थी।"

"ओह! आई सी।" हैरान होने के बाद ठण्डी आह-सी भरते

हुये बोला शाकाल—"तभी लू चिन के मुम्बई पहुंचते ही एयरपोर्ट से लोग उसके पीछे लग गये थे। वो दो लोग थे। एक लम्बी लड़की थी तो दूसरा नाटे कद का आदमी था। बाद में आशीर्वाद उनसे मिला था। इसका मतलब केशव की औलाद ट्रिपल सी का एजेन्ट है और उसने हर तरह की लड़ाई की ट्रेनिंग ली हुई है। इसीलिये आज तक किसी के काबू में नहीं आया।"

"किसी के काबू में वो कैसे आता शाकाल साहब!" कॉफी समाप्त करके पाइप सुलगाते हुये बोला यांग यू ही—"उसकी मौत तो मेरे हाथों लिखी हुई है। जैसे दाने-दाने पर लिखा होता है खाने वाला का नाम, वैसे ही मरने वाले के माथे के अन्दर लिखा होता है मारने वाले का नाम।"

❑❑❑
❑❑❑

तीसरा पीरियड खाली होने पर विशाखा, काजल, टीटू, अविनीति तथा कमलकान्त कॉलेज के पिछले भाग में बड़े से मैदान में उगी हरी घास पर बैठे हुये आपस में गपशप कर रहे थे कि तभी हाथ में हैण्डी कैम लिये वहां मुकुल और हरीश पहुंचे।

"क्यों ओये छुछून्दरों...तुम लोग यहां बैठे क्या कर रहे हो?" उनके निकट पहुंचने पर मुकुल गुर्राते हुये-सा बोला—"आज तुम्हारा हीरो नजर नहीं आ रहा है तुम लोगों के साथ?"

"क्यों पूछ रहे हो हमारे हीरो को?" उसकी तरफ मखौल उड़ाने वाली-सी निगाहों से देखते हुये मुस्कराकर बोला कमलकान्त—"उस दिन कैन्टीन में तुम्हारे लोगों की धुलाई में कुछ कमी रह गई थी क्या जो आज उसे सही करवाना चाहते हो?"

"और सुन ओये छिपकली की कटी दुम...।" च्यूइंगम को एक ओर थूकते हुये गुर्राया टीटू—"ये तूने हम लोगों को छुछून्दर क्यों कहा? हमसे पंगा लेने वाली बात क्यों की? कहीं तुम्हारे दिमाग में ये तो नहीं है कि आज आशीर्वाद कॉलेज नहीं आया तो तुम लोग हमें पीटकर उस दिन का बदला ले सकोगे? यदि तुम ऐसा सोच रहे हो तो ये तुम्हारी भूल है। हमें पीटना इतना आसान नहीं है। मैंने और गुड्डी ने तो जूडो-कराटे भी सीख रखे हैं। हमसे उलझे तो हम तुम्हें मजा चखा देंगे।"

"ओये डालडे के डिब्बे...।" टीटू की बात पूरी होने के साथ ही उसे कच्चा चबा जाने वाली-सी नजरों से घूरते हुये बोला हरीश—"ज्यादा उछल मत वर्ना तेरे पेट को फाड़कर तेरे जिस्म

में भरी सारी हवा निकाल दूंगा। और सुन, हम यहां तुमसे पंगा लेने नहीं आये। मच्छरों से पंगा लेने की आदत नहीं है हमें...।"

"तो फिर निकल लो।" चुटकी बजाने पर उनको वहां से जाने का इशारा करते हुये उपहास भरे अन्दाज में बोली काजल—"हमारा भेजा क्यों खराब करते हो...?"

"जाते हैं बुलबुल...जाते हैं।" काजल को पानी में घोलकर पी जाने वाली-सी नजरों से देखते हुये बोला मुकुल—"लेकिन जाने से पहले हम तुम्हें तुम्हारे हीरो का एक नया कारनामा दिखाना चाहते हैं। तुम्हारा वो दोस्त...पण्डित तो बड़ा छुपा रुस्तम है भाई...। ये देखो उसकी करतूत...।"

"हमें नहीं देखना कुछ भी।" मुकुल हैण्डीकैम के बटन से छेड़छाड़ कर ही रहा था कि नीम के तेल जैसे कड़वे लहजे में बोली विशाखा—"तुम लोग यहां से जाओ वर्ना हम प्रिंसीपल साहब से शिकायत करेंगे।"

"कर लेना, प्रिंसीपल साहब से शिकायत भी कर लेना। पहले अपने बेस्ट फ्रेन्ड के नये कारनामे देख लो। वैसे भी उसका ये कारनामा हमने प्रिंसीपल साहब को भी दिखाना है।" कहने पर मुकुल ने फिल्म चालू कर दी।

जुहू बीच पर प्राची ने जो हंगामा किया था वो सब था उस फिल्म में।

आशीर्वाद के वे पांचों दोस्त ठगे हुये से उस फिल्म को देखते रहे।

"क्यों, देखा आप लोगों ने अपने हीरो का कारनामा?" फिल्म खत्म होने पर उन सबकी ओर मखौल भरी नजरों से देखे हुये बोला मुकुल—"लड़की सबके सामने कह रही है कि उसने उसे खराब करके रख दिया है। क्यों ओये हरीश...लड़की जब ये कहे कि वो खराब हो गई है तो इसका क्या मतलब होता है?"

"लड़की तब खराब होती है जब उसका सबकुछ लुट जाता है।" हरीश अपने हरेक शब्द पर गोल्डी का मसाला-सा लगाता हुआ बोला—"यानि लड़की की इज्जत के झंडे उतर जाते हैं। भई, ये केशव पण्डित का छोरा तो वाकई बहुत ही पहुंची हुई चीज है। फर्स्ट इयर का लड़का है और प्रीवियस की स्टूडेंट को अपने प्रेमजाल में फांसकर उसका काम लगा दिया। चल भाई...ये फिल्म अपने प्रिंसीपल साहब को भी दिखा दी जाये। वो भी तो देखे कि उनके कॉलेज के बच्चे कितने अच्छे करैक्टर के हैं।"

हंसते हुये वे दोनों वहां से चले गये।

जबकि आशीर्वाद के वे पांचों दोस्त ऐसे शान्त थे मानो उन्होंने गूंगी का गुड़ खा रखा हो या फिर उनमें शर्त लगी हो कि जो पहले बोलेगा उसे दस दिन तक कैन्टीन में उनको नाश्ता पानी कराना होगा।

❑❑❑
❑❑❑

पाइप सुलगाकर कश मारने पर उसका धुंआ मुंह से उगलने लगा यांग यू ही।

"तो फिर यांग साहब...।" शाकाल ने भी सिगार सुलगा लिया था। कश मारकर नाक के रास्ते उसका धुआं बाहर करते हुये बोला—"आपने उसे मारने का कोई प्लान भी बनाया होगा?"

"हां शाकाल साहब...।" सोफे की पुश्त से पीठ टिकाकर पाइप का कश मारने पर यांग यू ही बोला तो शब्दों के साथ-साथ उसके मुंह से धुआं भी निकला, लेकिन छितराते हुये-सा—"दरअसल मेरा मेन मिशन तो आशीर्वाद को खत्म करने का है लेकिन इसके अलावा एक छोटा-सा काम और निबटाना है मुझे। यहां गृहमंत्रालय में संजय कुरील करके एक बाबू है। पहले वो हमारे लिये...मतलब सी० एस० एस० के लिये काम करता था। इधर उसके दिमाग में देशभक्ति का भूत सवार हुआ है। उसने हमसे सम्पर्क भी तोड़ लिया है। उस गद्दार को भी सजा देनी है मैंने। हैरान मत होवो तुम क्योंकि तुम्हें उसके बारे में कोई जानकारी नहीं है। हमारे और भी बहुत सारे एजेन्ट यहां हैं जिनकी खबर तुम्हें नहीं है। वो सब सीधे कामरेड से बात करते हैं। एतिहात के तौर पर ये सिस्टम रखा गया। इससे ये है कि एक एजेन्ट पकड़ा जाये तो वो दूसरे के बारे में ना बता सके। खैर, अब सुनो कि मेरा प्लान क्या है!" कहने पर वो शाकाल को अपना प्लान बताने लगा।

❑❑❑
❑❑❑

आशीर्वाद के उन पांचों दोस्तों ने चौथा पीरियड अटैण्ड करना था इसलिये वो क्लास में पहुंचे।

पांचों के चेहरे उतरे हुये से नजर आ रहे थे।

सर अभी क्लास में आये नहीं थे। पांचों अपनी-अपनी सीटों पर बैठ गये।

यूं अपसेट तो वो पांचों ही थे लेकिन—विशाखा के दिमाग में मुकुल द्वारा दिखाई गई फिल्म के दृश्य घूम रहे थे तो कानों में उस फिल्म के संवाद गूंज रहे थे।

कुछ देर तक तो वह बेहद आन्दोलित रही। फिर अपने सिर को झटका देते हुये बड़बड़ाई—"वो फिल्म बकवास थी। मेरा आशीर्वाद ऐसा नहीं है। ये उन बदमाशों की कोई शरारत है। आशीर्वाद ने उन्हें पीटा जो है—उससे अपना बदला लेने के लिये उन्होंने ये चाल खेली है। इस पीरियड के बाद मैं प्राची की क्लास में जाकर उससे मिलूंगी। वो बतायेगी कि असलियत क्या है?"

फिर डेस्क से उसने अपनी नोट बुक निकाली तो उसे लगा कि नोट बुक में कुछ है।

क्या रखा है ये देखने के लिये उसने नोट बुक खोली तो उसमें एक सफेद रंग का लिफाफा था और लिफाफे के अन्दर कुछ था ये उस लिफाफे को हाथ लगाये बिना ही दिखाई दे रहा था।

"कैसा है ये लिफाफा?" लिफाफे को वह कुछ चोरों के से अन्दाज में खोलते हुये बड़बड़ाई—"मेरी नोट बुक में इसे किसने और कब रखा? क्या है इसमें?"

चेहरे पर कौतूहलता तथा असमंजस के मिले-जुले भावों को लिये उसने लिफाफा खोला और उसमें झांका तो पाया कि वे कई सारी तस्वीरें हैं।

उसने जल्दी से लिफाफे को डेस्क में रखा और अपने अगल-बगल में बैठे स्टूडेंट्स पर नजर डाली कि कोई उसकी तरफ तो नहीं देख रहा है।

ये देखकर उसने राहत की मीलों लम्बी सांस ली कि उस घड़ी किसी का ध्यान उसकी तरफ नहीं था।

सारे स्टूडेंट्स प्रोफेसर का लैक्चर सुन रहे थे। उसे पता ही नहीं लगा था कि कब प्रोफेसर क्लास में आया था। वह तो अपने आप में ही उलझी हुई थी।

पहले उसका दिमाग हैण्डी कैम में देखी फिल्म में उलझा हुआ था तो फिर बाद में नोट बुक में मिले उस लिफाफे में उलझ गया।

प्रोफेसर चटर्जी क्या पढ़ा रहे हैं—क्या समझा रहे हैं उसकी तरफ से बिल्कुल ही ध्यान हटा हुआ था उसका। उसके दिमाग में लिफाफे में पड़ी तस्वीरों को लेकर कौतूहलता की सुनामी आई हुई थी।

उसने डेस्क में ही हाथ डालकर लिफाफे से एक तस्वीर खींची और फिर जैसे ही उसकी नजर उस तस्वीर पर पड़ी तो मानो उसके ऊपर कॉलेज की पूरी इमारत ही आ गिरी हो।

कुछ देर तक तो वह सकते की सी हालत में बैठी रही।

फिर वह एक-एक करके लिफाफे से तस्वीरें निकालती और देखने पर पुनः उसे रखती रही।

सारी तस्वीरें देखने पर उसका चेहरा ही नहीं मानो उसकी आत्मा भी धुआं-धुआं हो चुकी थी।

वे तस्वीरें अश्लील किस्म की तो नहीं कही जा सकती थीं। लेकिन हां, उनमें आशीर्वाद और प्राची शर्मा एक-दूसरे से लिपटे तथा चुम्बन लेते नजर आ रहे थे।

विशाखा चूंकि आशीर्वाद से मन-ही-मन ही प्यार करती थी इसलिये पहले तो हैण्डी कैम में देखी फिल्म और फिर अपनी नोट बुक में मिली उन तस्वीरों को देखकर उसे इतना दुख पहुंचा कि उसकी आंखें भर आईं।

उसका जी चाह रहा था कि वह दहाड़े मार-मारकर रोये, लेकिन जैसे-तैसे करके उसने अपनी उस इच्छा पर काबू पाये रखा।

❑❑❑

❑❑❑

चौथे पीरियड के बाद इन्टरवेल था।

प्रोफेसर चटर्जी के क्लासरूम से बाहर निकलते ही विशाखा भी उठ खड़ी हुई। उस समय उसके चेहरे पर चट्टानी कठोरता थी तो आंखों में अहिष्णुता के भाव थे।

वह दरवाजे की तरफ बढ़ी तो पीछे उसे काजल ने आवाज लगा दी।

"एक मिनट रुक विशाखा। इतनी तेजी में कहां भागी जा रही है?"

विशाखा रुकी। लेकिन पलटी नहीं।

काजल के साथ अविनीति, टीटू तथा कमलकान्त भी थे।

पांचों एक साथ क्लास से बाहर निकले।

"अब बोल भी विशाखा।" तेज-तेज कदमों से चलती विशाखा के पीछे लगभग दौड़ती हुये सी बोली काजल—"कहां उड़ी चली जा रही है? थोड़ा स्पीड कम कर ले।"

"प्राची से मिलना है मुझे।" ना तो स्पीड कम की उसने और ना ही काजल की तरफ देखा। पूर्ववत् स्पीड पकड़े हुये सपाट से

लहजे में बोली—"उससे जानना है कि कल शाम जुहू बीच पर क्या हुआ था?"

"थोड़ा स्पीड कम कर विशाखा—।" तेज कदमों से चलकर उसके बराबर में आते हुये बोली अविनीति—"हम भी तुम्हारे साथ हैं। उस हैण्डीकैम में देखी फिल्म के अलावा इन तस्वीरों के बारे में भी उससे पूछना है।"

स्पीड क्या कम करनी थी विशाखा ने, अविनीति की बात सुनकर उसके कदमों में मानो पावर ब्रेक लग गई हों।

"कै...कैसी तस्वीरों के बारे में पूछना है उससे?" हैरानी भरी नजरों से अविनीति की ओर देखते हुये पूछा विशाखा ने।

जवाब में बोला टीटू—

"गुड्डी...दरअसल हम चारों को ही हमारी ड़ेस्कों में कुछ ऐसी तस्वीरें मिली हैं कि...जिनमें आशीर्वाद और प्राची आपत्तिजनक स्थिति में दिखाई दे रहे हैं।"

"समझ में नहीं आता कि उन तस्वीरों को हमारी डेस्कों में किसने और कब रखा?" बड़बड़ाने वाले से अन्दाज में बोला कमलकान्त—"लेकिन एक बात तो दावे के साथ कह सकता हूं कि वो हैण्डीकैम की फिल्म और ये तस्वीरें...सब अपने आशीर्वाद के खिलाफ एक साजिश है। अपना दोस्त गलत नहीं हो सकता है।"

"मैं भी यही कहना चाहती हूं।" अपने हरेक शब्द पर जोर देते हुये-सी बोली अविनीति—"चांद में दाग हो सकता है। बल्कि चांद में दाग है लेकिन मेरे भाई में कहीं कोई दाग नहीं। कोई खोट नहीं है। वो फिल्म...। हमारे डेस्क में मिली तस्वीरें, सब उसके खिलाफ उन बदमाशों की साजिश है। वो छात्र नेता विनोद...जो प्रिंसीपल का लड़का है, उसने कोई चक्कर चलाकर आशीर्वाद को कॉलेज से निकालने के लिये ये सब किया है...।"

"दिमाग तो मेरा भी यही कहता है।" लुटे-पिटे से लहजे में बोली विशाखा—"आशीर्वाद मेरा बचपन का दोस्त है। आज तक मैंने उसमें कोई खोट नहीं देखा। ल...लेकिन वो फिल्म और वे तस्वीरें...।"

"इसका मतलब...।" विशाखा की ओर गौर से देखते हुये बोला कमलकान्त—"तुम्हें भी तुम्हारे डेस्क में आशीर्वाद और प्राची की आपत्तिजनक अवस्था वाली तस्वीरें मिली हैं। लेकिन विशाखा उन तस्वीरों को लेकर तुम दुखी मत होवो। किसी को फंसाने के

लिये ऐसी तस्वीरें आजकल बड़ी आसानी से तैयार की जा सकती हैं। ये सब कम्प्यूटर का कमाल हो सकता है।"

"ये किसी की शरारत है या सच्चाई, यही जानने के लिये तो मैं प्राची के पास जा रही हूं।" विशाखा का लहजा सपाट-सा था।

"तो चलो, हम भी चल रहे हैं तुम्हारे साथ।" मुंह में च्यूइंगम डालते हुये बोला टीटू।

❑❑❑

❑❑❑

दोपहर को धन्नो ऑफिस पहुंची और उसने जोकर बनकर जोकर वाली सीट संभाली तो मुण्डा वहां से निकला।

अपने कॉलेज की तरफ ही बढ़ रहा था वो कि जेब में पड़े मोबाइल में 'हम होंगे कामयाब...मन में है विश्वास...हम होंगे कामयाब एक दिन' वाले गाने की मधुर धुन बजने लगी।

बाइक की स्पीड को कम करने पर उसने जेब से मोबाइल निकाला और बिना स्क्रीन पर नजर डाले उसे ऑन करके बोला—"कौन...?"

"तुम्हारे लिये एक काम की खबर है आशीर्वाद...।" स्वर अपरिचित था इसलिये उसकी बात पूरी होने से पहले ही बोल पड़ा केशवपुत्र—"लेकिन तुम कौन हो? नाम बोलो अपना...।"

"नाम की छोड़ो...काम सुनो। गृहमंत्रालय में संजय कुरील नाम का एक बाबू है—वर्षों से वह देश के सीक्रेट चीन के हाथ बेच रहा है। इस समय भी वो कुछ सीक्रेट्स चीन से आये चाइना सीक्रेट सर्विस के एजेन्ट नम्बर वन यांग यू ही को सौंपने के लिये ऑफिस से निकला हुआ है। मुझे पता है कि इन दिनों तुम चीन के एक एजेन्ट...जिसका नाम शाकाल है, की तलाश में हो। अगर तुम यांग यू ही को गिरफ्तार कर लो तो एक तो देश के सीक्रेट्स चीन जाने से बच जायेंगे। दूसरे...यांग यू ही के जरिये तुम शाकाल तक पहुंच सकते हो...।"

"अबे ओये घनचक्कर...तू मुझे लल्लू समझता है क्या जो मैं तेरे कहने में आकर वहां चल दूंगा जहां तुम चाहोगे?" उसकी बात पूरी होने से पहले ही केशवपुत्र रेगमाल से खुरदुरे स्वर में बोला—"अबे ओये घनसूरपुर के चावल...जो चाल तू मेरे से खेलने की कोशिश कर रहा है ये बहुत पुरानी और घिसी-पिटी चाल है।

दिमाग के चैम्पियन को फंसाना है तो कोई बढ़िया-सा आइडिया सोच। साला घोंचू कहीं का...।"

"फोन बन्द नहीं करना आशीर्वाद...।" फोन बन्द करने जा रहे आशीर्वाद के कानों से पुनः वही आवाज टकराई—"मेरी बात का यकीन करो। मैं तुमसे कोई चाल नहीं खेल रहा हूं। सच में ही संजय कुरील इस समय यांग यू ही से मिलने और उसे देश के सीक्रेट्स सौंपने गया है। वो लोग शाम को चार बजे मिलेंगे। अभी एक बजा है। तुम चाहो तो मंत्रालय जाकर पता कर सकते हो। वहां मिशन सात सौ दस नम्बर वाली फाइल और संजय कुरील नहीं मिलेंगे तुम्हें। और सुनो...तुम्हें मैं ये सारी जानकारी मुफ्त में नहीं देने वाला हूं। इस जानकारी के बदले में मुझे पांच लाख रुपये चाहिये। और जब तुम ये वादा करोगे कि मेरी जानकारी होने पर मुझे ये रकम दोगे तो ही मैं तुम्हें ये बताऊंगा कि कुरील और यांग कहां मिलने वाले हैं। अब तुम पहले मंत्रालय में जाकर पता करो कि कुरील और फाइल नम्बर सात सौ दस वहां है या नहीं। मैं तीन बजे फिर से फोन करूंगा।"

इसी के साथ दूसरी ओर से फोन काट दिया गया तो लड़के ने भी लाल बटन दबाकर फोन जेब में रखा और बाइक की दिशा बदल दी।

❑❑❑

❑❑❑

प्राची शर्मा कॉलेज आई ही नहीं ये बात आशीर्वाद के दोस्तों को प्राची की दोस्त प्रियंका से पता चली।

"अब क्या करें?" च्यूइंगम चबाते हुये बोला टीटू—"वो तो कॉलेज आई ही नहीं।"

"छुट्टी के बाद हम उसके घर चलेंगे।" सपाट से लहजे में बोली विशाखा—"उससे जानकर ही रहूंगी मैं कि सच क्या है?"

"तू खामखाह टेंशन ले रही है विशाखा।" स्नेहपूर्वक उसके कंधे पर हाथ रखते हुये बोली अविनीति—"प्राची के घर जाकर क्या करेंगे? मुझे तो लगता है कि अपने आशीर्वाद के दुश्मनों के साथ वह भी मिली हुई है। तुम ध्यान करो तो उसका गेम तुम्हारी समझ में आ जायेगा। पिछले कुछ दिनों से वह हमसे...आशीर्वाद से जबरदस्ती चिपकने में लगी हुई थी। उससे मिलने से तुम्हारी टेंशन घटेगी नहीं, बढ़ेगी। उसे छोड़, उसे कल यहीं कॉलेज में मिलेंगे हम। और सुन, तू आशीर्वाद के विषय में निगेटिव सोचना छोड़।

वो ऐसा नहीं है ये तू मेरे से बेहतर जानती है। लेकिन इस समय तू अपने दिमाग की नहीं दिल की सुन रही है। दिमाग की खिड़कियां खोले तो तुझे भी सूझे कि ये सब उसके खिलाफ साजिश है—साजिश के सिवाय कुछ नहीं। अब देख...मान लो आशीर्वाद भाई का उस चुड़ैल से कोई चक्कर था तो ये हैण्डीकैम से उसकी फिल्म लेने के लिये कौन और क्यों उसके पीछे-पीछे घूम रहा था। उसे कैसे पता था कि जुहू बीच पर आशीर्वाद और प्राची के बीच ये ड्रामा होने वाला था...? विशाखा तू इन तमाम बातों पर गौर करेगी तो तुझे भी सूझ जायेगा कि ये सब आशीर्वाद को बदनाम करने की एक चाल है।"

और सच में गुड्डी के दिमाग के बन्द तमाम कपाट एक साथ खुले।

"तू ठीक कह रही है अविनीति।" वह शर्मिन्दा-सी होते हुये बोली—"ये सब आशीर्वाद को फंसाने की चाल है। वो ऐसा नहीं है। कुछ पलों के लिये जाने मुझे क्या हो गया था जो मैं उस पर शक करने लगी थी। तूने ये भी ठीक ही कहा कि इस मामले में मैंने अपने दिल की सुनी, दिमाग से काम लिया ही नहीं। मुझे अब प्राची से कुछ नहीं पूछना। हां, मैं आशीर्वाद को फोन करके ये जरूर बताना चाहूंगी कि कॉलेज में उसके खिलाफ कौन-सा गेम खेला जा रहा है। ला काजल...तू अपना मोबाइल दे।"

फिर गुड्डी ने फोन पर आशीर्वाद पण्डित को सारा किस्सा कह सुनाया। उसकी बात सुनने पर उसने इतना ही कहा कि फिलहाल तो वह किसी जरूरी काम में उलझा हुआ है। कल कॉलेज आकर उस मैटर को देखेगा, समझेगा और जो लोग इस खेल के पीछे हैं उनकी अच्छे से खबर लेगा और दूध-का-दूध...पानी का पानी करेगा।

उसकी बात सुनकर उसके दोस्तों ने राहत भरी सांसें लीं।

❑❑❑

❑❑❑

शहर से बाहर!

वीराने में स्थित उस खण्डहर-नुमा इमारत के सामने ब्लू कलर की पुरानी फीयेट कार रुकी।

कार का दरवाजा खोलकर उसमें से पचासेक वर्षीय, लेकिन अच्छी सेहत वाला औसत कद का संजय कुरील बाहर निकला।

उसके हाथ में नीले रंग की प्लास्टिक के कवर वाली फाइल थी।

इधर-उधर देखते हुये वह उस खंडहर-नुमा इमारत के पास पहुंचा और चिल्लाकर बोला—

"कोई है? कोई है?"

"अन्दर आ जाओ कुरील। अन्दर तुम्हारी बीवी और दोनों बच्चे हैं।"

आवाज आने पर वह बिना पल्लों वाले दरवाजे को पार कर अन्दर पहुंचा। अन्दर बिना दरवाजों के एक कमरे से जुड़े दूसरे कमरे और दूसरे कमरे से जुड़े तीसरे कमरे को पार करते हुये वह एक बड़े से आंगन में पहुंचा।

वहां एक गोल तथा प्लास्टर उधड़े खम्बे से उसकी पैंतालीस वर्षीय बीवी रेणुका बंधी खड़ी थी तो उसी के पास सूखी घास पर उसके दोनों बच्चे पड़े हुये थे।

बच्चों में एक पन्द्रह साल की लड़की और दूसरा तेरह साल का लड़का था।

उन दोनों के दोनों हाथ-पांव पीठ पीछे करके सफेद तथा मजबूत रस्सी से बंधे हुये थे तथा मुंह पर सफेद तथा चौड़ी पट्टी वाला टेप चिपका हुआ था।

उनके अलावा उस समय वहां कोई नहीं था।

"रेणुका...।" कुरील लपककर अपनी बीवी के पास पहुंचते हुये व्याकुलता भरे लहजे में बोला—"तुम ठीक तो हो ना?"

"हां...हां, मैं ठीक हूं।" आतंक में डूबी रेणुका फुसफुसाकर बोली—"आप जल्दी से मुझे, अजय और मोनिका को खोलिये। हम लोगों को जल्दी ही यहां से भागना होगा।"

"भागना क्या है।" अपनी बीवी के बंधन खोलते हुये बोला संजय कुरील—"तुम लोगों का अपहरण करने वालों ने मुझसे एक फाइल की मांग की थी। वो फाइल लाया हूं। उनको देकर निकल चलेंगे। वो लोग यहां दिख जरूर नहीं रहे हैं—लेकिन होंगे आसपास ही।"

"तुम ठीक कह रहे हो कुरील। हम यहीं हैं।"

उस नई आवाज को सुनकर कुरील ने आवाज वाली दिशा में देखा।

टूटी हुई दीवार में बिना दरवाजे वाली चौखट पर पाइप का कश लगाते हुये यांग यू ही खड़ा हुआ था।

"पहचाना मुझे कुरील...?" कहने पर मुंह से धुआं उगलते हुये वह कुरील की ओर बढ़ा।

"हां यांग।" सपाट से पहले में बोला कुरील—"एक बार नहीं, तीन बार मिल चुका हूं मैं तुमसे। ये चौथी मुलाकात है। लेकिन आगे नहीं मिलना चाहता मैं तुमसे। मिलने का मौका भी नहीं मिलेगा। ये फाइल अपने ऑफिस के सेफ से निकालने पर मैं अपने अगले-पिछले तमाम गुनाहों को कबूल करने वाला एक पत्र लिखकर सेफ में छोड़ आया हूं। यहां से जाते ही मैं अपने आपको कानून के हवाले भी कर दूंगा। मैंने अपने वतन से गद्दारी की है और अब मैं उसका प्रायश्चित करना चाहता हूं।"

"यानि तू अब हमारे किसी काम का नहीं रहा।" पाइप से कश मारने पर उसका खुशबूदार धुआं कुरील के मुंह पर छोड़ते हुये रेगमाल से भी ज्यादा खुरदुरे लहजे में बोला यांग यू ही—"तूने अपने वतन के साथ-साथ हमसे भी गद्दारी की। तेरी गद्दारी की सजा तेरे वतन का कानून दे ना दे लेकिन हम तेरी गद्दारी की सजा जरूर देंगे। अभी, इसी समय देंगे, और ऐसी सजा देंगे कि जिसे देखने पर तू पागल हो जायेगा। लेकिन ला, पहले ये फाइल मुझे दे।"

फाइल लेकर उसे चेक करने के बाद यांग यू ही ने पहले तो कुरील के तेरह वर्षीय बेटे को गोली मारी। फिर उसकी बीवी को भी खत्म कर दिया।

कुरील एक क्षण तो पागलों की तरह अपने बेटे और बीवी की खून से लथपथ लाश देखता रहा। फिर गुस्से में भरकर वह यांग यू ही से लिपट गया।

"हरामजादे.ऽऽऽकुत्तेऽऽऽ।" वह पागलों की तरह चिल्लाते हुये बोला—"मैं...मैं तुझे जान से मार डालूंगा।"

तभी यांग ने उसके चेहरे पर घूंसा मारा तो वह लड़खड़ाकर पीछे जा गिरा।

□□□
□□□

यांग ने ताली बजाई तो वहां चार हट्टे-कट्टे गुंडे चारों ओर से, जो कि शायद दीवारों की ओट में छिपे हुये थे, भूतों की तरह प्रकट हुये।

"इस हरामी को पकड़कर बांध दो।" पाइप से जले हुये तम्बाकू की राख झाड़ते हुये गुर्राकर बोला यांग तो उन गुण्डों ने कुरील को उस गोल खम्बे से बांध दिया जिससे कुछ देर पहले उसकी बीवी बंधी हुई थी।

"अब तुम लोग यहां से जाओ।" पाइप को साफ करके जेब में रखते हुये यांग ने उन गुण्डों को वहां से जाने का आदेश दिया तो वे गुण्डे वहां से चले गये।

चेहरे पर कुत्सित किस्म की मुस्कान लिये यांग कुरील के पास पहुंचा और बोला—"अब तेरी गद्दारी की सजा के रूप में मैं तेरे सामने तेरी नाबालिग लड़की से बलात्कार करूंगा ओये कुरील। तू देखेगा, चिल्लायेगा, लेकिन तेरी चीख-पुकार सुनने वाला यहां कोई नहीं होगा।"

"न...नहीं यांग...तुम ऐसा नहीं करोगे।" चेहरे पर आतंक के भाव लिये गिड़गिड़ाकर बोला कुरील—"मेरी बेटी को छोड़ दो। मैंने गद्दारी की है तुमसे। तुमने मेरी बीवी और बेटे को मारा, मुझे भी मार दो। मेरी बेटी...मेरी बेटी को भी मार दो। लेकिन, एक बाप के सामने उसकी बेटी की...। रहम खाओ मुझ पर, तुम्हें खुदा का वास्ता यांग।"

"तेरे रोने-गिड़गिड़ाने से मुझ पर कोई असर नहीं होने वाला कुरील।" कुरील की आंखों में आंखें डाल, भेड़िये की मानिन्द ही गुर्राकर बोला यांग—"तेरे साथ जो मैं करूंगा वो हमारे दूसरे एजेन्टों के लिये एक सबक होगा। उन्हें बताया जायेगा कि हम गद्दारी करने वालों को क्या सजा देते हैं।"

कहने पर वह झुककर सूखी घास पर बंधी पड़ी कुरील की पन्द्रह वर्षीय खूबसूरत-सी लड़की के बंधन खोलने लगा।

कुरील विवशता के आंसू बहाते हुये यांग के आगे गिड़गिड़ाता रहा।

यांग ने मोनिका के हाथ-पांव खोलने के बाद उसके मुंह से पट्टी हटाई और उसके दोनों हाथों को अपने हाथों में दबोचकर उसके चेहरे का चुम्बन लेने के लिये उस पर झुका।

कि तभी—

"यांग साहब...वो आ पहुंचा।"

"तुमने पहचान लिया उसे...वो आशीर्वाद ही है ना?"

"जी हां यांग साहब...।" शक्ल से मवाली ही लग रहा था वह—"मैंने दूरबीन से उसे देखा है। वो आशीर्वाद ही है।"

"चलो उसे घेरो। मैं इसे बांधकर आता हूं। अब पहले उसका काम तमाम करूंगा। फिर इसे देखूंगा।"

यांग ने डरी-सहमी मोनिका को उसके बाप के साथ बांधा और एक ओर चल दिया।

❑❑❑

❑❑❑

आशीर्वाद ने अपनी बाइक को नीले रंग की फीयेट के पीछे खड़ा किया।

जेब से चने के दाने निकालकर उनकी फंकी मारने पर उन्हें चबाते हुये वीराने में स्थित उस खण्डहर-नुमा इमारत की ओर देखा। फिर तेज-तेज कदमों से चलते हुये उस इमारत की ओर बढ़ा।

उसे इस बात का पूरा-पूरा एहसास था कि उसे फंसाने के लिये फोन करके उसे यहां बुलाया गया है। हालांकि पहले फोन के बाद वह संजय कुरील के ऑफिस गया था और वहां उसने चेक कराया था तो वहां के सेफ से सात सौ दस नम्बर की बहुत ही महत्वपूर्ण फाइल गायब थी और साथ ही उस सेफ में संजय कुरील का इकबाले जुर्म वाला पत्र भी मिला था। पत्र में उसने लिखा था कि वो पहले चाइना सीक्रेट सर्विस के लिये काम करता था और उन्हें देश के सीक्रेट्स भेजता था। लेकिन सालभर से उसने उनके लिये काम करना बन्द कर दिया था। उसकी सोई हुई अन्तरात्मा जाग चुकी थी और वह देश से गद्दारी ना करने की कसम खा चुका था। लेकिन कुछ देर पहले उसके पास फोन आया था कि उसके घर से उसके बीवी-बच्चों का अपहरण कर लिया गया है। फोन पर धमकी दी गई है कि अगर उसने फाइल नम्बर सात सौ दस उनको नहीं सौंपी तो उसके बीवी-बच्चों को काट डाला जायेगा और काटने से पहले उसकी बीवी और नाबालिग बेटी के साथ बलात्कार भी किया जायेगा। मजबूरी में वह एक बार फिर से देश के साथ गद्दारी कर रहा है। बीवी-बच्चों को बचाने पर वह अपने आपको कानून के हवाले कर देगा।

इतना ही लिखा था उस पत्र में, पत्र को मंत्रालय के उच्चाधिकारियों ने पढ़ा और वहां पुलिस को बुलवा लिया था। वहां पहुंचे पुलिस कप्तान ने आशीर्वाद से पूछा था कि उसे वहां से फाइल के गुम होने के बारे में कैसे पता लगा था तो मुण्डे ने गुमनाम फोन के बारे में बताया और ये भी बताया कि उसे उसका फोन फिर से आना है। लेकिन ये नहीं बतलाया कि उसका फोन फिर से कब आयेगा।

उसके बाद मुण्डा वहां से कुरील के घर का पता लेकर उसके घर पहुंचा। घर के दरवाजे वैसे ही भिड़े हुये थे। उनमें लॉक नहीं लगा हुआ था। वह अन्दर पहुंचा तो उसने एक नजर में ही ताड़ लिया था कि वाकई वहां अपहरण जैसी घटना हुई होगी। घर के एक कमरे का सारा सामान इधर-उधर बिखरा पड़ा था।

फिर साढ़े तीन बजे उसके पास फोन आया और फोनकर्ता ने उसे बताया कि कुरील वो सीक्रेट्स सूरत रोड पर बारहवें मील पर घूसा गांव की तरफ जाने वाले रास्ते पर स्थित पुराने किले के खण्डहर में यांग यू ही नाम के चीनी सीक्रेट सर्विस के एजेन्ट को सौंपने वाला है और यांग यू ही उसे शाकाल का पता बता सकता है।

फोन सुनने पर वह वहां पहुंचा था। ये एहसास होने पर भी वो वहां पहुंचा कि उसे खत्म करने की वो शाकाल की ही कोई चाल थी। मौत से डरना उसने सीखा नहीं था। शाकाल की उसे तलाश थी । उसके लिये ये अवसर हो सकता था उस तक पहुंचने का।

चने चबाते हुये वह खंडहर में दाखिल हुआ।

यूं एक नजर देखने में वह लापरवाह ही लग रहा था। लेकिन वास्तव में ऐसा नहीं था।

वह बेहद चौकन्ना था। उसके कान शिकारी कुत्तों की तरह खड़े हुये थे।

छत हीन विभिन्न कमरों से गुजरते हुये वह एक बड़े लेकिन वो भी बिन छत के कमरे में पहुंचा ही था कि तभी उसे चारों ओर की दीवारों पर ए० के० छप्पनधारी कई मवाली टाइप के लोग दिखे तो वह धमककर खड़ा हो गया।

❑❑❑

❑❑❑

वह ऊंची-नीची तथा टूटी-फूटी दीवारें थीं और उन पर दर्जनभर गुण्डे खड़े हुये थे और उनकी गनों का रुख आशीर्वाद की तरफ था।

चने चबाते हुये मुण्डे ने बेफिक्री भरे अन्दाज में, टहलते हुये से चक्कर लगाकर चारों तरफ देखा।

"तुम सबकी मौत यहां और आज की तारीख में ऊपरवाले ने लिख दी है।" दोनों हाथ जेब में डाले घूमते हुये बोला वह—"मेरा मूड थोड़ा अच्छा है इस समय। तुम लोग ये बताओ

कि कैसी मौत मरना पसन्द करोगे? मेरे बारे में जानते हो, तो पता ही होगा कि मेरे पास कई तरह की मौत है।"

"उनकी छोड़ ओये पण्डित की औलाद।" चौखट पर प्रकट होते हुये बोला यांग यू ही—"अपनी मौत की बात कर। तू बता कैसी मौत मरना चाहता है? वैसे तुम्हें तारीफ करनी होगी मेरे दिमाग की। तुझे बेवकूफ बनाकर मरने के लिये यहां बुला लिया...।"

"उल्लू का पट्ठा है तू ओये चीनी बन्दर जो ये समझता है कि तेरी पुरानी घिसी-पिटी चाल में फंसकर मैं यहां आया हूं।" यांग यू ही की तरफ उसका मखौल उड़ाने वाली-सी नजरों से देखते हुये झील के पानी जैसे ही ठहरे हुये लहजे में बोला केशवपुत्र—तेरी पुरानी, सड़ी तथा बासी चाल को मैं पहले ही फोन पर समझ गया था। मुझे शाकाल की तलाश है—और जब फोन पर कहा गया कि यांग नाम का चीनी ब्रन्दर मुझे शाकाल तक पहुंचा सकता है तो मैं खुश हो गया। तेरी चाल उल्टी पड़ चुकी है ओये नाटियल। मुझे फांसने के लिये तूने जो जाल बिछाया है उसमें खुद ही फंसकर रह गया है। तुम सब मरोगे। लेकिन तुझे मारने से पहले मैं तुझसे शाकाल तक पहुंचने का रास्ता जरूर जान लूंगा।"

"हा...हा...हा...!" लड़के की बात सुनकर यांग यू ही यूं हंसा मानो लड़के ने उसे कोई चुटकला सुनाया हो।

"क्यों चीनी बन्दर!" चने के दो दाने मुंह में सरकाने पर मुण्डा उसकी तरफ मखौल उड़ाने वाली मुस्कान उछालते हुये बोला—"मौत का नाम सुनकर दिमाग हिल गया क्या तेरा?"

"दिमाग मेरा नहीं ओये लड़के...तेरा हिल गया है।" इस बार यांग यू ही नहीं मानो उसके कण्ठ में बैठा कोई किंग-कोबरा ही बोला हो—"तभी अपनी मौत को सामने देखकर तेरी जुबान कतरनी की तरह चलने लगी है। कोई इन्सान जब अपना दिमाग सन्तुलन खो देता है तो बेखौफ हो जाता है। जैसे इस समय तू बेखौफ है। जबकि मौत तेरे चारों तरफ मंडरा रही है।"

"गलतफहमी के दलदल से बाहर निकल ओये चीनी चूहे।" चने के दानों के साथ मानो अपना हरेक शब्द चबा-चबाकर, चिंगल-चिंगलकर, कुचल-कुचलकर ही बोला आशीर्वाद पण्डित—"तू और तेरे ये पालतू गुण्डे मेरा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते हैं। हां, तुममें से यहां से बचकर कोई नहीं जायेगा ये मेरा वायदा है तुमसे। रही बात कि बन्दूकों के इस साये से मैं बेखौफ क्यों हूं तो सुन,

दुनिया की किसी भी आर्म्स फैक्ट्री में अभी वो गोली नहीं बनी जो आशीर्वाद पण्डित के सीने को भेद सके।"

"बहुत भौंकता है ये कुत्ते का पिल्ला।" क्रोधातिरेक थर-थर कांपते तथा दांत पीसते हुये गुर्राया यांग यू ही—"पता नहीं क्या समझता है अपने आपको। खत्म कर दो इसे।"

गुण्डे तो पहले से ही तैयार खड़े थे। उन्हें तो बस यांग यू ही के आदेश की प्रतीक्षा थी।

और उसका आदेश होते ही—

"रेट...रेट...रेट...टा...टा...टा...।"

सबकी गनें एक साथ गरजीं।

लेकिन इससे पहले कि उन सैकड़ों गोलियों में से कोई एक भी अपने लक्ष्य तक पहुंच सके, लक्ष्य अपने स्थान से गधे के सिर का सींग बन चुका था।

❑❑❑

❑❑❑

"प...पापा...उस शैतान ने मम्मी और अजय को मार डाला है।" कुरील के साथ खम्बे से बंधी पन्द्रह वर्षीय मोनिका रोते हुये बोली—"अब वो हमें भी मार डालेंगे। म...मैं मरना नहीं चाहती हूं पापा। मुझे बचा लो...।"

"म...मैं तुम्हें नहीं बचा सकता हूं मेरी बच्ची।" कुरील नहीं उसकी आत्मा रो रही थी। उसकी आवाज में जमाने भर का दर्द जरूर झलक रहा था—"मैं मजबूर हूं। पापी भी हूं। अपने लिये पाप का रास्ता मैंने खुद चुना था कभी। तब सोचा भी नहीं था कि जिस पाप भरे रास्ते पर मैं आगे बढ़ रहा हूं—वो रास्ता पतन का रास्ता है और उसमें मेरे पापों की सजा इतनी भयानक मिलेगी। हां बेटी...पैसों के लालच में मैंने अपने वतन से गद्दारी की है। ये उसी की सजा है। बीवी और बेटे की लाश देख रहा हूं और तेरे साथ जो बीतने वाली है उसकी कल्पना मुझे डरा रही है। मेरी बच्ची...तेरी मां और भाई की हत्या का जिम्मेदार मैं हूं। काश! काश...उस समय मुझे अक्ल आई होती जब मैंने अपने देश से...अपने वतन से गद्दारी की सोची थी। अब कुछ नहीं हो सकता है। अब मुझे अपने पाप की सजा भोगनी ही होगी। बस...मैं तो ईश्वर से एक ही प्रार्थना कर रहा हूं कि वो शैतान जो करने की सोचे हुये है वो ना करे। उसकी बुद्धि घूम जाये और वह हमें गोली मार दे। पहले मुझे मारे...और और फिर तुम्हें...।"

"ल...लेकिन पापा...। मैं...मैं मरना नहीं चाहती। मुझे मरने से डर लगता है।"

कहते हुये मोनिका जोर-जोर से रोने लगी तो संजय कुरील भी रोने लगा।

❑❑❑

❑❑❑

गोलियों की बाढ़ से बचने के लिये मुण्डे ने सोची-समझी जगह पर छलांग लगाई।

उसने पहले ही ताड़ लिया था कि वहां एक मीटर लम्बा पुराना तथा जंग लगा सरिया पड़ा था। सरिये को लपककर उसने तीन-चार करवटें बदलते हुये वह स्थान भी छोड़ा।

और उठकर खड़ा हो गया।

ये सब पलक झपकने जितने समय में किया था शाओलीन के शिष्य ने।

तब तक यांग यू ही के गुण्डे उसी स्थान पर निशाना साधे गोलियां चलाते रहे थे जहां पलभर पहले आप सबका चहेता खड़ा था। फिर जब उन्होंने उसे दूसरी जगह सुरक्षित खड़े देखा तो उनकी गनों का रुख उधर हुआ।

किन्तु इससे पहले वह फायरिंग शुरू करते, केशवपुत्र ने अपने हाथ में पकड़ा जंग लगा सरिया अपने शरीर के चारों तरफ तेजी से घुमाना शुरू कर दिया। गुण्डों ने गोलियां चलानी शुरू की तो वो गोलियां सरिया से लड़के के इर्द-गिर्द बने सुरक्षा कवच से टकरा-टकराकर इधर-उधर छितराने लगीं।

फिर एक समय ऐसा भी आया जबकि गुण्डों की गनों की गोलियां समापत हो गईं।

लड़के ने सरिया घुमाना बन्द किया और मखौल उड़ाने वाली-सी नजरों से यांग यू ही की तरफ देखा जो कि उसकी तरफ कुछ ऐसी निगाहों से देख रहा था मानो उसके सामने लड़का नहीं कोई एलियंस खड़ा हो।

"क्यों ओये चीनी कबूतर!" सरिया एक ओर फेंक जेब से चने के दो दाने निकालकर उन्हें मुंह में सरकाने पर रेगमाल से भी ज्यादा खुरदुरे लहजे में बोला केशवपुत्र—"मुझे जिन्दा देखकर दिमाग कत्थककली करने लगा क्या? होश में आ, और इससे पहले मैं शुरू होऊं मुझे वो फाइल चाहिये जो कुरील ने तुम्हें दी है। साथ ही शाकाल तक पहुंचने का रास्ता भी बता...।"

"लड़के...तुझे शाकाल तक पहुंचने का नहीं जहन्नुम तक पहुंचने का रास्ता दिखाने चीन से यहां आया हूं मैं। अबे ओये, देख क्या रहे हो, घेरकर मार डालो इसे।"

यांग के चिल्लाने पर दीवारों पर खड़े गुण्डे नीचे कूदने लगे।

नीचे आने पर वे आशीर्वाद को चारों ओर से घेरे, हाथ में गनों को लाठी की तरह पकड़े उसका तिया-पांचा करने के इरादे से आगे बढ़े।

लेकिन इससे पहले वो लड़के के नजदीक पहुंचें, वो अपना दायां पैर हवा में उठाकर बायें पैर के पंजे पर सिन्नी, बिन्नी, पोलर, ऊषा, खेतान पंखे की तरह नाचने लगा।

फिर—

'तड़...तड़ाक...ठाक...ठाक...।'

किसी गुण्डे की कनपटी पर तो किसी के चेहरे पर, किसी की छाती पर तो किसी की खोपड़ी से उसका पैर टकराया और वे गैस भरे गुब्बारों की मानिन्द उड़-उड़कर पीछे कमजोर दीवारों को तोड़ते हुये दूसरे कमरों में चले गये।

दो मिनट भी नहीं लगे और मैदान साफ था।

चलता हुआ फैन रुका।

सामने असली दुश्मन यांग यूही रह गया।

"तेरे पालतू गुण्डे तो गये काम से, अब तेरा क्या होगा चीनी बन्दर?"

"मैं तुझे जान से मार डालूंगा कुत्ते के पिल्ले।" चिल्लाते हुये यांग ने मुण्डे की तरफ छलांग लगाई। जिससे बचने के लिये मुण्डा एक तरफ हटा।

लेकिन यहीं वह मात खा गया। वो भी बहुत ही पुरानी तथा घिसी-पिटी चाल से।

दरअसल यांग ने उस पर छलांग लगाने का दिखावा भर किया था। वास्तव में उसे जेब से कैप्सूल बम निकालने का वक्त चाहिये था। उसके दांव को बेकार करने के लिये लड़के ने एक ओर हटने में ध्यान लगाया तो उसने जेब से बम निकालकर लड़के के सामने पटक दिया।

'भड़ाक' की आवाज के साथ ही उसमें से आग तथा काले रंग का धुआं निकालकर पलभर के भीतर ही वहां फैल गया और धुआं आंखों में नुकसान ना पहुंचाये इसलिये आप सबके चहेते

को आंखें बन्द करने के साथ सांस भी रोक लेनी पड़ी ताकि धुऐं में बेहोशी की गैस ना मिली हो।

❑❑❑
❑❑❑

पांच मिनट बाद मुण्डे ने आंखें खोलीं।

धुआं छंट चुका था। लेकिन यांग यू ही अपने स्थान से गायब था।

बिना सांस अंदर खींचे मुण्डा बाहर की तरफ दौड़ा।

बाहर उस खण्डहर-नुमा इमारत का पूरा चक्कर लगाकर देखा, लेकिन चीनी का कहीं पता नहीं था। हां, नीले रंग की फीयेट अलबत्ता अभी उसकी बाइक के पास खड़ी थी।

कुछ सोचकर मुण्डा पलटा और इमारत में घुसकर संजय कुरील और उसके बीवी-बच्चों को तलाश करने लगा।

जल्दी ही वे उसे मिल भी गये। मोनिका तब भी जोर-जोर से रो रही थी और उसके रोने की आवाज के सहारे ही वह वहां पहुंच गया। दोनों को खोला तो मोनिका रोते हुये कुरील के गले लग गई।

"त...तुम कौन हो बेटा...?" मोनिका की पीठ पर हाथ फेरते हुये मुण्डे की तरफ देखकर लुटे-पिटे से लहजे में बोला कुरील—"खैर, तुम जो भी हो मेरी बेटी को लेकर यहां से निकल जाओ, वर्ना वो शैतान वापस आ गया तो हमारे साथ तुम्हें भी मार डालेगा।"

"तुम शायद यांग यू ही को शैतान कह रहे हो कुरील...।" बर्फ से भी ज्यादा ठण्डे लहजे में बोला केशवपुत्र।

"हां...! मैं उसी के बारे में कह रहा था।" हैरानी भरी निगाहों से केशवपुत्र की ओर देखते हुये बोला संजय कुरील—"ल...लेकिन क्या तुम उसको जानते हो? और तुमने मेरा नाम भी तो लिया। मुझे कैसे जानते हो तुम?"

"आशीर्वाद पण्डित नाम है मेरा।" इस बार लड़के के स्वर में ठण्डक के साथ रूखापन भी था—"देश के गद्दारों के बारे में जानकारी रखना मेरा काम है। यहां मैं तुम्हें ही मौत के घाट उतारने आया था। लेकिन अब मेरा इरादा बदल गया है। जिनके लिये तुम अपने देश से गद्दारी करते रहे उन्होंने तुम्हारे बीवी-बच्चे को मार डाला है। तुम्हारे लिये यही सजा पर्याप्त है। अब तुम देश

से गद्दारी करने के जुर्म में जेल की सलाखों के भीतर पहुंचा दिये जाओगे। वहां अपनी बीवी और लड़के की याद तुम्हें जीने नहीं देगी और तुम्हारी ये जीवित बच गई लड़की तुम्हें मरने नहीं देगी।"

"लेकिन मैं अभी मरना चाहता हूं वो भी तुम्हारे हाथों।" घुटनों के बल आशीर्वाद के सामने बैठते हुये गिड़गिड़ाकर बोला कुरील—"तुम्हें पहचान लिया है मैंने। तुम केशव पण्डित के बेटे हो। खूब सुन रखा है मैंने तुम लोगों के बारे में। मैं अपने पाप का यही प्रायश्चित करना चाहता हूं। तुम्हारे जैसे नेक दिल इन्सान के हाथों मारे जाने पर मेरे पाप धुल जायेंगे। जिन्दा रहा तो लोग मेरी बेटी का हमेशा ही मखौल उड़ाते रहेंगे। मेरी मौत के बाद ये दिल्ली अपने मामा के पास चली जायेगी...।"

"नहीं पापा...।" मोनिका अपने बाप के पास रोते हुये बोली—"मैं कहीं नहीं जाऊंगी। अपने घर में ही रहूंगी। प्लीज पापा...आप मरने की बात मत करिये।"

फिर बाप-बेटी कोहली भरकर रोने लगे और मुण्डे ने इंस्पेक्टर अनिल यादव को फोन लगाकर वहां पहुंचने को कहा।

लगभग पौन घण्टे बाद इंस्पेक्टर अनिल यादव पुलिस फोर्स तथा पुलिस एम्बूलेंस के साथ वहां पहुंचा। उसे सारा मामला समझाने पर मुण्डा वहां से रुखसत हुआ।

हां, पुलिस के वहां पहुंचने से पहले उसने संजय कुरील से शाकाल के बारे में पूछा जरूर था। लेकिन कुरील शाकाल के विषय में कुछ नहीं जानता था।

❑❑❑
❑❑❑

जिस समय आप सबका चहेता घर पहुंचा, घर के सारे मेम्बर्स, जिनमें केशव पण्डित, सोफिया, राजन शुक्ला, चांदनी तथा करतार सिंह थे, ड्राइंग रूम में बैठे चाय पी रहे थे।

वहां उनके अलावा घर का नौकर रणछोड़ सिंह भी खड़ा हुआ था। वहां पहुंचते ही मुण्डे ने रणछोड़ सिंह से दोपहर के खाने में से कुछ लाने को कहा तो वह किचन में चला गया।

दरअसल मुण्डे ने सुबह नाश्ता भी नहीं किया था और घर से निकल गया था। इस समय उसे जोरों से भूख लग रही थी।

रणछोड़ सिंह दोपहर की आलू गोभी की सब्जी तथा मूंग की दाल के साथ गर्मागर्म रोटियां सेक लाया तो मुण्डा जल्दी-जल्दी खाने लगा।

उसके खाना खाते समय सोफिया ने केशव की तरफ कोई इशारा किया तो केशव ने चाय का अन्तिम घूंट भरकर खाली कप को मेज पर रखा। फिर आशीर्वाद की तरफ देखते हुये गम्भीर से लहजे में बोला—"आशीर्वाद...तुम प्राची शर्मा को जानते हो...?"

खाना खाते हुये लड़के ने सिर उठाकर केशव की तरफ देखा। कुछ ऐसे मानो पूछना चाह रहा हो कि डैडी जी आप किस प्राची शर्मा की बात कर रहे हैं?

"मैं उस प्राची शर्मा की बात कर रहा हूं जो तुम्हारे कॉलेज में पढ़ती है।" मुण्डे के चेहरे पर लिखे प्रश्न की इबारत पढ़ते हुये बोला दिमाग का जादूगर—"वो आज सुबह यहां आई थी...।"

लड़के के दिमाग में एक धमाका-सा हुआ। उसे कल जुहू बीच पर घटी घटना की याद आने के साथ दिन में विशाखा से फोन पर हुई बात भी याद आई तो वह चौकन्ना होकर केशव की तरफ देखने लगा।

"वो लड़की तुम्हारे बारे में उल्टा-सीधा बोल रही थी।" केशव सिगरेट सुलगाने लगा तो सोफिया बोली।

"पागल है वो लड़की।" फिर से सहज हो रोटी का कौर तोड़ते हुये लापरवाही भरे लहजे में बोला आशीर्वाद—"कल शाम जुहू बीच पर मुझसे भी उलझ चुकी है। दिमाग खराब है उसका। कुछ दिनों से कॉलेज में मेरे आगे-पीछे मंडरा रही थी। दोस्ती करने के लिये मरी जा रही थी। मैंने थोड़ी लिफ्ट क्या दी, मेरे गले ही पड़ गई। मुझे ब्लैकमेल करना चाहती है शायद। दिन में गुड्डी का फोन आया था। कॉलेज में भी मुझे बदनाम करने की कोशिश कर रही है वो। आज तो मैं कॉलेज गया नहीं। कल जाऊंगा और मिलूंगा उससे। पूछूंगा कि वो मुझसे चाहती क्या है? उसने ज्यादा चूं-चपड़ की तो मजा भी चखा दूंगा उसे।"

"तैश में आने की जरूरत नहीं है आशीर्वाद...।" सिगरेट का कश मारकर उसका धुआं नथुनों के रास्ते बाहर करते हुये संजीदगी भरे लहजे में बोला केशव पण्डित—"यहां उसे हम सभी ने बुरा-भला कहा है। रोते हुये वह यहां से गई है। मैंने उसकी आंखों में सच्चाई की झलक देखी...।"

"आप...आप कहना क्या चाहते हैं?" रोटी का ग्रास मुंह में डालते हुये ठिठका आप सबका चहेता। तनिक भड़ककर बोला—"उसकी आंखों में आपने सच्चाई देखी तो इसका मतलब ये कि मैं गलत हूं? उसने यहां आकर जो बका, या वो कॉलेज में मेरी बदनामी के जो बैनर लगा रही है वो सही है? आपको अपने बेटे से ज्यादा उस लड़की की बात पर भरोसा है...?"

"शान्त हो जाओ।" मुण्डे की बात पूरी होने से पहले ही सख्त लहजे में बोला केशव पण्डित—"ज्यादा भड़कने की जरूरत नहीं है। पहले मेरी पूरी बात सुनो। तुम्हें गलत नहीं कह रहा हूं मैं। लेकिन वह लड़की भी सच बोलती लग रही थी। इसका मतलब क्या हुआ? तुम समझ रहे हो...।"

"इसका मतलब...।" एक पल के लिये उलझा आप सबका चहेता अपने डैडी जी की बात सुनकर। लेकिन अगले ही पल उसके मुंह से सिसकारी-सी फूटी—"ओह! ओह! मैं समझ गया डैडी जी कि आप क्या कहना चाहते हैं। जरूर उस लड़की को किसी ने अपनी चाल में फंसाया है। ओह माई गाड! कल मुझे यह बात क्यों नहीं सूझी थी? शायद उस समय मैं शाकाल वाले चक्कर में उलझा हुआ था इसलिये। अब ध्यान आ रहा है कल शाम प्राची ने मेरे साथ जैसा व्यवहार किया था वो नाटक नहीं हो सकता है। किसी भी मंच का कोई भी कलाकार ऐसा जीवन्त किस्म का नाटक नहीं कर सकता है। अब मैं ये भी समझ रहा हूं कि प्राची के साथ बुरा करने वाला मुझे भी फंसाना चाहता है। कोई भी हो वह। मैं उसे उसके मकसद में कामयाब नहीं होने दूंगा। कल कॉलेज जाने पर मैं उस हरामजादे को तलाश करूंगा जो इस सारे ड्रामे के पीछे है। छोड़ूंगा नहीं उसको...।" कहते हुये मुण्डे के नथुने यूं ही फूलने-पिचकने लगे मानो चूहे का कोई शरारती बच्चा उसकी नाक में घुसकर चूहा भाग बिल्ली आई वाला खेल, खेल रहा हो।

फिर उसे सोफिया, चांदनी तथा करतार सिंह ने समझाया कि फिलहाल वह इन सब बातों को भूलकर खाना खा ले।

❑❑❑

❑❑❑

सुबह नाश्ते की मेज पर राजेश्वर शर्मा नाश्ते तथा प्राची का इन्तजार करते हुये अखबार पढ़ रहा था कि तभी भोलाराम नामक घरेलू नौकर एक ट्रे में नाश्ता लेकर वहां पहुंचा और ट्रे को मेज पर रखकर ट्रे से नाश्ता निकालकर मेज पर सजाने लगा।

"भोलू...आठ बज रहे हैं, और बेबी नहीं आई।" अखबार

पर नजरें गड़ाये हुये राजेश्वर शर्मा बोला—"उसे कॉलेज भी जाना होगा। जाओ और जाकर उसे कहो कि मैं नाश्ते की मेज पर उसका इन्तजार कर रहा हूं।"

"ल...लेकिन मालिक...।" तनिक हिचकिचाते हुये-सा बोला भोलाराम—"बेबी तो रात घर आई ही नहीं...।"

"क्या बकते हो?" भोलाराम पर मानसूनी बादलों की तरह गरज-बरसकर बोला राजेश्वर शर्मा—"बेबी रात घर नहीं आई तो कहां गई?"

"म...मुझे नहीं पता मालिक।" वह थर-थर कांपते हुये बोला—"म...मैंने सोचा आपको पता होगा। बेबी शाम कार से गई थीं और फिर वापस नहीं लौटीं।"

"ये बात तुम लोगों ने रात में मुझे क्यों नहीं बताई?" कुर्सी से उठते हुये दहाड़ा राजेश्वर शर्मा।

"म...मैंने बताया तो म...मालिक। मुझे लगा कि बेबी ने फोन पर आपको बता दिया होगा। फ...फिर आप रात आये भी तो देर से हैं...।"

"चुप हो जा उल्लू के पट्ठे।" दांत पीसकर गुर्राया राजेश्वर शर्मा—"मैं बेबी को फोन करता हूं। याद रखना उसे कुछ हुआ तो घर में जितने भी नौकर हैं सबको लाइन में खड़ा करके गोली मार दूंगा।"

फिर वह मोबाइल पर प्राची का नम्बर लगाने लगा। लेकिन नम्बर नहीं लगा। राजेश्वर ने कई बार ट्राई किया, हर बार प्राची के मोबाइल का स्विच ऑफ बताया गया।

फिर क्रोध में पैर पटकते हुये वह प्राची के कमरे में पहुंचा कि शायद वहां उसकी किसी कॉपी-किताब में उसकी किसी दोस्त का नम्बर मिल जाये तो वह उससे प्राची के बारे में पूछे।

बेहद गुस्से में नजर आ रहा था वह।

प्राची के कमरे में पहुंचने पर उसे प्राची की राइटिंग टेबल पर एक कागज दिखा तो उसने उसे झपटने वाले अन्दाज में उठाया। वह प्राची के हाथ का लिखा पत्र था। फिर जैसे-जैसे वह उस पत्र को पढ़ता गया उसकी हालत खराब होती चली गई।

अन्त में वह पत्र उसके हाथ से छूट गया।

"न...नहीं मेरी बच्ची...।" वह मेज के पास जमीन पर बैठते हुये लुटे-पिटे से लहजे में बड़बड़ाया—"तू...तू ऐसा नहीं कर सकती। त...तू आत्महत्या नहीं कर सकती।"

❑❑❑
❑❑❑

"पत्र में आपकी पोती ने लिखा है कि वो आत्महत्या करने जा रही है। वजह नहीं लिखी उसने आत्महत्या की।" पत्र पुलिस कप्तान के हाथ में था और वह पत्र पढ़ने के बाद सामने सोफे पर लुटे-पिटे से बैठे राजेश्वर शर्मा से मुखातिब था—"आप बता रहे हैं कि वो कल शाम कार से घर से निकली थी। मैं अभी पुलिस हैडक्वार्टर से पता करता हूं कि शहर में कहीं किसी नौजवान लड़की की लाश पुलिस ने तो नहीं बरामद की है। वैसे आप कार का मेक, मॉडल और नम्बर भी बता दें तो हमें थोड़ी आसानी होगी।"

"ग्रे कलर की आईकेन कार है। नम्बर है एम आर तेरह ए एक्स चार-चार , तीन, नौ।" राजेश्वर शर्मा भरे कण्ठ से बोला।

राजेश्वर शर्मा के फोन करने पर ही पुलिस दल के साथ वहां एस० पी० विजय नारंग पहुंचा था।

एस० पी० नारंग ने पुलिस कन्ट्रोल रूम में फोन करके कार का नम्बर, रंग और मॉडल बताया और कहा कि यदि उस कार के बारे में हैडक्वार्टर में कोई जानकारी हो तो उसे बताया जाये।

उसे एक मिनट रुकने को कहा गया। फिर एक मिनट बाद बताया गया कि ना तो पुलिस हैडक्वार्टर में उस नम्बर की कार की बरामदी की कोई सूचना है और ना ही पिछले चौबीस घण्टों में शहर के किसी हिस्से में किसी जवान लड़की की कोई लाश बरामद हुई है।

फोन सुनने पर एस० पी० ने मोबाइल ऑफ करके जेब में रखा। फिर राजेश्वर की ओर देखते हुये बोला—"शर्मा जी...आप थोड़ा तसल्ली रखें और ईश्वर से प्रार्थना करें कि आपकी पोती सही-सलामत हो। पुलिस हैडक्वार्टर से खबर मिली है कि ना तो शहर के किसी हिस्से में आपकी कार कहीं मिली है पुलिस को, और ना ही पुलिस ने पिछले चौबीस घण्टों में कहीं से कोई जवान लड़की की लावारिस लाश बरामद की है...।"

"ल...लेकिन मेरी पोती ने...।"

"उसने इस चिट्ठी में लिखा जरूर है कि वो आत्महत्या करने जा रही है।" शर्मा की बात पूरी होने से पहले ही बोल उठा एस० पी० नारंग—"लेकिन हो सकता है घर से निकलने पर उसका इरादा बदल गया हो। वह आत्महत्या क्यों करने जा रही है ये भी नहीं लिखा। कोई मामूली वजह से उसका मूड अपसेट हुआ हो और

वह ये नोट लिखकर घर से निकली हो और बाद में उसकी हिम्मत ना पड़ी हो, और... । खैर, कहना मैं आपसे यह चाहता हूं शर्मा जी कि आपको अभी निराश होने की जरूरत नहीं है। जब तक उसकी डेड बॉडी नहीं मिलती तब तक तो आपको उसके जीवित होने की उम्मीद नहीं छोड़नी चाहिये। मैं अभी हैडक्वार्टर जाकर कन्ट्रोल रूम से बाहर के सभी थानों में आपकी पोती के गुम होने की खबर फ्लैश करवाता हूं। इसके अलावा मैं खुद उसके कॉलेज जाऊंगा और उसके साथ पढ़ने वाले स्टूडेंट्स से उसके बारे में जानकारी हासिल करूंगा। शायद उसके किसी दोस्त को उसके उखड़े मूड के बारे में जानकारी हो।"

एस० पी० नारंग अभी राजेश्वर शर्मा को तसल्ली दे ही रहा था कि वहां मीडिया वाले पहुंच गये और राजेश्वर शर्मा और एस० पी० नारंग से प्राची के सम्बन्ध में तरह-तरह के सवाल करने लगे।

❑❑❑
❑❑❑

आशीर्वाद कॉलेज पहुंचा और अपने दोस्तों से मिला तथा उनसे हैण्डी कैम में उनको दिखाई फिल्म के बारे में जानकारी ली। फिर दोस्तों के साथ कॉलेज के कम्पाउंड में खड़ा हो लकी और उसके साथियों के वहां पहुंचने की प्रतीक्षा करने लगा।

दरअसल उसने सुबह जल्दी अपने दोस्तों को फोन कर दिया था कि वे सब कॉलेज समय से थोड़ा पहले ही पहुंचें। वह उनसे प्राची के सम्बंध में बात करना चाहता है। उसके फोन करने पर उसके सारे दोस्त टीटू, गुड्डी, अविनीति, काजल तथा कमलकान्त वहां उससे पहले ही पहुंच गये थे।

वे लोग कम्पाउंड में खड़े आपस में बातें कर रहे थे कि तभी कमलकान्त को लकी और उसके साथ मुकुल और हरीश दिखे तो उसने लड़के को बता दिया कि लकी आ रहा है।

फिर जैसे ही लकी और उसके साथी उनके पास पहुंचे, लड़का उनके सामने आते हुये लकी से बोला—

"क्यों आये लकी...उस दिन की पिटाई तू भूल गया क्या जो फिर से मेरे से पंगा ले रहा है?"

"मैं तुमसे कोई पंगा नहीं ले रहा हूं आशीर्वाद।" लकी उखड़े हुये से लहजे में बोला—"मेरे सामने से हट जा वरना अच्छा नहीं होगा।"

"अच्छा तो तब नहीं होगा जब तू मुझे हैण्डीकैम में शूट की

गई फिल्म के बारे में और फोटोग्राफ्स के बारे में सही-सही नहीं बतायेगा।" मुट्ठियां भींचकर रेगमाल से भी ज्यादा खुरदुरे लहजे में बोला आशीर्वाद पण्डित—"बोल, तुम और तुम्हारे साथी ये क्या खेल, खेल रहे हो? प्राची और मुझे बदनाम करने के लिये तुम लोगों ने उस लड़की के साथ क्या गेम खेला है?"

"वाह! इसे कहते हैं एक तो चोरी और ऊपर से सीना जोरी।" लड़के का मखौल उड़ाते हुये बोला मुकुल—"खुद उस बेचारी लड़की को खराब किया और अब हमसे पूछ रहे हो कि हमने उसके साथ क्या खेल, खेला है। तुम्हारा ये नाटक करना अब ठीक ही है—क्योंकि सच्चाई क्या है ये प्राची बता सकती थी, और उस बेचारी ने आत्महत्या कर ली है।"

"क्या बकता है बे...?" लड़के ने झपटकर उसका कॉलर पकड़ा और उसे झटके देते हुये गुर्राकर बोला—"प्राची आत्महत्या नहीं कर सकती। कह दे ये झूठ है वर्ना मैं मार-मारकर तेरा चेहरा बिगाड़ दूंगा।"

"मेरे कहने से सच बदल नहीं जायेगा आशीर्वाद।" लड़के की कलाईयों को दबोचते हुये डायमण्ड जैसे ही कठोर लहजे में बोला मुकुल—"घर से न्यूज देखकर आ रहा हूं मैं। न्यूज में बतलाया जा रहा है कि प्राची शर्मा कल शाम को अपने घर से आत्महत्या करने के इरादे से निकली थी और अपने कमरे में अपने इरादे की पुष्टि करता पत्र लिखकर निकली थी।"

"नहीं, ये नहीं हो सकता है।" मुकुल का कॉलर लड़के के हाथ से छूट गया। वह दुखी तथा साकित-सा होकर बड़बड़ाया—"प्राची ऐसा नहीं कर सकती।"

"मेरी बात का विश्वास नहीं है तो जा कैन्टीन में देख। हर न्यूज चैनल पर प्राची की आत्महत्या की खबर को बार-बार रिपीट किया जा रहा है। अभी किसी को मालूम नहीं कि प्राची ने ऐसा कदम क्यों उठाया है—लेकिन जल्दी ही उन्हें मालूम चल जायेगा कि उसे आत्महत्या के लिये मजबूर करने वाला कौन है।" कहने पर आशीर्वाद और उसके दोस्तों को सकते की-सी हालत में छोड़कर लकी और उसके साथी आगे बढ़ गये।

❑❑❑
❑❑❑

फिर पत्थर के उन छः बुतों में जान भी पड़ी।

"अगर ये खबर सच है कि प्राची ने आत्महत्या कर ली है

तो ये बहुत ही बुरा हुआ।" आशीर्वाद की तरफ विचित्र-सी निगाहों से देखते हुये कमलकान्त बड़बड़ाया—"खासकर तुम्हारे साथ बुरा हुआ आशीर्वाद।"

"मेरे लिये क्यों बुरा हुआ?" कमलकान्त को घूरते हुये गुर्राहट भरे लहजे में बोला केशवपुत्र—"मैंने क्या किया है? मैंने प्राची को आत्महत्या करने को कहा है?"

"तुम मेरी बात समझ नहीं रहे हो आशीर्वाद।" कमलकान्त अपने हाथ मलते हुये व्याकुलता भरे लहजे में बोला—"प्राची ने आत्महत्या कर ली है और लकी के हैण्डीकैम में वो फिल्म शूट है जिसमें प्राची तुम पर अपनी अस्मत लूटने का इल्जाम लगा रही है। इसके अलावा उनके पास वो फोटोग्राफ्स भी होंगे जिनमें त...तुम प्राची के साथ आपत्तिजनक अवस्था में दिखाई दे रहे हो। प्राची के दादा, पुलिस तथा मीडिया को उस वजह की तलाश है जिसकी वजह से प्राची ने आत्महत्या की है। ऐसे में अगर वो फोटोग्राफ्स और हैण्डीकैम में शूट फिल्म की उन्हें खबर लग जाती है। लग जाती क्या है, लगेगी ही लगेगी। प्राची के आत्महत्या की वजह जानने के लिये पुलिस और मीडिया हर जगह हाथ मारेंगे और यहां, कॉलेज में पहुंचेंगे। यहां कल लकी और उसके दोस्तों ने हरेक स्टूडेंट को वो फिल्म दिखाई है। कुछ लोगों में फोटोग्राफ्स भी बांटे गये हैं। ठीक वैसे ही जैसे हमें बांटे गये हैं। और वो लोग पुलिस और मीडिया को जब उन फोटोग्राफ्स और फिल्म के बारे में बतायेंगे तो पुलिस और मीडिया सीधा अथवा यूं कहो कि कूदकर इस नतीजे पर पहुंचेंगे कि प्राची की आत्महत्या की वजह तुम हो। और तब तुम्हारा क्या हाल होगा इसका अन्दाजा तुम खुद लगा सकते हो।"

"हो गया है मुझे अन्दाजा अपने पर बीतने वाली पर।" जेब से चने के दो दाने निकालकर उन्हें मुंह में सरकाने पर किंग कोबरे की मानिन्द ही फुंफकारा आशीर्वाद—"तारीफ करता हूं लकी और उसके साथियों की जिन्होंने मुझे कसकर लपेटा है। प्राची की मौत की वजह मैं नहीं वे ही लोग हैं। उन्होंने मेरे साथ अच्छा खेल खेला है और वक्ती तौर पर मुझे बदनामी के दलदल में धकेल दिया है। लेकिन मेरा नाम आशीर्वाद पण्डित है। दलदल कैसा भी हो, मुझे उससे बाहर निकलना आता है। जल्दी ही साबित कर दिखाऊंगा कि मैं बेगुनाह हूं और उन हरामियों के मुंह से उनका

गुनाह कबूल करवा लूंगा। उससे पहले मैं न्यूज सुनना चाहता हूं। चलो कैन्टीन चलते हैं।"

कैन्टीन में लगे टी० वी० में उस समय इण्डिया न्यूज चैनल लगा हुआ था और उसमें शहर के स्टील किंग राजेश्वर शर्मा की पोती के बारे में ही न्यूज चल रही थी।

छःहों दोस्त एक खाली टेबल पर बैठकर न्यूज देखने लगे।

□□□
□□□

"न्यूज में तो यही बताया जा रहा है कि बीती शाम प्राची अपने घर में सुसाइड नोट छोड़कर आत्महत्या के लिये निकली। लेकिन अभी तक पुलिस को ना तो उसकी डेडबॉडी मिली और ना ही वो कार जिसमें सवार होकर वो घर से निकली थी।" टी० वी० पर नजरें जमाये हुये सोचपूर्ण लहजे में बोली गुड्डी उर्फ विशाखा—"अगर प्राची ने आत्महत्या कर ली होती तो कहीं से उसकी कार तो लावारिस हालत में पुलिस को मिलती...।"

"तू ठीक कह रही है विशाखा।" उसकी बात पूरी होने से पहले ही ठण्डी आह-सी भरते हुये बोली काजल—"लाश के बारे में तो ये माना जा सकता है कि चलो उसने समुद्र में कूदकर या किसी नदी, नहर में कूदकर जान दी होगी और लाश कहीं-ना-कहीं बह गई होगी। लेकिन कार तो शहर में ही कहीं होनी चाहिये। ना कार मिली और ना ही उसकी लाश तो अभी इस बात की संभावना है कि घर से आत्महत्या के लिये निकली प्राची ने रास्ते में अपना इरादा बदल दिया हो...।"

"अगर उसने इरादा बदल दिया था तो वह घर क्यों नहीं लौटी?" अवनिति के चेहरे पर भी सोचों की लकीरें थीं—"कहां गई वो? किसी रिश्तेदार या जानने वाले के यहां गई होती तो उसके दादा ने अब तक अपने हर रिश्तेदार के यहां फोन कर लिया होगा। अगर किसी दोस्त के यहां गई होती तो उस दोस्त को उसने ये तो बताया ही होता कि वो घर से किस इरादे से निकली थी तथा घर में वो जो सुसाईड नोट छोड़कर आई थी उससे उसके दादा परेशान हो रहे होंगे। तब उसके उस दोस्त ने ही उसके बारे में उसके दादा को फोन किया होता। समझ में नहीं आता कि प्राची ने जबकि अभी आत्महत्या नहीं की तो वो गई कहां? और अगर उसने आत्महत्या कर ली है तो अभी तक पुलिस को उसकी कार और डेडबॉडी क्यों नहीं मिली?"

"तुम क्या सोच रहे हो आशीर्वाद...?" आशीर्वाद को सोचों में उलझा देख टीटू ने उसे टोका—"वैसे अविनीति कह तो सही ही रही है कि अगर प्राची ने कहीं आत्महत्या की है तो उसकी डैडबाडी अगर नहीं मिली पुलिस को तो वो कोई बड़ी बात नहीं। लेकिन उसकी कार तो मिल ही जानी चाहिये थी...।"

"टीटू...मैं उस ओर नहीं सोच रहा हूं।" दो दाने चने के और मुंह में सरकाने पर उन्हें दांतों से कुचलते हुये सपाट से लहजे में बोला केशवपुत्र—"प्राची अगर आत्महत्या कर चुकी है तो देर-सवेर पुलिस उसकी डैडबॉडी और कार दोनों ही बरामद कर लेगी। अगर उसने आत्महत्या नहीं की है तो वह जहां कहीं होगी पुलिस उस तक पहुंच ही जायेगी। वह कोई मामूली लड़की नहीं है। मुम्बई ही नहीं, देशभर में स्टील किंग के नाम से जाने, जाने वाले राजेश्वर शर्मा की पोती है। उसकी अथवा उसकी डैडबॉडी की तलाश में मुम्बई पुलिस जमीन-आसमान एक कर देगी। इसलिये मेरा ध्यान उस तरफ नहीं बल्कि उस शख्स की तरफ है जिसने उसे छला। जिसने मेरा रूप धरकर उसके साथ गलत किया। उसे उसकी ही नजरों में गिराया। उसे आत्महत्या करने के लिये मजबूर कर दिया और मुझे बदनामी के कीचड़ में धकेला। मुझे उस शख्स को ढूंढना है। और उसे मैं ढूंढकर ही रहूंगा।" कहते हुये उसका चेहरा लोहार की भट्टी की तरह दहकने लगा।

❑❑❑

❑❑❑

"तुम्हारी राय में कौन हो सकता है वो शख्स?" मुण्डे की तरफ देखते हुये सवाल किया कमलकान्त ने—"क्या लकी और उसके साथी इस सारे फसाद की जड़ हैं?"

"लग तो कुछ ऐसा ही रहा है।" चने चबाते हुये भावहीन से लहजे में बोला केशवपुत्र—"बाकी अगर वाकई में इन लोगों ने ही मुझसे बदला लेने के लिये ये सब किया है तो वो आज शाम तक पता लग जायेगा।"

"कैसे?" चेहरे पर कौतूहलता के भाव लिये बोला टीटू—"क्या तुम लकी और उसके साथियों के मुंह से सच्चाई उगलवाने के लिये उन्हें टार्चर करोगे?"

"कुछ तो करना ही पड़ेगा प्यारेलाल। वैसे तो वो हरामी सच्चाई बताने से रहे।" कुर्सी से उठते हुये बोला केशवपुत्र—"तुम लोग यहीं रहना, मैं पांच मिनट में वापस लौटता हूं।"

मुण्डा कैन्टीन से बाहर निकला तो मुरली नामक एक लड़का जो कि उन्हीं की क्लास में पढ़ता था, उनके पास पहुंचकर बोला—

"क्या तुम लोगों को पता है, कॉलेज में पुलिस और मीडिया के लोग आये हुये हैं और उन्हें तुम्हारे दोस्त आशीर्वाद की तलाश है।"

"क्या?" विशाखा ही नहीं सभी दोस्त चौंके और फिर एक-दूसरे का मुंह देखने लगे। उनके कानों में धमाका-सा करके मुरली वहां से चला गया।

"ये पुलिस और मीडिया के लोग आशीर्वाद को तलाश कर रहे हैं।" उसके जाने पर कमलकान्त फुसफुसाकर बोला—"जरूर उन्हें आशीर्वाद और प्राची की लकी द्वारा तैयार की गई फिल्म का और उनके आपत्तिजनक फोटोग्राफ्स के बारे में पता लग गया होगा। अब हो सकता है पुलिस आशीर्वाद को गिरफ्तार कर ले जाये। लेकिन हम अपने दोस्त को पुलिस के हत्थे नहीं चढ़ने देंगे। म...मैं जाकर आशीर्वाद को देखता हूं कि वह कहां है। मिलने पर उसे कहूंगा कि वह यहां से भाग जाये...।"

"रहने दो कमल...।" वह उठने लगा तो विशाखा बोल पड़ी—"तुम शायद आशीर्वाद के विषय में ठीक से नहीं जानते। वो मामूली लड़का नहीं है। पुलिस उस पर यूं ही हाथ नहीं डाल सकती है। हैण्डीकैम की फिल्म और वो फोटोग्राफ्स इस बात का सबूत हो सकते हैं कि आशीर्वाद और प्राची के बीच गहरे सम्बंध थे। लेकिन चूंकि प्राची के सुसाइड नोट में आत्महत्या करने की वजह लिखी ही नहीं है तो पुलिस उसे किस आधार पर गिरफ्तार करेगी?"

"विशाखा ठीक कह रही है।" च्यूइंगम मुंह में डालते हुये बोला टीटू—"पुलिस अपने दोस्त को यूं ही हाथ भी नहीं लगा सकती है। हां, इस बार बदनामी से नहीं बच सकेगा वो। मीडिया को फिल्म और फोटोग्राफ्स के बारे में पता लग ही गया है। अगर उनके हाथ वो हैण्डीकैम और फोटो लग गये तो अपने यार की बेइज्जती खराब करके रख देंगे...।"

"इज्जत तो अपने भाई की अब खराब हुई ही हुई समझो।" अविनीति के चेहरे पर दुख तथा गम्भीरता के चील-कौव्वे से उड़ते नजर आ रहे थे—"वक्ती तौर पर ही सही, लेकिन बदनामी का दाग अब उसके माथे पर लगकर ही रहेगा। लेकिन जल्दी ही मेरा भाई असली शैतान को, जिसने प्राची को धोखा देकर उसकी इज्जत

खराब की और उसे आत्महत्या के लिये मजबूर किया उसे बेनकाब कर देगा।"

अविनीति की बात खत्म होने के साथ ही आशीर्वाद वहां वापस लौट आया। वह अभी कुर्सी पर बैठा ही था और विशाखा उसे बताने ही जा रही थी कि पुलिस और मीडिया वाले कॉलेज आये हुये थे और उसे पूछ रहे थे कि तभी इंस्पेक्टर अनिल यादव और दो पुलिसवालों के साथ एस० पी० विजय नारंग और उनके पीछे मीडिया वाले कैन्टीन में आ पहुंचे।

❑❑❑
❑❑❑

मुम्बई से बीस किलोमीटर दूर। नागपुर रोड पर थाना छीपी के इलाके में इंस्पेक्टर तुकाराम करकरे पुलिस टीम के साथ उस गहरी खाई में मौजूद था जहां एक जली कार पड़ी थी।

कार से अभी भी धुआं उठ रहा था और दूर से ही उस कार के अन्दर कोयले की तरह काला पड़ चुका इन्सानी जिस्म दिखाई दे रहा था।

उस खाई के दाईं तरफ तीसेक परिवारों वाला छीपी नामक एक छोटा-सा गांव था और गांव के एक वृद्ध आदमी ने सुबह उस तरफ धुआं उठते देखा था तो उत्सुकतावश वह उधर आया और वहां जलती हुई कार को देखकर वापस लौटा और गांव वालों को उस कार के विषय में बताया।

कौतूहलता में भरे गांव के कई मर्द, बच्चे तथा औरतें वहां पहुंचे। फिर उनमें से दो युवक छीपी थाने पहुंचे और वहां उस कार के विषय में बताया तो वहां से दो घण्टे बाद पुलिस इंस्पेक्टर पुलिस दल के साथ वहां पहुंचा था।

गांव के कुछ लोग अभी भी वहीं थे।

"सर...लगता है...।" लम्बे-तगड़े मराठी इंस्पेक्टर तुकाराम करकरे की तरह ही कार की तरफ देखते हुये उसका सहयोगी सब-इंस्पेक्टर तारिक हुसैन बोला—"ये दुर्घटना है। कार चालक नशे में कार चला रहा होगा और यहां सड़क पर थोड़ा टर्न है। टर्न पर नशे में चालक से कार बेकाबू होकर खाई में गिर गई होगी। आपका क्या ख्याल है सर...?"

"वही जो तुम्हारा है तारिक।" पूर्ववत् कार की तरफ देखते हुये युवा इंस्पेक्टर सपाट से लहजे में बोला—"ये मोड़ खतरनाक है ही। साल में यहां ऐसी चार-छः दुर्घटनायें जरूर होती हैं। मुझे

इस दुर्घटना की सूचना पुलिस हैडक्वार्टर को देनी होगी। लेकिन दिक्कत ये है कि कार इस बुरी तरह जल चुकी है कि सिर्फ ढांचा ही नजर आ रहा है। नम्बर प्लेटें तक जल चुकी हैं—ऐसे में कार की शिनाख्त कैसे हो सकती है—साला मुझे तो कारों के नाम तक ठीक से नहीं पता। अन्दाज नहीं लगा सकता कि ये कौन-सी कार होगी?"

तभी एक पुलिसवाला उनके पास पहुंचते हुये बोला—

"सर...ये पोलीथिन बैग उधर मिला है। मैंने खोलकर देखा तो इसमें कार के कागज हैं।" कहते हुये उसने हाथ में पकड़ा पोलीथिन बैग इंस्पेक्टर को पकड़ा दिया।

"बन गया काम। हो गई कार की अच्छे से शिनाख्त।" बैग से कागज निकालते हुये बड़बड़ाने वाले से अन्दाज में बोला तुकाराम करकरे—"लगता है कार जब ऊपर से नीचे को लुढ़क रही थी तभी कार के अन्दर रखा ये बैग कार से गिर गया है। अब इन कागजों से तो कार के मालिक का पता भी लग गया समझो। हां, कार मालिक का नाम राजेश्वर शर्मा, पता चिंचपोकली, मुम्बई। मैं अभी हैडक्वार्टर फोन करता हूं।" कहने पर इंस्पेक्टर ने जेब से मोबाइल निकाला और उसमें हैडक्वार्टर का नम्बर लगाने पर उस कार दुर्घटना की सूचना देने लगा।

❑❑❑
❑❑❑

इंस्पेक्टर अनिल यादव और एस० पी० विजय नारंग जैसे ही उनकी मेज के पास पहुंचे आशीर्वाद और उसके दोस्त उठ खड़े हुये।

"नमस्ते इंस्पेक्टर अंकल...नमस्ते अंकल...।" आशीर्वाद ने अनिल यादव और एस० पी० नारंग का अभिवादन किया। लेकिन उसकी नमस्ते का जवाब सिर्फ अनिल यादव ने ही दिया। एस० पी० के चेहरे पर गैंडे की खाल जैसी सख्ती थी।

"तुम्हारा नाम आशीर्वाद पण्डित है?" वह लड़के को घूरते हुये ग्लास पेपर जैसे खुरदुरे लहजे में बोला।

"जी हां अंकल...!" सहज भाव से बोला आशीर्वाद—"कहिये, कुछ काम था क्या मुझसे?"

"मैं तुम्हें गिरफ्तार करने आया हूं...।"

"किस जुर्म में?" लड़के का चेहरा सपाट था तथा लहजे में लापरवाही थी—"मैंने क्या किया है?"

"तुम्हारी वजह से तुम्हारे कॉलेज की लड़की ने आत्महत्या की है।" एस० पी० नारंग के चेहरे पर कठोरता नाच रही थी तो लहजे में खुरदुरापन था—"प्राची शर्मा नाम था उसका...।"

"कौन कहता है कि उसने मेरी वजह से आत्महत्या की है?" लड़के के व्यवहार में भी सख्ती आ गई—"ऑफिसर...प्राची शर्मा वाली न्यूज सुनी है मैंने। वो आत्महत्या के लिये घर से निकली जरूर है...थी, लेकिन अभी जब तक उसकी लाश नहीं बरामद हो जाती तब तक आप या कोई भी यह कैसे कह सकता है कि वह जिस इरादे से घर से निकली थी अपने इस इरादे में कामयाब हो चुकी थी? इसके अलावा मुद्दे की बात ये कि आप मुझे गिरफ्तार करने की बात क्यों कह रहे हैं? अगर उसने आत्महत्या की भी है तो क्या उसे आत्महत्या करने के लिये मैंने कहा है? मेरे खिलाफ किसी ने एफ० आई० आर० दर्ज करा रखी है...?"

"बकवास मत कर लड़के।" लड़के की दलीलों पर जलभुनकर सींक कबाब हो भड़ककर बोला एस० पी० नारंग—"तू कल का लड़का मुझे कानून सिखायेगा? एस० पी० विजय नारंग को कानून सिखायेगा? तूने कुछ भी ना किया हो तो भी मैं तुझे यहां से उठवाकर ले जा सकता हूं।"

"रहने दे ओये नारंग! इन फालतू की बातों में क्या रखा है?" लड़के को ताव आ गया था। वह एस० पी० नारंग की इज्जत के छिलके उतारते हुये गुर्राकर बोला—"एस० पी० है तो क्या हुआ? कानून तेरी या तेरे बाप की बपौती नहीं जो तू कानून की वर्दी पहनकर अपने मन की कर सकेगा। ना ही मैं लल्लू लाल चौधकिया प्रसाद हूं जो तेरे कहने से तेरे साथ चल दूंगा। आशीर्वाद पण्डित नाम है मेरा। कानून का सम्मान करता हूं। तेरे पास मेरी गिरफ्तारी का वारण्ट होगा तो मैं तेरे साथ चलूंगा नहीं तो जबरदस्ती तो तू क्या तेरा बाप भी यहां से नहीं ले जा सकता है।"

"हरामजादेऽऽऽ...।" हलक फाड़कर चिल्ला उठा एस० पी० नारंग। मारे क्रोध के उसका जिस्म भूकम्प में फंसी झोपड़ी की मानिन्द ही कांप रहा था—"कल के लड़के...मैं तुझे बताऊंगा कि पुलिस कप्तान की पॉवर क्या होती है। इंस्पेक्टर...गिरफ्तार कर लो इसे।"

"लेकिन सर...! जब इनके खिलाफ कोई चार्ज नहीं है तो...।"

"चार्ज नहीं है तो चार्ज बना लिया जायेगा। तुम इसे हथकड़ी लगाओ।" नारंग के मुंह से किंग कोबरे की फुंफकार निकली।

"कमाल है एस० पी० साहब। आप इतने बड़े अधिकारी होकर कानून को हाथ में लेने की बात कर रहे हैं।" हाथ में एन० डी० न्यूज चैनल का लोगो लगा माइक लिये एन० डी० न्यूज चैनल की युवा रिपोर्टर आगे आते हुये बोली—"मिस्टर आशीर्वाद पण्डित अपनी जगह बिल्कुल ठीक हैं। उनके खिलाफ आपके पास अभी कोई केस नहीं है तो आप इन्हें गिरफ्तार भी नहीं कर सकते हैं। और आप शायद इस शहर में नये आये हैं—इसलिये इनके बारे में नहीं जानते। ये हमारे शहर की, हमारे देश की शान हैं। इनके डैडी जी नामी वकील, जासूस तथा जाने-माने लेखक हैं। मुम्बई...महाराष्ट्र ही नहीं देशभर के लोग उनकी इज्जत करते हैं...।"

"ये होगा किसी तीसमार खां की औलाद।" मारे क्रोध तथा अपमान के एस० पी० नारंग का चेहरा पके टमाटर-सा लाल हो रहा था तथा बोलते समय उसके मुंह से थूक निकल रहा था—"इस कल के लड़के ने मेरा...एस० पी० नारंग का अपमान किया है। मैं इसे मजा चखाकर रहूंगा। इंस्पेक्टर तुम इसे हथकड़ी लगाओ वरना मैं तुम्हारी वर्दी उतरवा दूंगा।"

"मेरी वर्दी से पहले आपकी वर्दी उतर जायेगी सर!" इंस्पेक्टर अनिल यादव क्रोध में आकर अपने ऑफिसर से भी ऊंची आवाज में बोला—"मैं बिना कारण छोटे पण्डित जी को हथकड़ी नहीं लगा सकता हूं। आप अगर लगा सकते हैं तो लगा लें।"

तभी एस० पी० की जेब में पड़े मोबाइल की घण्टी बजने लगी।

वह भष्म कर देने वाली-सी निगाहों से इंस्पेक्टर अनिल यादव तथा लड़के की तरफ देखते हुये गुर्राया—

"मैं तुम्हें देख लूंगा इंस्पेक्टर और लड़के तुम्हें भी...।"

"जरूर देखना एस० पी० नारंग और जी भरकर देखना।" लड़का उसकी तरफ इस अन्दाज से देख रहा था मानो उसके सामने पुलिस कप्तान नहीं कोई बे-औकात का बन्दा खड़ा हो।

❑❑❑

❑❑❑

अपमान की आग में जलते हुये एस० पी० नारंग फोन सुनने लगा तो मीडिया वाले आशीर्वाद पण्डित से मुखातिब हुये।

"मिस्टर आशीर्वाद पण्डित।" नेशनल डेली का युवा पत्रकार हाथ में डायरी तथा पेन लिये लड़के के सामने आते हुये बोला—"हमने प्राची शर्मा के साथ आपके कुछ फोटोग्राफ्स देखे हैं। आपके कॉलेज के लड़कों ने ही दिखाये हैं। वो फोटोग्राफ्स बताते हैं कि...।"

"मेरे खिलाफ वो किसी की साजिश है।" उस युवा पत्रकार की बात को बीच में ही लपकते हुये बोला केशवपुत्र—"वो ट्रिक फोटोग्राफी है और मुझे बदनाम करने के लिये ये मेरे दुश्मनों का कारनामा है।"

"कॉलेज में आपके कौन दुश्मन हैं छोटे पण्डित जी...?" सिटी न्यूज चैनल के रिपोर्टर ने माइक पर बोलने के बाद माइक आशीर्वाद के सामने कर दिया।

"मेरे दोस्त और दुश्मन हर जगह हैं।" जेब में हाथ डालते हुये बोला केशवपुत्र—"मैं अभी नहीं कह सकता कि मेरे खिलाफ ये षड्यंत्र कॉलेज के दुश्मनों द्वारा रचा गया है अथवा ये किसी बाहरी आदमी का काम है। लेकिन ये तयशुदा बात है कि ये सब मुझे बदनाम करने के लिये किया गया है। लेकिन जिसने भी ये खेल खेला है मैं उसे बहुत जल्द बेनकाब कर दूंगा।"

"मिस्टर छोटे पण्डित...।" एन० डी० टी० वी० न्यूज चैनल की युवा रिपोर्टर आगे आते हुये बोली—"आपकी बात का कोई यकीन करे या ना करे, मुझे यकीन है। आपकी जबरदस्त फेन जो हूं। मानती हूं कि वे फोटोग्राफ्स, जिसमें आप और प्राची शर्मा आपत्तिजनक स्थिति में हैं वो ट्रिक फोटोग्राफी हो सकती है। आज के कम्प्यूटर युग में ये बहुत ही मामूली बात है। लेकिन अभी कुछ देर पहले इसी कॉलेज के लकी नाम के स्टूडेंटस ने हमें हैण्डीकैम की स्क्रीन पर जो फिल्म दिखाई है उसमें प्राची शर्मा जुहू बीच में कई लोगों के सामने आप पर उसे खराब करने का आरोप लगाती नजर आ रही है। उस फिल्म के बारे में आप क्या कहेंगे? उसमें तो कोई ट्रिक...चाल नहीं इस्तेमाल की जा सकती है...।"

"उस फिल्म को मैं चाल कह भी नहीं रहा हूं।" चने के दो दाने मुंह में सरकाने पर उन्हें दांतों से घायल करते हुये बोला नीलम-सी नीली आंखों वाला—"कल शाम को जुहू बीच पर प्राची ने मुझे रोका और मुझ पर धोखा देने का इल्जाम लगाया था। उस समय वहां तमाम लोग थे। तब मैंने उसे ड्रामेबाज समझा था। मैंने सोचा वह किसी के कहने पर खामखाह बदनाम करने

की कोशिश कर रही थी। तब मैंने उसे बुरा-भला भी कहा था। लेकिन अब एहसास हो रहा है कि वो अपनी जगह सही थी...।"

"इसका मतलब...तुम कबूल करते हो कि तुमने उसके साथ प्यार का नाटक करके उसकी इज्जत...उसकी आबरू से खेला है?" लड़के की बात पूरी होने से पहले ही बोला लोकल अखबार का रिपोर्टर।

"बड़े मियां...सवाल अभी पूरा हुआ नहीं और आप जवाब भी निकाल बैठे।" उस उम्रदराज पत्रकार का मखौल उड़ाते हुये-सा बोला केशवपुत्र—"मैं कह कुछ रहा हूं और आप सुन कुछ और ही रहे हैं।"

"लेकिन अभी तुमने ही तो कहा कि तुम्हें एहसास हो रहा है कि वो अपनी जगह सही थी...। इस बात का तो यही मतलब निकलता है ना कि वो सही है तुम गलत...!"

"अजी बड़े मियां। पूरी बात तो सुन लो मेरी।" कमाल का मुण्डा है। उस पर गम्भीर किस्म के आरोप लगाये जा रहे थे और वो मजाक के मूड में लग रहा था—"कह मैं ये रहा था कि प्राची अपनी जगह सच हो सकती है—लेकिन मैं भी गलत नहीं हूं। मैं और मेरा ईश्वर जानता है कि उससे मैं कॉलेज के अलावा अगर कहीं मिला हूं तो कल शाम को जुहू बीच पर। जबकि वो मुझ पर इल्जाम लगा रही थी। मुझे धोखेबाज कह रही थी...।"

"भई वकील के लड़के हो। अपने बचाव के लिये बातें बनाना तो खूब आता है। कैसी भी बातें बना सकते हो तुम।" उस वृद्ध पत्रकार के चेहरे पर व्यंगभरी मुस्कान थी बोलते समय—"वो भी उस हाल में जबकि जो लड़की तुम्हें गलत बता रही थी, वो अब तुम्हें कुछ कहने-सुनने के लिये इस दुनिया में ही नहीं रही।"

"अभी उसकी डेडबाडी नहीं मिली है बड़े मियां। आप खुदा से दुआ करें कि प्राची ने आत्महत्या ना की हो।"

"उसकी डेडबॉडी और कार पुलिस ने बरामद कर ली है ओये पण्डित।" मोबाइल को जेब के हवाले करते हुये उनकी तरफ बढ़ते हुये बेहद शुष्क से लहजे में बोला एस० पी० विजय नारंग—"लड़की ने छीपी मोड़ पर अपनी गाड़ी को खाई में कुदाकर अपनी जान दी है। अभी मैं वहां जा रहा हूं। तुमसे फिर मुलाकात होगी। अब मैं तुमसे अरेस्ट वारण्ट लेकर ही मिलूंगा। चलो इंस्पेक्टर...मुझे तुम्हें भी तुम्हारी औकात दिखानी है।"

अनिल यादव ने जवाब में कोई सख्त बात कहने के लिये

पहले तो मुंह खोला, लेकिन फिर कुछ सोचकर कुछ कहने से पहले ही उसने मुंह बन्द कर लिया।

फिर पुलिस टीम के साथ ही मीडिया वाले भी वहां से चल दिये। उनकी दौड़ भी वहीं तक की थी जहां पुलिस ने प्राची शर्मा की लाश बरामद की थी।

❑❑❑
❑❑❑

"ये बहुत बुरा हुआ?" ठण्डी आह-सी भरते हुये बोला केशवपुत्र—"अभी तक मेरे दिमाग में यही था कि शायद प्राची ने आत्महत्या न की हो। देर-सबेर उसके सामने आने पर मैं उससे पूछताछ करके उस शख्स तक पहुंच सकूंगा जिसने मेरा रूप धरकर उसे खराब किया है। उसकी इज्जत लूटी है। लेकिन उसकी मौत की सूचना के साथ मेरा ये रास्ता बन्द हो गया है।"

"तो क्या...," चिन्तायुक्त नजरों से मुण्डे की तरफ देखते हुये बोला कमलकान्त—"उस बहरूपिये तक पहुंचने का कोई और रास्ता नहीं है?"

"रास्ता नहीं होगा तो बनाना पड़ेगा।" मानो अपना हरेक शब्द चबा-चबाकर चिंगल-चिंगलकर ही बोला केशवपुत्र—"अपनी इज्जत बचाने के लिये मुझे कैसे भी करके उसे ढूंढना होगा। उसे सामने लाकर उसके मुंह से सच्चाई कबूल करवानी होगी।"

"आशीर्वाद भाई...मुझे तो लगता है इस सारे फसाद की जड़ लकी और उसके साथी हैं। उनके पीछे प्रिंसीपल के लड़के विनोद का हाथ भी हो सकता है। तुम लकी को पकड़ो। सच्चाई क्या है—वो बतायेगा।"

"लकी और उसके साथियों का इन्तजाम मैंने कर दिया है अविनीति।" चने के दो दाने मुंह में सरकाने पर तालाब के ठहरे हुये पानी जैसे ही ठहरे हुये लहजे में बोला केशवपुत्र—"मैं गेट पर जा रहा हूं। अलफांसे अंकल अपने चेलों के साथ गेट पर पहुंच चुके होंगे। लकी और उसके दोनों चमचे गेट से बाहर निकलेंगे तो मैंने अलफांसे अंकल को इशारे से लकी और उसके चमचों की पहचान करानी है। फिर वे उनका अपहरण कर ले जायेंगे और बाद में मैं अंकल के ठिकाने पर पहुंचकर लकी की जुबान यूं चुटकियों में खुलवा लूंगा। इस शरारत में अगर उनका हाथ हुआ तो मैं उनका वो हाल करूंगा कि दुनिया देखेगी...।"

"इसका मतलब...।" मुण्डे की तरफ देखते हुये बोला

कमलकान्त—"अभी जब तू बाहर गया था तो अपने अलफांसे अंकल को फोन करने गया था?"

"हां!"

❑❑❑
❑❑❑

"नहीं, ये नहीं हो सकता। मेरी प...पोती...मेरा जिगर का टुकड़ा। हाय...।"

जलकर कोयले जैसी काली हो चुकी लाश के चेहरे पर से कफन उठाने पर सिसक पड़ा राजेश्वर शर्मा।

"अंकल...!" उनके निकट बैठकर उसके कंधे पर हाथ रखते हुये गम्भीर से लहजे में बोला उनका कारोबारी मैनेजर दिलीप गुप्ता—"हिम्मत से काम लीजिये। जो हुआ वो दुखदायी है—लेकिन ईश्वर को शायद यही मंजूर था।"

घटना स्थल पर उस समय राजेश्वर शर्मा, उनका कारोबारी मैनेजर दिलीप गुप्ता, मुम्बई पुलिस का एस० पी० विजय नारंग, इंस्पेक्टर अनिल यादव तथा छीपी इलाके का इन्सपेक्टर तुकाराम करकरे, पुलिस का डॉक्टर तथा फिंगर प्रिंट सेक्शन वाले और दर्जनभर पुलिसकर्मी और कुछ स्थानीय लोग जो कि घटनास्थल के आस-पास के गांवों के थे, वहां मौजूद थे।

लाश को कार से निकाल लिया गया था और उस पर कफन डाल दिया गया था। यूं लाश के कपड़े, उसके बाल वगैरह सब जल ही चुके थे, लेकिन पुलिस डॉक्टर ने लाश का मुआयना करके बता दिया था कि मृतका जवान लड़की है।

"समझ में नहीं आता कि मेरी बच्ची ने ये कदम क्यों उठाया?" माथे पर हाथ रखे सिसकते हुये बोला राजेश्वर शर्मा—"किस चीज की कमी थी उसे? उसकी हर बात...हर जिद पूरी करता था मैं। फि...फिर निष्ठुर लड़की ने जाने किस बात की सजा दी मुझ बूढ़े को...? अब किसके लिए जीयूंगा मैं?"

"शर्मा जी...हिम्मत से काम लीजिये।" एस० पी० नारंग उसके कंधे पर हाथ रखते हुये शान्त से लहजे में बोला—"उठिये। आपकी पोती ने अकारण ही हत्या नहीं की। मजबूर होकर उसने ये कदम उठाया है। ईश्वर इसकी आत्मा को शान्ति दे।"

राजेश्वर शर्मा ने अपना आंसुओं से भीगा चेहरा ऊपर उठाया और हैरान होकर एस० पी० नारंग की ओर देखते हुये बोला—"य...ये आप क्या कह रहे हो नारंग साहब...? मेरी पोती ने मजबूर होकर आत्महत्या की है? आखिर उसे ऐसी क्या...?"

"उसे आत्महत्या के लिये मजबूर करने वाला उसके कॉलेज का ही एक लड़का है।" नारंग का चेहरा और लहजा दोनों ही सपाट थे—"उस लड़के ने आपकी पोती को अपने प्यार के जाल में फांसने के बाद उसके जिस्म से खेलकर...।"

"क्या बकते हो तुम नारंग?" नारंग की पूरी बात सुने बिना ही क्रोध में भरकर किंग-कोबरे की मानिन्द ही फुंफकारकर बोला राजेश्वर शर्मा—"मेरी पोती को मैं अच्छी तरह जानता हूं। वह ऐसी नहीं है। फिर अभी महीनाभर पहले ही तो मैं उसे मुम्बई लेकर आया हूं। इससे पहले वह शिमला के गर्ल्स हॉस्टल में रहकर पढ़ती थी। यहां कॉलेज में एडमीशन हुये बीस दिन भी नहीं हुये अ...और तुम कहते हो कि...। मेरी मरी हुई पोती के लिये ऐसी बेसिर-पैर की बातें करते हुये तुम्हें शर्म आनी चाहिये।"

"रिलेक्स मिस्टर शर्मा...रिलेक्स।" एस० पी० नारंग के चेहरे पर गम्भीरता नाच रही थी और उसका लहजा सपाट-सा था—"आपको मेरी बात सुनकर दुख पहुंचा इसके लिये आयम सॉरी। लेकिन हकीकत आपके सामने लाना भी जरूरी था। मैं आपकी पोती के कॉलेज गया था। वहां स्टूडेंट्स से मुझे कुछ ऐसे फोटोग्राफ्स मिले जिनसे ये साबित होता है कि आपकी पोती और आशीर्वाद पण्डित के बीच जिस्मानी सम्बंध थे...।"

"नारंग...!" क्रोधातिरेक थर-थर कांपते हुये किंग-कोबरे की मानिन्द ही फुंफकारा राजेश्वर शर्मा—"चुप हो जाओ वरना...मैं भूल जाऊंगा कि...कि...।"

"आप कहते हैं तो मैं चुप हो जाता हूं।" शर्मा की बात पूरी होने से पहले ही बोला नारंग—"जब आपको ये जानने में दिलचस्पी नहीं है कि आपकी पोती ने इतना हौलनाक कदम उठाया तो क्यों उठाया तो मुझे क्या जरूरत पड़ी है कि मैं खामखाह ही आपसे झक्क मारूं। वैसे जो जानकारी मेरे पास है वो मीडिया के पास भी है। जो आप मुझसे सुनने को तैयार नहीं वो अखबारों तथा टी० वी० न्यूज के माध्यमों से सुनेंगे...। मैं तो चाहता था कि आप मेरी बात सुनकर मेरे साथ सहयोग करें तो जिस लड़के ने आपकी पोती को आत्महत्या के लिये मजबूर किया है मैं उस पर कानूनी कार्रवाई करके उसे उसके किये की सजा दिला सकूं।"

नारंग की बात सुनकर कुछ देर तक तो राजेश्वर शर्मा उसे कठोर नजरों से घूरता रहा। फिर थोड़ा सामान्य होकर बोला—

"ठीक है नारंग...। मुझे पूरी बात बताओ।"

नारंग ने उसे आशीर्वाद पण्डित और उस हैण्डीकैम में शूट फिल्म के बारे में बताने के अलावा कॉलेज के स्टूडेंटस से मिले कुछ फोटोग्राफ्स भी दिखाये। सब देखने-सुनने, समझने पर राजेश्वर शर्मा का चेहरा ऑन किये हुये हीटर एलीमेंट की मानिन्द ही दहकने लगा।

❑❑❑

❑❑❑

किसी इमारत का बेसमेंट था।

बहुत ही बड़ा। किसी हिन्दी फिल्म में जैसे विलेन का नम्बर दो के धंधों में काम आने वाला गोदाम दिखाया जाता है ठीक वैसा ही था।

जगह-जगह पेटियों के, ड्रमों के पहाड़ से खड़े हुये थे।

इसके अलावा एक जगह तीन अलग-अलग खम्बों से लकी, मुकुल और हरीश बंधे लेकिन उस समय बेहोशी की अवस्था में खड़े थे।

तभी वहां ट्रिपल फाइव मार्का सिगरेट के कश लगाते हुये फिल्मों के हीरो जैसा खूबसूरत इन्टरनेशनल क्रिमिनल अलफांसे अपने चार चेलों के साथ पहुंचा और चेलों से कहा कि वो तीनों को जल्दी से होश में लायें।

उसका एक चेला भागकर फ्रिज से ठण्डे पानी की बोतल ले आया और बारी-बारी करके तीनों के चेहरों पर ठण्डे पानी की छींटे मारने लगा।

दो मिनट भी नहीं लगे और लकी और उसके दोस्त होश में आ गये। होश में क्या आये होश में आने पर अपने आपको उन्होंने जिस अवस्था तथा जिस माहौल में पाया उनके होश फाख्ता हो गये।

तीनों के ही चेहरों पर खौफ तथा आतंक के चील-कौव्वे से उड़ते नजर आने लगे।

"त...तुम कौन हो?" मारे खौफ के आंधी में फंसे पेड़ की डाल से लटके इकलौते पत्ते की मानिन्द ही कांपते हुये बोला लकी—"हमसे क्या चाहते हो? हम तीनों कॉलेज से निकल रहे थे कि कुछ लोगों ने हम पर हमला बोल दिया और फिर हमें बेहोशी की दवा सुंघाकर बेहोश कर दिया। व...वो तुम्हारे ही आदमी थे शायद। ल...लेकिन तुमने ऐसा क्यों करवाया?"

"ये तुम्हें मैं बताऊंगा लकी।" कुटुर-कुटुर करते हुये

केशवपुत्र वहां पहुंचा तो उसे देखकर लकी एण्ड पार्टी के नेत्र मारे आश्चर्य के फट पड़ने को तत्पर नजर आने लगे।

"त...तुम...?" लकी को तो मानो अपने नेत्रों पर विश्वास ही नहीं हो रहा था—"यहां?"

"हां प्यारे लाल!" चने चबाते हुये मुण्डा लकी की तरफ उसका मखौल उड़ाने वाली नजरों से देखते तथा उसकी उस हालत का पूरा-पूरा मजा लेते हुये बोला—"मैं और यहां। क्यों, विश्वास नहीं हो रहा है क्या? सपना-सा प्रतीत हो रहा है मुझे यहां देखकर?"

"हमें इस तरह क्यों लाया गया?" चेहरे पर खौफ के भाव लिये बोला हरीश।

"तुम्हारे लोगों की ठुकाई करने और तुमसे कुछ जानने के लिये।" सिगरेट का धुआं हरीश के मुंह पर छोड़ने पर बोला अलफांसे—"पहले तुम तीनों की तबियत थोड़ी ढीली की जायेगी उसके बाद सवाल किये जायेंगे। अगर तुम लोगों ने हमारे...केशव नन्दन के सवालों के सही जवाब दिये तो तुम लोगों को छोड़ दिया जायेगा। अगर जवाब देने में आना-कानी की या जवाब गलत देने की कोशिश की तो फिर तुम तीनों का तो भगवान ही मालिक होगा। चेलों...अब जरा पहले इन्हें गरम कर दो...।"

अलफांसे के चारों चेले अपने चेहरों पर खतरनाक किस्म के भाव लिये उन तीनों की ओर बढ़े तो उन तीनों की पहले से खराब हुई पड़ी हालत और भी ज्यादा खराब हो गई।

चेहरे ऐसे पीले नजर आने लगे मानो उन पर हल्दी, चंदन का उबटन लगा दिया गया हो।

पपड़ी जमें होंठ यूं कांपने लगे मानो पिंजरे में बंद कबूतर बिल्ली को देखकर पंख फड़फड़ाने लगा हो।

"द...देखो आशीर्वाद!" जूड़ी लगे मरीज की तरह थर-थर कांपते हुये बोला लकी—"य...ये ठीक नहीं कर रहे तुम। हम तुम्हारी कम्पलेन पुलिस के अलावा कॉलेज के प्रिंसीपल से करेंगे। तुमने हमें अगवा किया है और...।"

"क्यों अंकल—ये लड़का पागल हो गया है क्या?" लकी की तरफ मखौल उड़ाने वाली-सी नजरों से देखते हुये अपने हरेक शब्द में एम० डी० एच० कम्पनी से तैयार नमक, मिर्च, जीरा जैसे तमाम मसाले लगाते हुये बोला केशवपुत्र—"आपने इससे पहले भी कभी सुना है कि लाशों ने भी कभी किसी से कम्पलेन्ट की हो?"

"चुपकर ओये तालाब के पानी के बासी पनीर।" मुंह से सिगरेट का धुआं उगलते हुये हल्के क्रोध भरे लहजे में बोला अलफांसे—"इनको सच बताकर इनके हार्टफेल कर दोगे तो तुम्हारे प्रश्नों के उत्तर क्या इनके भूत देंगे?"

अलफांसे की बात सुनकर उन तीनों की हालत बद से बदतर हो गई।

"अ...आशीर्वाद प्लीज...हमें माफ कर दो।" रोने ही तो लगा मुकुल। रोते हुये, आंसू बहाते हुये बोला—"हमें जान से मत मारो। हमारी गलती इतनी ही है कि उस दिन कैन्टीन में हुई अपनी बेइज्जती का बदला लेने के लिये हमने कॉलेज में वो फिल्म दिखाई जिसे मैंने और लकी ने तब शूट की थी जबकि तुम और प्राची जुहू बीच पर आपस में झगड़ा कर रहे थे। मानो ये गलती है। ल...लेकिन इतनी बड़ी गलती नहीं है कि तुम उस गलती के लिये हमें जान से मार डालोगे।"

"ह...हां आशीर्वाद...।" मुकुल के शान्त होते ही हरीश भी गिड़गिड़ा उठा—"हमारी छोटी-सी भूल के लिये हमें इतनी बड़ी सजा मत दो।"

❑❑❑
❑❑❑

अपने घर में अपने कमरे में क्रोध में बिफरा राजेश्वर शर्मा कमरे की सजावटी चीजों को तोड़-फोड़ रहा था।

"नहीं छोडूंगा उस हरामजादे पण्डित की औलाद को।" उसके गले से जख्मी भेड़िये की-सी गुर्राहट निकल रही थी। ट्रॉली पर पड़े टी० वी० को लात मारकर पीछे गिराते हुये बोला वह—"जान से मार डालूंगा। उसे जान से मारने के साथ ही उसके समूचे कुनबे को खत्म कर डालूंगा। उस...उस हरामजादे के बाप केशव पण्डित का दिया जख्म अभी तक सूखा नहीं है और उस हराम की औलाद ने मेरी जान से भी ज्यादा प्यारी पोती को आत्महत्या करने के लिये मजबूर करके मेरे से मेरे जीने का आखिरी सहारा भी छीन लिया है। उस कुत्ते की बोटी-बोटी करके चीलों, गिद्धों, कव्वों को खिलाऊंगा मैं।"

"शान्त हो जाइये अंकल। थोड़ा सब्र से काम लीजिये। आप जैसा चाहते हैं वैसा ही होगा। आशीर्वाद पण्डित को उसके किये की सजा मिलेगी। जरूर मिलेगी। उस हरामी को कुत्ते की मौत ही मारा जायेगा। बस अंकल...आप...।"

"मत कह मुझे अंकल ओये दिलीप।" क्रोधातिरेक थर-थर कांपते हुये राजेश्वर शर्मा हाथ उठाकर गुर्राया—"अब आज से तू हमारी कम्पनियों का मैनेजर नहीं...हमारा पुराना राइट हैण्ड है। हां, दिलीप बारह-तेरह साल पहले मैंने तुम्हें अपने राइट हैण्ड से हटाकर अपना कारोबारी मैनेजर बना दिया था। उसकी वजह थी कि मैं तुझे अपने साथ रखकर तुझे तेरे बेटे की वजह से खतरे में नहीं डालना चाहता था। मेरे अपने बेटे ने तेरे साथ अन्याय किया था। किशन ने तेरे घर जाकर तेरी बीवी से बलात्कार किया था जबकि वो तेरा दोस्त था। तब तेरी बीवी ने आत्महत्या कर ली थी। उस समय तेरे बेटे की उम्र तीन-चार साल की होगी। तब तू मेरा, शाकाल का राइट हैण्ड हुआ करता था। इससे पहले तेरा बाप मेरा जोड़ीदार था। मेरी तरह वह भी चीन का एजेन्ट था। वह भारतीय सीक्रेट सर्विस की नजरों में आ गया और एक दिन मारा गया। तू बहुत ही काबिल था। मैंने तुझे अपना राइट हैण्ड...अपना ट्रबल शूटर बना लिया। लेकिन मेरे बेटे की वजह से तेरी बीवी ने अपनी जान दे दी। तब मुझे लगा कि तुझे जुर्म की दुनिया से बाहर निकाल दिया जाये ताकि तू अपने बेटे की परवरिश ढंग से कर सके। एक तू और तेरे से पहले तेरा बाप हुकुम चन्द ही ऐसा शख्स था जो राजेश्वर शर्मा की असलियत जानता था। अब तुम्हें ही मालूम है कि इस चेहरे के पीछे एक और चेहरा है। सिर्फ तू ही जानता है कि राजेश्वर शर्मा...देश का मशहूर स्टील किंग वास्तव में कौन है। तू दिमाग वाला है दिलीप। आज से नहीं ये हरामी आशीर्वाद पण्डित पिछले कई दिनों से मेरी आंखों में किरक रहा है। उसे खत्म करने वाले के लिये मैंने बहुत प्रयास किये हैं—लेकिन वो हर बार मौत को गच्चा देता रहा है। लेकिन मुझे विश्वास ही नहीं पूरा-पूरा यकीन है कि तुम उसे खत्म करने की कोई ऐसी योजना बनाओगे जिससे वह बच नहीं सकेगा और दिलीप...अगर तुम उसे खत्म कर दोगे तो मैं अपने नम्बर दो के तमाम धंधों का तुझे फिफ्टी परसेंट का पार्टनर बना दूंगा।"

"शाकाल साहब...आपने एक बार फिर से मुझे किसी काबिल समझा ये मेरे लिये गर्व की बात है।" दिलीप गुप्ता अदब से सिर झुकाकर सपाट से लहजे में बोला—"मैं आपका कारोबारी मैनेजर बनकर भी खुश था और आज आप मुझे अपना पार्टनर बनाने की बात कर रहे हैं तो ये मेरे लिये गर्व की बात है। रही

बात आशीर्वाद पण्डित की तो आज से वो आपका ही नहीं मेरा भी दुश्मन है। उसकी वजह से आपकी पोती ने आत्महत्या की है। उसने आपको खून के आंसू रोने पर मजबूर किया है—मैं उसे...उसके परिवार वालों को पहले तो खून के आंसू रुलाऊंगा। फिर एक-एक करके केशव पण्डित के परिवार के सारे सदस्यों को मार डालूंगा। हां शाकाल साहब...मुझे पता है केशव पण्डित की मुकम्मल तबाही...बर्बादी ही आपके जख्मों का मरहम है। किशन आपका बेटा था तो मेरा दोस्त। वो केशव की वजह से मारा गया था। किशन में एक बुरा ऐब था। वो औरतों का रसिया था। अच्छी लगने पर वह राह चलती लड़की को उठा लिया करता था। उसकी ये आदत उसकी बीवी को मालूम चली तो उसने आत्महत्या कर ली। तब प्राची भी मेरे बेटे कूकी की उम्र की थी। उसके बाद भी किशन की आदतों में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। एक रात वह क्लब से लौट रहा था तो रास्ते में एक विदेशी अकेली लड़की को देखकर उसने उसे कार में घसीटने की कोशिश की, लेकिन उसके दुर्भाग्य से तभी उधर से निकलते केशव पण्डित ने रुककर उसे ललकारा। किशन केशव से उलझ गया। दोनों में हाथापाई होने लगी। तब किशन ने केशव को खत्म करने के लिये रिवॉल्वर निकाल ली। उस समय तक सड़क पर बहुत से तमाशाई इकट्ठा हो चुके थे। किशन ने केशव को मारना चाहा तो केशव ने उसका हाथ उमेठ दिया और किशन खुद अपनी चलाई गोली से मारा गया। तब आपने केशव को मरवाने की भी बहुत कोशिश की थी। लेकिन केशव तो मानो अमृत पीकर पैदा हुआ था। वो हर बार बचता रहा और उसे मारने की कोशिश करने में आपके सैकड़ों आदमी मारे गये। फिर एक दिन आपने हारकर उसे मरवाने का ख्याल छोड़ दिया। लेकिन जवान बेटे की मौत का जख्म आसानी से नहीं भरता। आपका जख्म भी नहीं भरा वो...और आज उसकी औलाद ने आपको कभी ना भरने वाला एक और जख्म दे डाला।"

"तुम सही कह रहे हो दिलीप। बेटे और बहू की मौत के बाद मेरी पोती ही मेरे जीने का सहारा थी। वही मेरी दुनिया...मेरा जहान थी। उसकी मौत ने मुझे तोड़ डाला है। अब मेरे जीवन का एक ही मकसद रह गया है—पण्डित खानदान की तबाही। खासकर आशीर्वाद पण्डित को तो मैं कुत्ते की मौत मरते देखना...सुनना चाहता हूं। और जो उसे सड़ी-गली मौत देगा मैं

उसे अपने नम्बर दो के धंधों में ही नहीं, अपने नम्बर एक के सभी धंधों में अपना पार्टनर बना दूंगा।"

"आपकी ये इच्छा मैं पूरी करूंगा शाकाल साहब और वो भी बहुत जल्द।" अपने हरेक शब्द पर जोर देते हुये-सा बोला दिलीप गुप्ता—"अभी फिलहाल तो हमें पोस्टमार्टम हाउस चलना चाहिये। मेरा अस्सिटेंट गौरव वर्मा वहीं है। थोड़ी पहले उसका फोन आया था मेरे पास। कह रहा था कि चार बजे तक प्राची की डैडबाडी हमें मिल जायेगी। यहां मैंने उसके अन्तिम संस्कार की तैयारी कर रखी है। यहां डैडबाडी को नहलाने के बाद उसे शमशान घाट ले चलेंगे।"

"उफ्! मुझे यकीन नहीं हो रहा है दिलीप कि मेरी लाडो...मेरी बच्ची अब इस दुनिया में नहीं रही...।"

"अपने आपको संभालिये शाकाल साहब। यदि आप जैसा इन्सान कमजोर पड़ जायेगा तो सब गड़बड़ हो जायेगा। फिर अपने दुश्मन से बदला लेने में भी आपका दिल डरने लगेगा।"

"नहीं ओये दिलीप...। हम कमजोर नहीं पड़ने वाले हैं। खासकर अपने दुश्मन के मामले में। उसे मारने से पहले मरने वाले भी नहीं हैं हम। चलो...चलते हैं।"

❑❑❑

❑❑❑

"ठीक है...तुम लोग कहते हो तो मैं तुम्हें जान से नहीं मारूंगा।" चने चबाते हुये आशीर्वाद पण्डित लापरवाही भरे लहजे में बोला—"लेकिन बदले में तुम्हारे लोगों के मुंह से सच और सिर्फ सच सुनना चाहता हूं। क्या समझे?"

"सच...कैसा सच सुनना चाहते हो तुम हमारे मुंह से?" कातर निगाहों से छः फुट के नेवले की तरफ देखते हुये बोला हरीश।

"यही कि वो फोटोग्राफ्स जो कॉलेज के हर स्टूडेंट्स को तुम लोगों ने बंटवाये हैं उन्हें कैसे तैयार किया? प्राची के साथ धोखा किसने किया? किसने उसे आत्महत्या के लिये मजबूर किया?" सवाल पूछते समय छः फुट के नेवले के चेहरे पर जमानेभर की दरिन्दगी नाच रही थी।

"व...वो सब तो तुमने...म...मेरा मतलब...।" बोलते-बोलते हड़बड़ाकर रुका मुकुल। फिर पलभर चुप रहने के बाद अपने सूखकर छुआरा हो रहे होंठों पर जीभ चलाते हुये बोला—"हमें इस बारे में कुछ नहीं मालूम। हम नहीं जानते कि

प्राची के साथ धोखा किसने किया, किसने कॉलेज में वो फोटोग्राफ्स बांटे हैं। हमें हमारी क्लास के लड़के ने बताया कि सुबह क्लास में आने पर उसने सर जी की मेज पर एक लिफाफा देखा तो कौतूहलतावश उसे खोलने पर उसमें ढेर सारे वो फोटोग्राफ्स थे। उसी ने सारी क्लास में वो फोटोग्राफ्स बांट दिये।"

"तुम झूठ बोलते हो।" मुकुल की कमीज का कॉलर पकड़कर उसे झंझोड़ते हुये गुर्राकर बोला केशवपुत्र—"प्राची के साथ जो हुआ उसके जिम्मेदार तुम तीनों ही हो...।"

"ये झूठ है...।" लड़के की बात पूरी होने से पहले ही चिल्लाया लकी तो उसके गाल पर अलफांसे की हथेली का पृष्ठ भाग टकराया तो उसकी बोलती पर ढक्कन लगने के साथ ही उसकी आंखों से आंसू बहने लगे।

लड़के ने भी मुकुल के पेट पर घूंसा मारा और उसकी आंखों में आंखें डालकर गुर्रा उठा—

"बोल हरामी...! मैं सच कह रहा हूं ना? प्राची तुम लोगों के धोखे का ही शिकार हुई थी ना? तुम लोगों की ही वजह से उसने आत्महत्या की है ना?"

"न...नहीं आशीर्वाद! ये सच नहीं है। हमने प्राची के साथ कुछ नहीं किया है। हम तुमसे अपने अपमान का बदला तो लेना चाहते थे। लेकिन प्राची के साथ जो हुआ उसमें हमारा कोई हाथ नहीं है। म...मैं भगवान की सौगंध खाकर कहता हूं कि मैं जो कह रहा हूं वो सच है।"

"हां आशीर्वाद...।" लकी का लहजा रो देने वाला-सा था—"मुकुल सच कह रहा है। बदला तो तुमसे हम सभी दोस्त लेना चाहते थे। तुम्हारे कारण कॉलेज में हमारी बनी बनाई इज्जत का कचरा हुआ था। तुम्हें कैसे भी करके हम लोग नीचा दिखाना चाहते थे। खासकर मैं...मैं तो तुमसे पहले से ही जला-फुंका हुआ था...।"

"तुम मुझसे पहले से जले-फुंके हुये थे?" मुण्डा उसकी तरफ पलटकर उसे कच्चा चबा जाने वाली-सी नजरों से देखते हुये किंग-कोबरे की मानिन्द ही फुंफकारा—"लेकिन क्यों, जहां तक मेरी याददाश्त कहती है कि उस दिन कैन्टीन वाले झगड़े के अलावा उससे पहले ना तो हम एक-दूसरे को जानते थे और ना ही हममें कोई झगड़ा हुआ था...।"

"य...ये बात नहीं है...।"

"ये बात नहीं है तो फिर क्या बात है?" लड़के की नजरें लकी के चेहरे पर टिकी हुई थीं—"कैन्टीन के झगड़े से पहले तुम मुझसे खुन्दक क्यों खाते थे?"

"व...वो तुम्हारे पापा...केशव पण्डित की वजह से मेरे पापा को आजीवन कारावास के रूप में बारह साल जेल में काटने पड़े थे। अभी कुछ दिन पहले ही वे अपनी सजा पूरी करने पर जेल से छूटकर आये हैं। उन्हीं की वजह से मैं...।"

"अबे ओये डायनासोर के खराब हो चुके अण्डे...।" लकी के गाल पर थप्पड़ मारते हुये रेगमाल जैसे खुरदुरे लहजे में बोला अलफांसे—"जो तेरा बाप सजा काटकर आया है तो निश्चय ही उसने कोई जुर्म किया होगा, वरना अपना यार तो धर्मराज का कलयुगी एडीशन है। वो किसी निर्दोष या मजलूम के खिलाफ अदालत में खड़ा ही नहीं होता है। तू वो किस्सा छोड़, ताजे किस्से पर आ। ये बता कि प्राची के साथ तुम लोगों ने क्या और कैसे किया कि वो बेचारी आत्महत्या को मजबूर हो गई?"

"ह...हमने कुछ नहीं किया। विश्वास करिये हमारा...मेरा।" अलफांसे के थप्पड़ ने लकी के गाल में मानो मिर्चें-सी भर दी थी। इतनी तेज जलन हो रही थी उसके कि उसकी आंखों से टप-टप करके आंसू टपक रहे थे। बोलते समय गला रुंधा हुआ था—"हमें तो हमारे एक दोस्त ने ये बताया कि प्राची ने आशीर्वाद को लेटर दिया है और उसमें आशीर्वाद से शाम छः बजे जुहू बीच मिलने को लिखा था। तब मैंने फैसला किया था कि मैं भी वहां पहुंचूंगा और कोई ऐसा मौका तलाशूंगा जिससे आशीर्वाद को कॉलेज में बदनाम किया जा सके। उस दिन छः बजे मुकुल के साथ मैं जुहू बीच पहुंचा भी था। वहां आशीर्वाद प्राची से मिला भी था और बाद में दोनों प्राची की कार में वहां से रवाना भी हमारे सामने हुये थे। इनका पीछा मैं उस दिन इसलिये नहीं कर सका था कि हमारे पास अपना वाहन नहीं था। हम दोनों बस से वहां पहुंचे थे...।"

"बकते हो तुम।" मुट्ठियां भींचे तथा लकी को भष्म कर देने वाली-सी निगाहों से घूरते हुये गुर्राया केशवपुत्र—"मैं प्राची से जुहू बीच पर सिर्फ परसों मिला था। तब मेरा उससे झगड़ा भी हुआ था। उससे पहले ना मैं उससे मिला था और ना ही मैं कभी उसके साथ उसकी कार में बैठा हूं...।"

"ल...लेकिन हमने तो तुम्हें...।" मुकुल ने बोलते-बोलते अपने होंठ भींच लिये।

"हां बोल हरामी...। तुम लोगों ने मुझे क्या?" मुकुल की तरफ पलटकर किंग-कोबरे की मानिन्द ही फुंफकारा केशवपुत्र—"बोल, क्या बोलने जा रहा था?"

"अब जब तुम इस बात से ही मुकर रहे हो कि...।" डरे-डरे तथा सहमे से अन्दाज में कुछ ऐसे बोला मुकुल मानो उसे एक-एक शब्द बोलने में एड़ी-चोटी का जोर लगाना पड़ रहा हो—"...कि तुम वहां परसों से पहले उससे मिले ही नहीं तो हम कुछ भी कहें...। लेकिन हमारी बात की पुष्टि करने का एक तरीका और है।"

"क्या...?" लड़के के गोरे तथा चौड़े मस्तक पर बल पड़े।

"होटल जनक। तुम दोनों कई दिनों तक...।"

"क्या बकता है हरामी...?" झपटकर लड़के ने उसका गला दबोच लिया।

"जब तुम्हें सच सुनना ही नहीं और हमें मारना ही है तो मार डालो।" हरीश में जाने कहां से इतना साहस आ गया था कि वह लड़के की तरफ देखते हुये नीम के तेल के जैसे ही कड़वे लहजे में बोला—"वैसे, मुकुल और लकी हफ्ताभर तक तुम्हारे पीछे उस होटल तक गये हैं। होटल में तुम और प्राची दो घण्टे से भी ज्यादा रुकते रहे हो। कमरे में उस दौरान तुम दोनों में क्या होता होगा इस बात का अन्दाजा लगाने पर लकी ने हैण्डीकैम का इन्तजाम किया। फिर होटल में सर्विस ब्वॉय को पटाया। उस दिन तुम्हारी पूरी फिल्म तैयार करने की योजना थी इनकी। सारी तैयारी भी कर ली थी। तुम्हारे लिये ये जुहू बीच पर पहुंचे तो उसी दिन तुममें और प्राची में झगड़ा हो गया। जिससे इनका असली प्लान तो फेल हो गया। लेकिन फिर भी वहां हुये झगड़े को शूट करके इनके साथ तुम्हें कॉलेज में बदनाम करने का थोड़ा-बहुत मसाला तो मिल ही गया था...।"

"वो फोटोग्राफ्स किसने तैयार किये थे?" मुकुल का गला छोड़कर बोला केशवपुत्र।

"हमें नहीं पता।" लकी बोला।

फिर लड़के ने लकी से सच उगलवाने के लिये अपनी तर्जनी उंगली को उसकी ठोड़ी के नीचे रखकर उसमें कम्पन भी दिया। लेकिन लकी उससे ज्यादा कुछ जानता ही नहीं था तो बेचारा बताता क्या। हां, लड़के द्वारा उस भयानक अन्दाज में टॉर्चर किये जाने पर अपनी पैन्ट पूरी तरह खराब करने के अलावा वह टार्चर किये जाने के दो-ढाई घण्टे बाद तक ऐसे कांपता रहा मानो कई

घण्टों तक बर्फ की सिल्लियों में दबाये जाने के बाद उसे बाहर निकाला गया हो।

❑❑❑
❑❑❑

जी हां, ढाई घण्टे तक लकी का जिस्म कांपने के साथ-साथ झटके भी खाता रहा और उसके दोनों दोस्त उसकी तरफ आश्चर्य भरी नजरों से देखते हुये ये सोच रहे थे कि आखिर लड़के ने उसे एक उंगली ही छुआई थी, फिर उसकी ये कैसी हालत हो रही थी।

ढाई घण्टे बाद वहां आशीर्वाद पण्डित और अलफांसे अपने चारों चेलों के साथ पहुंचा।

लकी की तरफ देखते हुये मुण्डे ने जेब से दो दाने चने के निकाले और उन्हें मुंह में डालने पर बोला—"अब बोलो, मरना चाहते हो तुम तीनों या फिर जिन्दा रहना चाहते हो?"

"द...देखो अ...आशीर्वाद।" वह भयंकर अंधड़ में फंसे इकलौते पत्ते की मानिन्द ही थर-थर कांपते हुये बोला—"म...मैंने जो बताया वो सच ही बताया। अ...अब तुम्हें मेरी बात पर य...यकीन नहीं है तो म...मुझे ज...जान से मार ड...डालो। म...मगर वो...वो क...करण्ट फिर से ना लगाना। प... प्लीज...।"

"लकी के दोनों दोस्त जो पहले से ही उलझन में थे, वो लकी द्वारा ये कहे जाने पर कि लड़का उसे फिर से करण्ट ना लगाये, और भी ज्यादा उलझन में पड़ गये। दरअसल बेचारों ने उसे करण्ट लगते हुये देखा जो नहीं था।

"ठीक है, फिलहाल मैं तुम्हारी...तुम्हारे लोगों की बात पर विश्वास कर लेता हूं।" कुटुर-कुटुर करते हुये बोला मुण्डा—"मान लेता हूं कि तुम लोग जो कह रहे हो ठीक कह रहे हो। अब अगर मैं तुम्हारे लोगों की बात मानकर तुम्हें छोड़ देता हूं तो तुम लोग कॉलेज में फालतू का हल्ला मचाओगे कि मैंने तुम लोगों का अपहरण कराया था। इसलिये बे फालतू में बदनाम होने से अच्छा है कि तुम लोगों को मारकर तुम्हारी लाशें जंगल में फिंकवा दी जायें। वहां जंगली जानवर तुम लोगों की लाशों को चबा जायेंगे और फिर खेल खत्म। कभी किसी को पता नहीं लगेगा कि तुम्हारे लोगों के साथ क्या हुआ, तुम कहां लापता हो गये...।"

"न...नहीं, ऐसा मत करो आशीर्वाद।" रोते हुये बोला लकी—"हमें मत मारो। हमें छोड़ दो। तुमसे वादा करते हैं हम

तीनों कभी किसी से नहीं कहेंगे कि तुमने हमारा अपहरण कराया था। म...मैं भगवान की सौगन्ध खाता हूं...।"

"मैं भी भगवान की सौगन्ध खाता हूं कि किसी से इस बारे में जिक्र तक नहीं करूंगा।" मुकुल भी रो दिया।

"मैं भी कभी किसी से कुछ नहीं कहूंगा।" हरीश भी गिड़गिड़ा उठा।

"क्यों अंकल जी...?" मुण्डा अलफांसे की ओर देखते हुए बोला—"आप क्या कहते हैं? ये तीनों अपने वायदे पर अटल लगने वाले दिखते हैं आपको...?"

"शक्लों से तो ये महाहरामी लगते हैं मेरे छह फुट के नन्हें-मुन्ने बालक...।" ट्रिपल फाइव मार्का सिगरेट सुलगाते हुये बोला अलफांसे—"लेकिन कोई बात नहीं, ये महाहरामी हैं तो लोग मुझे गुरुघंटाल कहते हैं। अगर ये वायदे से मुकरे तो इस बार इनको उठाकर नहीं लाया जायेगा। सीधा वहीं, जहां ये दिखेंगे, ठोक दिया जायेगा।"

कुल मिलाकर आशीर्वाद और अलफांसे ने उन्हें तगड़े से भयभीत किया। कई बार उनके मुंह से कहलाया कि वो इस बारे में अपनी जुबान बंद रखेंगे। फिर उन्हें बेहोश करके अलफांसे ने अपने चेलों से कहा कि वे उन्हें किसी पार्क में छोड़ आयें।

उससे पहले अलफांसे होटल जनक गया था—वो भी नकली सी० आई० डी० वाला बनकर तथा साथ में आशीर्वाद की फोटो लेकर। वहां रिसेप्शन पर पूछताछ करने पर मालूम हुआ कि वाकई उस होटल में आशीर्वाद और प्राची लगातार कई दिनों तक शाम को आया करते थे तथा तीनेक घण्टे रुकने के बाद वहां से जाते थे।

❑❑❑
❑❑❑

चाय पीते वक्त केशव का चेहरा शान्त एवं सपाट-सा था।

जबकि सोफिया, राजन शुक्ला, चांदनी तथा करतार सिंह के चेहरों पर चिन्ता तथा उलझन के असंख्य चील-कौव्वे मंडराते से नजर आ रहे थे।

उनके सामने कुछ ही दूरी पर पड़ा टी० वी० ऑन था और उसमें 'आज तक' नामक न्यूज चैनल लगा हुआ था।

खबरें जारी थीं—लेकिन केशव एण्ड फैमिली का ध्यान उधर नहीं था।

"बहुत गलत किया उस लड़की ने जो आत्महत्या कर ली।" मानो अपने आप से बोली हो सोफिया—"उसकी इस गलती ने मेरे बच्चे के चरित्र पर उंगली उठा दी है। उस पर ये न्यूज पर जो फिल्म दिखाई जा रही है। इससे तो अपना आशीर्वाद बदनाम होकर रह जायेगा। उस फिल्म में लड़की अपने आशीर्वाद पर इल्जाम लगा रही है कि उसने उसे खराब किया है। लेकिन मैं नहीं मान सकती कि अपना आशीर्वाद ऐसा कर सकता है। अब चूंकि वो लड़की आत्महत्या कर चुकी है इसलिये ये उम्मीद भी खत्म हो गई है कि आशीर्वाद अपने आप को कभी निर्दोष साबित कर सकेगा। ऐसे में तो मुझे घर से बाहर निकलते भी शर्म आयेगी।"

"जीजी आप अपना दिल छोटा मत करें।" सोफिया का हाथ अपने हाथ में लेते हुये बोली चांदनी—"हम सबको ही इस बात का पूरा-पूरा यकीन है कि हमारा आशीर्वाद निर्दोष है। वो किसी लड़की के साथ धोखेबाजी नहीं कर सकता है। अब जबकि वो निर्दोष है तो कोई तो है जिसने उसके खिलाफ ये घिनौना खेल खेला और दुनिया की नजर में उसे गिराने की कोशिश की है। और जीजी...अपना आशीर्वाद दिमाग का चैम्पियन है। देखना, बहुत ही जल्द वो असली मुजरिम को बेनकाब करके खुद को निर्दोष साबित कर देगा।"

"आहो वडी परजाई जी...तुसी निक्के पुत्तर जी नूं लैके दुखी या परेशान नी होवो।" मानो तड़फकर...कसमसाकर ही बोला करतार सिंह—"छोटी परजाई ने ठीक ही कहा है कि अपने निक्के पुत्तर जी जल्दी ही सब ठीक कर लेंगे। प्राहवा जी वी उन्हानूं निर्दोष साबित करने वास्ते कुछ करने। असी सब ही अपने निक्के पुत्तर जी नाल हां।"

"हां दीदी...।" राजन शुक्ला अपने हाथ मलते हुये बोला—"हम सब मिलकर उस शख्स को तलाश करेंगे जिसने आशीर्वाद को फंसाया है।"

तभी वहां बाहर गेट पर तैनात रहने वाले दो सिक्योरिटी गार्डों में से एक आया और उसने बताया कि बाहर मीडिया वाले आये हैं और साहब से मिलना चाहते हैं तो केशव उठ खड़ा हुआ।

❑❑❑

❑❑❑

बाहर लगभग सभी प्रमुख न्यूज चैनल्स के रिपोर्टर

अपने-अपने कैमरों के साथ मौजूद थे और उनके साथ नेशनल और लोकल समाचार पत्रों के रिपोर्टर भी थे।

यहां तक कि इण्डिया न्यूज चैनल की रिपोर्टर माधवी चोपड़ा भी अपने चैनल की टीम के साथ वहां पहुंची हुई थी। यूं तो वह केशव के गुरु रमाकान्त चोपड़ा की बेटी और केशव की मुंहबोली बहन है लेकिन उस समय वो अपने चैनल की ड्यूटी करने वहां पहुंची थी।

जैसे ही केशव पण्डित एण्ड पार्टी गेट पर पहुंची, वह इंडिया न्यूज चैनल के मोनोग्राम वाला माइक लिये उनके सामने पहुंची और केशव से मुखातिब हो बोली—"मिस्टर पण्डित...आपने आज शाम की न्यूज तो देखी ही होगी। दुनियाभर के चैनल्स बता रहे हैं कि आपके बेटे आशीर्वाद पण्डित की वजह से एक भोली-भाली लड़की को मौत गले लगानी पड़ी। उससे आपके बेटे ने धोखा किया। उसे बहला-फुसलाकर...उसके साथ प्यार करके बाद में मुकर गया। लड़की...जिसका नाम प्राची शर्मा था, और देश की नामचीन हस्ती, जिन्हें लोग स्टील किंग के नाम से भी जानते हैं, की पोती थी, ने उसे समझाने की बहुत कोशिश की कि वह उसके साथ ये अन्याय ना करे—लेकिन आपके बेटे ने उसकी एक नहीं सुनी। तब उस शर्मवाली लड़की ने अपने लिये मौत का रास्ता चुना। उसने अपनी गाड़ी को खाई में कुदाकर अपनी जान दे दी। अब इस बारे में आप क्या कहना चाहेंगे?"

"अभी इस बारे में मैं कुछ भी नहीं कह सकता हूं।" जेब से चारमीनार मार्का सिगरेट की डिब्बी और गोल्डन कलर का लाइटर निकालते हुये सपाट से लहजे में बोला झील-सी नीली आंखों वाला—"कुछ देर पहले ही मैं कचहरी से वापस लौटा हूं और हाथ-मुंह धोने के बाद अभी समाचार देख ही रहा था कि आप लोग आ गये। जितना मैंने समाचार में नहीं सुना था उससे ज्यादा आपके मुंह से सुना है। लेकिन कुछ कहने से पहले...या इस विषय में अपनी राय प्रकट करने से पहले मैं पूरा मामला जानना चाहूंगा। आशीर्वाद से भी इस विषय में बात करूंगा, उसके बाद ही किसी नतीजे पर पहुंच सकूंगा।"

"मिस्टर पण्डित...!" 'आज तक' चैनल का रिपोर्टर आगे आते हुये बोला—"एक छोटा-सा सवाल आपसे...आज तक का आपका रिकॉर्ड ये है कि आप हमेशा ही लोगों को न्याय दिलाने के लिये आगे आते रहे हैं। खासकर जब किसी औरत की इज्जत

की बात सामने आई है तो आप बिना फीस लिये उसको इन्साफ दिलाने के लिये अदालती जंग में कूदे हैं। आज आपके बेटे पर अन्याय की उंगली उठ रही है। उसने एक मासूम भोली-भाली लड़की के जिस्म से जी भरके खेलने के बाद...।"

"इक मिनट...! इक मिनट रुक ओये रिपोर्टर।" रिपोर्टर की बात पूरी होने से पहले ही भड़ककर उसकी तरफ लपकते हुये गुर्राया करतार सिंह—"तू देखने गया सी कि...।"

"करतार सिंह!" केशव गुर्राकर बोला—"मैं कहता हूं रुक जाओ।"

करतार सिंह के बढ़ते कदम अपनी जगह स्थिर हो गये।

उसने विवशतावश अपने होंठ काटने के साथ झुंझलाकर अपनी हथेली पर घूंसा मारा।

"आप जो कहना चाहते हैं वो मैं समझ रहा हूं।" सिगरेट का कश लगाकर उसका धुआं फेफड़ों में फिल्टर करके नथुनों के रास्ते बाहर करते हुये बोला केशव पण्डित—"और आप सबको विश्वास दिलाता हूं कि अगर वास्तव में मेरा बेटा ही उस लड़की का गुनहगार है तो उसे उसके किये की सजा जरूर मिलेगी। मैं उसके खिलाफ अदालत में मुकदमा लड़ूंगा और सजा कराके ही दम लूंगा।"

"यही सुनने आये थे ना आप लोग?" तमतमाये हुये चेहरे के साथ नीम के तेल जैसे ही कड़वे लहजे में बोली सोफिया—"सुन लिया तो अब आप लोग यहां से तशरीफ ले जाइये और हमें अकेला छोड़ दीजिये।"

लेकिन मीडिया वाले इतने शरीफ तो होते नहीं कि किसी के कहने भर से उसका पीछा छोड़ दें। उन्हें तो अपने चैनल्स के लिये खबरें चाहिये होती हैं और खबरें तो जोंक बनकर खबर से चिपकने पर ही चूसी जा सकती हैं।

कहने का तात्पर्य कि वे तब तक वहां से नहीं टले तब तक कि खुद उनके पास पूछने को कोई सवाल नहीं बचा था।

□□□

□□□

ट्रिपल सी के महाराष्ट्र एरिये के हैडक्वार्टर में, एरिये के चीफ यानि जोकर वाले ऑफिस में जोकर का रूप धारण किये धन्नो ही जोकर वाली कुर्सी पर बैठी हुई थी—जबकि लड़का...आप सबका चहेता उसके सामने विजिटर चेयर पर बैठा चने चबाने के साथ ही मूर्खतापूर्ण हरकत भी कर रहा था।

"धत...तेरे की...जमाने धत् तेरे की।" अपने सिर पर चपत मारते हुये वह बड़बड़ाया—"ऐ जालिम जमाने ये तूने एक शरीफ बालक को किस खड़पच्चे में फंसा दिया? इस बालक ने आप लोगों का बिगाड़ा ही क्या था?"

लड़का परेशान था और उसे अपनी उस मौजूदा परेशानी का कोई हल नहीं सूझ रहा था।

उसे परेशान देखकर जोकर बनी धन्नो गम्भीर हुई पड़ी थी।

"सर...मेरे ख्याल से तो आप बेवजह ही टेंशन ले रहे हैं।" लड़के को चिन्तित भाव से देखते हुये अपनी असली आवाज में ही बोली धन्नो—"जब आपने कुछ किया ही नहीं तो फिर परेशान क्यों हो रहे हैं? वो कहावत है ना कि जब कर नहीं, तो डर नहीं।"

"अरे आंटी...अब मैं आपसे क्या कहूं...कैसे समझाऊं आपको?" ठण्डी आह-सी भरते हुये बोला आशीर्वाद—"अजीब किस्म की मुसीबत गले पड़ी है। घर जाते हुये डर-सा महसूस हो रहा है। समझ नहीं आता मम्मी, डैडी और अंकल, चांदनी आंटी और पटियाला वाले अंकल से निगाहें कैसे मिला सकूंगा? इस सम्बंध में वो मुझसे सवाल करेंगे तो मुझसे जवाब देते भी नहीं बनेगा। समझ में नहीं आता कि करूं तो क्या करूं? कोई कत्ल के केस में फंसा देता। और भी कैसे मामले में फंसा देता। ये मामला ही गलत किस्म का है। पता नहीं वो कौन लुटिया चोर हरामी है जो अपने दोनों हाथों में कालिख लेकर मेरे मुंह पर पोतने के लिये मेरे पीछे पड़ा हुआ है। सच कहता हूं आंटी जी...अगर साले का पता लग जाये ना तो निम्बू की तरह निचोड़ कर रख दूंगा।"

"आप हिम्मत मत हारिये सर...।"

"बस आंटी जी...बस।" मानो किलसकर ही बोला केशवपुत्र—"कितनी बार आपसे कहा है कि मुझे सर मत कहा करें। आप मुझसे बड़ी हैं—आपके बेटे...टीटू जैसा ही तो हूं मैं। शुरू से मुझे आप मेरा नाम लेकर पुकारती चली आई हैं। फिर...?"

"ये ऑफिस है सर...और मेरे सीनियर हैं आप यहां।" रिवॉल्विंग चेयर पर एक चक्कर घूमने पर गम्भीरता भरे लहजे में बोली धन्नो—"ऑफिस में डिसप्लीन बनाये रखने के लिये ये जरूरी है कि मैं आपको वो सम्मान दूं, जिसके आप हकदार हैं। इसके

बाद...यानि ऑफिस से बाहर आप मेरे घर आते हैं या कभी मैं आपके यहां आई तो मैं आपको आपके नाम से ही पुकारूंगी।"

"ओके...ओके! जैसा आप ठीक समझें करें।" चने के दो दाने मुंह में सरकाने पर बोला मुण्डा—"फिलहाल आप एक जरूरी बात सुनें। हो सकता है कि मैं पुलिस द्वारा गिरफ्तार कर लिया जाऊं। हालांकि मेरे खिलाफ मामला कोई खास नहीं बनता है। लड़की ने आत्महत्या की है तो उसमें मेरा क्या कसूर? उसकी वो फिल्म जो जुहू बीच पर तैयार की गई है उसे यदि सच मान भी लिया जाये तो उस फिल्म में प्राची मुझ पर धोखा देने का, बहलाने-फुसलाने का इल्जाम लगाते हुये ही नजर आ रही है। उसने कहीं ये नहीं कहा कि मैंने उसके साथ जोर-जबरदस्ती की है। ऐसे में पुलिस मुझे अकेले उसकी आत्महत्या का जिम्मेदार नहीं ठहरा सकेगी। ना ही मुझ पर कोई गम्भीर किस्म का आरोप लगा सकेगी। वो तो एस० पी० नारंग मेरे से खुन्दक खाया लगता है। वो जिद्द करके मुझे प्राची को धोखा देने और उसकी आत्महत्या की बुनियाद रखने के आरोप में गिरफ्तार कर सकता है। लेकिन उस आरोप में मेरी जमानत करवाने में कोई दिक्कत नहीं आने वाली है। लेकिन ये मामला साला गड़बड़ किस्म का है। मेरे डैडी जी तो मेरी जमानत करवाने से रहे। आपको ही मेरी जमानत करवानी होगी। इसके लिये आपको एडवांस में ही तैयारी रखनी होगी। दूसरी बात, अब मैं तब तक घर नहीं जाऊंगा जब तक कि मैं अपने आपको निर्दोष ना साबित कर लूंगा। फोन भी बंद कर रहा हूं...।"

"फोन बन्द करने से कोई फायदा नहीं है। आपके घरवाले फोन करें तो उन्हें कह देना किसी काम से शहर से बाहर निकले हुये हैं। बाकी अगर पुलिस गिरफ्तार करती है तो तुरन्त ही जमानत करा ली जायेगी। रहने, खाने-पीने की कोई दिक्कत है ही नहीं। ट्रिपल सी के कई ठिकाने हैं—आपको सबके बारे में मालूम ही है। जहां चाहें, जब तक चाहें रह सकते हैं।"

❑❑❑

❑❑❑

रात के बारह बजे के करीब दिलीप गुप्ता राजेश्वर शर्मा के यहां से उसके सारे काम-काज निबटाकर वापस अपने बंगले लौटा तो उस समय वह थका हुआ होने के बावजूद बेहद प्रसन्न नजर आ रहा था।

अपने कमरे में पहुंचते ही उसने रायल स्टेग की बोतल खोली और उसमें से 'गट-गट' करके तीन चार घूंट भरने पर तृप्तिपूर्ण ढंग से होंठ चटकाते हुये बड़बड़ाया—"मजा आ गया उस हरामी को लुटा-पिटा देखकर। वर्षों बाद आज मेरे कलेजे में ठण्ड पड़ी है। हरामी बुड्ढा मेरे बाप का पार्टनर हुआ करता था। उनके मरने के बाद पूरे धंधे का मालिक बन बैठा और जब मेरे हाथ मेरे बाप की डायरी लगी और मैंने उसे बताया कि मैं उसकी असलियत जानता हूं। उसकी पोल खोल दूंगा नहीं तो मुझे अपने सारे धंधे का पार्टनर बनाये तब हरामी मुझे मरवाने लगा था, लेकिन उस समय मैंने चाल खेली। उसे बताया कि वो शाकाल है इस भेद को खोलती एक डायरी मेरे बाप ने लिखी थी। उस डायरी को मैं अपने एक दूर के रिश्तेदार को दे आया हूं। अगर मेरी मौत की खबर उसे मिली या हर तीसरे दिन मैंने उसे फोन ना किया तो वह उस डायरी को अखबार या न्यूज चैनल के दफ्तर में दे देगा। मेरी वो चाल थी तो घिसी-पिटी, लेकिन उस समय काम कर गई और उसने मुझे मारने का इरादा बदल दिया। अपने साथ पार्टनर तो नहीं बनाया, लेकिन अपना राइट हैण्ड बना लिया। तब मैंने उसका राइट हैण्ड बनना इसलिये स्वीकार कर लिया था कि मेरे मन में था कि कभी मौका मिलने पर मैं उसका काम तमाम करके उसके सारे धंधों का मालिक बन जाऊंगा। लेकिन हरामी शुरू से ही मेरी तरफ से सतर्क बना रहा। फिर उसका लड़का जो कि बचपन से मेरे साथ पढ़ा, खेला और जवान हुआ उसने एक रात नशे में मेरे घर आकर मेरी बीवी के साथ रेप कर डाला। बाद में मेरी बीवी ने इसी वजह से आत्महत्या कर ली थी। तब मैं उस हराम के पिल्ले को जान से मार डालना चाहता था। लेकिन उसके बाप ने मुझे धमका दिया कि अगर मैंने उसके लड़के की तरफ बुरी नजर से देखा भी तो वह मुझे तो मारेगा ही, मेरे बेटे को भी मार डालेगा। अपने बेटे कूकी की खातिर मैंने अपना इरादा बदल दिया था। मैंने उसकी हराम औलाद को नहीं मारा, वो केशव पण्डित के हाथों मारा गया। उसके मरने पर मुझे संतोष हो गया, लेकिन तभी शाकाल ने मुझे अपने नम्बर दो के धंधों से हटाकर नम्बर एक के धंधों का मैनेजर बना दिया। शायद उसके दिमाग के किसी कोने में ये बात थी कि मैं अपने बाप के धंधों पर काबिज होने के लिये उसे मार सकता था। लेकिन तब ऐसा नहीं था। तब कूकी की वजह से मैं किसी प्रकार का रिस्क नहीं ले सकता

था। हां, मन-ही-मन चाहता था कि शाकाल मारा जाये और उसकी जगह मैं ले लूं। आज उसकी पोती के आत्महत्या कर लेने की वजह से वह हरामी टूट-सा गया है। सांप से कैंचुआ बन गया है। मुझे फिर से अपना राइट हैण्ड बना लिया है उसने। अब मौका है कि मैं सांप से कैंचुआ बने उस हरामी को अपने जूते के तले मसल सकता हूं। और करूंगा भी मैं ऐसा। हरामी कह रहा है कि मैं कैसे भी करके आशीर्वाद को मारूं तो वह मुझे अपने नम्बर एक और नम्बर दो के धंधों में पार्टनर बना लेगा। अब पार्टनर नहीं बनना। उसके सबकुछ का मालिक बनना है। और जब हरामी को मारूंगा तो पहले बताऊंगा कि उसे क्यों मार रहा हूं। कौन-कौन से बदले ले रहा हूं...।" बड़बड़ाने पर उसने एक बार फिर बोतल को मुंह से लगाकर दो बड़े घूंट भरे।

तभी उसके जेब में पड़ा मोबाइल किसी नवजात शिशु की मानिन्द ही कुनमुनाने लगा।

❑❑❑

❑❑❑

उसने जेब से मोबाइल निकालकर उसकी स्क्रीन पर निगाह डाली और फिर उसे ऑन करते हुये बड़बड़ाया—"ये तो मेरे बेटे कूकी का फोन है। पता नहीं वो आधी रात को क्या कहना चाहता है? हां, बोल बेटा कूकी...इतनी रात गये कैसे फोन किया?"

"पापा जी...आज तो आपके लिये खुशी का दिन होगा। वर्षों बाद आपके कलेजे में आज ठण्ड पड़ी होगी।" दूसरी तरफ से नशे में थरथराती हुई-सी आवाज सुनाई दी—"आज आपके दुश्मन...शाकाल की पोती ने आत्महत्या जो कर ली है। अब तक तो अन्तिम संस्कार भी हो गया होगा। आप भी तो शामिल हुये होंगे उसके अन्तिम संस्कार में। आखिर वो आपके एम्पलायर की पोती जो थी। उसके अलावा कोई भी नहीं है इस दुनिया में शाकाल उर्फ राजेश्वर शर्मा का। उसकी मौत से पागल हो रहा होगा। आपने ही बताया था कि एक बार कि वो उससे बहुत प्यार करता है। अब साले की दुनिया वीरान हो गई है। चाहे वो है एक खतरनाक किस्म का अपराधी। हजारों लोग मारे गये होंगे उसके इशारे पर। लोगों की जिन्दगी को कुछ नहीं समझता रहा होगा। लेकिन आज, जब हरामी की जिन्दगी वीरान हो गई है तो साले की बुद्धि ठिकाने आ गई होगी। रस्सी के जलने के साथ ही बल भी खुल गये होंगे। क्यों पापा जी...मैं सही कह रहा हूं ना?"

"बिल्कुल सही कह रहा है तू कूकी बेटे...।" बोतल से एक घूंट और उदरस्थ करने पर खुशी भरे लहजे में बोला दिलीप गुप्ता—"आज पहली बार मैंने सांप को कैंचुआ बनते देखा है। शेर को बिल्ली की तरह म्याऊं-म्याऊं बोलते देखा है। साले की जान जो बसती थी पोती में। जानते हो बेटा...उस हरामी ने मुझे फिर से अपना राइट हैण्ड बना लिया है। उसका मानना है कि मैं अपने दिमाग से उसके दुश्मन नम्बर एक, जिसने कि उसकी पोती को आत्महत्या करने के लिये मजबूर किया है, उसे खत्म कर सकता हूं। वो चाहता है कि मैं केशव पण्डित के बेटे आशीर्वाद पण्डित को खत्म करूं। ऐसा करने पर वह मुझे अपने नम्बर एक और नम्बर दो के सारे धंधों में अपना पार्टनर बना लेगा। उसका ये काम करूंगा मैं। आशीर्वाद को खत्म करके मैं उसका पार्टनर बनूंगा। फिर एक दिन उसका काम तमाम करके उसकी जगह ले लूंगा।"

"उसकी जगह आप जरूर लेंगे डैडी जी...।" मोबाइल पर कूकी की नशे में डूबी लेकिन रेगमाल से भी ज्यादा खुरदुरी आवाज सुनाई दी—"आशीर्वाद भी मारा जायेगा। आपको कुछ करने की जरूरत भी नहीं पड़ेगी। आपका ये काम मैं करूंगा...।"

"न...नहीं कूकी बेटा।" हड़बड़ाकर सीधे होकर बैठते हुये व्याकुलता भरे लहजे में बोला दिलीप गुप्ता—"तू...तू आशीर्वाद से उलझने की सोचेगा भी नहीं। वो...वो बहुत ही खतरनाक है। दो पैरों वाला बम कहा जाता है उसे। त...तुझे कुछ करने की जरूरत नहीं है। मैं हूं ना। मेरे पास दिमाग के साथ ताकत भी है। हजारों आदमी हैं शाकाल के गैंग में। उनका इस्तेमाल करूंगा...त...तू...इन बातों की तरफ ध्यान ना देकर अपनी पढ़ाई की तरफ ध्यान लगा। अब मैं फोन...।"

"फोन बन्द मत करना पापाजी...।" दिलीप गुप्ता की बात पूरी होने से पहले ही फोन पर कूकी की आवाज आई—"मेरी बात सुनिये। फिलहाल आप आशीर्वाद को भूल जाइये। उससे आप कोई पंगा नहीं लेंगे। दिमाग के चैम्पियन से मैं दिमागी जंग लड़ूंगा। हमारी लड़ाई शुरू भी हो चुकी है। और पापा जी...इस गलतफहमी में मत रहिये कि आपके दुश्मन की पोती ने आशीर्वाद की वजह से आत्महत्या की है। वो मेरी चाल का शिकार हुई है...।"

"ये तू क्या कह रहा है कूकी...?" हैरान होकर बोला दिलीप गुप्ता—"प्राची को तूने आत्महत्या करने के लिये विवश किया है?"

"हां पापाजी। मुझे शाकाल से बदला लेना ही था। उसके लड़के और प्राची के बाप की वजह से मेरी मां ने आत्महत्या की थी इसलिये मैंने उसके साथ एक ऐसा खेल खेला कि उसे भी आत्महत्या करनी पड़ी। प्राची के साथ वो खेल मैंने बहुत सोच-समझकर खेला था। दरअसल मुझे एक तीर से दो नहीं तीन शिकार करने थे। अब मेरा दूसरा शिकार बनेगा आशीर्वाद पण्डित और तीसरा...।"

"और तीसरा शिकार कौन बनेगा...?"

"मैं आपको पूरी बात बताता हूं डैडी जी...। साथ में आगे की अपनी योजना भी।" कहने के साथ ही दूसरी तरफ फोन पर मौजूद कूकी अपने बाप को कुछ बताने और समझाने लगा।

❑❑❑
❑❑❑

सुबह जल्दी ही एस० पी० नारंग राजेश्वर शर्मा के यहां पहुंच गया। तब अभी राजेश्वर शर्मा सोकर उठा ही था और फ्रेश होने के लिये जा रहा था। लेकिन नौकर ने बताया कि एस० पी० नारंग आया है तो वह ड्राइंगरूम में आ गया।

"शर्मा जी, सुबह-सुबह कष्ट दिया आपको...।" राजेश्वर के वहां पहुंचने पर सिगरेट का कश लगाने पर नथुनों के रास्ते धुएं को बाहर करते हुये एस० पी० नारंग बोला—"दरअसल मैं चाहता हूं कि आप आशीर्वाद पण्डित के खिलाफ एफ० आई० आर० करा दें तो मैं उसे गिरफ्तार करूंगा।"

"कोई खास फायदा नहीं होने वाला है इससे नारंग साहब।" सोफे पर बैठते हुये लुटे-पिटे से लहजे में बोला राजेश्वर शर्मा—"प्राची ने अपने सुसाइड नोट में उसके खिलाफ कुछ लिखा तो है नहीं। बाकी टी० वी० न्यूज में उसके खिलाफ जाती जो बातें दिखाई जा रही हैं उनसे अदालत में उसे दोषी नहीं ठहराया जा सकता है। खासकर जबकि उसका बाप एक बहुत ही काबिल वकील है। उसकी पहली पेशी में ही केशव पण्डित उसकी जमानत करवा लेगा। और फिर केस की सुनवाई शुरू होने पर दो एक तारीखों में वह अपने लड़के को बाइज्जत बरी करा लेगा। रहने दो नारंग साहब...रात मैंने इस विषय पर बहुत विचार किया है। इस मामले को अदालत में खींचने से मुझे कोई फायदा होता नहीं नजर आ रहा है। उल्टे मेरी ही जग-हंसाई होनी है...।"

"आप एफ० आई० आर० तो लिखवाइये शर्मा जी...।"

एस० पी० नारंग अपने एक-एक शब्द पर जोर देते हुये बोला—"बाकी तो मैं उस लड़के को अदालत ले जाने से पहले ही इस कदर टाइट कर दूंगा कि आपके कलेजे को ठण्डक पड़ जायेगी। देखिये शर्मा जी...आप ये तो मानते ही हैं कि आपकी पोती की मौत की वजह वही हरामी है। उसी के कमीनेपन की वजह से प्राची ने आत्महत्या की है। उसे अपनी करनी की सजा तो मिलनी ही चाहिये। उस पण्डित की औलाद ने कॉलेज में मेरी भी इन्सल्ट की है। वो तो उस समय वहां मीडिया वाले थे वरना तो मैं उसे वहीं से उसी समय उठा लाता और फिर उसका वो हाल करता कि वह जीवनभर नहीं भूलता। शर्मा जी...उसने बहुत से लोगों के सामने मुझे अपमानित किया है। मैं उससे बदला लेना चाहता हूं। अगर आप उसके खिलाफ एफ० आई० आर० लिखा दें तो मैं उसे गिरफ्तार करके उसके दोनों हाथ इस कदर बेकार कर दूंगा वह जिन्दगीभर अपने हाथों से पानी तक नहीं पी सकेगा।"

"आप पुलिस कप्तान हो। ऐसा करना चाहो तो आप उसे राह चलते में उठाकर किसी भी आरोप में हवालात में डालकर उसके हाथ-पैर तोड़ सकते हो। लेकिन फिलहाल उसके खिलाफ मैं एफ० आई० आर० दर्ज नहीं करा रहा हूं। उसने मेरी पोती के साथ जो किया उसका इन्साफ मैं उस ऊपरवाले पर छोड़ता हूं।"

फिर नारंग ने उसे एक-दो बार और समझाया कि आशीर्वाद के खिलाफ एफ० आई० आ० दर्ज करा दे, लेकिन राजेश्वर शर्मा ने एफ० आई० आर० लिखाने से साफ मना कर दिया। तब नारंग मन-ही-मन राजेश्वर शर्मा पर किलसते हुये वहां से रुख्सत हुआ।

वो वहां से गया तो दिलीप गुप्ता वहां पहुंच गया।

❑❑❑
❑❑❑

"कोई प्लान बनाया उस हराम के बच्चे को ठिकाने लगाने का कि नहीं?" उसे देखते ही दांत पीसते हुये-सा बोला राजेश्वर शर्मा।

"अभी तो नहीं बनाया कोई प्लान शाकाल साहब, लेकिन...।"

"लेकिन क्या दिलीप...?" भष्म कर देने वाली सी निगाहों से दिलीप को घूरते हुये उसकी बात पूरी होने से पहले ही गुर्राया उठा राजेश्वर शर्मा—"कब बनाओगे उसे ठिकाने लगाने का

प्लान? कब लगाओगे उसे ठिकाने? तुम नहीं जानते कि मेरे दिल पर क्या बीत रही है। वो हराम का बच्चा पहले से ही मेरे दिलो-दिमाग में कांटा बना चुभ रहा है। और अब जबकि मेरी पोती को उसकी वजह से आत्महत्या करनी पड़ी है, मेरे दिमाग में चुभा पड़ा वो कांटा अन्दर-ही-अन्दर जहरीला भी हो गया है। तू नहीं जानता कि रातभर मुझे नींद नहीं आई। रातभर तड़फता रहा मैं। मेरे अन्दर जहर-सा फैल गया है। जब तक वो मारा नहीं जाता मेरे अन्दर का जहर खत्म नहीं होगा।"

"शाकाल साहब...मुझे आप सिर्फ चौबीस घण्टे का वक्त दीजिये। उसके बाद अगर उसकी लाश आपके सामने ना पड़ी मिले तो आप...।"

दिलीप गुप्ता की बात पूरी होने से पहले ही राजेश्वर शर्मा उर्फ शाकाल के सामने मेज पर पड़ा उसका मोबाइल बजने लगा तो वह चुप हो गया।

राजेश्वर शर्मा ने मोबाइल उठाकर एक नजर डिसप्ले स्क्रीन पर डाली। फिर उसे ऑन करके हैण्ड फ्री वाला बटन ऑन करके वापस मेज पर रखते हुये बोला—

"हलो...कौन?"

"शकोरा...। शकोरा बोल रहा हूं मैं शाकाल साहब...।" स्पीकर पर ऐसी आवाज सुनाई दी मानो कोई इन्सान नाक से बोल रहा हो।

लेकिन आवाज की कोई बात नहीं थी। खास बात थी कि वो फोन राजेश्वर शर्मा का था और बोलने वाला उसे शाकाल के नाम से बुला रहा था। ये सुनकर बुरी तरह चौंका राजेश्वर शर्मा

"ओये ये रांग नम्बर है...।" फिर संभलकर बोला वह।

"फोन वन्द मत करना ओये राजेश्वर शर्मा उर्फ शाकाल।"

वाकई में राजेश्वर शर्मा फोन ऑफ करने जा रहा था। लेकिन दूसरी ओर की बात सुनकर उसका फोन की तरफ बढ़ता हाथ रुक गया।

उसने नजरें उठाकर दिलीप गुप्ता की तरफ देखा जो कि दुबिधा में फंसा हुआ-सा उसकी तरफ ही देख रहा था।

"तू कोई पागल इन्सान है क्या?" क्रोधित होकर बोला राजेश्वर शर्मा—"बोल रहा हूं कि ये रांग नम्बर है और तू मेरे नाम के साथ शाकाल का नाम भी ले रहा है। ये शाकाल कौन है...?"

"तू ही शाकाल है राजेश्वर शर्मा।" दूसरी तरफ से बोलने वाला बोल चाहे नाक से ही रहा था, लेकिन बोलते हुये वह अपने एक-एक शब्द पर जोर देते हुये बोल रहा था—"शकोरा तेरे बारे में सबकुछ जानता है। तेरे बारे में ही नहीं अण्डरवर्ल्ड की हर हस्ती को जानता हूं मैं। फालतू की बहस में पड़ने की जगह मेरी बात सुन। तेरा दुश्मन मेरा भी दुश्मन है। तू उसकी मौत चाहता है और मैं उसे जिन्दा ही बकरे की तरह बांधकर तेरे हवाले कर सकता हूं।"

"अब मुझे पक्का यकीन हो गया है कि तू कोई पागल इन्सान है। मेरा दिमाग मत खा, आगरे जाकर अपना इलाज करा।"

"मैं पागल नहीं हूं और तू भी पागल मत बन ओये शाकाल।" इस बार नकनकी आवाज में भेड़िये की-सी गुर्राहट थी—"मैं तेरे हर राज से वाकिफ हूं। मुझे ये भी पता है कि तू चाइना सीक्रेट सर्विस का एजेन्ट भी है। मुझे तेरे अड्डे तक पहुंचने का वो खुफिया रास्ता भी पता है जो तेरे घर से ही वहां तक जाता है और जिसके बारे में तेरे अलावा सिर्फ मैं ही जानता हूं। बताऊं तेरे घर में वह खुफिया रास्ता कहां से है...?"

कुछ बेचैन-सा होकर पहलू बदला राजेश्वर शर्मा ने।

❑❑❑

❑❑❑

"क्यों, बोलती क्यों बन्द हो गई तेरी ओये शाकाल?" कुछ पलों तक शाकाल से कुछ बोला नहीं गया तो दूसरी तरफ से नकनकी आवाज में कहा गया—"चल उस खुफिया रास्ते की बात छोड़। उसके अलावा एक और बात सुन जिसकी जानकारी तेरे अलावा सिर्फ मुझे है।"

"कैसी जानकारी...?" राजेश्वर शर्मा उर्फ शाकाल के मुंह से ये वाक्य मानो निकले नहीं फिसले हों।

"तेरे दो नहीं तीन नाम हैं। अण्डरवर्ल्ड में तू शाकाल के नाम से जाना जाता है। बाकी दुनिया की नजर में तू राजेश्वर शर्मा उर्फ स्टील किंग है ही। इसके अलावा इमरजेन्सी के लिये तेरा एक और रूप है। एक और नाम है। उसी नाम से तेरा विदेशों में कई बैंकों में एकाउंट भी है। कहे तो तेरा वो नाम भी बताऊं तुझे।"

राजेश्वर शर्मा की हालत काटो तो खून नहीं वाली हो गई।

"क्यों, तुम चुप क्यों हो गये शाकाल उर्फ राजेश्वर शर्मा उर्फ धन...।"

"बस...! बस चुप हो जा। मैं समझ गया तू मेरे बारे में बहुत कुछ...बहुत कुछ से भी ज्यादा जानता है।" शकोरा की बात पूरी होने से पहले ही तेजी से बोल उठा राजेश्वर शर्मा—"जानता हूं तू कोई बहुत ही पहुंची हुई चीज है। अब बोल, उस हरामी पण्डित की औलाद के बारे में क्या बोल रहा था तू?"

"यही कि तू उसकी मौत का ख्वाहिशमन्द है और मैं उसका सिर कलम करने के लिये किसी बकरे की तरह जंजीर में बांधकर उसे तेरे हवाले कर सकता हूं...।"

"आगे भी तो बोल। तू मेरे लिये ऐसा क्यों करेगा? आशीर्वाद को बकरे की तरह मेरे सामने पेश करने के बदले में मुझसे भी तो कुछ चाहिये होगा तुम्हें। क्या चाहिये? कितना पैसा चाहिये? वैसे एक बात और कहना चाहता हूं।"

"वो भी कह डाल...। लेकिन रुक...। तू जो कहना चाहता है वो मेरे मुंह से सुन ले। तेरे गले से ये बात नीचे नहीं उतर रही कि मैं तेरे उस दुश्मन को, जो कि मेरा भी दुश्मन है और जिसके बारे में कहा जाता है कि वो दिमाग का चैम्पियन है, छः फुट का नेवला है, सौ के बराबर अकेला है, को बकरे की तरह जंजीर में बांधकर तेरे हवाले कर सकता हूं। मुझे पागल कह ही चुके हो, मेरी इस बात को सुनकर मुझे पक्का ही पागल समझ रहे हो। क्यों यही कहना चाहते हो ना तुम?"

"हां...!" मेज से सिगरेट की डिब्बी और लाइटर उठाकर डिब्बी से सिगरेट निकालते हुये बोला शाकाल—"यहीं कहना चाहता था मैं। खैर, जाने दो इस बात को। अब मेरी पहली बात का जवाब दो। तुम अनहोनी को होनी में बदल सके तो बदले में मुझे क्या करना होगा?"

"तुम्हारी कुर्सी। मुम्बई डॉन की कुर्सी चाहिये मुझे। तुम्हारी ख्वाहिश पूरी करने पर तुम अपने हाथों से मेरी ताजपोशी करोगे। मंजूर हो तो बोलो...?"

"मुझे मंजूर है।" तपाक से बोला राजेश्वर शर्मा उर्फ शाकाल—"आशीर्वाद को मेरे सामने पेश करते ही मैं उसी वक्त तुम्हें मुम्बई अण्डरवर्ल्ड का डॉन घोषित कर दूंगा...क्या नाम बताया था तुमने...हां याद आया शकोरा। अब तुम मुझे तभी

फोन करना जब वो तुम्हारे काबू में आ जाये और...।"

"सुनो शाकाल...तुम यूं समझो कि वो अभी से मेरे कब्जे में है। लेकिन मैं अभी उसे तुम्हारे हवाले नहीं करूंगा...।"

"क्यों?" शकोरा की बात को बीच में ही शहीद करते हुये व्याकुल-सा होकर बोला शाकाल—"जब वो हरामी तुम्हारे कब्जे में है तो उसे ले आओ और मैं तुरन्त ही तुम्हारी शर्त पूरी कर दूंगा। तुम्हें पता ही होगा कि मैं उस हरामी की खाल में भूसा भरने के लिये मरा जा रहा हूं। उसे जल्दी मेरे पास लाओ...।"

"शाकाल, मैं पहले ही तुम्हें बता चुका कि तुम्हारे साथ-साथ वो मेरा दुश्मन भी है।" इस बार नकनकी-सी आवाज में ग्लास पेपर जैसा खुरदुरापन था—"मैंने भी उससे बदला लेना है। जान से नहीं मारूंगा मैं उसे। उसे तुम्हारे हवाले करने से पहले मैं उसे अपराधी साबित करने के लिये उससे कोई बड़ा अपराध करवाऊंगा। चौंकना नहीं शाकाल...। ना ही मुझे शेख चिल्ली समझना। शकोरा नाम है मेरा। काला जादू जानता हूं, ऐसा समझ मुझे। मेरे कहने से वह कुछ भी करेगा। आज ही मैं उससे अपराध करने को विवश करूंगा। उसके अपराध के सबूत भी तैयार करूंगा। उसके बाद उसे तुम्हारे हवाले कर दूंगा।"

"चलो नहीं कहता तुम्हें शेखचिल्ली। मान लेता हूं कि तू जो कह रहा है कर दिखायेगा। लेकिन ये बताओ कि तुम आशीर्वाद से कौन-सा अपराध कराना चाहते हो?"

"अभी सोचा नहीं है लेकिन कत्ल जैसा अपराध ही कराना चाहता हूं मैं उससे...।"

"तो सुनो, मेरे पास एक कैन्डीडेट है जिसका मैं कत्ल कराना चाहता हूं। कहने को तो मिलिट्री का अफसर है। उसकी पोस्टिंग लद्दाख में है। लेकिन इन दिनों वह मुम्बई में अपने घर पर छुट्टी लेकर आया हुआ है। कभी वो मेरे लिये भी काम करता था। सेना के सीक्रेट्स मेरे हाथ बेचता था। लेकिन अब उस पर देशभक्ति का भूत सवार हो गया है। अगर तुम उसका कत्ल करवा सको तो...।"

"हो जायेगा...तुम्हारा ये काम भी हो जायेगा। करेगा भी हमारा दुश्मन यानि आशीर्वाद पण्डित। तुम उसका नाम और एड्रेस बताओ।"

शाकाल उसका नाम-पता बताने लगा।

❑❑❑
❑❑❑

आशीर्वाद पण्डित ट्रिपल सी के ही एक गुप्त ठिकाने में किचन में अपने लिये सुबह के नाश्ते में ब्रेड के कुछ पीस सेंकने पर उनमें मक्खन लगा रहा था।

वो गुप्त ठिकाना एक पॉश कालोनी में बंगला था और ट्रिपल सी की मिल्कियत थी और वक्त जरूरत पर ट्रिपल सी के एजेन्टों के काम आता था। उस बंगले में नीचे बेसमेंट भी था और बेसमेंट में टॉर्चर रूम वगैरह सब था।

बहरहाल बात हो रही थी आप सबका चहेता उस समय अपने लिये नाश्ता तैयार कर रहा था कि तभी कालबेल बजने लगी। गैस पर गर्म होने के लिये दूध रखा हुआ था। कालबेल की आवाज सुनकर मुण्डे ने गैस बंद की और जाकर दरवाजा खोला।

दरवाजे पर नदीम और आयशा को देखकर मुण्डे ने उन्हें हाथ जोड़कर नमस्ते बुलाई और उन्हें अन्दर आने को कहा।

तीनों अन्दर कमरे में पहुंचे।

"भाग गये लड़के तुझे भी।" सोफे पर बैठते ही नाटे कद का नदीम उर्फ छोटे नवाब शरारत पर उतर आया–"उस्तादों का उस्ताद है तू। साला हफ्तेभर में लड़की भी पटा ली और उसके साथ...और यहां वर्षों से अपने प्रेम की हांडी को चूल्हे पर चढ़ाने की कोशिश भी नहीं सफल हो पा रही है।" अन्तिम फिकरा उसने बगल में बैठी मुमताज की तरफ तिरछी निगाहों से देखते हुये पूरा किया।

"लाहौल विला कुव्वत! अरे कुछ शर्म कर टिंगू।" छोटे नवाब को बुरी तरह घूरते हुये दांत पीसकर बोली मुमताज–"ये तू अपने बच्चे से कैसी गन्दी बात कर रहा है? इसके जले पर नमक छिड़क रहा है? जबकि तू अच्छी तरह जानता है कि अपना बच्चा ऐसा नहीं है। वो ऐसी नीच हरकत कभी नहीं कर सकता है। इसका कोई दुश्मन इसे बदनाम कर रहा है। प्राची को उसी ने अपनी हवस का शिकार बनाया और इस तरह से बनाया कि वह भी धोखा खा गई। क्यों आशीर्वाद, मैं गलत तो नहीं कह रही हूं?"

"नहीं आंटी जी...आप बिल्कुल सही कह रही हैं।" जेब से चने के दाने निकालते हुये गम्भीर हुआ पड़ा केशवपुत्र बोला–"किसी ने तो मेरे साथ गेम खेला ही है। मेरे साथ ही क्यों,

उस बेचारी प्राची को भी उसने आत्महत्या की राह दिखाई है। अपने से ज्यदा दुख तो मुझे उसके लिये हो रहा है। सबसे बड़ी बात ये है कि दुश्मन अपने मकसद में कामयाब हो चुका है और बिल में घुसकर अपनी कामयाबी का मजा ले रहा होगा। यहां हम जल बिन मछली की तरफ फड़फड़ा रहे हैं।"

"फड़फड़ा क्यों रहा है बालक?" बोला नदीम–"ढूंढ उसे और उसका तीया-पांचा एक कर दे।"

"अरे अंकल!" चने के दानों की फंकी मारने पर कुटुर-कुटुर करते हुये ठण्डी आह-सी भरकर बोला केशवपुत्र–"कोई बहुत चालाक किस्म का खिलाड़ी है वो जिसने इस बार आपके बच्चे के छिलके उतारे हैं। बहुत कोशिश की कि उसके बारे में कोई हल्का-सा भी सुराग लग जाये। लेकिन अफसोस, उसका कोई सुराग नहीं लगा। उस होटल के दो फेरे लगा आया जिसमें वह प्राची को ले जाता रहा है। वहां गया तो होटल का स्टाफ मुझे नफरत भरी निगाहों से देख रहा था। एक ने तो कह ही दिया कि लड़की के साथ मौज-मस्ती करने के बाद उसे पहचानने से इंकार कर दिया तो बेचारी ने आत्महत्या कर ली। इसका मतलब यही था कि वो हरामी प्राची से मेरा रूप बनाकर मिलता था। काश कि प्राची ने इतनी जल्दबाजी से काम ना लिया होता। उसने ये आत्मघाती कदम ना उठाया होता तो शायद कोई राह निकलती। लेकिन उसके आत्महत्या कर लेने से अब उस तक पहुंचने के सारे रास्ते बन्द हो चुके हैं।"

"तो अब क्या करोगे तुम?" मुण्डे की तरफ चिन्तायुक्त निगाहों से देखते हुये बोली मुमताज।

"करूंगा क्या आंटी? मुंह छुपाये बैठा तो हुआ हूं। हालांकि मेरे घरवालों को मुझ पर पूरा विश्वास है। अभी कुछ देर पहले फोन पर मम्मी जी और डैडी जी से बात हुई है। उन्होंने साफ कहा है कि मैं बेकार परेशान हो रहा हूं। उन्हें मुझ पर पूरा विश्वास है कि मैं गलत नहीं हो सकता हूं। लेकिन फिर भी आंटी जाने क्यों मेरी हिम्मत नहीं हो रही है उनके सामने...घर के किसी मेम्बर के सामने जाने की या कॉलेज में अपने दोस्तों का सामना करने की।"

"लेकिन आशीर्वाद इस तरह मुंह छुपाने से भी तो काम नहीं चलेगा।" गम्भीर होकर बोला नदीम उर्फ छोटे नवाब–"कब तक छुपोगे अपने घरवालों से? अपने दोस्तों से? समाज से? तुम बता

ही रहे हो कि जिसने तुम्हें बदनाम किया उसने अपने गेम के पीछे कोई हल्का-सा भी क्लू नहीं छोड़ा तो तुम उस तक पहुंचकर कभी अपने आपको निर्दोष भी नहीं साबित कर सकते हो। साला बदनामी का एक दाग तुम्हारे माथे पर हमेशा-हमेशा के लिये...।" बाकी के शब्द नदीम के मुंह में ही रह गये।

लड़के की जेब में पड़े मोबाइल में 'हम होंगे कामयाब...मन में है विश्वास...हम होंगे कामयाब एक दिन' वाले गाने की मधुर धुन बजने लगी।

आशीर्वाद ने जेब से मोबाइल निकालकर डिस्प्ले स्क्रीन पर नजर डाली और बड़बड़ाते हुये, "पता नहीं कौन है।" फोन का एक्स्ट्रा स्पीकर चालू कर दिया।

❑❑❑
❑❑❑

"कौन...?" चने चबाते हुये पूछा मुण्डे ने।

"शकोरा!" नकनकी-सी आवाज सुनाई दी—"तेरे हाल चाल पूछने के लिये मैंने तुझे फोन किया है ओये दिमाग के चैम्पियन।"

"हाल तो थोड़े खराब ही चल रहे हैं मेरे।" चने चबाते हुये मुण्डे की आंखें सिकुड़ी हुई थीं—"लेकिन प्यारे कटोरे, मैं तो तुम्हें जानता नहीं। नाम भी नहीं सुना कभी ये। फिर तुम्हें मेरे से क्या हमदर्दी है जो मेरा हाल चाल पूछ रहे हो?"

"तुमसे मुझे कोई हमदर्दी नहीं है ओये पण्डित की औलाद।" नकनकी आवाज में रेगमाल-सा खुरदुरापन था—"तेरी हालत खराब चल रही है ये सुनकर मुझे अच्छा लगा। मुझे ये भी पता है कि तेरी हालत खराब क्यों हुई पड़ी है। अब सुन, तेरी पहले से खराब हुई पड़ी हालत को मैं और भी खराब करने वाला हूं।"

"न...नहीं प्यारे कटोरे...।" लड़का सोफे से उठकर फोन को हाथ में लिये थोड़ी ही दूर पर पड़ी राइटिंग टेबल की ओर बढ़ते हुये बौखलाने की शानदार आवाज निकालते हुये बोला—"ऐसा गजब मत करना। टूटे हुये दिल पर और पत्थर मत चलाना वरना ये शर्मीला-सा बच्चा मारे शर्म के ही मर जायेगा। और सुन भाई बेपेंदी के कटोरे...तेरे से मेरी कोई दुश्मनी भी तो नहीं है। फिर तू मुझे क्यों गम के सागर में डुबोने पर तुला हुआ है?"

"तू ठीक कह रहा है ओये आशीर्वाद पण्डित...सीधे तौर पर तेरे से मेरी कोई दुश्मनी नहीं है। लेकिन फिर भी कुछ तो ऐसा

है ही तेरे मेरे बीच जिससे मुझे खुन्दक है। अपनी खुंदक निकाल रहा समझ मुझे। अब वो सुन जिसके लिये मैंने तुझे फोन किया। मैं तुझे बताना चाहता हूं कि तेरे दो प्यारे दोस्त टीटू और विशाखा का मैंने अपहरण करा लिया है। वो दोनों इस समय मेरे कब्जे में हैं...।"

फोनकर्ता की बात सुनकर एक बारगी तो बुरी तरह चौंका केशवपुत्र। लेकिन तुरन्त ही वह संभला और मेज से पेन तथा कागज उठाकर कागज पर जल्दी-जल्दी कुछ लिखते हुये बोला—"लेकिन प्यारे चांदी के कटोरे ये तो लगे हाथ बता ही दो कि तुमने टीटू और गुड्डी का अपहरण क्यों किया है? उनके बदले उनके घरवालों से कोई माल-पानी चाहते हो तो ऐसा करो, जितना पैसा तुम उनकी रिहाई के बदले चाहते हो...उससे दुगने की मांग करना। गारण्टी मेरी, माल तुम्हें मिल जायेगा। बाद में आधा मुझे दे देना। वो दरअसल, प्राची वाले मामले में घरवाले नाराज हो गये हैं। घर से निकाल दिया है और खर्चा-पानी देना भी बन्द कर दिया है। अब तुम्हीं मेहरबान होंगे तो अपना काम चलेगा।" बात करते हुये उसने जो लिखा था वो कागज मुमताज को पकड़ा दिया।

मुमताज और नदीम ने कागज में लिखे को पढ़ा। लिखा था—

"आंटी जी...अंकल जी...मुझे लगता है कि ये वही शख्स है जिसने मेरी इज्जत के छिलके उतारे हुये हैं। मुझे इस तक पहुंचना है। इसका फोन नम्बर लिखा है। अभी फोन पर मैं इसे दस-पन्द्रह मिनट तक उलझाये रखने की कोशिश करूंगा। आप लोग इस नम्बर को जो कि रिलायंस का है, इसे सर्विलांस में डलवाकर इसकी लोकेशन पता करें और बाहर अपनी कार पर पहुंचें, मैं आ रहा हूं। चलती गाड़ी में इससे बातें करता रहूंगा और उसकी लोकेशन पता लगने पर वहीं पहुंचकर इसकी गर्दन का नाप ले लूंगा।"

पत्र पढ़ने के बाद मुमताज और नदीम ने आंखों के इशारे से लड़के को आश्वासन दिया कि जो वो चाहता है वे वैसा ही करेंगे। फिर दोनों उठकर बाहर निकल गये।

❑❑❑
❑❑❑

राजेश्वर शर्मा उर्फ शाकाल ने फोन का स्विच ऑफ करने पर अपने सिर पर रखी सन जैसे सफेद बालों वाली विग उतारी और अपनी माइका जैसी टाट पर हाथ फेरते हुये कुछ सोचने लगा।

कमरे में कुछ देर के लिये सन्नाटा-सा छा गया। ऐसा सन्नाटा कि मानो कोई मक्खी...मच्छर भी चकराकर गिरे तो ऐसा लगे कि किसी नगाड़े पर वजनी पत्थर आ गिरा हो।

क्षणोपरांत—

फिर से अपने सिर पर सफेद बालों वाली विग चढ़ाकर शाकाल ने लाइटर से सिगरेट जलाई तो लाइटर की हल्की-सी खिच्च की आवाज से सन्नाटा भंग हुआ।

"समझ में नहीं आता शाकाल साहब!" फिर शाकाल की तरफ देखते हुये बोला दिलीप गुप्ता—"कि ये शकोरा कौन है और वो है किस चक्कर में?"

"उससे भी पहले बात यहां आकर अटकती है कि वो मेरे बारे में इतना कुछ कैसे जानता है?" सिगरेट का कश खींचकर पर होंठ गोल कर धुऐं को छल्लों की शक्ल में मुंह से बाहर करने पर सोचपूर्ण लहजे में बोला शाकाल—"राजेश्वर शर्मा ही शाकाल है या शाकाल का दूसरा रूप राजेश्वर शर्मा है ये बात या तो तुम्हारे पिताजी जानते थे या अब तुम जानते हो...शुरू से ही जानते हो। अब ये राज शकोरा कैसे जानता है?"

"कहीं आप मेरे ऊपर तो शक नहीं कर रहे हैं शाकाल साहब?" शाकाल की तरफ देखते हुये बोला दिलीप गुप्ता—"अगर ऐसा है तो आपका ये शक बेवजह है। जब मैंने वर्षों इस बारे में अपनी जुबान बन्द रखी तो...।"

"तुम पर शक नहीं कर रहा हूं मैं।" कश मारकर इस बार नथुनों के रास्ते सिगरेट का धुआं बाहर करते हुये बोला शाकाल—"तुम पर शक करने की वजह ही नहीं बनती है। मेरे बारे में तुम सिर्फ इतना ही जानते हो कि राजेश्वर शर्मा ही शाकाल है। बाकी इस घर में कहीं ऐसा गुप्त रास्ता भी है जो मेरे अड्डे तक जाता है, ये तुम्हें नहीं मालूम। इसके अलावा तुम्हें ये भी नहीं मालूम कि शाकाल और राजेश्वर शर्मा के अलावा मेरा कहीं तीसरा रूप...तीसरा रोल भी है। यहीं बुद्धि खराब हुई पड़ी है कि मेरे जो राज सिर्फ मुझ तक ही सीमित थे वो उसे कैसे पता लगे? कुछ भी हो दिलीप गुप्ता...उसकी बातों ने मेरी आंखें खोल दी हैं। आज तक मैं अपने आपको सुरक्षित समझता रहा। ये समझता रहा कि शाकाल पर बन आयेगी तो राजेश्वर शर्मा सेफ रहेगा। राजेश्वर पर भी बन आई तो अपने तीसरे रूप में मैं सुरक्षित रहूंगा।

लेकिन अब लग रहा है कि मैं कहीं किसी रूप में सुरक्षित नहीं हूं। दिलीप...तुम मेरे ट्रबल शूटर हो, तुमने ही मेरी ये ट्रबल दूर करनी है। तुमने ही पता लगाना है कि ये शकोरा कौन है। उसके बाद इसका काम भी तमाम करना होगा।"

"उसे खत्म तो करना ही होगा शाकाल साहब। जब आपके बारे में इतना कुछ जानता है तो हम सबके बारे में तो वह सबकुछ ही जानता होगा। आने दीजिये उसे सामने। फोन पर कह तो रहा था कि आशीर्वाद को बकरे की तरह आपके सामने पेश करेगा। तब आशीर्वाद से पहले वो मारा जायेगा।"

❑❑❑
❑❑❑

"मुझसे मसखरी मत कर ओये आशीर्वाद...।" नीम के तेल से भी ज्यादा कड़वाहट थी उस नकनकी-सी आवाज में—"वरना मुझे गुस्सा आ जायेगा और मैं तेरे दोनों दोस्तों की लाशें तुझे पार्सल करवा दूंगा।"

"अरे नहीं भाई!" शकोरा का फोन आने पर लड़के का उखड़ा मूड काफी हद तक अच्छा हो चुका था। कुछ देर पहले वो इस बात की उम्मीद छोड़ चुका था कि अब वह प्राची वाले मामले में अपने आपको कभी निर्दोष नहीं साबित कर सकेगा। लेकिन शकोरा के फोन आने पर उसके निराश मन में उम्मीदों के दीये फिर से जल उठे थे और वह शकोरा से बात करते हुये चहक रहा था—"ऐसा गजब मत करना। मेरे वो लंगोटिया टाइप के दोस्त हैं, उन्हें मत मारना। तुम्हें बता ही चुका हूं कि इस समय मेरे मम्मी-डैडी मेरे से नाराज चल रहे हैं। ऐसे में मेरे वही दोनों दोस्त मेरे लिये सबकुछ हैं। अब मैं तुमसे मसखरी नहीं करूंगा। फुल सीरियस होकर कहता हूं कि बोलो भाई, मेरे दोस्तों का अपहरण तुमने क्यों करवाया है? क्या चाहते हो तुम?"

"तुम्हें मेरा एक मामूली-सा काम करना होगा। उसके बाद मैं तुम्हारे दोनों दोस्तों को छोड़ दूंगा...।"

"ऐसा है तो बोलो कटोरा भाई।" चने के दो दाने मुंह में सरकाने पर मुण्डा दरवाजे की ओर बढ़ते हुये बोला—"अपने दोस्तों के लिये मैं कुछ भी कर सकता हूं। काम मामूली हो या आसमान से तारे...सूरज...चांद जो भी कहोगे लाकर तुम्हारे कटोरे में डाल दूंगा।"

"फिर बकवास की तुमने...।" दूसरी तरफ से बोलने वाला नकनकी आवाज में कोड़े की-सी फटकार को मिक्स करके बोला।

"स...सॉरी कटोरा भाई।" बाहर से दरवाजा लॉक करके सामने पोर्टिको में खड़ी बगुले जैसी सफेद जेन कार की तरफ बढ़ते हुये प्रकट में हड़बड़ाये हुये से लहजे में किन्तु मन-ही-मन दांत पीसते हुये बोला आशीर्वाद—"त...तुम बोलो। क्या चाहते हो मुझसे?"

"कत्ल करवाना चाहता हूं मैं तुमसे।"

"क...क्या कह रहे हो कटोरा भाई?" अपने लहजे में नकली बौखलाहट भरते हुये तथा जेन में पिछली सीट पर बैठते हुये बोला लोमड़ी का दूध—"म...मैं और ख...खून? नहीं भाई कटोरा जी, मुझे माफ करो। खून तो किसी भी हालत में किसी का नहीं कर सकता हूं। तुम मेरे डैडी जी को नहीं जानते। वो कानून के पुजारी कहलाते हैं। अगर मैंने किसी इन्सान का कत्ल किया तो वो मुझे कभी माफ नहीं करेंगे। तुम बेशक मेरे दोस्तों को मार डालो। उनके टुकड़े-टुकड़े कर डालो, लेकिन मैं अपने डैडी जी को और ज्यादा नाराज नहीं कर सकता। हां, किसी इन्सान की जगह अगर तुम मेरे हाथों किसी जानवर को मरवाना चाहते हो तो मैं तैयार हूं।" उसकी बात खत्म होने से पहले ही जेन स्टार्ट करके मुमताज ने दौड़ा दी थी तथा उसके साथ अगली सीट पर बैठे नदीम ने कागज का एक पुर्जा लड़के की तरफ बढ़ा दिया था। बात करते हुये ही मुण्डे ने पुर्जे पर लिखी इबारत पढ़ ली थी और सिर को हल्की-सी जुम्बिश देकर नदीम का धन्यवाद भी कह दिया था।

❑❑❑

❑❑❑

डी० ए० वी० कॉलेज के गेट से एक खुली जीप अन्दर प्रविष्ट हो कॉलेज की इमारत के सामने रुकी।

खुली जीप में चार लम्बे-चौड़े पहलवान टाइप के, लेकिन शक्ल से देहाती से लगने वाले लोग थे।

जीप के रुकते ही उन चारों में से दो लोग, जो कि युवा ही थे, नीचे उतरे और उनमें से एक बगल से गुजरते दो छात्रों को रोककर बोला—"तुम्हारे कॉलेज में आशीर्वाद पण्डित नाम का एक लड़का पढ़ता है। यहां का...मेरा मतलब कॉलेज का हीरो भी है वो। जानते हो उसे?"

"हां जानते हैं हम उसे।" दुबला-पतला लड़का जिसने आंखों पर नजर का चश्मा लगा रखा था, उस पहलवान टाइप के बन्दे को ऊपर से लेकर नीचे तक देखते हुये बोला—"हमारी क्लास में ही तो पढ़ता है वो। क्यों पूछ रहे हो उसे?"

"हमें उससे मिलना है। कहां है तुम्हारी क्लास? हमें अपने साथ ले चलो। हम उससे वहीं बात कर लेंगे।"

"चलो।"

वह और उसका साथी और दोनों पहलवान क्लास रूम में पहुंचे।

क्लास में उस समय कोई टीचर नहीं था और स्टूडेंट्स भी आठ-दस ही थे। चश्मे वाले लड़के का नाम गिरीश भण्डारी था। उसने एक निगाह क्लास में मारी और फिर दोनों पहलवानों से मुखातिब हो बोला—"आशीर्वाद तो है नहीं क्लास में। शायद आया ही नहीं। होता तो अपने दोस्तों के साथ होता। वो रही उसकी दोस्त। ऐ काजल...अविनीति...ये दोनों अंकल आशीर्वाद को पूछ रहे हैं। वो आया नहीं क्या?"

"नहीं अंकल!" अवनीति उनके पास आते हुये बोली—"अभी तक तो भाई नहीं आया। उसे मालूम था कि सुबह के उसके तीन पीरियड आज के दिन खाली रहते हैं। चौथा पीरियड बारह बजे शुरू होता है। तब आये शायद।"

"ठीक है, गेट पर उसका इन्तजार करते हैं। वैसे हमें उसका जो हुलिया बताया गया उसके अनुसार वह छः फुट से भी ज्यादा लम्बा, गोरा-चिट्टा है और उसकी आंखें नीलम-सी नीली तथा घुंघराले बाल गोल्डन कलर के हैं। यही पहचान है ना उसकी?"

"हां अंकल जी...।" अविनीति उन पहलवान टाइप के बन्दों को शंकाभरी नजरों से देखते हुये बोली—"वैसे आप लोग क्यों मिलना चाहते हैं मेरे भाई से?"

"ये हम उसी को बतायेंगे।" कहने पर दोनों पलटे।

तभी पीछे से चश्मे वाले युवक ने उन्हें पुकारा—

"एक मिनट अंकल जी...!"

दोनों पलटे और सवालिया निगाहों से उस लड़के को देखने लगे।

"आप दोनों अभी आशीर्वाद का हुलिया बयान कर रहे थे।" उनके पलटने पर चश्माधारी छात्र बोला—"शायद आप उसे

पहचानते नहीं हैं। ये लीजिये उसकी फोटो है ये। अब आपको उसे पहचानने में आसानी होगी।" कहने पर गिरीश ने जेब में रखी वो फोटो जो एक दिन पहले किसी ने सारे कॉलेज में बांटी थी या ये कहें कि कैसे भी करके कॉलेज के लगभग हर छात्र तक पहुंचाई थीं, उन दोनों पहलवानों में एक को पकड़ा दी।

फोटो हाथ में लेकर देखने पर उस पहलवान का चेहरा लाल भभूका हो उठा और वह फोटो को अपने हाथ में भींचते हुये अपने साथी से बोला—"चल जुग्गी...उस हरामी की फोटो भी मिल गई अब तो। गेट पर इन्तजार करेंगे उसका और दिखते ही साले की पुंगी बजा डालेंगे।" कहने पर वो दोनों क्लास से बाहर निकल गये।

पीछे अविनीति सन्नाटे में खड़ी दरवाजे की ओर देखती रही।

❑❑❑
❑❑❑

फोन पर शकोरा से बात कर रहे आशीर्वाद को नदीम ने जो पुर्जा पकड़ाया था उसमें नदीम ने लिखा था, लड़के, रिलायंस के सर्विलांस से पता लग गया है कि जिस नाइन थ्री, फाइव, ऐट, फाइव, वन, थ्री, वन, सेवन, टू वाले नम्बर से तुम्हारी बात चल रही है वो फोन मलाड में गऊशाला रोड पर है। हम वहीं चल रहे हैं। पुर्जा पढ़ लेने पर लड़के ने सिर को जुम्बिश देकर नदीम को धन्यवाद कहा और फिर फोन सुनने लगा।

फोन पर शकोरा कह रहा था—

"जानवर को नहीं एक इन्सान को ही मारना होगा तुम्हें...।"

"फिर तो कटोरा भाई मुझे माफ ही कर। मैं किसी इन्सान की हत्या करने वाला नहीं हूं। अब तू चाहे मेरे दोस्तों को मार-काट, चाहे उनको तन्दूर में पकाकर खा जा...। मैं फोन रख रहा हूं...।"

"फोन बन्द मत करना ओये पण्डित की दुम...।" इस बार नकनकी आवाज में भेड़िये की-सी गुर्राहट भी शामिल थी—"पहले मेरी पूरी बात सुन...।"

फोन बन्द करने कौन जा रहा है उल्लू की दुम! मैं तो वैसे ही तुझे धमका रहा था। जेब में हाथ डालते हुये मन-ही-मन बोला केशवपुत्र।

"सुन रहा है मेरी बात कि नहीं...?"

"सुना, क्या सुना रहा है?" मुंह में चने के दाने सरकाते हुये अकड़कर बोला मुण्डा।

"देख ओये पण्डित...कहना तो तुझे मेरा मानना ही होगा। कत्ल तुझे करना ही पड़ेगा। तेरे दोस्तों की जिन्दगी के अलावा तेरी इज्जत भी इस समय मेरी मुट्ठी में बन्द है...।"

"अबे कटोरे भाई...ये तुम बेपर की क्यों उड़ा रहे हो?" कुटुर-कुटुर करते हुये मुण्डा मस्त होते हुये-सा बोला—"बोल रहे हो कि मेरी इज्जत तुम्हारी मुट्ठी में बन्द है। गप्प मार रहे हो तुम। मेरी इज्जत घिसी हुई चवन्नी नहीं है जो तुम्हारी मुट्ठी में कैद हो गई है।"

टाइम पास करने के लिये लड़का जो जी में आये बोले जा रहा था।

"अबे ओये पण्डित।" इस बार किलसकर बोला वो नकनकी आवाज वाला—"तू शायद मेरी बात को समझा नहीं। तेरी इज्जत मेरी मुट्ठी में है, कहने से मेरा तात्पर्य ये है कि प्राची वाले मामले में फंसने पर पूरे शहर में तेरी थू-थू हो रही है। जो लोग अभी तक तुझे हीरो मानते थे वो तेरे नाम पर थूक रहे हैं। और शायद मुम्बई में ही नहीं पूरे हिन्दुस्तान में तेरे ही चर्चे हैं आजकल। तेरे नाम के साथ-साथ तेरे बाप का नाम भी घृणा से लिया जा रहा है लोगों में। पहले जहां लोग तेरे बाप को पण्डित जी, पण्डित जी कहकर उनके बारे में चर्चायें किया करते थे अब राह चलते लोगों को कहते हुये सुना गया है कि जब बेटा हरामी है तो बाप भी हरामी ही होगा...।"

"ओये कटोरे...खबरदार!" अपने डैडी जी के लिये अपमान जनक शब्द सुनकर लड़के के तन-बदन में मानो आग-सी लग गई और वह गुर्रा उठा—"मेरे डैडी जी के लिये मुंह से एक भी शब्द उल्टा-सीधा निकाला तो...तो मैं कटोरे में इतने छेद करूंगा कि कटोरा आटा छानने वाली छननी बन जायेगा।"

"भड़क मत ओये पण्डित की दुम।" नकनकी आवाज में भी गुर्राहट थी—"मैं तेरे बाप की इन्सल्ट नहीं कर रहा हूं। मैं तो वो बता रहा हूं जो मैंने लोगों के मुंह से सुना है। तेरे बाप के बारे में उल्टा-सीधा सुनकर मुझे भी बुरा लगा था। वैसे बुरा तो तेरी बुराई सुनकर भी लगता है। हां आशीर्वाद, सच कह रहा हूं मैं।

तेरे बुराई सुनकर अच्छा नहीं लगता है मुझे। क्योंकि मैं जानता हूं ना कि तुम निर्दोष हो। ये भी जानता हूं कि प्राची वाले चक्कर में तुझे किसने उलझाया है। मेरा विश्वास कर, सच कह रहा हूं मैं।" नकनकी आवाज की टोन बदल चुकी थी। गुर्राहट की जगह आत्मीयता झलक रही थी लहजे में। ऐसा लग रहा था मानो वह आशीर्वाद का कोई सगा या खासम-खास हो—"मुझे तुमसे सच्ची हमदर्दी है। मैं जानता हूं कि वह कौन है जो अपने चेहरे पर तेरा फेस मास्क लगाकर प्राची से मिलता रहा है। उसका नाम-पता भी बता सकता हूं तुम्हें। बस तुम्हें मेरा वह काम करना होगा जो कि मैं तुम्हें बता ही चुका हूं...।"

"यानी कत्ल करना होगा मुझे?" चने के दानों के साथ ही मानो अपने हरेक शब्द को चबा-चबाकर ही बोला आशीर्वाद—"लल्लू समझता है तू मुझे ओये कटोरे...। छोटी मुसीबत से निकालने का लालच देकर बड़ी मुसीबत में फंसाना चाहता है? काम कर अपना। हवा आने दे। प्राची वाले मामले में थोड़ी बदनामी जरूर हो रही है लेकिन कानून मुझे उसके लिये सजा नहीं दे सकता है। जबकि कत्ल करने पर फांसी होनी है मुझे। अपने आपको मेरा हमदर्द बता रहा है और कुयें से निकालकर खाई में फेंकने का जुगाड़ कर रहा है। मुझे नहीं चाहिये तुम्हारे जैसा हमदर्द। बख्शो मेरी खाला, तुमसे से मैं रंडवा भला।"

"पहले मेरी पूरी बात तो सुन आशीर्वाद...। मैं...ये...।"

तभी उधर से आती आवाज कटने लगी।

"हलो...हलो...शकोरा बोलो, क्या कह रहे थे तुम...?" आवाज कटने पर मुण्डा व्याकुल-सा होकर बोला—"बोलो शकोरा...।"

"अ...आशीर्वाद...मेरे फोन की बैट्री खत्म हो गई है। मैं...मैं तुमको फिर फोन...करूंगा।" इसी के साथ उधर से फोन काट दिया गया।

"धत् तेरे की...बन्द कर दिया उसने फोन। अब क्या होगा?"

तब तक जेन उस इलाके में पहुंच चुकी थी जहां उस फोन की लोकेशन बताई जा रही थी। लेकिन फोन में बैट्री खत्म हो जाने से सब गुड़ गोबर हो गया था। गऊशाला रोड पर ऐसे बन्दे की काफी तलाश की गई लेकिन वहां कोई ऐसा बन्दा नहीं नजर

आया जिस पर ये शक किया जा सके कि वो आशीर्वाद का जानने वाला है और उसका दुश्मन हो सकता है।

निराश होकर वो लोग वहां से वापस लौट आये।

❑❑❑

❑❑❑

तीनों ट्रिपल सी के हैडक्वार्टर में मुमताज वाले ऑफिस में पहुंचे।

"आंटी जी...।" कुर्सी पर बैठते ही बोला आशीर्वाद—"आज आप मेरे लिये तगड़ा नाश्ता मंगवाइये। बहुत जोरों से भूख लग रही है। उस समय नाश्ता ही तैयार कर रहा था जब कि आप लोग आये थे। आप लोगों के लिये दरवाजा खोलने गया तो शकोरा का फोन आ गया और उसके चक्कर में नाश्ता रह गया।"

"नाश्ता तो मैं भी नहीं करके आया था डार्लि...म...मेरा मतलब मुमताज।" नदीम उसे डार्लिंग कहने जा रहा था लेकिन तभी उसकी नजर दांत पीसती मुमताज पर पड़ी तो वह बौखलाकर बोला—"मेरे लिये भी नाश्ता मंगवा लेना।"

मन-ही-मन नदीम को हजार-हजार गालियां देते हुये मुमताज ने घंटी बजाकर चपरासी को बुलाया और उसे बाहर से तीन जगह छोटे-भटूरे लाने भेजा।

तभी मुण्डे की जेब में पड़ा मोबाइल बजने लगा।

"लगता है आज नाश्ता मेरे नसीब में नहीं है।" वह जेब में हाथ डालते हुये बोला—"शकोरा का ही फोन होना चाहिये। हमें फिर से निकालना होगा। अंकल जी...आप फिर से वह नम्बर सर्विलांस...लेकिन एक मिनट रुकिये, ये शकोरा का फोन नहीं अविनीति का फोन है। मेरे साथ पढ़ती है और मेरी बहन बनी हुई है। बहुत प्यार करती है मुझसे। हां अविनीति बोलो...।"

"आशीर्वाद भाई...तुमको तलाशते दो पहलवान टाइप के लोग क्लास में आये थे। दोनों तुम्हारे लिये गुस्से में लग रहे थे और बाहर गेट पर तुम्हारे इन्तजार में हैं वो...।" व्याकुलता में भरी हुई आवाज थी अविनीति की। वह जल्दी-जल्दी बोल रही थी—"आज तुम अब कॉलेज मत आना...।"

"आना तो नहीं था मुझे आज कॉलेज। लेकिन अब जरूर आऊंगा। तुम मेरी फिक्र छोड़ो अविनीति...। मैं उनसे निपट लूंगा। तुम मुझे पूरी बात बताओ...।"

अविनीति ने मुण्डे को बताया कि कैसे क्लास में आकर वे उसे पूछ रहे थे और फिर जब गिरीश ने उन्हें उसकी फोटो दी तो कैसे वह पहलवान गुस्से में भड़का था।

सब सुनने पर लड़के ने अविनीति को कहा कि वह नाहक ही उसके लिये परेशान ना हो, वह देख लेगा उन पहलवानों को और फिर उसने फोन बन्द कर दिया।

फिर कुछ देर तक नदीम...मुमताज और आशीर्वाद शाकाल और यांग यू ही के विषय में बातें करते रहे। तभी चपरासी उनके लिये छोले-भटूरे ले आया और फिर तीनों नाश्ता करने लगे।

❑❑❑

❑❑❑

नाश्ता करने के बाद कुछ देर तक तो मुण्डा मुमताज के ही ऑफिस में बैठा शकोरा के फोन का इन्तजार करता रहा। फिर जब उसका फोन नहीं आया तो वह उठकर कॉलेज के लिये चल दिया।

दरअसल वो उन दोनों पहलवानों से मिलकर ये जानना चाहता था कि वे उससे चाहते क्या हैं? क्यों वे उसे ढूंढ़ रहे थे और वो हैं कौन?

बाइक को साठ-पैंसठ की रफ्तार से दौड़ाते हुये वह शकोरा के विषय में भी सोच रहा था। सोच रहा था कि शकोरा है कौन और वो उससे किसका कत्ल और क्यों करवाना चाहता है? उसके इरादे क्या हैं? क्या सच में ही वह उस शख्स को जानता था जिसने उसे प्राची वाले मामले में फंसाया था? या फिर खुद शकोरा ही वह शख्स था जिसने अपने चेहरे पर उसका मास्क लगाकर प्राची को धोखा दिया और सबकुछ योजना बनाकर किया ताकि बाद में वह उसे बदनाम कर सके?

कुल मिलाकर आप सबका चहेता जो रात निराश हो चुका था कि प्राची के आत्महत्या कर लेने से वह उस शख्स तक कभी नहीं पहुंच सकेगा जिसने उसके चेहरे पर बदनामी की ढेर सारी कालिख पोत दी थी, शकोरा के फोन आने से उसकी निराशा में आशा के ढेर सारे कमल खिले थे। अब उसे उम्मीद हो चली थी कि वह कैसे भी करके शकोरा तक पहुंचकर उससे जान ही लेगा कि उस सारे खेल के पीछे कौन था?

दिमाग में चकरा रहे ढेर सारे प्रश्नों में उलझा हुआ था वह

कि तभी उसका मोबाइल बजने लगा।

"जरूर उस साले कटोरे-सटोरे का फोन होगा।" बड़बड़ाते हुये उसने बाइक की स्पीड को थोड़ा कम करते हुये जेब से मोबाइल निकाला और स्क्रीन पर चमकते नम्बर को देखा तो पाया कि ये शकोरा वाला नम्बर ना होकर कोई दूसरा ही नम्बर था।

"हलो...कौन?" स्विच ऑन करने पर कंधे पर मोबाइल रख उसे कनपटी के दबाव से रोकते हुये बोला आशीर्वाद।

"शकोरा बोल रहा हूं।" नकनकी आवाज आई—"दूसरे फोन का इन्तजाम करने पर बात कर रहा हूं। पहला चोरी का था। उसकी बैटरी खत्म हो गई तो नाले में फेंक दिया है। चोरी का ये भी है। खैर, अब तू सुन...तेरे से मैं जिस आदमी का कत्ल करवाना चाहता हूं वो गद्दार है। देश का दुश्मन है। अपने देश के सीक्रेट्स चीन के एजेन्ट शाकाल को बेचता है।"

शाकाल का नाम सुनकर आशीर्वाद इस कदर चिहुंका कि उसका हाथ डगमगा गया और उसकी बाइक बगल से गुजरती दो मंजिला वाली बस से रगड़ खाती हुई डिवाइडर से टकराई।

लेकिन कैसे भी करके लड़के ने बाइक को गिरने से बचा लिया वर्ना तो पीछे बहुत ज्यादा ट्रैफिक था और ऐसे में कुछ भी हो सकता था उसके साथ।

"क्या बात है आशीर्वाद पण्डित...तुम बोलते क्यों नहीं?" दूसरी तरफ से शकोरा बराबर बोले जा रहा था—"तुम शायद सोच रहे होंगे कि मैं तुमसे झूठ बोल रहा हूं। लेकिन मेरी बात का यकीन करो। मैं झूठ नहीं बोल रहा हूं। वो सच में ही देशद्रोही है।"

"अगर वो देशद्रोही है तो मैं उसकी हत्या करने को तैयार हूं।" शकोरा की बात पूरी होते ही शान्त एवं सपाट से लहजे में बोला केशवपुत्र—"लेकिन उससे पहले मुझे तुमसे गारण्टी होनी चाहिये कि तुम्हारा काम होते ही तुम ना केवल मेरे दोनों दोस्तों को सही-सलामत छोड़ दोगे बल्कि साथ में मुझे उस आदमी का नाम-पता भी बताओगे जिसने मुझे प्राची वाले मामले में फंसाया है।"

"देख आशीर्वाद...तुझे मेरी बात पर भरोसा करना होगा। मेरी जुबान ही तुम्हारे लिये इस बात की गारण्टी होगी कि जैसे ही तू मेरा काम कर देगा, मैं तेरे दोस्तों को सही-सलामत वापस करने के साथ-साथ उस शख्स का नाम-पता भी बता दूंगा जिसने

तुम्हारे मुंह पर बदनामी की कालिख मली है। जुबान के अलावा कोई और गारण्टी मैं तुम्हें नहीं दे सकता हूं। तुम मेरा काम नहीं भी करोगे तो मैं वो काम किसी और से करवा लूंगा। लेकिन तब तुम्हें तुम्हारे दोनों साथियों की लाश ही वापस मिलेगी और इसके अलावा तुम कभी उस शख्स तक नहीं पहुंच सकोगे जिसने तुम्हें बदनाम किया है। तुम्हारी हां या ना मैं अभी ही सुनना चाहता हूं। बोलो, क्या कहते हो?"

"कटोरे भाई...हां-ना का जवाब देने से पहले मुझे इस बात की गारण्टी भी हो कि वाकई मेरे दोनों दोस्त तुम्हारे कब्जे में हैं या तुम यूं ही बकवास कर रहे हो।"

"इस बात की गारण्टी तो मैं तुम्हें अभी, इसी वक्त करा सकता हूं। तुम्हारे दोनों दोस्त इस समय मेरे सामने ही हैं। दोनों के हाथ-पैर बांध रखे हैं मैंने। फोन उन्हें देता हूं। तुम उनसे बात करके अपनी तसल्ली कर लो।"

❑❑❑
❑❑❑

पलभर फोन पर शान्ति छाई रही। तत्पश्चात् विशाखा की आवाज आई—"आशीर्वाद...हमें बचा लो। ये लोग बहुत ही खतरनाक लोग लगते हैं। यहां जिसने तुमसे फोन पर बात की वो एक नकाबपोश है। उसके अलावा बहुत सारे गुण्डे टाइप के लोग हैं यहां। सब मुझे ऐसे घूर रहे हैं जैसे...जैसे...। मुझे डर लग रहा है आशीर्वाद। टीटू को तो इन लोगों ने मारा भी है। नकाबपोश कह रहा था कि अगर तुमने इनका कहना नहीं माना तो ये लोग मेरी इज्जत लूट लेंगे। मेरे साथ बहुत बुरा करेंगे। प्लीज आशीर्वाद...।"

"हां यार...आशीर्वाद, हमें बचा लो।" टीटू की आवाज आई। बुरी तरह सहमा हुआ जान पड़ता था वो उस घड़ी—"अपने आपको शकोरा कहने वाला ये नकाबपोश बेरहम है। मुझे खामखा ही अपने गुण्डों से पिटवाया है इसने। सुबह हम दोनों ट्यूशन पढ़कर लौट रहे थे और काले रंग की बोलेरो में सवार गुण्डों ने हमें रोककर हमारे पर बेहोशी की गैस वाली गोलियां चलाकर हमें बेहोश करके यहां ले आए। हमारे हाथ-पैर बांधकर डाल दिये। नकाबपोश गुड्डी के गालों पर उंगली फेर रहा था। मैंने मना किया तो मुझे पिटवा दिया। यार तूने पहले भी कई बार हमारी मदद

की है। इस बार भी कुछ कर। य...ये शायद तुमसे कोई कत्ल करवाना चाहते हैं। नकाबपोश बता रहा था कि वो कोई चीनी एजेन्ट है। देश के दुश्मनों का तो तू वैसे ही जानी दुश्मन है। उसे खत्म कर दे और हमें बचा ले। बोल मेरे दोस्त...मेरे भाई...बचायेगा ना तू हमें?"

"हां टीटू...हां मेरे भाई। मैं तुम्हें और विशाखा को जरूर बचाऊंगा। तुम्हारे लोगों के लिये मैं शकोरा के कहने पर खून भी करूंगा। तू फोन उसे दे। मैं उससे जानना चाहता हूं कि मुझे किसका खून करना है तथा कब करना है?"

एक मिनट के अन्तराल में मुण्डे के फोन पर वही नकनकी-सी आवाज सुनाई दी—

"हां आशीर्वाद...अब तुझे यकीन हो गया ना कि तेरे दोनों दोस्त इस समय मेरे कब्जे में...मेरे रहमो-करम पर हैं। अगर तूने...।"

"फालतू की बात छोड़ ओये शकोरे।" उसकी बात पूरी होने से पहले ही गुर्रा उठा आशीर्वाद—"ये बोल मुझे किसका खून करना है और कब करना है?"

"ये बताने के लिये मैं तुम्हें फिर से फोन करूंगा।" इसी के साथ दूसरी तरफ से लाइन काट दी गई तो लड़के ने भी फोन को हाथ में लेकर उसका लाल बटन दबाकर उसे जेब में रख लिया।

"देख लूंगा तुझे मैं शकोरा। अगर जल्दी ही तेरे हाथ भीख मांगने वाला कटोरा नहीं थमाया तो मेरा नाम भी आशीर्वाद पण्डित नहीं।"

❑❑❑
❑❑❑

कॉलेज के गेट पर यूं ही बाइक रोक दी लड़के ने और इधर-उधर निगाहें दौड़ाने लगा।

वैसे बाइक रोकते ही उसे पीछे खड़ी वो खुली जीप दिखाई दे गई थी जिसमें चार दारा सिंह टाइप के पहलवान आपस में बातें करते हुये गेट की तरफ ही देख रहे थे।

लड़के ने ये भी मार्क किया कि उन चारों की नजर उन पर पड़ चुकी थी और चारों ही के चेहरों पर उसको देखते ही नफरत तथा हिकारत के भाव पैदा हुये थे।

तभी दो पहलवान उसके निकट पहुंचे।

"ओये लड़के... ।" उनमें से एक उसके कंधे पर हाथ रखकर रेगमाल जैसे ही खुरदुरे लहजे में बोला—"हम तुझे लेने आये हैं। अब तू ये बता कि शराफत से हमारे साथ चलेगा कि पहले पिटेगा?"

"मुझे लेने आये हो?" अचकचाने का शानदार अभिनय करते हुये बोला केशवपुत्र—"लेकिन पहलवान जी...मैं तो आपको जानता-पहचानता नहीं। फिर आपके साथ कैसे चल सकता हूं? दूसरी बात ये कि मुझे कैसे जानते और कहां ले जाना चाहते हो?"

"ये हम तुम्हें बाद में बतायेंगे ओये आशीर्वाद पण्डित।" दूसरा उसकी कलाई को दबोच, कलाई को पीसकर चटनी बना देने की नीयत से दबाते हुये गुर्राकर बोला—"पहले तू अपनी बाइक किनारे खड़ी कर और चलकर उस जीप में बैठ... ।"

"अ...अर्रे पहलवान जी म...मेरी कलाई तो छोड़ो। अन्दर हड्डियां चटक रही हैं। मुझे अपाहिज करने का इरादा है क्या?"

"अगर तूने हमारा कहा नहीं माना तो हम तेरे दोनों हाथ-पांव तोड़कर तुझे पूरी तरह से अपाहिज करके अपने साथ ले जायेंगे।" दूसरे वाला किंग-कोबरे की मानिन्द ही फुंफकार भरे लहजे में बोला—"बोल क्या कहता है?"

"पता नहीं तुम्हारे क्या इरादे हैं? मैं...मैं नहीं चलता तुम्हारे साथ... ।"

"तेरा तो बाप भी चलेगा।" पहले वाला दांत पीसते हुये गुर्राया—"राधे...मैं इसे उठाकर जीप में डालता हूं। तू इसकी बाइक को गेट के अन्दर फेंककर आजा।" कहने पर उसने आशीर्वाद को नन्हें बच्चे की तरह गोद में उठा लिया और जीप की ओर बढ़ा।

उसे जीप में फेंकने पर खुद भी जीप में बैठ गया। इतने में दूसरे वाला मुण्डे की बाइक को कॉलेज के गेट के अन्दर खड़ी करके वापस आया। फिर जैसे ही वह जीप में बैठा, जीप की ड्राइविंग सीट पर बैठे पहलवान ने जीप स्टार्ट करके आगे बढ़ा दी। रास्ते में जीप ड्राइव करने वाले ने जुग्गी का नाम लेकर कहा कि वह लड़के की कनपटी पर घूंसा मारकर उसे बेहोश कर दे तो जुग्गी नाम वाले पहलवान ने मुण्डे की कनपटी पर घूंसा मारा तो लड़का बेहोश होकर वहीं लुढ़क गया।

लेकिन नहीं!

वास्तव में मुण्डा बेहोश नहीं हुआ था। सिर्फ बेहोशी का

नाटक कर रहा था। दूसरी बात ये कि लड़का उन जैसे चार क्या चालीस पहलवानों के वश में आने वाला जीव नहीं था। लेकिन उसके मन में ये था कि वो चारों पहलवान हैं कौन और उससे चाहते क्या हैं? कहीं वो शाकाल के आदमी तो नहीं और शाकाल के अड्डे पर तो नहीं ले जाना चाहते हैं। अगर ऐसा था तो वह खुद शाकाल तक पहुंचने को लालायित था। और ऐसे में वह उसके लिये गोल्डन चांस था।

वो बेहोशी का नाटक करता लुढ़का पड़ा रहा। हालांकि पहलवान का घूंसा करारा था लेकिन इतना भी नहीं कि शाओलीन के शिष्य के होशो-हवास छीन लेता।

❑❑❑
❑❑❑

"कहो मेरी बुलबुल... ।" पलंग पर पड़ी विशाखा के गाल पर चुटकी काटते हुये नकाबपोश अपनी नकनकी-सी आवाज में बोला—"ये हाथ-पांव बंधे होने से तकलीफ हो रही हो तो खुलवा दूं इन्हें। लेकिन नहीं...अभी नहीं खुलवाऊंगा इन्हें। पहले तेरे साथ जी भरके खेलूंगा। तेरे हुस्न का जाम पीऊंगा। फिर तुझे खोलूंगा। नहीं तो तू यहां गदर मचायेगी। जूडो-कराटे आते हैं तुझे। पैंतरे दिखाने लगेगी तू। हालांकि तेरे ऐसा करने पर तू नुकसान में ही रहेगी। तब मैं अपने आदमियों को तुझ पर काबू पाने के लिये कहूंगा। मेरे आदमियों को तो तूने देखा ही है। साले सबके सब वहशी दरिन्दे हैं। मैंने उन्हें जरा-सा कहा कि वे तुझे पकड़ें तो उन्होंने तुझे पकड़ने के बहाने तेरा सबकुछ नोच डालना है। इसलिये तेरी भलाई इसी में है कि तू मेरा कहना मान। जोर-जबरदस्ती में ना तुझे मजा आने वाला है और ना मुझे मजा आने वाला है। बोल क्या कहती है?"

"हरामजादे...कमीने...गटर के कीड़े... ।" क्रोध में भरी पड़ी विशाखा पूरी ताकत से चिल्लाकर बोली—"मैं कहती हूं कि अभी भी वक्त है तेरे पास। बाज आजा अपने शैतानी इरादे से। मुझे और टीटू को छोड़ दे वरना अगर इससे पहले आशीर्वाद यहां आ पहुंचा तो वह तुझे चीर-फाड़ डालेगा।"

"वो यहां कभी नहीं आ पायेगा मेरी बुलबुल—तुझे यहां से रिहा जरूर करूंगा लेकिन तेरे संगमरमर जैसे चिकने बदन की खुशबू लेने के बाद। तुझे हम-बिस्तर बना लेने के बाद। हां, टीटू के बारे में मैंने अभी फैसला नहीं किया है कि उसे जीवित छोड़ना

है या मारकर उसकी लाश किसी गटर में डलवानी है...। रही बात आशीर्वाद की तो बदनाम तो उसे मैं कर ही चुका हूं। अब उसे कातिल भी बनाने जा रहा हूं। दिमाग का चैम्पियन समझता है वो खुद को...कभी किसी दिमाग वाले से पाला जो नहीं पड़ा उसका। लेकिन अब...जबकि मैं उसके मुकाबले में खड़ा हो गया हूं तो उसे पता लगेगा कि कोई उसका भी बाप है। ऊंट के पहाड़ के नीचे आने पर ही उसकी गलतफहमी दूर होती है कि कोई उससे भी ऊंचा है। उसे बलात्कारी...कातिल बनाकर आत्महत्या करने के लिये मजबूर कर दूंगा मैं।"

"लेकिन...!" मानो तड़फकर...फड़फड़ाकर ही बोली विशाखा—"क्या दुश्मनी है तुम्हारी उससे? क्या बिगाड़ा है उसने तुम्हारा जो तुम उसके पीछे हाथ धोकर पड़े हुये हो?"

"तो सुन ओये विशाखा।" नकनकी आवाज में किंग कोबरे की सी फुंफकार भरी हुई थी—"आशीर्वाद से मेरी दुश्मनी की वजह है तू। मैं तुझे चाहता हूं और मुझे पता है कि तू उसे चाहती है। जब तक वो जिन्दा है—तू उसके अलावा किसी के बारे में सोचना भी नहीं चाहेगी। टूट-टूटकर जो चाहती है उसे। लेकिन मैंने तुझे अपना बनाने की कसम खाई है। तुझे अपना बनाकर ही रहूंगा। आशीर्वाद की मौत के बाद तू उसे भूल जायेगी। तुरन्त नहीं तो साल-दो-साल में सही। तब तक मैं तुम्हारा इन्तजार करूंगा। तुम्हारे दिल में अपने लिये चाहत जगाऊंगा।"

"थूकूंगी भी नहीं मैं तुम पर।" नकाबपोश की बात पूरी होने से पहले ही मानो कोई मादा भेड़िया गुर्रा उठी हो—"और सुन ओये शेखचिल्ली...बहुत दूर की मत सोच। ये मत समझ सोच कि जैसा तू चाह रहा है वैसा ही होगा। तू आशीर्वाद को जानता तो है, लेकिन पूरी तरह से नहीं। दिमाग के खेल में हो या मैदान के किसी मुकाबले में, वह तुझ पर बीस ही साबित होगा। सावधान करती हूं तुझे...वक्त रहते चेत जा। कमीने इरादों को तिलांजलि दे दे। प्राची वाले मामले में अपना गुनाह कबूल कर ले। उस गलती की छोटी-मोटी सजा भुगतकर अपनी जिन्दगी सलामत कर ले। वरना फिर जिन्दगी के लिये रोयेगा और गिड़गिड़ायेगा लेकिन माफी नहीं मिलेगी...।"

"तेरी ऐसी तैसी साली दो टके की। अब तो मैं अभी तेरे साथ बलात्कार करके पहले तेरी अकड़ ढीली करूंगा।" कहते हुये नकाबपोश ने विशाखा के गिरहबान में डाथ डाला।

लेकिन तभी—

उसकी जेब में पड़े मोबाइल की घंटी बजने लगी।

झुंझलाकर पीछे हटा नकाबपोश और काले लबादे में हाथ डालकर मोबाइल निकालते हुये बड़बड़ाया—"पता नहीं किसका फोन...ओह पापा जी का है।"

फिर वह फोन लेकर उस कमरे से बाहर निकल गया और पीछे विशाखा ने राहत भरी सांस ली।

लेकिन ऐसी राहत से फायदा भी क्या? मुर्गी अभी भी कसाई के दड़बे में थी।

❑❑❑

❑❑❑

आधे घण्टे तक वह जीप चिकनी तथा सपाट सड़कों पर भागती रही। फिर ऊबड़-खाबड़ सड़क पर उतर आई। नीचे बेहोशी का अभिनय कर रहे आप सबके चहेते का जिस्म तेजी से झटके खा रहा था जिससे पता लगता था कि वह बहुत ही खराब रास्ता था।

फिर पन्द्रह मिनट तक उस ऊबड़-खाबड़ मार्ग पर बढ़ते रहने के बाद जीप एक जगह रुकी और पहले वे चारों पहलवान नीचे उतरे। फिर उनमें से एक ने उसे उठाकर अपने कंधे पर लाद लिया।

लड़के ने आंख में हल्की-सी झिर्री बनाकर देखा।

वो एक कच्चा लेकिन बड़ा-सा मकान था जिसके सामने जीप रुकी थी।

चारों साथ चलते हुये उस मकान के दरवाजे के सामने पहुंचे और फिर एक ने दरवाजे से लटक रही सांकल खटखटाई तो दो मिनट पश्चात् दरवाजा खुला। लेकिन दरवाजा खोलने वाले को लड़का देख नहीं सका—जबकि आंख में झिर्री-सी उसने बराबर बनाई हुई थी। दरवाजा खोलने वाले को ना देख पाने की वजह थी कि पहलवान ने उसे अंगोछे की तरह अपने कंधे पर डाला हुआ था जिसकी वजह से उसका चेहरा पहलवान की पीठ की तरफ था।

"ले लाडो...हम तेरे अपराधी को ले आये।" दरवाजा लांघते हुये वह बोला जिसने मुण्डे को कंधे पर डाल रखा था—"अब तू इस सुसरे के साथ चाहे जैसा सलूक कर। गंडासा लाये देते हैं। चाहे तो इसका कीमा कूटकर जंगल में जंगली जानवरों के लिये डाल दे। ये बोलेगा तो दोहरी मार खायेगा...।"

"नई भइया...मुझे इसे मारना काटना नहीं है।" लुटा-पिटा-सा नारी स्वर था—"बस...मैं तो सिर्फ इससे इतना पूछना चाहती हूं कि जब मैं इसे पसन्द ही नहीं थी तो इसने मुझे बर्बाद क्यों किया। प्यार तो मैं इससे करती ही थी। करती रहती और दूर से इसे देखकर सन्तोष कर लेती।"

और वो दर्दीली आवाज मुण्डे के कानों में पिघले शीशे की मानिन्द उतरती चली गई।

आवाज में दर्द तो था ही, आप सबका चहेता उस आवाज को पहचान भी गया था और आवाज पहचानते ही चौंका तो था ही, साथ ही उसका दिल इतनी जोर से धड़कने लगा था कि लग रहा था कि कहीं पसलियों को तोड़ और मांस को फाड़कर बाहर ना निकल आये।

फिर उससे रहा भी नहीं गया और वह पहलवान के कंधे से नीचे कूदा और सामने खड़ी प्राची शर्मा की तरफ बजरबट्टुओं की तरह पलकें झपकाते हुये देखने लगा।

उसके चेहरे पर ऐसे भाव थे मानो उसे अपनी आंखों पर विश्वास ना हो पा रहा हो कि वह जो देख रहा था वो हकीकत थी या फिर कोई सपना।

"तो तुझे होश आ गया लड़के?" प्राची शर्मा और लड़के के बीच आते हुये बड़ी-बड़ी मूछों वाला पहलवान गुर्राकर बोला।

"अजी पहलवान जी...।" जेब में हाथ डालते हुये मुण्डा चहका—"मैं बेहोश ही कब हुआ था? मैं तो बेहोशी का नाटक करके तुम्हारे बीच पड़ा रहा।"

"क्यों?" लड़के की आंखों में झांकते हुये उसका मखौल उड़ाते हुये-सा बोला वह—"डर गया था हमसे? अच्छा हुआ डर गया था वरना बहुत पिटता और फिर लाना था ही तुम्हें यहां।"

"पहलवान जी...किसी गलतफहमी में मत रहना।" चने के दाने मुंह में सरकाने पर पूर्ववत् चहका केशवपुत्र—"बन्दा उस ऊपरवाले के अलावा किसी से नहीं डरता। वो तो मैं खुद तुम लोगों के साथ आना चाहता था। देखना चाहता था कि तुम लोग मुझे कहां और क्यों ले जाना चाहते हो इसलिये तुम लोगों के साथ चला आया। नहीं तो तुम जैसे दस-बीस पहलवानों को जेब में डालकर घूमा करता हूं।"

"हा...हा...हा।" लड़के की बात सुनकर उसके सामने

खड़ा पहलवान जोर से हंसा। ऐसे जैसे मानो लड़के ने कोई बढ़िया-सा चुटकुला सुनाया हो।

"सुना भाईयों...।" जी भरके हंसने के बाद वह अपने भाइयों से मुखातिब हो बोला—"ये कल का लड़का क्या कह रहा है? कह रहा है कि हम जैसे दस-बीस पहलवान जेब में डालकर घूमता है। दिमाग हिला हुआ लगता है इसका। इसे शायद पता नहीं कि हम चार भाई पट्ड़ी गांव में ऐसे हैं कि यहां आस-पास दस-बीस गांवों में कोई भी माई का लाल ऐसा नहीं है कि हममें से किसी एक के सामने घड़ी देखकर एक मिनट भी ठहर सके।"

"तो फिर आ जाओ पहलवान जी।" कुटुर-कुटुर करते हुये बोला केशवपुत्र—"पहले मैं तुम्हारे दिमाग में चढ़ी गलतफहमी की धूल झाड़ दूं तब आगे की बात करूंगा। चारों साथ रहना वरना बाद में शिकायत करोगे कि अकेले को धोया, चारों होते तो ये करते...वो करते...।"

लड़के के ललकारने पर चारों के चेहरे सुलग उठे।

चारों की नजरें आपस में मिलीं।

आंखों-ही-आंखों में उनमें बातें हुईं।

फिर सामने खड़ा पहलवान ताल ठोंकते हुये बोला—

"आ बे कल के लड़के...आज मैं तुझे पहलवानी के दो एक फटके दिखा ही दूं। तभी तेरी अक्ल भी ठिकाने आयेगी और तेरी कतरनी जैसी चलने वाली जुबान में लगाम भी लगेगी।"

कहने पर उसने लड़के पर छलांग लगा दी।

लड़के ने अपने हाथों को आगे करके उस पहाड़ को ना सिर्फ अपने से टकराने से रोका बल्कि साथ ही उसकी गर्दन में अपनी बांह फंसाकर पलटा और फिर तेजी से झुककर उसे अपनी पीठ के ऊपर से उछालकर सामने पटक दिया।

एक ही दांव में चारों खाने चित हो गया था वह पहलवान।

"क्यों पहलवान जी...?" मुण्डा जेब में हाथ डालते हुये उसकी तरफ देखकर बोला—"इसे पहलवानी भाषा में धोबी पछाड़ कहते हैं ना?"

❑❑❑

❑❑❑

फोन ऑन करके नकाबपोश बोला—"हां पापा जी...। कहिये, कैसे फोन किया?"

"कूकी बेटा...सिर्फ ये जानने के लिये फोन किया कि सब

ठीक चल रहा है ना?" दूसरी तरफ दिलीप गुप्ता ही था—"किसी बात की कोई दिक्कत या परेशानी हो तो...।"

"कोई परेशानी या दिक्कत नहीं है पापाजी...।" नकाबपोश बोला—"सब ठीक चल रहा है और मेरी योजनानुसार ही हो रहा है। आशीर्वाद के दोनों दोस्त मेरे कब्जे में हैं। मैंने उसे फोन कर दिया है और बता भी दिया है कि मैं उससे क्या चाहता हूं...।"

"फिर उसने क्या कहा?" नकाबपोश की बात पूरी होने से पहले ही व्याकुलता भरी आवाज में पूछा गया। पूछा क्या गया एक सांस में कई सवाल किये गये—"करेगा वो तुम्हारा काम? अपने दोस्तों को लेकर उसकी क्या प्रतिक्रिया थी? भड़क रहा होगा तुम पर...?"

"भड़का तो था वो पहले।" नकाबपोश जो कि कूकी ही था, बोला—"लेकिन उसके भड़कने से मुझे क्या नुकसान होने वाला था? वो किलस रहा था, मुझे मजा आ रहा था। रही बात मेरा काम करने की, तो वो तो उसे करना ही पड़ेगा। उसके दोस्तों की जानों के अलावा उसकी इज्जत का भी तो सवाल है। अगर वो मेरा काम नहीं करेगा तो जीवनभर अपने माथे पर लगा कलंक नहीं धो पायेगा...।"

"और अगर उसने तुम्हारा काम कर दिया तो क्या तुम उसे बता दोगे कि...?"

"सवाल ही नहीं पैदा होता पापाजी...। मैं भला उसे क्यों बताने लगा कि उसके माथे पर बदनामी का अमिट दाग लगाने वाला कौन है? वैसे भी उसकी जरूरत ही नहीं पड़ने वाली है। वो तो कत्ल करने के तुरन्त बाद ही पकड़ा जायेगा। और हमने कुछ ऐसा करना है कि मेजर का कत्ल करते हुये उसे दुनिया देखे ताकि बाद में कोर्ट में वह अपनी सफाई के लिये एक शब्द भी ना बोल सके।"

"वो इन्तजाम तो मैं कर दूंगा। वो मेजर साहनी का कत्ल करने जायेगा तो उसकी एक-एक हरकत पर मीडिया की नजर होगी और बाद में जब वो कत्ल कर चुकेगा तो वह अपने न्यूज चैनल पर वो रिकॉर्डिंग दिखायेगा। तेरा यही तो प्लान है ना?"

"यस पापाजी...।"

"प्लान तेरा बढ़िया है बेटा, इसमें कोई शक नहीं है। लेकिन

बेटा फिर भी तू पूरी तरह होशियार रहना। वो पण्डित की औलाद बहुत ही खतरनाक है।"

"मुझसे ज्यादा खतरनाक नहीं है। आप मेरी चिन्ता मत करें पापा। सबकुछ ठीक होगा, ये मेरा आपसे वायदा है। अब मैं आपसे फिर बात करूंगा। बाय।"

कहने पर नकाबपोश ने फोन काटकर अपने लबादे में रख लिया।

□□□
□□□

जुग्गी लाल नाम था उस पहलवान का जो गिरने के साथ ही उठ खड़ा हुआ था और लड़के को भष्म कर देने वाली-सी निगाहों से घूर रहा था।

जबकि चने चबाते हुये लड़का उसकी तरफ मखौल उड़ाने वाली-सी नजरों से देखते हुये लापरवाह-सा होकर खड़ा था।

"देख क्या रहा है जुग्गी?" बाकी एक ओर खड़े तीन पहलवानों में से एक दांत पीसते हुये-सा बोला—"मटर के दाने जैसा तो है ये लड़का, साले को उंगलियों में पीस-पीसकर रख दे।"

"नहीं जुग्गी भइया।" प्राची शर्मा चिल्लाकर बोली—"तुमने मुझे बहन कहा है। अगर सच में ही बहन मानते हो तो इसे कुछ मत कहना।"

"चिन्ता मत कर तू लाडो।" मुण्डे को आग्नेय दृष्टि से घूरते हुये किंग कोबरे की मानिन्द ही फुंफकारा जुग्गी लाल—"जान से नहीं मारूंगा इस मेंढक को। बहुत फुदक रहा है। जरा फुदकना बन्द करा दूं इसका।"

"जा ओये पहलवान जी...।" झगड़ालू औरतों की तरह हाथ नचाते हुये तथा चने चबाते हुये बोला केशवपुत्र—"मर गये मेरा फुदकना बन्द कराने वाले। मुझसे टकराओगे तो चूर-चूर हो जाओगे।"

"तेरी तो ऐसी की तैसी साले कल के लौंडे। मैं अभी तुझे बांहों में दबोचकर तेरा कचूमर निकालता हूं।" कहने पर दोनों हाथ फैलाये वह मुण्डे को दबोचने के लिये उसकी तरफ बढ़ा।

तभी मुण्डा दबाकर छोड़े गये स्प्रिंग की मानिन्द उछला और अगले ही पल उसकी फ्लाइंग किक जुग्गी लाल पहलवान के सीने पर पड़ी और वह फिर से चारों खाने चित्त हो गया।

जबकि केशवपुत्र ने उसके फ्लाइंग किक जड़ने के साथ ही हवा में कलाबाजी खाई और पैरों के बल जमीन पर आया।

"क्यों पहलवान भाईयों...अब ये तुम्हारा भाई कम-से-कम पांच मिनट तक तो उठ ही नहीं सकता है।" जेब में हाथ डालते तथा बाकी के तीन पहवालन भाईयों की तरफ देखते हुये बोला आशीर्वाद—"तब तक चाहो तो तुम तीनों एक साथ मुझसे जोर आजमा सकते हो। पहल तुम्हारी है। वरना मैंने तो साबित करना ही है कि मैं यहां तुम्हारे लाये नहीं, अपनी इच्छा से आया हूं।"

मुण्डे के ललकारने पर तीनों पहलवानों के चेहरे पके टमाटर से लाल नजर आने लगे।

मारे क्रोध के उनकी मुट्ठियां भिंच चलीं तो नथुनों से बिगड़े हुये सांडों की मानिन्द ही फुंफकारें खारिज होने लगीं।

"ठहर अभी तेरी चटनी बनाते हैं हम।" एक बोला।

फिर तीनों लड़के की तरफ बढ़े।

प्राची असमंजस में नजर आने लगी। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि ऐसी स्थिति में वह करे तो करे क्या?

इससे पहले वे तीनों लड़के तक पहुंचते। लड़के ने अपने स्थान से चीते की सी उछाल भरी और अगले ही पल एक के गले में बाहों का हार पिरोकर दूसरे के गले में पैरों की कैंची-सी फंसाकर एक तेज झटका दिया और साथ ही उसके गले से पैरों की कैंची हटा ली।

परिणाम स्वरूप!

वह पहलवान लड़खड़ाकर एक ओर गिरा।

मुण्डे ने जिसके गले में बांहों का हार डाला हुआ था उसे धोबी पछाड़ दांव से चित्त करने के बाद तीसरे पहलवान के गले में बांहों का हार डालकर उसके पेट पर दोनों पैर टिकाकर अपने बदन को पीछे गिराया और फिर सिकोड़े हुये पैरों को फैलाया तो वह पहलवान उसके ऊपर से होते हुये पीछे चारों खाने चित्त जा पड़ा।

उसके बाद मुण्डे ने किसी को संभलने तक का अवसर नहीं दिया। एक के हाथ पकड़ उसे उठाया और पीठ पर लादकर फेंक दिया तो दूसरा जो अभी उठ ही रहा था, उसकी कमर पकड़कर तीन चक्कर लगाने के बाद छोड़ा तो वह गुलेल से निकले पत्थर की मानिन्द उड़ते हुये दीवार से टकराया और फिर गिरकर फैल गया।

तीसरा जो कि अभी उठकर खड़ा ही हुआं था उसके सीने पर फ्लाइंग किक मारकर उसे फिर से लम्बलेट कर दिया।

चौथा अभी उठ ही नहीं सका था।

पांच मिनट बाद हालात ये थे कि चारों ही पहलवान ताश के पत्तों की मानिन्द इधर-उधर बिखरे पड़े भैंसा गाड़ी में जुते भैंसे की मानिन्द ही मुंह से जीभें निकाले 'हम्फ...हम्फ' करके हांफ रहे थे।

❑❑❑

❑❑❑

"अब तो मान गये ना पहलवान भाइयों कि तुम मुझे यहां नहीं लाये?" मुट्ठी बांधकर अपना दायां बाजू दोहराकर अपने उभरे हुये मसल्स को बायें हाथ से थपथपाते हुये गर्दन अकड़ाकर बोला केशवपुत्र—"मैं अपनी मर्जी से यहां आया हूं। मुझे तो लग रहा था कि तुम लोग किसी गैंग के मेम्बर हो लेकिन यहां मामला कुछ दूसरा ही समझ में आ रहा है।

मामला क्या है ये समझना होगा मुझे। तुम चारों को वार्न करता हूं कि जब तक मैं इस लड़की से पूरा मामला समझ ना लूं, अपनी जगह से हिलना भी नहीं। नहीं तो इस बार ऐसा हाल करूंगा कि महीनों तक चारपाई से उठने लायक नहीं रहोगे।"

कहने पर मुण्डे ने जेब से चने के दो दाने निकाले और उन्हें मुंह में सरकाने पर प्राची शर्मा के नजदीक पहुंचा।

उसकी आंखों में आंखें डालकर हिमालय पर्वत पर जमी बर्फ से भी ज्यादा ठण्डे लहजे में बोला—"कहिये मिस मुम्बई...ये कौन-सा खेल, खेल रही हो मेरे साथ? पहले जुहू बीच पर सरेआम मुझ पर झूठा इल्जाम लगाकर हैण्डीकैम में फिल्म तैयार करवा ली। फिर आत्महत्या का झूठा नाटक करके मुझे बदनाम किया। अब अपने पहलवान भाईयों से उठवाकर मुझे मरवा देना चाहती थी। क्यों? मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है जो तुम...।"

"बस...! बस करो आशीर्वाद।" आशीर्वाद की बात पूरी होने से पहले ही रोते हुये चिल्लाकर बोली प्राची शर्मा—"फालतू में मुझ पर बरसकर अपने आपको सच्चा साबित करने की कोशिश मत करो। हद हो गई। ये वही मिसाल पेश की है तुमने कि उल्टा चोर कोतवाल को डांटे। पहले मेरे साथ प्यार का नाटक किया। मुझसे शादी के वायदे करके होटल में मेरा सबकुछ लूट लेने के बाद तू कौन...मैं कौन...जैसा व्यवहार किया। तुम्हारे घर इन्साफ

मांगने गई तो वहां भी दुत्कारी गई। फिर घर से आत्महत्या करने निकली तो किस्मत ने दुत्कार दिया।"

"झूठ बोल रही हो तुम।" आशीर्वाद नहीं मानो उसके कण्ठ में बैठा कोई जख्मी भेड़िया ही इन्सानी भाषा में बोला हो—"यहां भी तुमने कोई खेल खेला है। उधर मुम्बई में तुम्हारा दादा तुम्हारा अन्तिम संस्कार कर चुका है और दुनियावाले तुम्हारी मौत का जिम्मेदार मुझे ठहरा रहे हैं, और तुम यहां मेरी मौत का जुगाड़ किये बैठी थी। देखो प्राची शर्मा...तुम लड़की हो और लड़कियों पर हाथ मैं तब तक नहीं उठाता जब तक कि मजबूरी ना हो। मेरे सब्र का इम्तहान मत लो। बोलो, सच्चाई क्या है? तुम चाहती क्या हो? मुझे बदनाम करने की साजिश में तुम्हारे साथ और कौन-कौन लोग हैं?"

रोती हुई प्राची का चेहरा एकाएक पत्थर की तरह सख्त दिखने लगा।

उसकी सुर्ख हो रही आंखों से चिंगारियां-सी निकलती प्रतीत होने लगीं।

"झूठ मैं नहीं तुम बोल रहे हो आशीर्वाद पण्डित।" मुट्ठियां भींचकर दांत किटकिटाते हुये वह बोली—"शक्ल से ही भोले लगते हो वर्ना जमीर तो तुम्हारा शैतानों जैसा है। खुद मुझे धोखा देकर...मुझे धोखेबाज कह रहे हो। थू है तुम पर। घर से मरने निकली थी, कम्बख्त मौत ने ही धोखा दे दिया वरना तो किस्सा रात को ही खत्म हो जाना था। हां आशीर्वाद पण्डित...ये सच है कि मैं आत्महत्या करने निकली थी। लेकिन तुरन्त ही आत्महत्या करने की हिम्मत नहीं जुटा सकी। शाम को कार लिये इधर-उधर भटकती रही। फिर एक वाइन शॉप से वाइन की एक बॉटल खरीदी और हाइवे की ओर चल पड़ी। रास्ते में एक हादसा हुआ। मेरी ही उम्र की एक लड़की आत्महत्या के इरादे से मेरी कार के सामने आ गई। बड़ी मुश्किल से बचा सकी मैं उसे। उतरकर उसे डांटा कि ये क्या बेहूदगी है तो हंस पड़ी वह। बोली, मरना चाहती थी वह। मेरी कार से नहीं मरी तो अब रेलवे ट्रैक की तरफ जायेगी। मैंने उसे कार में बैठने को कहा तो उसने पहले तो मना किया। लेकिन जब मैंने उसे बताया कि मैं भी मरने ही निकली हूं तो वह हंसते हुये कार में बैठ गई। कहने लगी प्रेमी ने जीवन के सफर में हाथ छोड़ा तो मौत के सफर में मैंने उसका साथ देने के लिये हाथ पकड़ लिया।

उसके प्रेमी ने उसे धोखा दिया था। बहुत दुखी थी। रोजी मारग्रेट नाम था उसका। क्रिश्चियन थी। राह में हमने अपने आप में हिम्मत पैदा करने के लिये शराब भी पी। फिर मैं काफी देर तक सड़कों पर कार भगाती रही। लेकिन कहीं टक्कर मारने की हिम्मत नहीं पड़ी। तब स्टेयरिंग से मुझे हटाकर वो बैठी और कार को एक मोड़ पर खाई की तरफ मोड़ दिया। कार नीचे लुढ़क रही थी और मैं डरकर चीख रही थी। जबकि रोजी अट्टहास लगा रही थी। वो भी पागलों की तरह। फिर नीचे खाई में लुढ़कती कार का मेरे साइड का दरवाजा खुला और टूटकर कार से अलग हो गया और फिर मैं टूटे हुये दरवाजे से निकलकर बाहर आ गिरी और पथरीली चट्टानों से टकराते हुये अपने होश खो बैठी...।"

"ओह! तो इसका मतलब तुम्हारी कार में जो लाश थी वो रोजी मारग्रेट की थी।" चने चबाते हुये गम्भीर हुआ पड़ा लड़का बोला—"और पुलिस, तुम्हारे दादाजी और बाकी दुनिया उसे तुम्हारी लाश समझ रही थी।"

"हां, यही बात है। अब आगे की सुनो, सुबह जब मुझे होश आया तो मैं इस घर में थी और ये चारों भाई मुझे डबडबाई आंखों से देख रहे थे। फिर इनमें से वो छोटे वाला जिसका नाम प्रल्हाद है, छत की तरफ देखते हुये बड़बड़ाया—'शुक्र है लाल लंगोटी वाले। हमारी लाडो बच गई। तब मैंने इनसे पूछा कि मैं यहां कैसे पहुंची तो इन्होंने बताया कि खाई में मैं एक झाड़ी में अटकी बेहोश पड़ी थी और ये मुझे उठा लाये थे। मुझसे पूछ रहे थे कि मैं कौन थी। कार में मरने वाली दूसरी लड़की कौन थी। मैंने इन्हें सब बताया। ये भी कहा कि अब मैं अपने घर नहीं जाऊंगी। ये मुझे बता ही चुके थे कि इलाके की पुलिस को वहां कार के कागज मिले थे और उन्होंने कार दुर्घटना की सूचना शहर भेज दी थी।

दोपहर बाद इन भाइयों के मुंह से ही सुनने को मिला कि कार में मिली रोजी की लाश को मेरी लाश समझा जा रहा है। मेरे दादाजी घटनास्थल पर पहुंचे हुये थे। मेरा दिल तुम्हारी तरफ से टूट चुका था। घर में सुसाइड नोट छोड़कर आई थी। वापस घर जाने पर दादाजी मुझसे सौ तरह के सवाल करते और शायद मुझसे झूठ भी ना बोला जाता। मैंने इन चारों भाईयों से साफ कह दिया अब तो कतई घर नहीं जाऊंगी। मेरे इस फैसले से ये चारों भाई बहुत खुश हुये। दरअसल आज से दो साल पहले इनकी छोटी बहन ने अपने प्रेमी से धोखा खाकर खाई में कूद कर अपनी

जान दे दी थी। दो साल पहले का वह वही दिन था जिस रात मेरी कार को गिरा रोजी मरी थी और मैं बच गई। उन दिन सुबह-सवेरे ये चारों उधर अपनी बहन की आत्मा की शान्ति के लिये प्रार्थना करने गये थे और इन्हें मैं बेहोशी की हालत में मिली थी। जब मैंने इनसे वापस अपने घर जाने से मना किया तो ये खुश हो गये कि इन्हें इनकी छोटी बहन वापस मिल गई थी। अपनी बहन को ये लोग प्यार से लाडो कहकर बुलाया करते थे। मुझे अपनी लाडो बना लिया इन्होंने। लेकिन मेरी उदासी ने इन्हें भी उदास कर दिया। ये कहने लगे मुझे दुख देने वाले को ये मार डालेंगे। लेकिन मैंने तो तुमसे सच्चा प्यार किया था और कहते हैं सच्चा प्यार अपने प्यार को दुख नहीं दे सकता। इनके जिद करने पर मैंने इनसे कहा कि ये सिर्फ तुम्हें यहां उठा लायें। दरअसल मैं बाद में तुमसे पूछना चाहती थी कि तुमने मुझे धोखा क्यों दिया? क्या मैं बदसूरत हूं? गन्दी लड़की हूं? मेरे कहने पर ही ये तुम्हें यहां लेकर आये हैं। लेकिन अब जबकि तुम सच बोलकर राजी ही नहीं हो तो जाओ...मैंने तो माफ किया। ईश्वर से भी प्रार्थना करूंगी कि वह तुम्हें मेरे साथ किये गये पाप से मुक्त करे...।" कहने पर रो दी वह और फिर पलटकर अन्दर की तरफ भागी।

❑❑❑

❑❑❑

"एक मिनट प्राची...मेरी तरफ देखो, प्लीज।"

लेकिन प्राची ने सिर नहीं उठाया। चारपाई पर बैठी मुंह नीचे को किये रोती रही।

आप सबका चहेता घुटनों के बल जमीन पर बैठ गया और उसकी ठोड़ी में हाथ लगाकर उसका झुका हुआ चेहरा सीधा किया।

फिर कुछ देर तक उसकी आंखों में सच-झूठ की पहचान करता रहा।

"ओके प्राची...।" तत्पश्चात् खड़े होकर गम्भीर होकर बोला—"मैंने तुम्हारी आंखों में सच देख लिया है। मानता हूं तुम्हारे साथ गलत हुआ है। लेकिन तुम भी मेरा विश्वास करो। मैं भी सच्चा हूं। तुम्हारे साथ गलत करने वाला कोई और है...।"

"फिर झूठ...! मत बोलो और झूठ। मैंने तुम्हें माफ किया ना? अब झूठ बोलकर तुम अपने भगवान को क्यों नाराज करना चाहते हो? जाओ यहां से...।"

प्राची की बात पूरी होने से पहले ही आशीर्वाद के मोबाइल में 'हम होंगे कामयाब...मन में है विश्वास...हम होंगे कामयाब एक दिन वाले गाने की मधुर धुन बजने लगी।

मुण्डे ने जेब से मोबाइल निकाला और स्क्रीन पर नम्बर देखने पर प्राची से मुखातिब हो बोला—

"तुम मुझे झूठा समझती हो ना? ये लो मेरी सच्चाई का प्रमाण तुम्हारे सामने आ गया। ये उस शख्स का फोन है जो ये कहता कि उसे मालूम है कि प्राची के साथ किसने धोखा किया और मुझे क्यों फंसाया? ये फोन मेरे सिखाने-पढ़ाने पर किसी ने नहीं किया, इतना तो तुम समझ ही सकती हो। इत्तफाक से मेरे पास उस समय आया है जबकि तुम मेरे सामने हो। सुनो...फोन करने वाला क्या कहता है? क्या चाहता है मुझसे?"

कहने पर फोन का स्पीकर खोल दिया।

उसी समय चारों पहलवान भाई कमरे में दाखिल हुये।

"हलो शकोरा...।" स्पीकर ऑन करने पर बोला मुण्डा—"मैं तुम्हारे ही फोन का इन्तजार कर रहा था।"

"हां सुन ओये आशीर्वाद।" स्पीकर पर नकनकी आवाज सुनाई दी—"मैं तुम्हें बताता हूं कि तुम्हें किसका कत्ल करना है और कब करना है।"

"यानि समय की पाबन्दी है?" चने के दो दाने मुंह में सरकाने पर उन्हें दांतों से कुचलते हुये पूछा मुण्डे ने।

"हां, समय का तुम्हें खास ख्याल रखना है। रात के नौ बजे मेजर अविनाश साहनी अपने बंगले के पिछले हिस्से में बने लॉन में अकेला ही होता है। वहां वह टहलता है। उस समय तुम्हारे पास मौका होगा जबकि तुम अपना काम कर सकते हो। लेकिन ध्यान रहे वो बचना नहीं चाहिये। वो बचा तो तुम्हारे दोनों दोस्त नहीं बचेंगे...।"

"नहीं कटोरा भाई...तुम विशाखा और टीटू को कुछ नहीं कहोगे।" चने चबाते हुये आशीर्वाद कुछ ऐसी आवाज में बोला मानो अपने मित्रों के लिये वह बहुत ही ज्यादा फिक्रमन्द था। दूसरे शब्दों में कहा जाये तो गिड़गिड़ाकर बोला था वह—"मैं मेजर...क्या नाम बताया तुमने उसका...?"

"मेजर अविनाश साहनी। पता है—चौदह रेसकोर्स रोड। समय है रात्रि के नौ बजे। दो-एक मिनट इधर-उधर की बात नहीं

करता। लेकिन समय इससे ज्यादा आगे या पीछे नहीं होना चाहिये। समझे?"

"समझ गया कटोरा भाई। लेकिन तुम्हें भी अपना वादा याद रखना होगा। मेरे दोनों दोस्तों को सही-सलामत छोड़ना होगा और मुझे बताना होगा कि...।"

"हां...हां आशीर्वाद पण्डित। फिक्र मत कर।" आशीर्वाद की बात पूरी होने से पहले ही मोबाइल के स्पीकर में नकनकी-सी आवाज उभरी—"जैसे ही मुझे पता लगेगा कि तूने अपना काम पूरा कर दिया है—मैं तुझे बता दूंगा कि प्राची शर्मा के साथ आशीर्वाद बनकर होटल जनक में कौन उसके जिस्म से खेलता रहा है। कौन है वो जिसने तुम्हें बदनाम किया और प्राची को आत्महत्या करने के लिये मजबूर होना पड़ा। तुम्हारे साथियों से भी मेरी कोई दुश्मनी नहीं है। उन्हें भी छोड़ दिया जायेगा। तब तुम्हें फोन मैं तब ही करूंगा जब मेरे पास मेजर साहनी की मौत की खबर आयेगी। लेकिन सावधान। मेरे से कोई गेम मत खेलना। अपने आपको दिमाग का चैम्पियन साबित करने की कोशिश भी मत करना। ये ना हो कि मेजर अविनाश से मिलकर उसकी हत्या का झूठा नाटक खेलो। ऐसा कुछ हुआ तो मुझे तुरन्त ही पता लग जायेगा। फिर क्या होगा...ये बताने की जरूरत नहीं समझता हूं मैं।"

"बच्चा नहीं हूं मैं कटोरा भाई...। सब समझता हूं। मेरी तरफ से निश्चिंत रहो। तुम्हारा काम मैं पूरी ईमानदारी से करूंगा और मेरा काम तुम ईमानदारी से करोगे।"

"जरूर...!" कहने के साथ ही दूसरी ओर से फोन काट दिया गया।

❑❑❑
❑❑❑

आशीर्वाद ने भी फोन काटा और फिर कोई नम्बर लगाने लगा।

और उसके सामने बैठी प्राची तो मानो पत्थर की मूर्ति बन चुकी हो।

पलकें तक झपकाना भूली बैठी थी वह।

"ऐ लाडो।" ये देख जुग्गीलाल उसे झंझोड़ते हुये बोला—"ये तुझे क्या हो गया? होश में आओ...मैं कहता हूं कि होश में आओ लाडो।"

"ऐ...हां, कुछ नहीं भाई।" मानो सोते से जगी प्राची—"म...मैं ठीक हूं।"

उसी समय मुण्डा बोला—

"आंटी...मैं आपको एक मोबाइल नम्बर दे रहा हूं। शकोरा दो बार इस नम्बर से मेरे से बात कर चुका है। बी० एस० एन० एल० का नम्बर है। आपको कम्पनी से पता करना है कि ये फोन किसके नाम है...। हां, फोन नम्बर नोट करिये।" कहने पर मुण्डा फोन नम्बर बताने लगा।

नम्बर बताकर जैसे ही उसने फोन ऑफ किया, व्याकुल सी होकर प्राची बोली—"आशीर्वाद...तुम जरा ये नम्बर फिर से दोहराना।"

मुण्डे ने पहले तो उसकी तरफ इस अन्दाज में देखा कि जैसे पूछ रहा हो कि क्यों प्राची...तुम ऐसा क्यों चाहती हो। लेकिन फिर कुछ सोचकर वह वो नम्बर दोहराने लगा जो उसने मुमताज को फोन पर बताया था।

"आशीर्वाद...य...ये वही नम्बर है।" वह दुविधा में पड़ी हुई-सी बोली—"जिस पर मैं तुमसे बात करती थी। तुम्हीं ने तो मुझे ये नम्बर दिया था। ये कहकर दिया था कि ये तुम्हारा प्राइवेट नम्बर है और सिर्फ मुझे ही दे रहे हो...।"

"तुम फिर गलत बोल रही हो प्राची।" चने चबाते हुये बोला मुण्डा—"मैंने कभी तुम्हें कोई फोन नम्बर नहीं दिया। तुम्हें ये फोन नम्बर उसने दिया जो मेरा ही नहीं तुम्हारा भी कसूरवार है। वो है कौन, इस रहस्य पर से बहुत जल्दी पर्दा उठने वाला है। सच्चाई सामने आने में देर नहीं है प्राची। बस...तुम मेरे साथ थोड़ा सहयोग करो। मुझे उस...उस आशीर्वाद के बारे में कोई बात बताओ जो तुम्हें मेरे से कुछ मिल रही हो। देखो प्राची...आज के समय में किसी का फेस मास्क चेहरे पर लगाकर उसका रूप धर लेना कोई बड़ी बात नहीं है। कोई भी किसी का फेस मास्क तैयार कराकर अपना चेहरा बदल सकता है। और मुम्बई शहर में फेस मास्क तैयार करने वाले कारीगर भी बहुत हो गये हैं। चेहरा बदल लेना मुश्किल काम नहीं है। मुश्किल काम है अपनी आदतों को एकदम से छोड़ देना। कहना मैं तुमसे ये चाहता हूं कि वो आशीर्वाद जो तुमसे होटल जनक के रूम में मिलता था उसमें तुमने कोई ऐसी बात नोट की हो, जो मेरे में नजर ना आ रही हो तुम्हें। ध्यान

करो प्राची। दिमाग पर जोर दो। मामूली-सी बात भी ध्यान में आये तो बताओ। हो सकता है उसकी वो मामूली-सी आदत या हरकत उसकी शिनाख्त की वजह बन जाये...।"

मुण्डे की बात सुनकर प्राची सोचने लगी।

❑❑❑

❑❑❑

घण्टेभर बाद आप सबका चहेता विशाखा के घर में था।

उसके सामने विशाखा की मम्मी सारिका लुटी-पुटी-सी बैठी हुई थी तो प्रोफेसर विज्ञान पाण्डे अपनी जीभ बाहर निकाले घुटनों के बल उनके सामने बैठा हुआ था।

उसकी ये दशा देखकर मुण्डा हैरान हुआ था और उसके बारे में उसी से पूछा भी था। लेकिन जवाब दिया था सारिका ने। उसने अपने ही अन्दाज में बताया कि हफ्ता भर पहले उसके पतिदेव ने अपना दिमाग लोमड़ी जैसा करने के लिये एक इंजेक्शन तैयार किया था। लेकिन उसमें लोमड़ी की जगह कुत्ते का खून मिला लिया था और वह इंजेक्शन खुद को लगाकर अपनी ये हालत कर बैठा था। उसने ये भी बताया कि ये बात उसे उसके पति की डायरी से ही पता लगी थी। पता लगने पर वह जसलोक हॉस्पिटल के बड़े डॉक्टर से मिली और उन्हें अपनी समस्या बताई तो उन्होंने उसे देश के मशहूर साइंटिस्ट जुगल किशोर माधे से सम्पर्क करने को कहा। वह प्रोफेसर माधे से मिली और उसे अपनी समस्या बताई तो उन्होंने उसके पति महोदय का इलाज शुरू किया। पहले से उसकी दशा में काफी सुधार है। प्रोफेसर माधे का कहना है कि पूरी तरह नॉर्मल होने में महीनाभर लग जायेगा।

अपनी कहानी सुनाने के बाद लड़के से पूछा कि आजकल उसके बारे में जो हर जगह चर्चायें हो रही हैं उनमें कितनी सच्चाई है? तब लड़के ने बताया कि उसके किसी दुश्मन ने उसे बदनाम करने के लिये ये सब किया है, लेकिन वह जल्दी ही सच्चाई को सामने लाने वाला है। फिर बात चली विशाखा की। सारिका ने बताया कि गुड्डी और टीटू के साथ ट्यूशन पढ़ने वाले एक लड़के ने सौ नम्बर पर पुलिस को फोन करके टीटू और गुड्डी के अपहरण की सूचना दी थी। वो लड़का जिसका नाम प्रशान्त था उनके पीछे अपनी बाइक में था जबकि काले रंग की बोलेरो सवार गुण्डों ने गुड्डी और टीटू को रोककर उनका अपहरण किया था। प्रशान्त

का घर हमारे घर के बैक साइड में है और वो हमें भी जानता था। उसी ने घर आकर मुझे उनके अपहरण के बारे में बताया था।

बहरहाल, लड़के ने सारिका को तसल्ली दी कि अब उन्हें गुड्डी की ज्यादा चिन्ता करने की जरूरत नहीं है। गुड्डी और टीटू जिन लोगों के कब्जे में हैं—वो उनके बारे में जान चुका है और उन्हें उनके कब्जे से छुड़ाने ही वह जा रहा है।

सारिका ने उसके सिर पर हाथ फेरते हुये आशीर्वाद दिया कि वह अपने मकसद में सफल होकर जल्दी ही लौटे।

उसके बाद आशीर्वाद ने धन्नो आण्टी को भी फोन पर तसल्ली दी कि वह टीटू को लेकर चिन्तित ना हों। टीटू के अपहरणकर्ताओं का पता लग गया है और वो टीटू तथा विशाखा को उनकी कैद से आजाद कराने जा रहा है।

❑❑❑

❑❑❑

रात्रि के पौने नौ बजे शाकाल के अड्डे पर, जिसमें शाकाल अपनी सिंहासन-नुमा कुर्सी पर बैठा था, शाकाल के अलावा यांग यू ही, जोरावर सिंह, दिलीप गुप्ता तथा शाकाल गैंग के लगभग सभी छोटे-मोटे ओहदेदारों के अलावा गार्ड रूपी कई गुण्डे मौजूद थे।

उस राजदरबार जैसे हॉल में एक ओर बड़ी स्क्रीन वाला टी० वी० था और उसमें उस समय सबसे तेज कहे जाना वाला न्यूज चैनल 'आज तक' लगा हुआ था। उस घड़ी उसमें अभी खेल समाचार चल रहे थे।

हां नीचे ब्रेकिंग न्यूज में लिखा आ रहा था कि आठ पचपन पर बहुत ही खास न्यूज दिखाई जाने वाली थी।

शाकाल और उसके सभी चमचों की निगाहें टी० वी० की स्क्रीन पर चिपकी हुई थीं और उन सभी आंखों में भरी कौतूहलता नजर आ रही थी।

शाकाल से तो मानो दस मिनट का टाइम काटे नहीं कट रहा था। बार-बार वह कुर्सी पहलू बदल रहा था।

फिर उसने सिगार सुलगा लिया और उसके कश लगाने लगा।

"दिलीप।" फिर कश लगाते हुये वह दिलीप गुप्ता की ओर

देखकर बोला—"वो हरामी अपना काम करने पहुंचेगा तो सही ना वहां?"

"शकोरा तो यही दावा कर रहा था शाकाल साहब।" शाकाल की तरफ पलटकर सम्मान सहित बोला दिलीप गुप्ता—"वैसे 'आज तक' की टीम मेजर के बंगले के बैक साइड में बन रही बिल्डिंग में आठ बजे ही पहुंच चुकी है। हमारे दो आदमी भी उस एरिये में हैं और वहां पूरी नजर रखे हुये हैं।"

"मेरे दिल को ठण्डक पहुंच जायेगी अगर वह हरामी केशव पण्डित की औलाद मेजर साहनी की हत्या करने के बाद रंगे हाथों पकड़ा जायेगा।" सिगार का कश मारकर उसका धुआं फेफड़ों में फिल्टर करके मुंह से बाहर करने पर मानो अपना हरेक शब्द चबा-चबाकर—चिंगल-चिंगलकर ही बोला माइका जैसी टाट वाला शाकाल—"ये बाप-बेटे दोनों ही अण्डरवर्ल्ड के लोगों के लिये खतरा हैं।"

"शाकाल साहब...मेरा दिल कहता है कि शकोरा की योजना जरूर सफल होगी। आशीर्वाद पण्डित मेजर साहनी का क़त्ल करेगा और फंसेगा...।"

तभी वहां गोलियां चलने की आवाज गूंजने से सभी लोग चौंके।

"य...ये क्या हो रहा है?" शंकित होकर चिल्लाकर बोला शाकाल—"ये गोलियां कौन और क्यों चला रहा है? जोरावर सिंह...टोनी बाहर जाकर देखो।"

जोरावर सिंह और टोनी बाहर की तरफ लपके।

लेकिन वह दरवाजे तक पहुंचे ही थे कि उन्हें दरवाजे पर दो सूरतें नजर आई और दोनों के पैर मानो फर्श से चिपककर रह गये हों।

❑❑❑

❑❑❑

अति विशेष अवरोध, जो आवश्यक है—

कुछ वर्षों पूर्व ऐसा वातावरण बना था कि उपन्यासों के चहेते पाठक स्वयं को निराशा के रेगिस्तान में भटकता हुआ महसूस करने लगे थे और गर्म-तपती रेत उस तृप्ति से वंचित कर रही थी, जिसकी पूर्ति ताजा व शीतल जल ही कर सकता था। कारण? कारण ये था कि उस दौर के लगभग सभी लेखक अपनी ढपली

अपना राग अलाप रहे थे। उनके उपन्यासों के सिर्फ शीर्षक ही बदल रहे थे, परन्तु कथानक वही पुराना व बासी, वो ही शैली, वो ही घिसे-पिटे और बोरियत उत्पन्न करते पात्र, मानो सभी की कलम थक चुकी थी, अपनी ऊर्जा खो चुकी थी।

मानो अम्मा राजा-रानी की, दादी परी और जादूगर की और नानी देवताओं-राक्षसों की कहानी को थोड़ा अदल-बदल कर बच्चे को बहलाने की चेष्टा कर रही थी और बच्चा सुनाने वाली से नई व दिलचस्प कहानी की मांग कर रहा था।

अचानक वातावरण परिवर्तित हुआ—

साहित्य के आकाश पर बादल घुमड़ने लगे, बिजलियां कड़कने लगीं और झमाझम वर्षा होने लगी। रेगिस्तान की तपती धरती तृप्त हुई और शीतल व मीठे जल के झरने बहने लगे। हरे-भरे होकर वृक्ष फलों से लद गये। झाड़ियों के कांटे फूलों में परिवर्तित होकर तन-मन और आत्मा को सुगन्धित करने लगे—इस प्रफुल्लित कर देने वाले परिवर्तन का शुभारम्भ किया था...'सुहाग की हत्या' नामक उपन्यास ने, जिसकी रचना करने वाले का नाम था केशव पण्डित।

जी हां, केशव पण्डित—जिसने अपनी पहली ही कृति से बोरियत से जूझ रहे पाठकों में चुस्ती, स्फूर्ति व उत्साह का संचार किया। फिर तो केशव पण्डित की कलम निर्बाध गति से नये-नये उपन्यासों की रचना करती गई और आपने अपने प्यार, स्नेह आशीर्वाद व मार्गदर्शन के पुष्पों से गूंथी गई कामयाबी की माला केशव पण्डित को पहनाकर स्नेह व चाहत के अटूट बन्धन में बांध लिया।

'तुलसी साहित्य पब्लिकेशन्स' और 'धीरज पॉकेट बुक्स' के माध्यम से केशव पण्डित के उपन्यास प्रकाशित हो रहे थे और अपनी विशेषताओं के कारण आपकी कृपा-दृष्टि के पात्र बनते रहे।

फिर उपन्यास जगत में केशव पण्डित के लाड़ले बेटे और आपके चहेते 'आशीर्वाद पण्डित' ने भी 'दस साल का वकील' नामक उपन्यास के साथ साहित्य जगत में पदार्पण किया और अपने पिता केशव पण्डित की भांति ही धूम मचा दी।

पिता-पुत्र अर्थात् 'केशव पण्डित' और 'आशीर्वाद पण्डित' की सुपरहिट जोड़ी 'तुलसी साहित्य पब्लिकेशन्स' व 'धीरज पॉकेट

बुक्स' के माध्यम से निरन्तर आपको रहस्य, रोमांच, तेजाबी संवादों वाले तेज रफ्तार, रोचक व अविस्मरणीय कथानक वाले उपन्यास दिये जा रहे हैं और आप भी दिल खोलकर प्रशंसा का अनमोल खजाना लुटा रहे हैं।

बहुत से लोगों ने 'केशव पण्डित' व 'आशीर्वाद पण्डित' की सफलता भुनाने के लिये...तो बहुतों ने ईर्ष्यावश दोनों को हानि पहुंचाने की कुटिल मंशा से मिलते-जुलते नामों से उपन्यास निकाले! कुछ ने उपन्यासों के शीर्षक में 'केशव पण्डित' व 'आशीर्वाद पण्डित' के नामों को यूं जोड़ा कि मानो लेखक का नाम ही 'केशव पण्डित' या 'आशीर्वाद पण्डित' हो! उपन्यासों में केशव पण्डित और आशीर्वाद पण्डित नाम के पात्र डाले गये।

परन्तु क्या कागज के फूल असली फूलों का, पीतल सोने का, कांच के टुकड़े हीरों का, रेत के टीले हिमालय पर्वत का, मकबरे ताजमहल का, नाले गंगा नदी का, बाजारू औरत गृहलक्ष्मी का, मोमबत्ती सूरज का, जुगनू चन्द्रमा का, कौआ कोयल का, बेसुरा राग सरगम का, झूठ सत्य का, पाप पुण्य का, टाट मखमल का, सुतली रेशम का, गिद्ध राजहंस का, भेड़िया शेर का, शराब मां के दूध का, कांटा गुलाब का, तम्बाकू केसर का, जहर अमृत का, तालाब समुद्र का मुकाबला कर सकते हैं?

नहीं ना?

नक्काल भी असली 'केशव पण्डित' व 'आशीर्वाद पण्डित' के सामने नहीं टिक पाये और बरसाती मेंढकों की भांति ही टर्र...टर्र कर विलुप्त होते गये।

अभी भी कुछ लोग पाठकों को भ्रमित करने की कुचेष्टा कर रहे हैं, इसलिये आप ध्यान रखिये कि 'केशव पण्डित' व 'आशीर्वाद पण्डित' के असली उपन्यास सिर्फ 'तुलसी साहित्य पब्लिकेशन्स, और 'धीरज पॉकेट बुक्स' से प्रकाशित होते हैं और उपन्यासों के कवर पर दोनों में से एक फर्म का नाम प्रकाशित होता है। इस बात को याद रखेंगे तो धोखा नहीं होगा, आपके अमूल्य पैसे व समय का सत्यानाश नहीं होगा।

व्यवधान के लिये क्षमा-प्रार्थी हैं।

धन्यवाद!

प्रकाशक
धीरज पॉकेट बुक्स एवं
तुलसी साहित्य पब्लिकेशन्स

□□□
□□□

एक आशीर्वाद था तो दूसरी प्राची शर्मा।

अपने सामने से जोरावर सिंह और टोनी डिसूजा को हटाते हुये आशीर्वाद आगे बढ़ा तो उन्हें देखकर शाकाल और उसके गैंग के सारे ओहदेदार बुरी तरह चिहुंक उठे।

हॉल में खड़े गार्ड रूपी गुण्डों की गनें आशीर्वाद तथा प्राची की तरफ तनीं तो शाकाल चिल्लाकर बोला—"कोई गोली नहीं चलायेगा। सभी अपनी-अपनी गनें नीचे कर लें।"

"क्यों शाकाल?" राजसिंहासन वाली सीढ़ियों के पास पहुंचकर मुण्डा शाकाल का मखौल उड़ाते हुये बोला—"दुश्मन तुम्हारे खेमे में आया है और तुमने अपने गार्डों को गोली चलाने से मना कर दिया। क्यों? कहीं इसलिये तो नहीं कि गोलियां चलने पर मेरे साथ तुम्हारी ये पोती भी मारी जाती...?"

"क...कौन पोती...?" हड़बड़ाकर बोला शाकाल—"किसकी पोती? शाकाल का इस दुनिया में कोई नहीं है।"

"राजेश्वर शर्मा का तो है। ये विग तेरे कमरे से उठाकर लाया हूं। साथ में ये मूंछे भी। विग लगा और मूंछें चिपका और अपनी पोती को गले लगा। इसे मरा जानकर पागल हो रहा था। ये जिन्दा है, मरी नहीं। तेरी असलियत देखने के लिये जिन्दा बच गई है।"

"मैंने कहा ना कि मेरी कोई पोती-सोती नहीं है।" गरज-बरसकर बोला शाकाल—"और तू मेरा दुश्मन नम्बर एक है। तुझे मरना ही होगा। मुझे ताज्जुब हो रहा है कि तू यहां तक कैसे पहुंचा?"

"तू दिमाग लगा कि मैं यहां कैसे पहुंचा। तेरा दिमाग ना काम करे तो अपने इस ट्रबल शूटर, जिसे तू बहुत ही काबिल समझता है, इससे पूछ कि मैं यहां कैसे पहुंचा हो सकता हूं? किसने मुझे यहां का रास्ता बताया हो सकता है? तेरे अलावा और किसे मालूम था तेरे घर के बाथरूम में से यहां तक पहुंचने का गुप्त रास्ता...?"

"शकोरा को...।" शाकाल के मुंह से बेसाख्ता ही शकोरा का नाम निकला।

"और जानता है कि ये शकोरा कौन है?" कहते हुये

आशीर्वाद की निगाहें दिलीप गुप्ता के पीले पड़ते जा रहे चेहरे पर थीं।

"क...कौन है शकोरा?" दुविधा में नजर आने लगा शाकाल।

"खुद ही देख लो शाकाल। टी० वी० पर नजर आने वाला है वो।" कहते हुये मुण्डे ने जेब से चने के दो दाने निकाले और उन्हें मुंह में सरकाने पर दिलीप गुप्ता की ओर देखते हुये किंग-कोबरे की मानिन्द ही फुंफकारकर बोला—"और सुन ओये गुप्ता। तुम बाप-बेटे अपने आपको बहुत दिमाग वाला समझते हो। खूब दिमाग चलाया तुम दोनों ने। एक तीर से कई शिकार करने चाहे। तेरे बेटे ने तो हद कर दी। अपनी मां की मौत का बदला लेने के लिये शाकाल को बर्बाद करना चाहा। उसकी पोती को अपनी हवस का निशाना बनाया और कुछ ऐसे कि इल्जाम मुझ पर लगे। मैं बदनाम होऊं और उस लड़की की नजर में गिर जाऊं जो मुझसे प्यार करती है। तेरा लड़का उसका हीरो बनना चाहता था। खेल भी उसने खूब खेला। एक बारगी तो मेरी बुद्धि के घोड़े भी फेल करके रख दिये थे उसने। लेकिन कहते हैं ना कि जीत हमेशा सच्चाई की होती है। इस बार दिमाग ने साथ नहीं दिया तो कुदरत ने मेरा साथ दिया।" सांस लेने के लिये पलभर के लिये रुका मुण्डा।

"हां ओये दिलीप गुप्ता।" फिर दिलीप की तरफ नफरत और हिकारत भरी नजरों से देखते हुये नफरत भरे लहजे में बोला—"इस बार मेरा साथ उस आसमानी ताकत ने दिया। ये उसकी ही रहमत थी कि खाई में कार कुदा देने पर भी प्राची बच गई। फिर बड़े ही नाटकीय अन्दाज में मेरी इससे मुलाकात हुई और फिर मुझे पता लगा कि इसे बर्बाद करने वाला तथा मुझे बदनाम करने वाला कौन है। बड़ा शातिर दिमाग समझता है वो अपने आपको। तेरे साथ मिलकर मुझसे खेल, खेल रहा था। मुझे अपने दिमाग की जादूगरी दिखाने चला था...मुझे, दिमाग के चैम्पियन को। तुझे तो उसकी योजना का पता ही है दिलीप गुप्ता। मुझे प्राची के मामले में बदनाम करने के बाद तुम बाप-बेटे मुझे मेजर का कातिल बनाना चाहते थे। तुम शाकाल के तमाम स्याह और सफेद धंधों में इसके पार्टनर बनना चाहते थे तो तुम्हारा लड़का मुझे विशाखा की नजरों में गिरा उसका हीरो बनना चाहता था।

योजना अच्छी थी तेरे लड़के की, लेकिन वो कहते हैं ना कि वक्त से पहले और किस्मत से ज्यादा कभी किसी को कुछ नहीं मिलता है। बहुत प्यार करता है ना तू अपने लड़के को? उसकी खुशी के लिये कुछ भी करने को तैयार रहता है। अब अपनी ही चाल में फंसने जा रहा है तेरा लड़का। अभी तक तू और तेरा बेटा दिमागी खेल खेलते रहे और अब मैंने भी एक छोटा-सा दिमागी खेल खेला है। तुम अपने दिमाग के जलवे दिखा चुके। अब देख मेरे दिमाग का जादू। नौ बजने में एक मिनट बाकी है। टी० वी० की ओर देख...।"

लड़के के कहने पर सबका ध्यान उसकी तरफ से हटा और टी० वी० की तरफ गया।

□□□
□□□

केशव पण्डित के घर में टी० वी० चल रहा था और उसमें उन्होंने सबसे तेज 'आज तक' वाला न्यूज चैनल लगा रखा था।

केशव पण्डित के घर में आशीर्वाद के बारे में ही बातें चल रही थीं। टी० वी० की तरफ से ध्यान हटा हुआ था उनका। हालांकि उन्होंने ब्रेकिंग न्यूज में पढ़ा हुआ था कि रात आठ पचपन पर एक बड़ी न्यूज प्रसारित की जायेगी। सबके मन में कौतूहलता थी उस बड़ी न्यूज को लेकर। लेकिन चूंकि न्यूज अभी शुरू नहीं हुई थी, विज्ञापन ही चल रहे थे, सो सब लोग आशीर्वाद के बारे में बातें कर रहे थे।

सोफिया आशीर्वाद को लेकर चिन्ता कर रही थी तो केशव उसे समझा रहा था कि आशीर्वाद के लिये वह चिन्तित ना हो। वह इस काबिल है कि कोई उसे किसी भी चाल में उलझाना चाहे तो उलझा नहीं सकता है। प्राची के मामले में भी उसे किसी ने अपनी चाल का शिकार बनाया है—लेकिन वह जल्दी ही अपने दुश्मन को उसकी चाल का मुंहतोड़ जवाब देगा और खुद को निर्दोष साबित कर देगा।

लेकिन एक मां का दिल उस समय कहां किसी की सुनता है जब उसकी औलाद मुसीबत में हो। वह केशव से बराबर जिद करती रही कि वह आशीर्वाद की मदद करे।

यही सब चल रहा था उनमें कि तभी टी० वी० समाचार में केशव पण्डित का नाम आते ही सबका ध्यान टी० वी० की तरफ गया।

हाथ में 'आज तक' चैनल का मोनोग्राम लिये चैनल का युवा रिपोर्टर बोल रहा था—"ये जो इमारत आप देख रहे हैं वो चौदह रेसकोर्स के बैक साइड में है। यहां हमारे चैनल की पूरी टीम मौजूद है जिसकी वजह है कि हमारे ऑफिस में किसी ने फोन करके बताया है कि केशव पण्डित का लड़का आशीर्वाद पण्डित, जो कि चीन का एजेन्ट है, रात नौ बजे यहां पहुंचने वाला है और वो पीछे के रास्ते से बंगला नम्बर चौदह की दीवार फांदकर बंगले के पृष्ठ भाग में बंगले के मालिक मेजर अविनाश साहनी से मिलेगा। साहनी भी आशीर्वाद की तरह चीन का एजेन्ट है। अविनाश और आशीर्वाद दोनों ही शाकाल के अण्डर में काम करते हैं। शाकाल का नाम अण्डरवर्ल्ड से जुड़ा है। वो अण्डरवर्ल्ड की एक बड़ी ताकत होने के साथ हिन्दुस्तान में चीन का एजेन्ट है और उसकी हैसियत यहां कमांडर जैसी है...।"

"झूठ बोल रेहा वे ऐ न्यूज चैनल वाला। बकवास कर रेहा वे कमीना।" गुस्से में भड़ककर बोला करतार सिंह—"मैं जाके साले दा बूथा भन्न (चेहरा तोड़) देवांगा। साडे निक्के पुत्तर जी दे ऊपर झूठा इल्जाम लगा रेहा वे।"

"शान्त हो जाओ करतार सिंह।" डांटकर बोला केशव पण्डित—"मुझे न्यूज सुनने दो।"

"क्या करोगे न्यूज सुनकर केशव?" सोफिया भी भड़क उठी—"प्राची के मामले में आशीर्वाद को फंसाने के बाद फिर से उसे नये मामले में फंसाया जा रहा है और तुम हो कि कह रहे हो न्यूज देखने दो। मदद के लिये नहीं जा सकते? कैसे बाप हो...?"

"प्लीज सोफी शान्त हो जाओ। न्यूज देखो।" सिगरेट की डिब्बी से सिगरेट खींचते हुये केशव की निगाहें टी० वी० पर थीं—"मामला समझने दो। तुम्हें ना सही मुझे अपने बेटे पर पूरा-पूरा विश्वास है। वह इतनी आसानी से किसी भी मामले में फंसने वाला नहीं है। अगर वक्ती तौर पर फंस भी गया तो इतनी काबिलियत है उसमें कि वह उस मामले से बाहर निकल आयेगा। बस...थोड़ी देर के लिये तुम लोग शान्त हो जाओ। प्लीज...।" कहने पर सिगरेट को होंठों में दबाकर उसे लाइटर से सुलगा लिया और कश लगाने लगा।

उस समय दिमाग का जादूगर बेहद गम्भीर लग रहा था।

□□□

□□□

टी० वी० स्क्रीन पर खुली जीप बंगला नम्बर चौदह के पिछवाड़े रुकते नजर आई। साथ ही इन्सेट में न्यूज चैनल का रिपोर्टर नजर आ रहा था, जो कह रहा था—

"ठीक नौ बजे हैं और केशव का बेटा आ पहुंचा अपना काम करने के लिये। केशव पण्डित के बारे में आप सब जानते ही हैं। वो मशहूर वकील, जासूस तथा लेखक है। उसके नाम देशभक्ति के कई कारनामें भी हैं। कई बार केशव पण्डित ने अपनी जान पर खेलकर देश के गौरव की रक्षा की है। देशभक्ति के कुछ कारनामे आशीर्वाद पण्डित के नाम से भी जुड़े हैं। लेकिन आज जो चेहरा उसका आप...हम सब देख रहे हैं उससे लगता है कि ये लड़का बहुत बड़ा नाटकबाज है। भेड़ की खाल में छुपा हुआ भेड़िया है। चीन का एजेन्ट है। देखिये देश का गद्दार जीप से ही दीवार फांदने जा रहा है। जीप को इसीलिये इसने दीवार से सटाकर खड़ा किया है।"

शाकाल और उसके सभी ओहदेदार उलझन में पड़े कभी पास में खड़े आशीर्वाद को देख रहे थे तो कभी टी० वी० स्क्रीन पर नजर आ रहे आशीर्वाद की तरफ देख रहे थे।

जबकि आशीर्वाद और प्राची के चेहरे शान्त एवं सपाट थे।

दिलीप गुप्ता का दिल धाड़-धाड़ करके उसकी पसलियों से टकरा रहा था।

लड़के का खेल उसकी समझ में आ चुका था। लेकिन वह ये नहीं समझ पा रहा था कि लड़के ने उसके कूकी पर कौन-सा जादू किया हुआ था जो कि वह अपनी ही बनाई योजना में फंसने जा रहा था।

टी० वी० स्क्रीन पर नजर आ रहा आशीर्वाद दीवार फांद गया और मेहंदी की ऊंची बाड़ की तरफ बढ़ा।

सब सांस रोके हुये उधर ही देख रहे थे।

खुद आशीर्वाद भी चने चबाते हुये अपनी नजरें टी० वी० स्क्रीन से चिपकाये हुये था।

फिर स्क्रीन पर लॉन में टहलता चालीसेक वर्षीय मेजर अविनाश साहनी नजर आया। अगले ही पल मेहंदी की बाड़ को फांदकर आशीर्वाद लॉन में पहुंचा और जेब से रिवॉल्वर निकालकर

उसने रिवॉल्वर की छःहों गोलियां मेजर साहनी के सीने में उतार दीं, वो भी बिना किसी चेतावनी के।

"उफ! ये तूने क्या किया कूकी?" अपने बाल नोचते हुये बड़बड़ाया दिलीप गुप्ता।

तभी स्क्रीन पर पुलिस की दो जीपें नजर आईं।

दोनों ही जीपें खुली जीप के पास रुकीं और उनमें से आगे वाली जीप से इंस्पेक्टर अनिल यादव बाहर निकला और खुली जीप में चढ़कर दीवार फांदकर अन्दर पहुंच गया।

उसके पीछे उसका सहयोगी सब-इंस्पेक्टर बंसल और छः सिपाही भी बारी-बारी करके अन्दर पहुंच गये और उन्होंने आशीर्वाद को घेर लिया।

❑❑❑
❑❑❑

"बन्द करो टी० वी०...।" अर्धविक्षिप्तों की तरह ही चिल्लाकर बोली सोफिया—"मैं कहती हूं कि टी० वी० बन्द करो। और केशव देख ली तुमने न्यूज? लड़के को कत्ल करते देख कलेजे में ठण्ड पड़ गई? कह रही थी कि उसकी मदद के लिये जाओ...पर मेरी नहीं सुनी। मैं चली यहां से...तुम सारी रात बैठकर न्यूज सुनना। कल भी न्यूज सुनना। महीनों तक ये न्यूज चलेगी। आखिर देश की मशहूर हस्ती के बेटे ने हत्या की है। एक ऐसे लड़के ने हत्या की है जिसका बाप कानून का पुजारी है। दुनिया जिसे कानून का मुहाफिज कहती है। सुनो बैठकर न्यूज...।"

"बैठ जाओ सोफी।" नथुनों से सिगरेट का धुआं बाहर करते हुये केशव ने कुर्सी से उठती सोफिया का हाथ पकड़कर उसे फिर से कुर्सी पर बैठा दिया और सपाट से लहजे में बोला—"जाने से पहले असली तमाशा भी देखती जाओ...।"

"अब क्या देखना रह गया है?" तमककर बोली सोफिया—"अब तो अदालत में जब तुम अपने बेटे के खिलाफ जहर उगलोगे तो देखूंगी। मां हूं ना...। इस उम्मीद में अदालत की कार्यवाही देखूंगी कि शायद ऊपरवाला ही मेरे ऊपर...एक मां के ऊपर रहम करे। वही कोई चमत्कार करे और इन्साफ की कुर्सी पर बैठे जज को आशीर्वाद की कम उम्र पर रहम आ जाये और वह उसे दो-चार साल की सजा सुनाकर अपने कर्तव्य को पूरा कर ले।"

"ऐसा कुछ नहीं होने वाला सोफी। तुम रिलेक्स हो जाओ और टी० वी० देखो। जिसने मेजर का कत्ल किया वो अपना आशीर्वाद नहीं है। तुम देखो, अनिल भाई ने उसे गिरफ्तार कर लिया है। मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि वो आशीर्वाद नहीं है। उसने चेहरे पर आशीर्वाद वाला फेसमास्क चढ़ा रखा है। हम अभी पुलिस स्टेशन चलेंगे। वहां मीडिया वालों को भी बुलाया जायेगा। सबके सामने मैं उसका फेस मास्क...लेकिन रुको...ये काम तो मैं यहीं बैठे-बैठे भी कर सकता हूं। अनिल भाई को फोन करता हूं। वह उसके चेहरे से फेस मास्क नोचेगा तो असलियत सामने आ जायेगी।"

सोफिया हैरान होकर केशव की तरफ देखने लगी।

केशव की बात सुनकर सोफिया ही नहीं राजन शुक्ला, चांदनी तथा करतार सिंह भी हैरान हुये पड़े थे।

केशव ने मेज पर रखा फोन अभी उठाया ही था कि उधर इन्सपेक्टर अनिल यादव ने हत्यारे के चेहरे से फेस मास्क नोच दिया था।

"सच विच ऐ ते अपने निक्के पुत्तर जी नी कोई और ही है।" खुशी में उछलते हुये-सा करतार सिंह बोला तो सोफिया की निगाहें टी० वी० की ओर गईं।

फिर रोने ही तो लगी हरी-हरी आंखों वाली।

❑❑❑
❑❑❑

हत्यारे के चेहरे से फेस मास्क हटते ही दिलीप गुप्ता हाथों से चेहरा छुपाकर रोते हुये वहीं बैठ गया।

"ये सब क्या है?" आशीर्वाद से मुखातिब हो गुर्राहट भरे लहजे में बोला शाकाल—"ये लड़का कौन है?"

जख्मी हालत में मारे पीड़ा के चींखते-कराहते दिलीप गुप्ता के करीब पहुंचा आशीर्वाद और उसके सीने पर जूता समेत दायां पैर रखने पर सर्द-से लहजे में बोला—"तेरे सिर के पिंजरे में दिमाग का जो तोता था, तूने उसका अपनी तरफ से खूब इस्तेमाल किया। वो तोता पंखों को फड़फड़ाते हुये चारों दिशाओं में उड़ा। उसके पंखों की हवा तेरी सोच के मुताबिक मुझे तिनके की तरह उड़ाकर ले जानी चाहिये थी और मेरे असतित्व का अता-पता भी नहीं मिलना चाहिये था। ये तो हवा का मसला था, अगर आंधी के

तेज झोंके भी होते तो, मेरे सिर के बाल भी नहीं हिल पाते। मैं वो चट्टान हूं जिसकी चपेट में आने वाली आंधी भी गुब्बारे से निकली हवा की तरह ही फुस्स होकर रह जाती है। दिमाग के चैम्पियन से दिमाग की जंग लड़ने चला था तू। चूहा छलांग लगाकर कुतुबमीनार की चोटी पर बैठकर ताली पीटने के ख्वाब देख रहा था। मेरा दिमाग तलवार की वो पैनी धार है, जिसकी चपेट में आने पर फौलाद भी लौकी की तरह कट-फट जाता है, तेरी हैसियत तो गीले कागज से बढ़कर थी ही नहीं। खैर, तूने जो करना था, कर लिया। अब मेरी बारी है। अब देख मेरे दिमाग का जादू...।"

लुटे-पिटे से दिलीप गुप्ता पर व्यंग भरी मुस्कान उछालने पर आशीर्वाद शाकाल की तरफ पलटा और बोला—

"ये तुम्हारे राइट हैण्ड दिलीप गुप्ता का लड़का है ओये शाकाल।" चने चबाते हुये रेगमाल से खुरदुरे लहजे में बोला आशीर्वाद पण्डित—"मेरे साथ मेरी क्लास में पढ़ता है। मेरे खास दोस्तों में है। कमलकान्त गुप्ता नाम है इसका। ये मेरी दोस्त विशाखा को पाना चाहता था लेकिन इसे ये मालूम था कि वो मुझे चाहती है। उसके दिमाग में था कि अगर मैं इसके और विशाखा के बीच से हट जाऊं तो ये किसी तरह से उसका दिल जीतकर उसका प्यार पा सकता है। ये मुझे अपनी राह से हटाने की सोच ही रहा था कि तुम्हारी पोती हमारे बीच आ गई। प्राची मुझसे दोस्ती करना चाहती थी। और कमलकान्त को जब पता लगा कि प्राची राजेश्वर शर्मा की पोती है तो उसके दिमाग में एक तीर से कई शिकार करने की योजना आई। दरअसल इसे मालूम था कि राजेश्वर शर्मा और मुम्बई अण्डरवर्ल्ड का डॉन शाकाल दोनों एक ही शख्स के दो नाम हैं। ये तुम्हारे तीसरे नाम के बारे में भी जानता था और भी कुछ जानता था। दरअसल दिलीप की बीवी, जो कि कमलकान्त की मां थी, उसने प्राची के बाप यानि तुम्हारे बेटे की वजह से आत्महत्या की थी। तब दिलीप के मन में अपनी बीवी के बलात्कारी को अपने हाथों से सजा देने की तमन्ना थी। लेकिन तुम्हारी वजह से ये ऐसा नहीं कर सकता था। अन्दर-ही-अन्दर ये बदले की आग में सुलगता रहा। तुम्हारा बेटा एक दिन मेरे डैडी जी से उलझते समय अपनी ही चलाई गई गोली का शिकार होकर मर गया। उसके मर जाने पर भी दिलीप गुप्ता को तसल्ली नहीं हुई। ये तुम्हें अपना दुश्मन समझता रहा और

हमेशा ही इस ताक में रहा कि मौका मिले तो यह तुमको खत्म करके तुम्हारे स्याह-सफेद सभी धंधों का मालिक बन बैठे। इसी चक्कर में इसने तुम्हारे घर के नौकर रघु को खरीदा हुआ था। रघु की मदद से ही इसने तुम्हारी पर्सनल डायरी को तुम्हारे घर में पढ़ा और तुम्हारे बारे में वो जान गया जो सिर्फ तुम ही जानते थे। इसके लड़के ने तुम्हारे बारे में इसकी पर्सनल डायरी से जाना। खैर, कह मैं ये रहा था कि प्राची के बारे में पता लगने पर कि ये तुम्हारी पोती है और मेरी तरफ आकर्षित है तो इसने एक तीर से कई शिकार करने की योजना बना डाली। उसकी वो योजना तब और मजबूत हो गई जब प्राची ने मुझे चिट्ठी लिखी कि ये मुझसे प्यार करती है और मुझसे अकेले में मिलना चाहती है। इसने मिलने का समय और स्थान भी पत्र में लिखा था। कमलकान्त मेरा दोस्त था। कॉलेज में हर वक्त हम साथ ही रहते थे। इसने ही प्राची का पत्र पढ़ा था। मैंने इसके सामने ही कह दिया था कि मैं प्राची से मिलने नहीं जाने वाला था। अपराधी का बेटा है। फेसमास्क बनाने वाले की जानकारी भी थी इसे। पट्ठा मेरा फेसमास्क बनवा लाया और शाम को पहुंच गया प्राची के पास। आगे की कहानी तुम समझ ही चुके होंगे। नहीं समझे तो अन्दाजा लगा लो। अन्दाजा ना लगा सको तो कल जेल में अखबार में पढ़ लेना। वहां कैदियों को भी अखबार पढ़ने को मिलता है।"

"अब लगे हाथ ये भी बता दो...।" आशीर्वाद के शान्त होते ही शाकाल बोला—"प्राची की कार में लाश किस लड़की की थी और तुम इस तक कैसे पहुंचे? और तुम्हें कैसे पता लगा कि प्राची के साथ यह कमीनापन कमलकान्त ने किया है?"

फिर लड़के ने पहले तो प्राची से सुनी वो कहानी सुनाई जिससे घर से आत्महत्या के लिये निकली प्राची को राह में रोजी मारग्रेट मिली थी। उसके बाद उस एक्सीडेंट में प्राची कैसे बची ये बताया। फिर ये बताया कि प्राची तक कैसे पहुंचा।

अन्त में,

"प्राची के सामने ही शकोरा का फोन आया।" कुदुर-कुदुरकरते हुये बोला आशीर्वाद—"उस फोन से शकोरा अर्थात् कमलकान्त ने मुझे दूसरी बार फोन किया था। मुझे चेक कराना था कि उस नम्बर वाला फोन कनेक्शन किसके नाम था।

इसके लिये मैंने अपने एक परिचित को फोन लगाया और शकोरा का नम्बर बताकर उसे कम्पनी जाकर चेक करने को कहा तो मेरे मुंह से वह नम्बर सुनकर प्राची चौंकी। इसने मुझे बताया कि ये तो वही नम्बर था जिस पर ये मुझसे बातें करती थी और ये नम्बर मैंने ही इसे दिया था। ये तो मैं ही जानता था कि मैंने इसे वो क्या कोई भी नम्बर नहीं दिया था। इसके ये बताने से ये क्लियर हो गया कि शकोरा ही वो शख्स था जो आशीर्वाद बनकर इससे मिलता था। अब शकोरा कौन है, ये जानना रह गया था। मैंने प्राची से कहा कि वह याद करके बताये कि जब ये नकली आशीर्वाद से मिलती थी तो इसने कहीं उसके व्यवहार में, उसकी आदत में कुछ खास नोट किया हो। तब प्राची ने मुझे बताया कि वह उस बहरूपिये की बाईं आंख आवश्यकता से ज्यादा फड़कती थी। इसने ये भी बताया कि एक बार कलेज में ये मुझे पूछते हुये मेरे साथियों के पास पहुंची थी। तब वहां कमलकान्त भी था। काफी देर तक ये मेरे दोस्तों के बीच रही। तब गाना भी गाया था इसने। तभी कमलकान्त की बाईं आंख फड़ते देख ये सोच में पड़ गई थी। लेकिन तब इसे क्या मालूम था कि वो ही इसे मेरे रूप में छल रहा है। खैर इसके इतना बताने पर मेरा ध्यान भी कमलकान्त की ओर गया। लेकिन तब मेरा दिल ये मानने को तैयार नहीं था कि मेरी उम्र का लड़का और साथ ही मेरा खास दोस्त इतना शातिर दिमाग भी हो सकता है। खैर, जल्दी ही मेरा वो भ्रम टूट गया। जिसको मैंने शकोरा का नम्बर चेक करने के लिये दिया था उसने मुझे बताया कि वो नम्बर स्वर्गीय अजय गुप्ता के नाम से आवंटित था। मुझे मालूम ही था कि अजय गुप्ता काजल के स्वर्गीय पापा का नाम था और कमलकान्त काजल का मौसेरा भाई है और उसी के साथ रहता है। बस फिर क्या था। वहां से मैं प्राची को अपने साथ ले आया। काजल के घर पहुंचे तो उस समय कमलकान्त उस अड्डे पर जाने को तैयार हो रहा था जहां इसने मेरे दो दोस्तों का अपहरण करवाकर बन्दी बनाकर रखा हुआ था। मेरे उन दोस्तों को ही ढाल बनाकर ये मुझसे मेजर साहनी का कत्ल करवाना चाहता था।

बहरहाल जब मैं काजल के घर पहुंचा तो मेरे साथ प्राची को देखकर कमलकान्त ही नहीं काजल भी बुरी तरह चौंकी। तब काजल के सामने ही मैंने उसे कमलकान्त की करतूत बताई।

काजल मुझे बहुत मानती है। उसने कमलकान्त को बहुत बुरा-भला कहा। फिर मैंने कमलकान्त को हिप्नोटाइज्ड करके उससे जाना कि उसने ये सब क्यों किया और आगे उसका इरादा क्या था। सबकुछ जान लेने पर मैंने उसे उसी की चाल में फंसाने के लिये उसे फिर से आशीर्वाद बनाया। वो फेसमास्क कमलकान्त के पास ही था। वो हिप्नोटाइज्ड तो था ही। मेरे मेकअप में, मेरे सिखाने पर अपनी योजनानुसार ही उसी वक्त पर वो मेजर साहनी का कत्ल करने पहुंचा और उसका कत्ल करके रंगे हाथों पकड़ा गया। मीडिया को उसके बाप ने वहां सेट कर रखा था। वक्त पर वहां पहुंचने के लिये इंस्पेक्टर अनिल यादव को मैंने सेट किया था। इसके अलावा एक छोटी-सी बात और...काजल के घर जाने से पहले मैं मेजर साहनी के यहां गया था। साथ में प्राची भी थी। मेजर साहनी कभी शाकाल के लिये काम करता था, ये मैंने मेजर साहनी के मुंह से कबूलवा लिया था। तब ही मैंने कमल के हाथ से इसे खत्म करवाया वरना अगर मेजर निर्दोष होता तो कमलकान्त को फंसाने के लिये मैं कोई दूसरी तरकीब सोचता।"

❑❑❑
❑❑❑

आशीर्वाद के मुंह से सारा किस्सा सुनने पर शाकाल उठा और गुस्से में पागल-सा होकर दिलीप गुप्ता को घूंसों-लातों से पीटने लगा।

और जब उसे पीटते-पीटते थक गया तो उसने एक गार्ड से गन ली और उसकी नाल दिलीप गुप्ता के सीने पर टिकाकर एक बार में गन की सारी गोलियां खर्च कर डालीं।

फिर वह आशीर्वाद की तरफ पलटा और बड़े ही कुत्सित ढंग से मुस्कराकर बोला—

"भई, कमाल के लड़के हो तुम। दुश्मन होकर भी दोस्त का काम किया है तुमने। एक मेरी पोती को मुझसे मिलाया और दूसरे आस्तीन में पल रहे सांप की खबर की। इनाम मिलेगा इसका तुम्हें। और शाकाल चाहे किसी पर खुश हो, और चाहे किसी पर गुस्सा करे, इनाम में उसे मौत ही देता है। गार्डस् पकड़ लो इसे। बहुत दिनों बाद ये काबू में आया है।"

"शर्म करो दादाजी...।" शाकाल के सामने आकर उसे नफरत तथा हिकारत भरी नजरों से देखते हुये बोली प्राची—"अब

तो शर्म करो। आपके पापों ने आपको अभी तक क्या दिया है? दौलत के ढेर लगाने के अलावा आपके पास अपना कोई बचा भी है? बेटे और बहू को पहले ही खो चुके हो। बची थी मैं, मुझे भी आपके पापों की नजर लग चुकी है। जिन्दा लाश बनी खड़ी हूं मैं। आप हैं कि अभी नहीं चेत रहे हैं। अपना सबकुछ लुट जाने पर मुझे अपने आपसे नफरत हुई थी। लेकिन इतनी नहीं जितनी ये जानने पर हुई कि मैं उस इन्सान की पोती हूं जिसे दुनिया वाले अच्छा इन्सान समझते हैं पर वास्तव में वह देश का दुश्मन है। विदेशी एजेन्ट है। हां, राजेश्वर शर्मा, नफरत हो गई मुझे तुमसे। घिन्न सी हो रही है अपने आप से कि मैं एक गद्दार इन्सान की पोती हूं। आप और आपके आदमी आशीर्वाद को क्या खाकर मारेंगे। ये तो ईश्वर का आशीर्वाद है। ये तुम सबको मार डालेगा।"

"खामोश हो जा प्राची...।" प्राची के चेहरे पर थप्पड़ मारकर क्रोधातिरेक थर-थर कांपते हुये गुर्राकर बोला शाकाल—"तुम मेरे दुश्मन के सामने मेरी इन्सल्ट कर रही हो। तुम्हें मैं बाद में देखूंगा। पहले इस पण्डित की औलाद से निबट लूं।"

"तू मुझसे क्या खाकर निबटेगा चूहे?" जलती हुई-सी निगाहों से शाकाल को घूरते हुये आशीर्वाद भी गुर्राकर ही बोला—"तेरे में इतनी हिम्मत ही कहां है कि तू शेर के सामने खड़ा भी रह सके। पिछली बार फाइट क्लब में भी सामना होने से पहले ही भाग खड़ा हुआ था। और जब लीडर ही चूहे जैसा हो तो उसके साथी-संगी भी चूहे ही होंगे। तेरे ये आदमी मेरा बाल भी बांका नहीं कर सकते हैं। ये देख मैं अभी इन सबका तीया-पांचा करता हूं।"

कहने के साथ ही वह अपना दायां पैर उठाकर बायें पैर के पंजे के बल सिन्नी, बिन्नी, पोलर, खेतान, उप्रा पंखे की तरह नाचा तो उसके निकट पहुंचे गार्ड्स गैस भरे गुब्बारों की मानिन्द उड़-उड़कर पीछे गिरने लगे और गिरने पर तड़फ-तड़फकर दम तोड़ने लगे।

किसी के चेहरे पर, किसी की गर्दन तथा किसी की कनपटी पर उसका पैर लौहार के हथौड़े की मानिन्द ही टकरा रहा था और जो भी उसके पैर की चपेट में आता जा रहा था वह गिरने पर दम ही तोड़ बैठता था।

ये देख शाकाल चिल्लाया—

"गोलियों से भून डालो इसे।"

बचे हुये गार्डों ने उस पर गोलियां चलानी शुरू की तो मुण्डे ने पहले तो यांग यू ही को ढाल की तरह इस्तेमाल करके खुद को बचाया।

उसके निर्जीव शरीर को गार्डों पर उछालकर खुद जमीन पर गिरी गन पर छलांग लगाई और फिर गन को काबू कर उसका दहाना गार्ड रूपी गुण्डों पर खोल दिया।

गुण्डे चीखते हुये गिरने लगे।

ये देख जोरावर सिंह और टोनी ने भागने की कोशिश की तो मुण्डे ने उन्हें भी लुढ़का दिया।

बचा शाकाल।

वह प्राची का हाथ पकड़कर दरवाजे की तरफ भागा तो लड़का हवा में तैरता हुआ आया और उसके सामने चीन की दीवार बनकर खड़ा हो किंग-कोबरे की मानिन्द ही फुंफकारा—"भागता है टकले? एक मौका दिया था तुझे, उस समय अपनी गलती स्वीकार कर खुद को कानून के हवाले करने को तैयार हो जाता तो मेरे हाथों मरने से बच जाता। लेकिन बचता कैसे? होनी तो होनी ही होती है। जब तेरी मौत का दिन, समय, स्थान सब पहले ही निर्धारित कर रखा है उस नीली छतरी वाले ने तो फिर तेरी बुद्धि पर शनि देवता को तो बैठना ही था। अब तू बचेगा नहीं...।" कहने पर लड़के का घूंसा उसके चेहरे पर पड़ा तो वह उछलकर पीछे जा गिरा।

आशीर्वाद ने पहले प्राची को बाहर भेज दिया, फिर शाकाल को लात-घूंसों से मारते हुये आकाशीय बिजली-सा ही गरजकर कड़ककर बोला—"जिस मिट्टी में जन्म लेते हो, उसी में हिंसा का बारूद बोते हो, जो धरती मां तुम्हें अपने आंचल में पनाह देती है, उसी के आंचल को आग लगाते हो। स्वार्थ के चूल्हे में इन्सानियत की लकड़ियां जलाते हो। उस पर स्वार्थ का तवा रखकर हैवानियत की रोटियां सेंकते हो। निर्दोषों का खून बहाकर जश्न मनाते हो। दौलत के ढेर पर बैठकर खुद को खुदा ही समझने लगते हो, अपने अन्जाम के बारे में भूल जाते हो। अब क्यों रो रहा है, क्यों चीख मार रहा है? हंसकर, नाचकर दिखला।"

जिस्म की कई हड्डियां तुड़वा चुका शाकाल फर्श पर जल बिन मछली-सा छटपटाते हुये गिड़गिड़ाया—"र...रहम...माफ

कर दो मुझे...आशीर्वाद आह...छोड़ दो मुझे...कानून के हवाले कर दो...आह...!"

"कानून के पास फांसी से बढ़कर कोई सजा है ही नहीं...।" आशीर्वाद शाकाल की पसलियों को दायें पैर की ठोकरों से चकनाचूर करते हुये बोला—"जबकि तेरा जुर्म, तेरे गुनाह इतने खतरनाक हैं कि फांसी की सजा नाकाफी है तेरे लिये। तेरे हिस्से में ऐसी मौत आयेगी कि चील-कौअे भी तेरी लाश को देखकर उल्टियां करने लगेंगे और तेरा गोश्त खाने का ख्याल भी नहीं करेंगे। डॉक्टर भी ये बोलेगा कि गोश्त और हड्डियों के ढेर का क्या पोस्टमार्टम करूं? चिता की आग भी तुझे अपनी पनाह में लेने से कतरायेगी। मेरे देश और देशवासियों को नुकसान पहुंचाने वाले शैतान...तेरा वो हाल करूंगा कि तेरी आत्मा को ले जाने के लिये आ खड़े हुये यमदूत भी घबराकर आंखें मूंद लेंगे...।"

"रुकने का बिग ब्रदर। ये अपुन का शिकार है। तेरे से पहले हीच प्रॉमिस करवा लिया था कि अगर ये तेरे हत्थे चढ़ा तो तू इसे नहीं मारेगा। अपुन के हवाले करेगा।"

आवाज सुनकर आशीर्वाद पलटा।

"हसनू तुम...यहां...?" हसनू को वहां देखकर मुण्डे को जैसे चार सौ चालीस वोल्ट का करण्ट-सा लगा।

"यस बिग ब्रदर अपुन इदर। वो क्या है कि अपुन दो दिन पहले टी० वी० न्यूज में राजेश्वर शर्मा को तब देखेला जब कि ये अपनी पोती के आत्महत्या के मामले में टी० वी० वालों को बता रहेला था। अपुन तभीच इसे पहचान लियेला था कि येहीच शाकाल था। दरअसल अपुन की याद्दाश्त बहुत तेज है। सात साल पहले जब इसने अपुन की मम्मी के साथ रेप कियेला था तब ये अपने दायें हाथ में सांप के फन वाली रिंग पहने हुयेला था। उस अंगूठी से अपुन राजेश्वर को शाकाल के रूप में पहचाना। और तभी से इससे बदला लेने के लिये इसकी कोठी के आस-पास मंडराने लगेला था। पन मौका हीच नेई मिला। आज तुमको इस लड़की के साथ बंगले में घुसते देखा तो तुमको आवाज लगाया, पन तुम सुनेला नेई। फिर तेरे पीछे अपुन भी चाहरदीवारी फांदकर पहुंच गयेला। पन तुम अन्दर नेई थे, दो नौकर थे। उन्होंने अपुन को रोकने की कोशिश की तो अपुन उनको रामपुरी दिखाया। ये लम्बावाला रामपुरी। शाकाल का पेट फाड़ने के वास्ते रखा है। नौकरों को डराकर तेरे को ढूंढने लगा और ढूंढते हुये बाथरूम पहुंचा

तो इदर ये रास्ता मिला और इदर आ गया। पन सही टेम से आया। अब तुम बीच से हटने का।"

"ठीक है हसनू...। किया इस हरामी को तेरे हवाले। फाड़ इस देशद्रोही का पेट।" कहने पर लड़के ने शाकाल को छोड़ दिया।

और हसनू चाकू लेकर दौड़ा और—

अगले ही पल उसने रामपुरी चाकू का चौदह इंच लम्बा फल पूरा-का-पूरा शाकाल के पेट में घुसेड़ दिया।

शाकाल पेट में घुसे चाकू को पकड़े कुछ देर तक तो लीटर भर शराब पीये शराबी की मानिन्द इधर-उधर झूमता रहा।

फिर कटे वृक्ष की मानिन्द गिरा और थोड़ा तड़फने के बाद शान्त होकर रह गया।

❑❑❑

❑❑❑

रात को साढ़े ग्यारह बजे प्राची शर्मा के साथ आपका सबका चहेता अपने घर पहुंचा तो अभी घर के सारे मेम्बर जाग ही रहे थे।

चूंकि कमलकान्त ने मेजर साहनी के बंगले में ही अपने सारे अपराध स्वीकार करने के साथ अपनी योजना भी बता दी थी—सो आशीर्वाद के निर्दोष साबित हो जाने पर सब पहले से ही खुश थे। उसके घर पहुंचने पर बारी-बारी सबने उसे गले लगाया। ढेरों आशीष दिये।

सोफिया और चांदनी ने प्राची को गले लगाकर उसे तसल्ली दी।

फिर लड़के को और प्राची को खाना लगवाया गया।

प्राची ने अनमने ढंग से थोड़ा-सा खाया, वो भी सोफिया और चांदनी के बार-बार कहने पर।

लड़के ने खाना आने से पहले ही उन सबको सारा किस्सा कह सुनाया था। उस सारे किस्से में इस बात का भी जिक्र था कि पिट्ड़ी गांव से प्राची के साथ लौटने पर आशीर्वाद सबसे पहले तो मेजर साहनी के यहां पहुंचा था। फिर काजल के यहां। वहां कमलकान्त को हिप्नोटाइज्ड करके उससे सारा मामला समझने के बाद उससे उस जगह का पता पूछा था जहां उसने टीटू और गुड्डी को कैद कर रखा था। टीटू और गुड्डी को वहां से आजाद कराकर घर भेजने पर ही वह प्राची के साथ शाकाल के अड्डे पर पहुंचा था।

बहरहाल सबकुछ सही निबट गया था। आप सबका चहेता जाना खा रहा था तो उसकी मम्मी उसे न्योछावर हो जाने वाली निगाहों से देख रही थी।

तभी केशव ने उससे मज़ाक किया—

"क्यों सोफी, अब तो मानती हो ना कि अपना आशीर्वाद वाकई में दिमाग का चैम्पियन है, और इसे कोई भी माई का लाल दिमागी या कैसे भी खेल में कभी शिकस्त नहीं दे सकता है?"

"हां केशव...!" सोफिया मुस्कराकर बोली—"आज मान गई कि आशीर्वाद की रगों में मेरा दूध...एक लोमड़ी का दूध खून बनकर दौड़ रहा है।

सोफिया की बात सुनकर सब हंस पड़े—सिवाय प्राची के। वो सिर झुकाये बैठी रही।

दिमाग का चैम्पीयन 'आशीर्वाद पण्डित' एक बार के लिये ऐसे मुकाम पर पहुंच गया कि उसे लगा कि वो फंस चुका है और उसकी इज्जत दांव पर लग चुकी है।

कौन है दिमाग का वो खिलाड़ी जो दिमाग के चैम्पीयन को अपने जाल में फांसने के लिये दिमाग के घोडों को चारो दिशाओं में दौड़ा रहा है?

जवाब जानने के लिये पढ़िये -

'देख मेरे दिमाग का जादू'